CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नागार्जुन : जीवन और साहित्य

डॉ० प्रकाशचन्द्र भट्ट
एम.ए., पी-एच.डी.

प्रकाशक
सेवा सदन प्रकाशन
रामपुरा, जिला-मन्दसौर (म० प्र०)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Q.2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नागार्जुन : जीवन और साहित्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नागार्जुन : जीवन और साहित्य

डॉ० प्रकाशचन्द्र भट्ट
एम.ए., पी-एच.डी.

प्रकाशक
सेवा सदन प्रकाशन
रामपुरा, जिला-मन्दसौर (म० प्र०)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सर्वाधिकार लेखकाधीन

प्रथम संस्करण, जनवरी, १९७४

मूल्य : पैंतीस रुपये मात्र

आवरण शिल्पी : वीरेश्वर भट्टाचार्य

मुद्रक : धर्मवीर प्रेस, पटना-६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समर्पण

वात्सल्यमयी जननी को जिसकी अब केवल स्मृति ही
शेष है किन्तु जिसके दिये हुए संस्कारों ने मुझे
माँ भारती की सेवा के योग्य बनाया
उसकी दिवंगत आत्मा को अपने
सजल नेत्रों और बोझिल
हृदय के साथ सादर
समर्पित ।

—प्रकाशचन्द्र भट्ट

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आशीर्वचन

डॉ० प्रकाशचन्द्र भट्ट ने 'नागार्जुन : जीवन और साहित्य' नामक शोध प्रबन्ध लिखकर विक्रम विश्वविद्यालय से पी० एच० डी० की उपाधि प्राप्त की है। यह शोध प्रबन्ध अपनी यह विशेषता रखता है कि नागार्जुन के जीवन और साहित्य के सभी पक्षों पर इसमें गम्भीर विवेचन प्रस्तुत किया गया है। जहाँ तक मेरी जानकारी है, नागार्जुन के व्यक्तित्व और कृतित्व के सम्बन्ध में इस प्रकार का प्रयत्न अभी तक इस परिवेश में नहीं हो सका है।

मैं डॉ० प्रकाशचन्द्र भट्ट को उनके अध्ययन और अध्यवसाय के लिए बधाई देते हुए आशा करता हूँ कि वे इस दिशा में उत्तरोत्तर उत्कर्ष प्राप्त करते जाएँगे और उनकी लेखनी से अन्य मौलिक आलोचना ग्रन्थों का प्रणयन हो सकेगा।

डॉ० शिवमंगल सिंह 'सुमन'
कुलपति, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्मति

यह जानकर हर्ष हुआ कि 'नागार्जुन : जीवन और साहित्य' शीर्षक शोध-प्रबन्ध श्री प्रकाशचन्द्र भट्ट द्वारा प्रस्तुत किया गया तथा स्वीकृत हुआ।

नागार्जुन एक सफल एवं सिद्धहस्त व्यंग्यकार हैं। आधुनिक राजनीति एवं समाज में व्याप्त अपंगतियों पर नागार्जुन ने पैने व्यंग्य लिखे हैं। पद्य एवं गद्य पर उनका समान रूप से अधिकार है। मूलतः वे आंचलिक कलाकार हैं। उनके द्वारा रचित आंचलिक उपन्यास हिन्दी साहित्य की धरोहर हैं।

इस शोध प्रबंध में नागार्जुन द्वारा रचित मैथिली साहित्य, व्यंग्यात्मक गद्य एवं पद्य, आंचलिक उपन्यास एवं बाल साहित्य का गम्भीर विवेचन किया गया है।

मैं डॉ० प्रकाशचन्द्र भट्ट को उनके मौलिक कार्य पर बधाई देता हूँ तथा आशा करता हूँ कि विद्वानों द्वारा इस ग्रन्थ का समुचित आदर होगा। साथ में प्रो० गणेशदत्तजी चतुर्वेदी भी बधाई के पात्र ही हैं, जिनके कुशल निर्देशन में यह शोध-प्रबंध तैयार किया गया।

डॉ० बरसानेलाल चतुर्वेदी
शिक्षाधिकारी, केन्द्रीय विद्यालय संगठन
नेहरू हाउस, नई दिल्ली—१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दो शब्द

श्री वैद्यनाथ मिश्र मिथिलांचल के संस्कृत पण्डित; महापण्डित राहुल सांकृत्यायन के अंतेवासी, अनेक भाषाविद्, सिंहल-तिब्बत-प्रवासी, नागार्जुन नामाभिधान से हिन्दी में विख्यात कवि, उपन्यासकार, व्यंग्यकार, 'यात्री' नाम से मैथिली साहित्य की श्री-वृद्धि करके साहित्य-अकादेमी पुरस्कार विजेता, वामपन्थी विचारधारा से प्रेरित, सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए इच्छुक प्रगतिवादी 'बाबा' हमारे तीस वर्ष पुराने मित्र हैं। मुझे याद पड़ता है कि प्रगतिशील लेखक सम्मेलन, इलाहाबाद में डॉ० शिवमंगल सिंह 'सुमन' ने उनसे मेरा परिचय पहिली बार कराया, और तब से हम उनके खरेपन के कायल हैं। हिन्दी साहित्य में गये चालीस वर्षों से कुछ काम करने-लिखने-पढ़ने का हमें थोड़ा-सा अनुभव है, जिसमें अनेक-अनेक बड़े-छोटे साहित्यकारों—लेखकों के निकट संपर्क में आने का सौभाग्य मिला, पर नागार्जुनजी जैसे लोग बहुत कम हैं। उनमें सब से कम परिवर्तन—न केवल बाह्य वेशभूषा, पर विचारों की प्रखरता में भी—हमें मिलता है। यह उनकी निपट प्रामाणिकता और खरेपन की निशानी है। यह नहीं कि उनकी राह में बड़े से बड़े प्रलोभन नहीं आये, राजनीति की रपटीली गैल से गुजरते हुए हमने बड़े-बड़े तीसमारखाँ लोगों को 'भ्रष्ट' होते हुए देखा है। 'यात्रीजी' चाहते तो बड़े आराम से बड़ा-सा सरकारी पद या सत्ता सम्पत्ति का कोई स्वार्थपोषक स्थान सहज अपना कर बैठ जाते। पर उन्होंने अपने लेखन अस्त्र की दाहक और दंशक धार को कुण्ठित नहीं होने दिया। उन्हें यह नहीं लिखना पड़ा 'आज खड़ग की धार कुण्ठिता, अब खाली तूणीर हुआ।' मैंने उन्हें घोर आर्थिक, पारिवारिक, शारीरिक कष्ट में भी देखा है, पर उन्होंने कभी अपनी वाणी रिरियाहट या याचना का शब्द, कभी कोई 'शमित-दमित' रूप—कभी कोई किसी अतींद्रित अ—पर, तथाकथित, आध्यात्मिक 'कस्यचित् कर्तृवादः' की शरण नहीं ली। बौद्ध दर्शन की तर्काश्रित विवेकशीलता और मार्क्सवाद की ऐतिहासिक द्वन्द्व-मूलक अनिवार्यता का परिपाक उन्हें इस 'धात' का बना सका। इसीलिए स्वराज्य के बाद भी उन्हें गाँधी-हत्या पर लिखी कविताओं पर कारावास तक सहन करना पड़ा।

श्री नागार्जुनजी हमारे आदरणीय स्नेह-भाजन, सुहृद हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि उनकी हर लिखत को हम अच्छा या श्रेष्ठ समझते हैं। उन्होंने भी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बहुत-सा ऐसा लिखा है, या उन्हें लिखना पड़ा है, जो साहित्य पर जीविकोपार्जन करने वालों को करना पड़ता है। अँगरेजी में इसे 'खिचड़ी-पकाउ' (पाट बॉइलर) लेखक कहते हैं। पर हिन्दी साहित्य में उनका योगदान निस्सन्देह संस्मरणीय है। प्रेमचन्द, निराला, राहुल की परम्परा की वे एक सशक्त कड़ी हैं।

ऐसे श्रेष्ठ साहित्यकार पर ऐसा शोध-ग्रन्थ यह पहली बार लिखा गया है, जिसमें उनके समूचे हिन्दी और मैथिली साहित्य को समेटा गया है। और जिसमें स्वयम् लेखक से मिलकर, चर्चा करके, तथ्यों को जमा किया गया है। जो भी 'बाबा' और उनकी 'अराजकतापूर्ण' जीवन-पद्धति को जानते हैं, उनके लिए यह अंदाजा लगाना कठिन नहीं होगा कि 'बाबा' के पीछे लगकर, उनसे उनके बारे में जीवन तथ्य या उनके लेखक के विषय में समग्र तथ्य जमा करना कितना दुस्तर कार्य है। 'बाबा' के स्वभाव के कारण उनके स्थायी मित्र भी बहुत थोड़े हैं। उनके प्रखर आलोचक अधिक हैं क्योंकि वे समाज में लगी सड़ाँध पर सीधे प्रहार करते हैं—और आज इस समाज की 'काजर की कोठरी' में ऐसे सयाने थोड़े हैं जिन पर 'एक रेख लागी है पै लागि है' न हो। इसलिए वे एक बार मजाक में कह रहे थे कि एक व्यंग्य कविता उन्होंने लिखी—जहाँ कहीं किसी शहर में वे पढ़े, एक न एक कवि उस मजमे में से नाराज होकर उठकर चला जाता था। वह समझता था कि कविता उसी पर लिखी गई है। यह टोपी ऐसी ही सिर पर 'फिट' बैठती थी। 'ढलते दिनमान का छायावादी कवि है....कोटरगत नेत्र और पिचके हुए गाल, गमन मराल का चितवन चकोर की, लम्बे लम्बे बाल···" ऐसा कुछ कवि का वर्णन था।

श्री नागार्जुन के साहित्य की शक्ति उनके जनता के प्रति निकटतम संपर्क और जनसाधारण की आशा-आकांक्षाओं से अपने आपको एकाकार करने में है। वे सच्चे अर्थ में 'जनकवि' हैं। पालि साहित्य की निधि को उन्होंने अवगाहा है, बंगला-मैथिली में वे रचे-पचे हैं, मराठी-गुजराती-सिंधी-पंजाबी धड़ल्ले से पढ़ते हैं। नवीन से नवीनतम क्रांतिकारी विचारों से अपने आपको अवगत रखते हैं। ऐसे महान प्रतिभाशाली साहित्यिक को हिन्दी में घोर उपेक्षा और दारुण असहिष्णुता का सामना करना पड़ा। अब वे बासठ वर्ष के हैं, और बिहार सरकार ने उन्हें मैथिली लेखक के नाते कुछ मासिक पेंशन दी है, इसके लिए राज्यपाल श्री देवकान्त बरुआ जैसे साहित्य-मर्मज्ञ को धन्यवाद।

ऐसे व्यक्ति पर यह पहला शोधग्रन्थ लिखने के लिए मैं मेरा बचपन जहाँ बीता उसी रतलाम (मध्यप्रदेश) के डॉ० प्रकाशचन्द्र भट्ट का अभिनन्दन करता हूँ। प्रगतिवाद पर और भी कई थीसिस लिखे गए और लिखे जा रहे हैं। यशपाल पर नागपुर से डॉ० कडू की थीसिस का मैं परीक्षक था; डॉ० रणजीत ने बहुत अच्छा काम किया है—उसी कड़ी में यह एक उपयोगी और मौलिक कार्य हिन्दी के आधुनिक आलोचना साहित्य में हुआ। पुनः धन्यवाद।

—प्रभाकर माचवे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्राक्कथन

आधुनिक हिन्दी साहित्य की श्री-वृद्धि में नागार्जुन का कर्तृव्य अपना विशेष महत्त्व रखता है। एक ओर वे प्रगतिवादी एवं प्रगतिशील कविता के उन्नायक हैं, दूसरी ओर उपन्यासों में आंचलिकता और सामाजिक यथार्थवाद के स्वाभाविक समावेश ने उन्हें अपने समशील लेखकों में सहज ही ऊपर उठा दिया है।

नागार्जुन आधुनिक हिन्दी कविता के वेजोड़ व्यंग्यकार हैं, उनके काव्य में समाविष्ट विचारों की प्रगतिशीलता एवं दलित वर्गों के प्रति व्यक्त आत्मीय संवेदना प्रगतिवादी कवियों में उनका महत्त्वपूर्ण स्थान नियत कर रही है, क्योंकि स्वयं अभावों का आसव पान कर नागार्जुन ने शोषित समाज की पीड़ाओं का गान किया है। इसके साथ ही उन्होंने भारत के पिछले सौ-पचास वर्षों के मजदूर और खेतिहर जनता के निम्नस्तरीय जीवन का इतिहास प्रस्तुत करते हुए इस उपेक्षित और शोषित वर्ग का सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व किया है। कवि ने अपने को कभी इनसे भिन्न नहीं समझा। नागार्जुन का यही खरापन और अकृत्रिम स्वभाव उनकी सबसे बड़ी विशेषता है। कवि ने राजनीति पर भी सतर्क दृष्टि रखी है और निर्भीक हो उसपर लेखनी चलाई है।

ऐसे जागरूक जनकवि के साहित्य पर अभी तक कोई आलोचनात्मक ग्रन्थ प्रकाशित नहीं हुआ था। नागार्जुन के जीवन और साहित्य पर यह प्रथम मौलिक शोध-ग्रन्थ है जिसकी तैयारी के लिए—तथ्य संग्रह करने हेतु—मैं कई बार नागार्जुनजी से मिला हूँ, उनकी साहित्यगत मान्यताओं पर चर्चा की है, मैंने पाया है कि उनके जीवन की जटिलताएँ ही उन्हें एक सफल साहित्यकार बनाने में समर्थ रही हैं, साहित्य में व्यक्त उनकी व्यंग्यीय तिक्तता, आक्रोश, विद्रोही वृत्ति, खरी-पैनी बात सुनाना, दलित समुदाय के प्रति व्यक्त उनकी सहानुभूति नागार्जुन के जीवन में आये अभावों और अनुभवों की ही प्रतिक्रिया है।

फक्खड़ बाबा नागार्जुन बड़े मनमौजी स्वभाव के रहे हैं। इस कारण भी उनकी कई कविताएँ इधर-उधर बिखरी हुई हैं, जिनमें से अब कुछ के मात्र शीर्षक-भर ही उन्हें याद है। प्रवास उनके जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग जो ठहरा····। 'यात्रीजी' यात्रा में काफी कविताएँ अपने थैले में हिलाते-डुलाते फिरे हैं। परिणामस्वरूप दरभंगा-दिल्ली के मध्य कई रचनाएँ यहाँ-वहाँ हो गई हैं—उनमें से जो कभी कहीं प्रकाशित हुई उन्हें पुरानी पत्र-पत्रिकाओं की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फाइलों से, कुछ नागार्जुनजी के मित्रों से—जो इन्हें कंठाग्र हो गयी थी, तथा कुछ को कवि की डायरियों से मैंने संग्रहीत किया है। इनमें अनेक ऐसी कविताएँ भी हैं जिनकी गर्मी और व्यंग्य-प्रखरता के कारण कई सम्पादकगण उन्हें प्रकाशित करना तो दूर रहा उन्हें छूने से भी डरते रहे हैं।

इस ग्रन्थ में जहाँ नागार्जुन-काव्य के भाव एवं शिल्प-विधान पर सविस्तार विचार किया गया है, वहीं उनके समशील साहित्यकारों के मध्य रखकर भी उनका मूल्यांकन किया गया है। शोधग्रन्थ में नागार्जुन प्रणीत सम्पूर्ण काव्य, उपन्यास, बाल-साहित्य, निबंध, स्फुट रचनाएँ आदि पर तो चर्चा की ही गई है, किन्तु साथ ही कवि द्वारा 'यात्री' उपनाम से लिखे मैथिली काव्य और उपन्यासों पर भी अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। मेरा विचार है कि कवि 'यात्री' को स्पष्ट करने के लिए 'नागार्जुन' के हिन्दी काव्य और 'नागार्जुन' को परखने के लिए 'यात्री' कृत मैथिली काव्य का अनुशीलन अपेक्षित था। यदि कोई कवि दो अलग-अलग भाषाओं या बोलियों में काव्य-सृजन करता है तो तब तक उसके सम्बन्ध में व्यक्त कोई मान्यता अधूरी रहेगी जब तक उसके किसी एक ही भाषा या बोली में रचे साहित्य को पढ़कर ही किसी निष्कर्ष पर पहुंचा गया हो। अभी तक चले आते इस अभाव की पूर्ति का प्रयास प्रस्तुत ग्रन्थ से होगा—ऐसी आशा है।

बहरहाल, लम्बे प्रयास के बाद अब यह ग्रन्थ विद्वद्जनों के हाथों में है। विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन ने, प्राणवन्त और सशक्त लेखनी के धनी, प्रखर प्रतिभा-सम्पन्न नागार्जुन के जीवन और साहित्य पर शोध कार्य करने की अनुमति तथा शोधोपाधि प्रदान की, इसके लिए मैं अपनी ओर से कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

मेरी मान्यता है कि जीवित साहित्यकारों पर उनके जीवन काल में कम से कम एक शोधग्रन्थ तो समग्र रूप से तैयार हो ही जाना चाहिए, जिसमें उक्त साहित्यकार से सम्पर्क स्थापित कर उसकी विचारधारा का मूल्यांकन कर एक प्रामाणिक दस्तावेज तैयार कर लिया जाय। मात्र व्यतीत अतीत के 'भक्त साहित्यकारों' को ही अपना आराध्य समझने वाले परम्परा-पोषित कतिपय मान्य आलोचकगण, जो अपने आप में इतने कट्टर हैं कि वे आधुनिक जीवित साहित्य-सेवियों के साहित्य को किंचित भी उदार दृष्टि से नहीं देखते तथा इस सम्बन्ध में जरा भी टस से मस नहीं होना चाहते, को अवश्य ही यह रुचिकर प्रतीत नहीं होगा कि जीवित साहित्यकारों पर शोधकार्य होना चाहिए। पर साहित्य जगत में जिनकी मान्यता स्थापित हो गई है उनके जीवन-काल में ही यदि उनके श्रीमुख से किसी शोधकर्ता को प्रामाणिक जानकारी मिल जाती है तो भविष्य के शोधार्थियों और साथ ही पाठकों के लिए भी वह निःसंदेह बेहद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उपयोगी सिद्ध होगी, इसमें दो मत नहीं। यदि राहुलजी, मुक्तिबोध या बेनीपुरी पर उनके जीवित रहते ही कोई शोध ग्रन्थ तैयार हो गया होता तो आज उसका कितना महत्त्व होता। उसके अभाव में इन विषयों के शोधार्थी अपनी-अपनी शक्ति से उन दिवंगत साहित्यकारों के साहित्य-सरोवर में डुबकी लगाने का प्रयास कर रहे हैं, पर कौन जानता है कि उनमें से कितनों के हाथ शंख लगेंगे और कितनों के हाथ घोंघे। इस सन्दर्भ में स्पष्ट है कि नागार्जुन पर किया गया यह कार्य विशेष रूप में उपयोगी सिद्ध होगा।

कई विश्वविद्यालयों ने नागार्जुन-साहित्य को अपने पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया है, अतः ऐसे जिज्ञासु विद्यार्थियों के लिए भी यह ग्रन्थ पठनीय होगा जो नागार्जुन-साहित्य के अध्येता हैं।

मैंने इस शोध ग्रन्थ की पांडुलिपि प्रकाशनार्थ पटना भेजी थी वहाँ यह अचानक नागार्जुनजी के हाथों में आई। कुछ दिनों बाद बाबा ने, जो न किसी की तारीफ करते हैं और न अपनी प्रशंसा सुनना पसंद करते है, लिखा : "थीसिस मैं देख गया हूँ, मुझे संतोष है, तुमने बड़े अध्यवसाय से सामग्री एकत्र की और उसका नियोजन भी अच्छी तरह से किया है। नागार्जुन के साहित्य का विशद विवेचन तो इसमें है ही साथ ही अगणित सूचनाओं का भी पता चलता है। कवि-कथाकार की विलक्षणताओं का अपूर्व उद्घाटन तो किया ही है उसके स्खलन की ओर भी इंगित कर दिया है, यह अपने आप में बहुत बड़ी बात है, "दोषो वाच्या गुरोः अपि", यह बड़ी ही प्रसिद्ध उक्ति है। संस्कृतज्ञों में भली-भाँति प्रचलित है, गुरुजनों की महज प्रशस्तियाँ ही नहीं उनकी त्रुटियाँ भी सामने लायी जानी चाहिए··तुम्हारी श्रद्धा अंधी नही निकली, यह देखकर मुझे अपार प्रसन्नता हुई है। निश्चय ही यह शोध ग्रन्थ बहुचर्चित होगा, सुधीजन इसे औरों से भी पढ़वाएँगे।"

उक्त ग्रन्थ के लिए हिन्दी साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान बहुभाषाविद्, कवि-उपन्यासकार-लेखक डॉ० प्रभाकर माचवे सचिव, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली ने भूमिका लिखने की कृपा की, इस अनुकम्पा के लिए मैं उनका हृदय से आभारी हूँ। विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के कुलपति परम श्रद्धेय डॉ० शिवमंगल सिंह 'सुमन' ने अपने अत्यधिक व्यस्त कार्यक्रम में से समय देकर ग्रन्थ के लिए आर्शीवाद प्रदान किया, उनकी इस उदारता-सहृदयता के सम्मुख मैं नतमस्तक हूँ।

डॉ० राममूर्त्ति त्रिपाठी, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने में मैं आत्मिक सन्तोष का अनुभव कर रहा हूँ। यह शोध कार्य मैंने प्रो० गणेशदत्तजी चतुर्वेदी, सम्प्रति हिन्दी विभागाध्यक्ष शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नीमच (म० प्र०) के मार्गदर्शन में पूर्ण किया है, उनके प्रति

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आदरांजलि अर्पित करते हुए स्नेह एवं श्रद्धा की मिली-जुली अनुभूति से मेरा हृदय भरा जा रहा है।

श्रीमती सागर देवी भट्ट ने भी इस कार्य में बड़ी सहायता दी है। वे भी मेरे स्नेहदान की अधिकारिणी हैं।

भाई अंकिमचन्द्र ने शोध-प्रवन्ध में अपूर्व सहयोग एवं अथक परिश्रम किया है, जिसके अभाव में इस ग्रन्थ का इतनी जल्दी इस रूप में आ पाना असम्भव ही था, उनके इस सहयोग के लिए मैं बार-बार अनुगृहीत हूँ।

बाबा नागार्जुन को किस रूप में स्मरण करूँ? उन्होंने अपने साहित्यकार से मेरा परिचय कराया, कई दिन पटना और दिल्ली में मुझे साथ रखकर अपने कवि और कथाकार को निकट से समझने का अवसर दिया, इन सबके लिए मैं उनका चिर ऋणी रहूँगा।

१५ जनवरी, १९७४ —प्रकाशचन्द्र भट्ट

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विषय-सूची

दो शब्द ७

प्राक्कथन ९

प्रथम अध्याय—नागार्जुन : जीवन-वृत्त १७-४०

नाम एवं जन्म-तिथि

स्थान

पूर्वजों की वृत्ति

परिवेश

पारम्परिक संस्कार और विद्रोही वृत्ति

बौद्धधर्म में दीक्षित होना

विशिष्ट व्यक्तियों से सम्पर्क

गृहस्थाश्रम में प्रत्यावर्त्तन

लेखन-जीवी बनना

हिन्दी साहित्य में अवतरण की परिस्थितियाँ

सामाजिक और धार्मिक परिस्थितियाँ

विविध परिस्थितियाँ और साहित्यिक पृष्ठभूमि

समाजवादी यथार्थवादी प्रभाव

संक्षिप्त इतिहास एवं हिन्दी साहित्य में प्रवेश

साम्प्रतिक स्थिति और नागार्जुन

व्यक्तित्व के विभिन्न पक्ष

द्वितीय अध्याय—नागार्जुन प्रणीत काव्य : वर्गीकरण एवं भाव-विधान

काव्य-कृतियाँ—परिचय ४१-११२

वर्गीकरण

(१) प्रकृति एवं प्रणयपरक रचनाएँ

(क) प्रकृति चित्रण से युक्त रचनाएँ

(ख) प्रणयपरक रचनाएँ

(२) सामाजिक यथार्थवादी कविताएँ

(३) व्यंग्यपरक रचनाएँ

धार्मिक रूढ़ियों या अँधविश्वासों पर व्यंग्य

सामाजिक स्थितियों पर व्यंग्य

राजनीतिक भ्रष्टाचार एवं नेताओं पर व्यंग्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(४) देश-प्रेम की भावना से ओतप्रोत काव्य
(५) विविध कविताएँ
(अ) श्रद्धाजंलि की भावना से युक्त कविताएँ
(आ) युद्ध से नफरत एवं शांति का समर्थन करनेवाली कविताएँ
(इ) अन्य स्फुट कविताएँ
(ब) खंडकाव्य : भस्मांकुर

तृतीय अध्याय—नागार्जुन-काव्य : शिल्पविधान ११३-१३७
(अ) विविध रूप
(ब) विम्ब विधान एवं प्रतीक
नागार्जुन-काव्य में विम्ब
नागार्जुन-काव्य में प्रतीक
(स) नागार्जुन-काव्य में अभिव्यंजना
(द) शैली और भाषा
(अ) ग्रामीण लोक भाषा के शब्द

चतुर्थ अध्याय—समशील कवियों के वीच नागार्जुन : महत्त्व और मूल्यांकन १३८-१६१
सामाजवादी यथार्थवादी रूप
देशप्रेम में विभोर
श्रम की आराधना एवं शांति का समर्थन
प्रणय सम्बन्धी कविताएँ
गाँधीवाद का प्रभाव
व्यंग्यपूर्ण काव्य
ग्राम-सौन्दर्य एवं प्रकृति-चित्रण
निष्कर्ष

पचम अध्याय—नागार्जुन के कथा-साहित्य का वर्गीकरण और तत्त्वपरक अनुशीलन १६२-२४०
१. रतिनाथ की चाची, २. बलचनमा, ३. बाबा बटेसरनाथ, ४. दुखमोचन, ५. वरुण के बेटे, ६. नई पौध, ७. कुम्भीपाक, ८. हीरक जयन्ती, ९. उग्रतारा, १०. इमरतिया, ११. नागार्जुन के उपन्यासों में देश-काल योजना।

देश-काल
खानपान एवं उपज-सम्बन्धी विवरण
रीतिरिवाज, परम्पराएँ तथा धार्मिक अँधविश्वास
प्राकृतिक सौन्दर्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सामाजिक एवं राजनैतिक स्थिति
लोक गीत एवं आंचलिक शब्द

भाषा-शैली

पात्रानुकूल एवं विषयानुकूल भाषा
हास्य और व्यंग्यपूर्ण भाषा
मुहावरे, कहावतें-लोकोक्तियों एवं लाक्षणिकता से युक्त भाषा
अश्लील गालियों और वर्जित ब्यौरों का प्रयोग
संस्कृतनिष्ठ शब्दों से युक्त भाषा
अन्य भाषा के शब्दों का प्रयोग
आत्म-विश्लेषणात्मक विधि से युक्त नवीन शैली
यथार्थवादी चित्रणों से युक्त वर्णनात्मक भाषा-शैली
भाषा सम्बन्धी अन्य विशेषताएँ

(अ) नाद-युक्तता
(ब) शब्दों को जोड़कर रखना
(स) मानवीकरण
(द) उच्च स्तर के श्रेष्ठ भावों वाले प्रयोग
निष्कर्ष

षष्ठ अध्याय—नागार्जुन का कथा-साहित्य : वर्ण्य और प्रतिपाद्य २४१-२५४
निम्न वर्ग, उच्च वर्ग, नेता वर्ग, नारी वर्ग, साधु वर्ग, युवक वर्ग.
कथा-साहित्य में प्रतिफलित नागार्जुन की विचारधारा

(१) शोषितों का समर्थन और अन्याय का प्रतिकार करने के लिए आह्वान
(२) काँग्रेसियों का विरोध एवं अपने राजनैतिक दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति
(३) नारी कल्याण विषयक विचारधारा
(४) देशभक्ति एवं अंचल स्नेह से युक्त विचारधारा
(५) समाज-सुधार सम्बन्धी विचार

(अ) रूढ़ियों, अँधविश्वासों का खण्डन
(ब) युवकों के प्रति आशावादी दृष्टिकोण
(स) ग्रामीण एवं निर्माण की प्रगतिशील विचारधारा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सप्तम अध्याय—नागार्जुन-समशील उपन्यासकारों के बीच : महत्त्व और वैशिष्ट्य २५५-२७२
आंचलिक विशेषताओं की दृष्टि से
समाजवादी यथार्थवादी दृष्टि में

अष्टम अध्याय—नागार्जुन का मैथिली साहित्य एवं अन्य स्फुट रचनाएँ २७३-२९३

(अ) नागार्जुन का मैथिली साहित्य
(क) मैथिली उपन्यास
(ख) 'यात्री' का मैथिली काव्य
(ब) स्फुट साहित्य
बाल साहित्य
संस्कृत काव्य
एक व्यक्ति : एक युग
अनुवाद एवं विविध लेख

नवम अध्याय—उपलब्धियाँ और देन २९४-३००
सहायक ग्रन्थों की सूची ३०१-३०४
सहायक पत्र-पत्रिकाओं की सूची ३०४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रथम अध्याय

नागार्जुन : जीवन-वृत्त

नाम एवं जन्म-तिथि :

नागार्जुन हिन्दी और मैथिली के प्रगतिशील कवि और कथाकार हैं। उनका पूरा नाम वैद्यनाथ मिश्र है। कवि की जन्मतिथि के सम्बन्ध में यों मान लिया गया है कि १९११ ई० के जून मास की कोई तिथि (ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा) नागार्जुन की जन्मतिथि है। स्वयं कवि को ही अपनी जन्मतिथि के सम्बन्ध में संदेह है, क्योंकि तिथि और वर्ष का लिखित आधार उपलब्ध नहीं है। इतना निश्चित है कि जेठ का महीना था, जैसाकि उनकी नानी से उन्हें मालूम हुआ था। नागार्जुन की माँ चूँकि बहुत पहले ही उठ गयी थीं और पिता लापरवाह किस्म के जीव थे, इसलिए बाद में कोशिश करने पर भी जन्मतिथि का सही पता उन्हें नहीं चल सका। वे अपने माता-पिता की पाँचवीं सन्तान थे, उनके चार भाई-बहनों का देहान्त शैशव में ही हो चुका था। कवि को अपनी सही जन्मतिथि मालूम करने में जन्म-कुण्डली के अभाव के कारण भी असुविधा हुई है। सम्भव है, जन्म-कुण्डली तैयार करना माता-पिता को अशभ लगा हो क्योंकि उनकी लगातार चार सन्तानें नष्ट हो चुकी थीं। माता-पिता और स्वजनों को इसकी बड़ी चिन्ता थी।

हमें ज्ञात हुआ कि नागार्जुन के पिता श्री गोकुल मिश्र ने वैद्यनाथधाम (देवघर), जिला संथाल परगना में जाकर दीर्घजीवी पुत्र की कामना से महीने भर का अनुष्ठान रखा था। इसी साधना के पश्चात् पैदा होने के कारण नागार्जुन का नाम वैद्यनाथ रखा गया। परिवार की बूढ़ी महिलाओं को चिन्ता हुई कि इतना अच्छा नाम रहेगा तो लड़के का अशुभ होगा, इसीसे उन लोगों ने 'ठक्कन' नाम रखा जिससे यह भासित हो कि यह लड़का चार दिनों के लिए आया है और माँ-बाप को ठग कर चला जायगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्थान :

बिहार राज्य का उत्तरी अंचल उत्तर बिहार कहलाता है। दरभंगा, मुजफ्फरपुर, सहरसा आदि कई जिले उत्तर बिहार में पड़ते हैं। प्राचीन काल में इस अंचल को मिथिला जनपद के नाम से जाना जाता था। दरभंगा से उत्तर की ओर नेपाल की तराई का हरा-भरा इलाका अपनी उर्वरता के लिए प्रसिद्ध है। सीताजी का जहाँ जन्म हुआ था वह जनकपुर नगरी इसी दरभंगा से लगे अंचल में अवस्थित है। यह क्षेत्र भी प्राचीन युगों में मिथिला ही कहलाता था। सम्प्रति मिथिला क्षेत्र राजनीतिक तौर पर दो राष्ट्रों में बँटा हुआ है—उसका उत्तरी छोर नेपाल के अन्तर्गत है और दक्षिणी छोर भारत में।

दरभंगा शहर से चौदह-पन्द्रह मील पूरब (जरा उत्तर की तरफ झुका हुआ छोटा-सा ग्राम) 'तरौनी' पंडितों का पुराना बसेरा है। आज भी यह ग्राम विद्या की दृष्टि से प्रसिद्ध है। अन्तर सिर्फ इतना पड़ा है कि पहले तरौनी के ब्राह्मण बुद्धिजीवी संस्कृतज्ञ थे, अब संस्कृत के बदले आधुनिक शिक्षा-क्रम में अँग्रेजी और हिन्दी उनकी शिक्षा के मुख्य माध्यम हैं।

श्री वैद्यनाथ मिश्र (नागार्जुन) के पिता-पितामह तरौनी के रहनेवाले थे, इसीसे पितृग्राम तरौनी कहलाता है; परन्तु वह ननिहाल सतलखा नामक ग्राम में पैदा हुए थे जो पोस्ट मधुबनी, जिला दरभंगा में था। औपचारिक तौर पर, जैसाकि अधिकांश व्यक्तियों के साथ होता है, इनका भी जन्म-स्थान तरौनी ही लिखा जाता रहा; क्योंकि पिता के गाँव को ही जन्मभूमि के तौर पर उल्लेख करने की प्रथा चली आयी है।

पूर्वजों की वृत्ति :

मिथिला के ब्राह्मणों की वंश-पंजिका (खानदानी रजिस्टर) बड़े ही सुव्यवस्थित तौर पर सुरक्षित है। इससे ही वंश-परम्परा का पता लगाने में सुविधा हुई। मैथिल ब्राह्मणों की आनुवंशिक पंजी-परम्परा का आरम्भ १४वीं शताब्दी में हुआ था। तब से लेकर अब तक इससे 'मिश्र वंश' के दसियों महामहोपाध्याय विद्वानों का उल्लेख पाया जाता है। इन विद्वानों को अपने समकालीन राजाओं से, यहाँ तक कि मुर्शिदाबाद के नवाबों से भी, वृत्ति के तौर पर काफी भू-सम्पत्ति मिलती रही है। यह जायदाद ब्रिटिश शासन-काल तक अपने अल्पतम रूपों में बची रही। दर्शन और व्याकरणशास्त्र का अध्ययन-अध्यापन ही पहले युगों में इन ब्राह्मणों का मुख्य विद्या-व्यसन था, बाद में इनके पूर्वजों में ज्योतिष की जानकारी प्रमुख हो उठी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वाचस्पति (अभिनव) और रुचिपति आदि कई महामहोपाध्यायों का उल्लेख नागार्जुनजी के पूर्वजों में मिलता है। वृत्ति की सुविधा से ही इनके पूर्वज तरौनी अंचलों में आकर बसे होंगे। इन लोगों का गोत्र 'वत्स' है और कुल की शाखा 'पलिवाड़ समौल' थी। इससे यह सूचित होता है कि सम्भवतः दो शताब्दी पहले पूर्वजों का निवास-स्थान 'समौल' नाम के ग्राम में था।

घराने में छोटा भाई होने के कारण नागार्जुन की पिछली चार-पाँच पुश्तों के पूर्वज (पिता-पितामह-प्रपितामह) अल्पपठित रह गये। वे गाँव में रहते हुए अपने अग्रजों के परिवारों की निगरानी करते थे, और अपनी खेती-बारी में मस्त रहते थे। वस्तुतः उनका सम्पर्क विद्या से छूट कर धरती से स्थापित हो गया था। नागार्जुन के प्रपितामह का नाम था परसमणि मिश्र, पितामह का नाम था छत्रमणि मिश्र और पिता थे— गोकुल मिश्र। ये तीनों ही अल्प-पठित, किन्तु ईमानदार स्वभाव के लोग थे। पिता गोकुल मिश्र (गोकुलानन्द या गोकुलनाथ) भी अपने तीनों भाइयों में छोटे थे। इनकी प्रकृति में लापर-वाही, घुमक्कड़ी और दायित्वहीनता परिलक्षित होती थी। इन्होंने जमकर कभी खेती-बाड़ी की हो, इस बात का सबूत किसी से नहीं मिला। हाँ, सचाई, साहस, पर-दुःखकातरता और मस्ती गोकुलनाथजी के प्रकृत गुण थे।

नागार्जुन की माँ—उमादेवी—सीधे-सादे ढंग की ग्रामीण महिला थीं। अधेड़ उम्र में ही उनका देहान्त हो गया। अपने बाद छः सन्तानों में से केवल एक को ही वे शेष छोड़ गयी थीं, और वे थे—वैद्यनाथ मिश्र अर्थात् कवि श्री नागार्जुन।

पिता के जीवन और जीविका का उल्लेख करते समय 'महिषी' ग्राम की याद आना सहज है। कोसी नदी की छोटी-सी शाखा धेमुड़ा नदी के किनारे बसा हुआ यह गाँव नागार्जुन के बचपन का एक विशेष स्मृति-स्थान रहा है। पिता श्री गोकुल मिश्र को उनके नाना से मिली हुई जमीन की देख-रेख के सिलसिले में अक्सर 'महिषी' में रहना पड़ता था। वहाँ की जमीन अपनी उर्वरता के लिए विख्यात है। मातृहीन बालक (वैद्यनाथ) ने अपने पिता के साथ वहाँ कई वर्ष बिताये।

परिवेश :

नागार्जुन के आसपास संस्कृत पाठशालाओं और अँग्रेजी (मिडिल) स्कूलों में पढ़ने वाले हमउम्र लड़कों का जमघट सहज ही पढ़ाई की ओर रुचि जाग्रत करनेवाला था। तरौनी ग्राम की यह विशेषता समूची मिथिला में चर्चित रही है। बालक वैद्यनाथ मिश्र को अँग्रेजी स्कूल में न पढ़ा सकने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की विवशता पिता को सालती रहती थी। परन्तु बिना किसी झमेले के संस्कृत पढ़वाकर पुत्र को विद्वान बनाने का संकल्प श्री गोकुल मिश्र का कभी शिथिल नहीं पड़ा। फिर उन्हें यह भी तो पता था कि कुशाग्र बुद्धि वाले ब्राह्मण कुमार को पढ़ाई के लिए पूरी छात्रवृत्ति देने वाले सद्गृहस्थों की मिथिला में कमी नहीं है। वे प्रायः कहा करते थे, "सेंत-मेंत में लड़का पढ़कर तैयार हो जायगा, अपनी तो एक कौड़ी नहीं लगेगी। उल्टे पढ़ाई के दिनों में भी चाहेगा तो हमारी मदद करता रहेगा।"

तरौनी ग्राम में संस्कृत की छोटी-बड़ी तीन पाठशालाएँ थीं। दो लोअर प्रायमरी स्कूल (दर्जा दो तक), एक अपर प्रायमरी (दर्जा ४ तक) और कुछ दूर मिडिल स्कूल (दर्जा ७ वाला) पड़ता था।

उन दिनों छोटी जातियों में विद्या का प्रचार बिल्कुल नहीं था। ऊँची जातियों में भी विद्या के प्रति तीव्र अभिरुचि नहीं थी। तरौनी के ब्राह्मण हर हालत में अपने बालकों को पढ़ाने-पढ़वाने के लिए आमादा रहते थे। अँग्रेजी माध्यम वाली शिक्षा का प्रवेश अभी दस-पन्द्रह साल पहले ही हुआ था। लेकिन तरौनी वालों का संस्कृत में गहरा अनुराग था। पास-पड़ोस के श्रीमन्त (भू-स्वामी) संस्कृत के इन छात्रों से अपने कल्याण के लिए चंडी-पाठ करवाते थे, और दुर्गा-पूजा में नौ दिनों के चंडी-पाठ की दक्षिणा के तौर पर अठारह आने देते थे। इतना ही नहीं, विजयादशमी के दिन इन बटुक-पुरोहितों को जजमानों की तरफ से भोजन भी मिलता था।

दक्षिणास्वरूप प्राप्त अठारह आनों में से सोलह आने पिता गोकुल मिश्र ले लेते थे और पुलकित होकर अपनी उदारता का संकेत देते हुए पूरी दुअन्नी यथेच्छ खर्च करने के लिए पुत्र वैद्यनाथ के पास छोड़ देते थे।

पारम्परिक संस्कार और विद्रोही वृत्ति :

बचपन में प्राप्त संस्कारों का प्रभाव जीवन भर बना रहता है। नागार्जुन के साथ भी ऐसा ही हुआ। उनके पिता श्री गोकुल मिश्र अल्पपठित थे, इसलिए निम्न जातियों के हमउम्र लोगों से उनका मिलना बहुत ही सहज था। सहज मिलन का यह संस्कार बालक ने भी ग्रहण कर लिया। निम्न जातियों के बच्चों में घुलमिलकर बैठने या खेलने से बालक नागार्जुन को कभी किसी ने मना नहीं किया। ऊँची जातियों के आडम्बर अनदेखे ही रह गये थे। यह भी आगे चलकर अच्छा ही प्रमाणित हुआ। हम देखते हैं कि उच्च जातियों के परिवारों से आये समाजवादी-साम्यवादी नेताओं के नखरे कहीं-न-कहीं प्रकट हो ही जाते हैं—अन्दर का दमित आभिजात्य संस्कार छलक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ही पड़ता है। इन सारी दिखावटी बातों से कवि-कथाकार नागार्जुन बचे रहे हैं। इसी का प्रभाव है कि आडम्बर और प्रदर्शन से उन्हें बेहद नफरत है।

छात्र-जीवन की एक घटना का उल्लेख करना यहाँ उचित होगा जो कवि की विद्रोही वृत्ति पर प्रकाश डालती है। अपने छात्र-जीवन में काशी के जिस छात्रावास में नागार्जुन रहते थे, उसकी निचली मंजिल धर्मशाला की तरह इस्तेमाल होती थी। यह दरभंगा की बड़ी महारानी 'लक्ष्मीश्वरी' के नाम पर थी। 'ग्रहण-स्नान' के दिनों में यहाँ बड़ी भीड़ हो जाती थी। मिथिला के ग्रामांचलों से आये हुए तीर्थ-यात्रियों से सारी जगहें भर जाती थीं। एक बार की बात है कि तीर्थ-यात्रियों के चले जाने के कई दिनों बाद लाश की विकट दुर्गन्ध फैल गयी। ऊपर मंजिलों में परम्परावादी संस्कृत छात्रों की ही बहुतायत थी। विकट दुर्गन्ध से उद्विग्न होने पर भी किसी ने उधर ध्यान नहीं दिया। सहज कौतूहलवश छात्र नागार्जुन ने निचली मंजिल की उस धर्मशाला के एक-एक कमरे को खोल-खोल कर देखना शुरू किया—कोने वाले कमरे में किसी बुढ़िया की अर्ध-नग्न अकड़ी हुई देह दिखाई पड़ी। उसका अंग-अंग ऐंठ गया था। आसपास गन्दगी फैली थी। लगता था, तीन-चार दिनों पहले बुढ़िया के प्राण-पखेरू उड़े थे।

छात्र वैद्यनाथ (नागार्जुन) ने कमरा फिर से बन्द कर दिया। ऊपर की मंजिलों के छात्रों से उसने जिक्र तक नहीं किया। पड़ोस से अपनी ही उम्र के किसी सहपाठी को बुला लिया। फिर एक चादर में बुढ़िया की लाश डालकर उसे दोनों मिलकर मणिकर्णिका घाट तक उठा ले गये।

दरभंगा के उन्हीं प्रख्यात महाराजा लक्ष्मीश्वर सिंह की छोटी महारानी (लक्ष्मीवती) उन दिनों 'काशी-वास' कर रही थीं। दान-पुण्य के लिए वह बड़ी इच्छा रखती थीं। प्रत्येक लावारिस मृतक की अन्तिम क्रिया के लिए उनके दरबार में एक निश्चित राशि नियत थी। इस वृद्धा के दाह-संस्कार के लिए ग्यारह रुपये मिले थे, और छात्र वैद्यनाथ ने स्वयं अपने हाथों दाह-संस्कार किया था। एक अज्ञात मृतक का दाह-संस्कार करने के कारण उस छात्रावास के अधिकांश छात्र और एक-दो बुजुर्ग अध्यापक भी इस तरुण छात्र से नाराज हो गये। उनका कहना था—"इसे क्या पड़ा था। राजा हरिश्चन्द्र के डोम ने, लगता है, इस लड़के के माथे पर पूर्व जन्म में हाथ रखा होगा।"

ये ही संस्कार भावी जीवन की भूमिका के रूप में नागार्जुन के हृदय पर ऐसा स्थायी प्रभाव जमा गये कि जिनके कारण आडम्बरों, रूढ़ियों और विषमताओं के विरुद्ध उनकी लेखनी जमकर चली। तरुणाई में इसी प्रकार सामाजिक संकीर्णताओं के और भी विकराल आभास मिलते रहने से वैद्यनाथ के मन में विद्रोही भाव-भूमि उभरती गयी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

माँ के प्रति पिता के कठोरतम वर्तावों से दिल को भारी ठेस लगी थी, जिसका आभास हमें 'रतिनाथ की चाची' के पृष्ठों से मिलता है। शायद, इसी ने आगे चलकर पारिवारिक निर्मोहिता का रूप ले लिया हो। तेरह वर्ष की उम्र के बाद घर का लगाव बिल्कुल हल्का पड़ गया। प्रथमा परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद गाँव छूट गया। व्याकरण मध्यमा के दो वर्ष इन्होंने 'गोनौली' के संस्कृत विद्यालय में बिताये। फिर एक साल पछगछिया (जिला सहरसा) में, तत्पश्चात् चार साल काशी में पढ़ते रहे। फिर एक वर्ष ये कलकत्ता में पढ़े। इसी बीच तरुण वैद्यनाथ मिश्र का विवाह भी हो गया।

इन दिनों पत्नी के सान्निध्य में तीन-चार महीने रहने का अवसर मिला होगा। फिर सन् १९३४ में निकलने के बाद नागार्जुन सन् १९४१ में वापस लौटे।

नागार्जुन का संस्कृत का अध्ययन साहित्य शास्त्र में आचार्य तक हुआ था। काव्य-सृजन का चस्का पहले ही पड़ चुका था। काशी पहुँचने से पहले ही संस्कृत भाषा में अनुष्टुप, वसन्ततिलका, पृथ्वी, शिखरिणी आदि छन्दों का अंदाज मिल गया था। समस्या-पूर्ति की शैली में वैद्यनाथ मिश्र के अन्दर जनमे कवि ने भावों को बाँधना सीख लिया था। इस सिलसिले में नागार्जुन अपने प्रथम काव्यगुरु श्री अनिरुद्ध मिश्र को कभी नहीं भूलते। काशी में कविरत्न सीताराम झा से परिचित होने पर भाषा, छन्द आदि का अभ्यास सहज हो गया। मैथिली और हिन्दी की आरंभिक रचनाएँ, सुना है किसी मित्र परिवार में, अब भी सुरक्षित हैं। नागार्जुन संस्कृत कविताओं के लिए समस्या-पूर्ति की प्रतियोगिता में कई बार पुरस्कृत हुए थे। नाटकों में प्राकृत, मागधी आदि भाषाएँ आकर्षित करने लगीं। लगे हाथ पालि भाषा का भी अभ्यास हो चला। इसी क्रम ने आगे उन्हें लंका पहुँचा दिया।

वैसे नागार्जुन के काव्य-निर्माण की प्रवृत्तियों से गुरुजन प्रसन्न नहीं थे। मिथिला के पंडित या काशी के पंडित काव्य-निर्माण की प्रवृत्ति को उपेक्षा से देखते थे। संस्कृत पढ़ने वाले छात्रों में उसी की प्रशंसा की जाती है जो व्याकरण और न्यायशास्त्र की चर्चा में प्रतिद्वन्द्वियों को पछाड़े। किन्तु नागार्जुन का रुझान कविता की ओर था। इसी कारण गुरुजनों की यह राय थी कि "लड़का बिगड़ गया है, दिन-रात 'रजनी सजनी' में लगा रहता है। बुद्धि को प्रखर बनाने की तरफ इसका ध्यान ही नहीं है। कविताओं के चलते प्रज्ञा फुरफुरी हो गयी··· है।" लगता है, गुरुजनों का कड़ा अनुशासन मान कर यदि तरुण वैद्यनाथ चला होता तो समाज को एक प्रखर परम्परावादी पंडित-पछाड़ विद्वान प्राप्त होता, किन्तु हिन्दी को तो एक प्रखर व्यंग्यकार के रूप में नागार्जुन मिलना था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काशी के उस पंडिताऊ माहौल से इस तरुण पंडित का मन अवश्य ही ऊब गया होगा, तभी तो भाग कर वह कलकत्ता चला गया। कलकत्ता के प्रति इस आकर्षण में शायद आर्थिक असुविधा का भी योग रहा हो।

बौद्ध-धर्म में दीक्षित होना, लंका-निवास, बौद्धसाहित्य और धर्म का अनुशीलन :

नागार्जुन सन् १९३६ के अन्त में सिंहल द्वीप चले गये। इससे पहले दो-ढाई वर्ष पंजाब, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, गुजरात, काठियावाड़ आदि प्रदेशों की घुमक्कड़ी (निरुद्देश्य यात्रा) पूरी कर ली गयी थी। वापस पंजाब आकर आचार्य वैद्यनाथ मिश्र ने आठ-दस महीनों तक मासिक 'दीपक' का सम्पादन किया और स्वामी केशवानन्द से आशीर्वाद लेकर दक्षिण की ओर बढ़ गये।

केलानिया (लंका) कोलम्बो के निकट है। वहाँ 'विद्यालंकार परिवेण' नाम का एक पुराना विद्यापीठ है जो बौद्ध जगत में विख्यात है। महापंडित राहुल सांकृत्यायन, भदन्त आनन्द कौशल्यायन, आचार्य जगदीश कश्यप, भदन्त शान्ति भिक्षु आदि भारतीय बौद्ध विद्वानों ने केलानिया में ही बौद्ध-धर्म की दीक्षा ग्रहण की थी। गुरु भाइयों की इसी मंडली में हमारे 'भिक्षु नागार्जुन' भी अन्यतम रहे हैं।

वैद्यनाथ मिश्र को संस्कृत विद्या की जानकारी सिंहल द्वीप में बहुत काम आयी। 'विद्यालंकार परिवेण' में वह बौद्ध संन्यासियों को संस्कृत माध्यम से व्याकरण और दर्शन आदि पढ़ाते थे, और स्वयं वहाँ के आचार्यों से पालि भाषा के माध्यम से बौद्ध-दर्शन का अध्ययन करते थे। नागार्जुन लगभग दो वर्षों तक लंका में रहे। यह सारा का सारा समय अध्यापन एवं अध्ययन में बीता।

लंका रहते हुए इन्हें अँग्रेजी की कामचलाऊ जानकारी अनिवार्यतः हासिल करनी पड़ी।

'विद्यालंकार' के आचार्य, उपाचार्य, प्राध्यापक और छात्र नहीं चाहते थे कि यह भारतीय विद्वान उन्हें छोड़कर वापस हिन्दुस्तान लौट जाए। संस्कृत माध्यम से पढ़ाने वाले भारतीय विद्वानों की लंका, बर्मा आदि बौद्ध देशों में आज भी बड़ी कद्र है। प्राचीन भारत की सांस्कारिता जितनी कुछ उन देशों को प्राप्त हुई थी, उसे वे देश पर्याप्त अंशों में सुरक्षित रखे हुए हैं।

बौद्धों का 'समता वाला सिद्धान्त' काशी में रहते हुए ही नागार्जुन को मालूम हो चुका था। अगले वर्षों में पालि भाषा से अनूदित बौद्ध ग्रन्थों का पारायण करने का चस्का लगा। कलकत्ता में रहते हुए नागार्जुन ने पालि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भाषा के उन दो-चार अनूदित बौद्ध-ग्रन्थों का अवलोकन कर लिया था, जो बंगला लिपि के माध्यम से प्रकाशित हुए थे। नागार्जुन को प्राकृत भाषा की जानकारी भी अच्छी थी, पीछे जैन मुनियों से होने वाले सम्पर्कों का यह भी एक कारण था। श्री रत्नचन्द्रजी ने वैद्यनाथ मिश्र को कुछ काल के लिए तरुण जैन मुनियों के अध्यापनार्थ मौखी (काठियावाड़) भेज दिया था। वहाँ मिश्रजी स्वास्थ्य-सम्बन्धी मजबूरियों के कारण कुछ ही समय रह पाये। पालि ग्रन्थों में संचित ज्ञानराशि का अवगाहन उनका मुख्य उद्देश्य हो गया। इसी उद्देश्य से वह लंका पहुँच गये। नागार्जुन द्वारा संन्यास की दीक्षा लेने का मूल कारण वैराग्य नहीं था। ज्ञानार्जन एवं देश-दर्शन की लालसा ही लंका-प्रस्थान का मुख्य कारण थी।

राहुलजी की प्रेरणा से बिहार सरकार ने सन् १९३८ के आरम्भ में नागार्जुन को तिब्बत जाने वाले अनुसंधान कार्यों के एक प्रतिनिधिमंडल में लाहसा भेजना निश्चित किया। तदनुसार सिंहल से वह भारत लौट आये।

विशिष्ट व्यक्तियों से सम्पर्क :

सिंहल प्रवास के दिनों में ही नागार्जुन को वामपंथ की हवा लग गयी थी। 'लंका सम-समाज' के विप्लवी नेताओं से मिलना-जुलना शुरू हो गया था। भारतीय किसानों के महान नेता स्वामी सहजानन्द से पत्र-व्यवहार चल रहा था। दूसरी ओर राहुलजी भी उन्हें कई वर्षों से तिब्बत के प्राचीन महामठों की ओर प्रेरित कर रहे थे। लेकिन भिक्खु नागार्जुन को भूमिहीन खेत-मजदूरों और गरीब किसानों का संघर्ष अपनी ओर खींच ले गया।

स्वामी सहजानन्द के बाद दूसरे जिस जननायक से नागार्जुन का सम्पर्क हुआ था वह थे नेताजी सुभाषचन्द्र बोस। परन्तु यह सम्पर्क अल्पकालीन रहा। दोनों के मध्य कुछेक पत्रों के आदान-प्रदान हुए थे।

नागार्जुन की दूसरी गिरफ्तारी फारवार्ड ब्लाक की ओर से छपने वाले एक युद्ध-विरोधी परिपत्र के सिलसिले में हुई थी। ब्रिटिश सरकार भारतीय नेताओं के मतामत की परवाह किये बिना ही देश की जनशक्ति और धन-शक्ति को द्वितीय विश्वयुद्ध में झोंके जा रही थी। वामपंथियों और प्रखर राष्ट्रवादियों का मुख्य नारा था—'न एक पाई न एक भाई।' स्वयंसेवकों के अनेकानेक शिविर चलाना, किसान-संघर्षों की व्यवस्था करना, प्रचार के लिए साहित्य की तैयारी, कार्यकर्त्ताओं के निर्वाह की व्यवस्था—यह सब काम भिक्खु नागार्जुन ने उन दिनों किया। वह सन् '४० का जमाना था। गाँधीजी की तरफ से व्यक्तिगत तौर पर चुने हुए सत्याग्रही मालाओं से लद-लद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर अपने आपको गिरफ्तार करवा रहे थे। वामपंथी और प्रखर राष्ट्रवादी प्रवृत्तियों के युवक उन दिनों बहुत व्यस्त रहते थे··· फिर बिहार का वह किसान-आन्दोलन, जिसकी प्रसिद्धि पूरे देश में थी।

महापंडित राहुलजी दूसरी बार जब रूस-यात्रा से लौटे तो किसान-संघर्ष में कूद पड़े। अमवारी (जिला छपरा) के अत्याचारी भूस्वामी के खिलाफ वहाँ के गरीब खेतिहर खड़े हो गये थे। राहुल बाबा ने उनका नेतृत्व किया। जमींदार के लठैतों ने उनके सिर पर गहरा घाव कर दिया। इतनी चोट, ताहम जमींदारों की पक्षधर तत्कालीन सरकार के सिपाहियों ने राहुलजी को गिरफ्तार कर लिया। फलतः आन्दोलन का रूप और भी उग्र हो गया। तब नागार्जुन ने नेतृत्व का भार सम्भाल लिया। आखिर उन्हें भी बाहर नहीं रहने दिया गया। उन्हें छपरा और हजारीबाग सेन्ट्रल जेल में दस महीने रहना पड़ा। उन दिनों नागार्जुनजी की इस जेल-यात्रा के साथी थे—किसान-सभा के प्रसिद्ध नेता पंडित कार्यानन्द शर्मा, समाजवादी नेता पडित श्यामनन्दन मिश्र, आदि।

इनके अतिरिक्त नागार्जुनजी प्रेमचन्द, निराला, मैथिलीशरण गुप्त आदि साहित्यकारों के गहरे सम्पर्क में भी आये।

दूसरी बार गुप्त रूप से परिपत्र छपवाने और उन्हें वितरित करने के आरोप में, भूमिगत (अंडरग्राउन्ड) स्थिति में, नागार्जुनजी को गिरफ्तार किया गया। इस बार उन्हें भागलपुर सेन्ट्रल जेल में आठ महीने रहना पड़ा। वहीं उनके वृद्ध पिता ने उनसे मुलाकात की। पिता ने रो-रो कर जेलर से कहा था—"यह लड़का वर्षों से भागा हुआ है। बुढ़ापे में हमें तो सता ही रहा है पर एक 'बछिया' की पीठ में छुरा घोंप कर बाबाजी बना घूमता है। इस कसाई को जब आप जेल से रिहा करने वाले हों तब तार देकर मुझे बुलवा लेंगे। हम चार जने मिलकर आयँगे और इसे पकड़कर घर ले जायँगे।"

गृहस्थाश्रम में प्रत्यावर्तन :

सचमुच ही, दुबारा जेल के फाटक पर हाजिर होकर पिता ने नागार्जुन को अपनी हिरासत में ले लिया। अब तक दो बार के जेल-जीवन मार्क्सवादी विचारधारा से परिचित कराने में सहायक रहे। यही कारण था कि पिता के साथ नागार्जुन गाँव जरूर पहुँचे, पर उनका दिल-दिमाग अभी स्थिर नहीं हो पाया था। उनमें मार्क्सवादी विचार घूम रहे थे।

पत्नी (अपराजिता देवी) के प्रति हमेशा उनके दिल में सहानुभूति और करुणा के भाव थे। पिता के प्रति जो कोप नागार्जुनजी के मन में था वह भी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धुल गया था। अब कवि व्यक्तिगत सम्बन्धों से आगे बढ़कर सामाजिकता के व्यापक छोर छू रहा था। उसके अन्दर बुद्ध तो बैठे ही थे, अब मार्क्स भी आ गये।

गृहस्थाश्रम में लौटने पर ससुराल वालों ने बड़ी धूमधाम से नागार्जुनजी का स्वागत किया। महीनों बाहर न निकलने देने का फरमान जारी कर दिया। दो-एक रोज के लिए भी पड़ोस के शहरों (मधुबनी, दरभंगा) की ओर जाने पर सुरक्षा सन्तरी साथ कर दिये जाते थे।

किन्तु तरौनी के दकियानूस पंडितों ने नागार्जुन के गृहस्थाश्रम में लौटने पर बड़ा हो-हल्ला मचाया। उन पंडितों का कहना था, "एक तो संन्यास से वापस आया और दूसरा समुद्र पार गया, तीसरी बात कि बौद्धधर्म में दीक्षित हुआ। बौद्ध तो आधा मुसलमान होता है—आधा ईसाई। वे गाय भी खाते हैं और सूअर भी। यह लड़का ब्राह्मणों के समाज में फिर से वापस लिया ही नहीं जा सकता।"

किन्तु हमउम्र युवक पंडितों ने नागार्जुन की वापसी का सुदृढ़ समर्थन किया और बूढ़े पंडितों की दाल नहीं गलने दी।

वह ऐसा युग था कि भिक्खु नागार्जुन जैसे विप्लवी युवक के पीछे-पीछे जासूस घूमते ही रहते थे। बेचारे पिता (गोकुल मिश्र) पुत्र की इन खूबियों से बेखबर थे। मिश्रजी को अपने पुत्र के प्रत्यावर्तन पर प्रसन्नता भी थी और क्षोभ भी था कि "इतने वर्षों तक करता क्या रहा। इसके साथियों में फलां-फलां नौकरी करके अपने बाल-बच्चों का निर्वाह कर रहे हैं, यह तो वैसा का वैसा ही रहा। दो बार जेल की सजा भुगत आया है तो शायद अब नौकरी भी मुश्किल से ही मिलेगी। यह क्या बहू को खिलायेगा और क्या मेरी सेवा करेगा!"

लेखन-जीवी बनना :

पिता की इस खीज के जवाब में पुत्र ने आठ-आठ पेजों वाली दो छोटी 'कितबिया' मैथिली की लोकप्रिय शैली में छपवायी। अब वह किताबों का बण्डल लेकर निकल जाते। नागार्जुन का यह क्रम ही बन गया था। ट्रेन के मुसाफिरों में बेच-बेच कर डेढ़-दो दिनों बाद वे घर वापस आते। ढेर-सी रेजगारियाँ पिता के आगे समर्पित कर देते। तब बूढ़े बाप को बेटे की एक नई खूबी का पता चला। अगले महीनों में कई बार पिता ने कहा था, "यह काम तो मैं भी कर सकता हूँ, हाट-बाजार में जाकर दस-बीस कितबिया जरूर बेच आऊँगा। अपना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तम्बाकू और घर की सब्जी का खर्च चलेगा। वहू यहीं रहेगी। तुम बाहर चले जाओ। अच्छी-भली नौकरी ढूँढ़ लो।"

मगर अच्छी-भली नौकरी पुत्र को बिहार में नहीं मिली न मिलनी थी।

अन्ततः जीविका के संधान में नागार्जुन को पंजाब जाना पड़ा। बाद में पत्नी अपराजिता देवी को भी लुधियाना ले गये। वहाँ उपाध्याय आत्मारामजी महाराज (जैन मुनि) ने अपने साहित्यिक कार्यों के लिए नागार्जुनजी को नियुक्त कर लिया। इस बार भी प्राकृत की जानकारी बहुत काम आयी।

सन् १९४३ में नागार्जुनजी के पिता का स्वर्गवास हो गया, तब से गाँव वाला घरेलू दायित्व अपराजिताजी ने सम्भाल लिया। जमीन-जायदाद के नाम पर कुल मिलाकर १० कट्ठा भूमि शेष बच रही थी। जीवन-यापन के लिए यह नगण्य थाती थी, परन्तु सामाजिक दृष्टि से अन्यान्य सुविधाएँ रहने के कारण पत्नी का मन गाँव में ही रम गया।

अपराजिताजी स्वयं एक सम्पन्न पिता की पुत्री हैं। उनकी यह लालसा अभी तक पूरी नहीं हुई कि "धान की खेती के लिए दो एकड़ अच्छी जमीन अपने पास होती।"

नागार्जुनजी का यह हाल है कि तीन-तीन वर्ष बीत जाते हैं और वे दरभंगा के अपने ग्रामांचल में पहुँच नहीं पाते। उनके कुटुम्बियों और ग्रामीण मित्रों का कहना है, "ऐसे गृहस्थ से संन्यासी ही अच्छा।"

हिन्दी साहित्य में अवतरण की परिस्थितियाँ :

नागार्जुन की रुचि कविता की ओर छात्र-जीवन से ही रही। नागार्जुन की सर्वप्रथम प्रकाशित रचना 'राम के प्रति' कविता थी जो सन् १९३५ में 'विश्वबन्धु' साप्ताहिक (लाहौर) में छपी।[1] इसी समय मैथिली भाषा में उनकी कुछ कविताएँ और उपन्यास प्रकाशित हुए। मैथिली की प्रथम प्रकाशित रचना 'मिथिला' (मासिक, लहेरियासराय) में १९३० में छपी थी। मैथिली और संस्कृत से लेखन आरम्भ कर नागार्जुन हिन्दी साहित्य में अवतरित हुए।

साहित्यकार जिस समाज में रहता है, जिस काल में विचरण करता है, उस सारे वातावरण का प्रभाव उस पर पड़ता ही है, वह चाहे या न चाहे परिस्थितियाँ प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उसके हृदय को प्रभावित करती ही हैं। "इस बात में अधिक विवाद की गुंजाइश नहीं है कि जिस विशिष्ट राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक तथा साहित्यिक परिवेश में साहित्यकार

१. History of Maithili Literature by Jaikant Mishra.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की चेतना का प्रस्फुटन और विकास होता है उससे प्रभावित हुए बिना वह नहीं रह सकता।"[१] नागार्जुन पर भी देश की विभिन्न परिस्थितियों ने प्रभाव डाला।

नागार्जुन जिस काल में साहित्य जगत में प्रविष्ट हुए वह काल भारत के इतिहास में जनता की करवट लेती हुई जागृति का काल था। देश पराधीन था। देश की पराधीनता और उससे छुटकारे के लिए किये जा रहे प्रयासों की विभिन्न प्रतिक्रियाएँ इस भावुक कलाकार के हृदय पर पड़ीं। देश में गाँधीजी के नेतृत्व में अहिंसक आन्दोलन चल रहा था, पर जनता इसे ठीक से न समझने के कारण कभी-कभी हिंसक मार्ग भी अपना लेती थी, जैसे चौरा-चौरी की घटना।

अँग्रेजों का दोहरा शोषण सतत जारी था। गृह-उद्योगों का विनाश और करों का बोझ। पाकिस्तान के निर्माण में भी अँग्रेजों ने राजनीतिक दृष्टि से भारतीय जनता का शोषण ही किया। अँग्रेजों की इस दोहरी शोषण नीति का सर्वाधिक शिकार भारतीय किसान हुआ। अँग्रेजों ने भारत में जमींदारों को जमीन का स्थायी स्वामी बना दिया और उन्हें किसानों को बेदखल करने का अधिकार दे दिया। किसान बेचारे जमींदारों के मात्र किरायेदार बन कर रह गये। "भारतीय किसान की गरीबी का कुछ अनुमान इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि सन् १९३१ में उसकी औसत वार्षिक आय लगभग ४२ रुपये थी।" एक जागरूक कलाकार के नाते नागार्जुन पर अपने देश के किसानों की दुर्दशा का प्रभाव पड़ा, जमींदारों के शोषण और अत्याचारों की घटनाओं ने लेखक के भावुक हृदय को झकझोर दिया। बिहार के किसान आन्दोलन का नेतृत्व भी नागार्जुन ने सम्हाला और वे पीड़ित वर्ग के दर्द को अपना दर्द समझ उसे साहित्य में व्यक्त करने लगे।

यह युग औद्योगिक अशान्ति का युग था। मजदूर वर्ग में भी अपनी निम्न स्थिति से उठ खड़े होने के लिए मालिकों से संघर्ष करने की चेतना जग चुकी थी। पं० जवाहरलाल नेहरू के अनुसार, सन् "१९२८-२९ के वर्ष मजदूरों के झगड़े और हड़तालों तथा औद्योगिक अशान्ति के वर्ष थे।"[२]

इसी के बाद १९३५ में प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना हुई। रूस में पहले ही मार्क्सवादी विचारधारा अपना प्रभाव स्थापित कर चुकी थी। भारत में प्रगतिवादी विचारधारा के सूत्रपात से और प्रेमचंद द्वारा उसका समर्थन करने से नागार्जुन का कवि-हृदय भी उसी ओर झुकने लगा। इस

१. 'युगधारा' : प्रकाशकीय वक्तव्य।
२. नेहरू की आत्मकथा, पृ० १८७-८८।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समय तक उनका कवि लेखन में सशक्त हो चुका था। इस प्रकार नागार्जुन के हृदय में एक ओर शोषित मजदूरों और किसानों की पीड़ा उभर रही थी, दूसरी ओर राज्यों में काँग्रेसी मंत्रिमण्डल निर्मित हो रहे थे, किन्तु ये मंत्रिगण जमींदारों की शोषण-नीतियों का प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से समर्थन कर रहे थे। उत्तर प्रदेश और विहार के किसानों-मजदूरों की स्थिति इसीलिए अधिक खराव थी। इन सवका प्रभाव नागार्जुन के हृदय पर पड़ा। 'रतिनाथ की चाची', 'वलचनमा', 'वावा कटेसरनाथ' सव में तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों एवं काँग्रेसियों के उच्चवर्गीय तवकों से अपवित्र गठवन्धन का चित्रण किया गया है।

सामाजिक और धार्मिक परिस्थितियाँ :

राजनीतिक उथल-पुथल के इस युग में देश की सामाजिक और धार्मिक परिस्थितियाँ भी शोचनीय थीं।

देश में वाल-विवाह, पर्दा-प्रथा, अनमेल विवाह, दहेज, अशिक्षा, वैधव्य आदि के कारण स्त्रियों का व्यक्तित्व-विकास अवरुद्ध हो गया था और इस पिछड़ेपन का अधिकतम रूप मिथिला में देखा जा सकता था। वहाँ 'सोराठ की सभा' में मैथिल ब्राह्मणों के विवाह तय होते थे, पंजीकार लोग भ्रष्टाचार करते थे, अव भी करते हैं। अनमेल विवाह कराकर पंडित कई लड़कियों का जीवन वरबाद कर देते थे। धर्म के नाम पर ये सारी वुराइयाँ अशिक्षित भारतीय जन स्वीकार किये हुए था। नागार्जुन जैसे चेतना-सम्पन्न साहित्य-कार का इन रूढ़ियों के विरुद्ध जनता में विचार प्रसार करना स्वाभाविक ही था। इसलिए नागार्जुन द्वारा मैथिली में लिखित 'पारो' और 'नवतुरिया' उपन्यासों में मिथिला की सामाजिक और धार्मिक कुरीतियों का चित्रण करना युग-सत्य को स्पष्ट कर रहा है। 'नई पौध', जो 'नवतुरिया' (मैथिली) का ही हिन्दी अनुवाद है, में धार्मिक संस्थाओं द्वारा की जा रही लड़कियों की इस सौदेबाजी की कलाई खोली गयी है। 'रतिनाथ की चाची' में विधवा-समस्या एवं विधवा के गर्भवती हो जाने की घटना का वर्णन है। नागार्जुन पर कुछ आलोचक यह आरोप लगाते हैं कि उन्होंने पुरानी समस्याओं को उपन्यासों में स्थान दिया है, जैसे विधवा-समस्या, वेश्या-समस्या, अनमेल विवाह आदि।

प्रश्न खड़ा होता है कि क्या उस समय प्रेमचंद-युगीन ये समस्याएँ समाप्त हो गयीं या जारी थीं ? यदि नारी-सम्बन्धी ये समस्याएँ जारी थीं तो उनके नित नूतन उद्घाटित होते आयामों को रखना जरूरी था कि नहीं ? दरअसल नागार्जुन को अपने गाँव, क्षेत्र और देश में इन समस्याओं से साक्षात्कार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करना पड़ा रहा था। लिहाजा, नागार्जुन का कथाकार बाध्य था, इन समस्याओं को अपने उपन्यासों में रखने के लिए। हर समस्या अपने परवर्ती युग में करवट बदलती है। देखने की आवश्यकता यह है कि नागार्जुन अपने उपन्यासों में प्रेमचंद से भिन्न और विकसित दृष्टि अपना पाये हैं या नहीं। तय है कि इन उपन्यासों में नागार्जुन ने प्रेमचंद की स्वस्थ परम्परा एवं दृष्टि का विकास किया है।

"उधर छुआछूत और जाति-पाँति का घातक विष राष्ट्र को सतत ह्रासोन्मुख बना रहा था।" मूर्तिपूजा, बलि-प्रथा, भूत-प्रेतों में विश्वास, श्राद्ध आदि अन्य निरर्थक कार्यों में भारतीय अपनी प्रतिभा का दुरुपयोग कर रहे थे। इन सब बातों को लेकर प्रेमचंद-युग में उपन्यास लिखे गये। ये सारी बातें उस युग की ज्वलंत समस्याएँ थीं जो साहित्यकार के हृदय को इस दिशा में कुछ सोचने, अपनी जनता को सही राह बताने के लिए प्रेरित कर रही थीं। राजनीतिक एवं आर्थिक रूप से अँग्रेज भारतीयों का शोषण कर रहे थे। धार्मिक और सामाजिक रूप से भारत की जनता रूढ़ियों, कुरीतियों और अन्ध-विश्वासों में फँस कर पिछड़ती जा रही थी। साथ ही पाश्चात्य सभ्यता का प्रचार, अँग्रेजी की पढ़ाई, आधुनिक जीवन की अन्य बातें एवं आर्य समाज द्वारा कुरीतियों के खण्डन का प्रभाव भी जनता पर था। एक ओर पुरान-पंथी लोग जहाँ प्राचीन रूढ़ियों को तोड़ना नहीं चाहते थे, वहीं युवक वर्ग पाश्चात्य सभ्यता की ओर आकर्षित हो चला था। इस प्रकार प्राचीन और नवीन में खींचतान चल रही थी और निश्चित लक्ष्य जनता के सामने नहीं था।

मुंशी प्रेमचंदजी ने 'हंस' में लिखा था, "साहित्यकार बहुधा अपने देशकाल की परिस्थिति से प्रभावित होता है, जब कोई लहर देश में उठती है तो साहित्यकार के लिए उससे अविचलित रहना असम्भव हो जाता है। और उसकी विशाल आत्मा अपने देश-बन्धुओं के कष्टों से विकल हो उठती है और उस तीव्र विकलता में वह रो उठता है पर उसके रुदन में भी व्यापकता होती है। वह स्वदेश का होकर भी सार्वभौमिक रहता है।"[१] मैक्सिम गोर्की के अनुसार, "लेखक सर्वप्रथम अपने युग की उपज, उसकी घटनाओं, दुर्घटनाओं का प्रत्यक्ष द्रष्टा अथवा उनमें सक्रिय भाग लेने वाला होता है।"[२] नागार्जुन पर भी देश की इसी राजनीतिक, धार्मिक और सामाजिक परिस्थितियों का व्यापक

१. 'हंस'—अप्रैल, १९३२, पृ० ४०।
२. Literature and Life : A Selection from the writing of Maxim Gorki. P. 99

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रभाव पड़ा, जिसकी प्रतिक्रिया उनके साहित्य में पूरी-पूरी देखी जा सकती है। वस्तुतः युग-चेतना का वास्तविक प्रतिबिम्ब ही उनका साहित्य है।

विविध परिस्थितियाँ और साहित्यिक पृष्ठभूमि :

विहार के प्रकृति-प्रकोपों में तड़पती जनता को नागार्जुन ने स्वयं देखा, उसे सम्हाला, साथ ही राहत कार्यों में लगे अवसरवादी नेताओं की कारगुजारी भी देखी है। "नागार्जुन १९३८ के वाद विहार कृषक क्रांति के नेता भी रहे, इसी समय उन्होंने जेल-यात्रा भी की।"[१] देश की राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और धार्मिक परिस्थितियों और जन-मानस की वदलती हुई आस्था तथा पीड़ितों के शोषण को रोकने में काँग्रेस की असमर्थता ने नागार्जुन को मार्क्सवाद की ओर झुका दिया। इस समय देश में सबसे पीड़ित वर्ग यदि कोई था तो किसान-मजदूर ही। इसीलिए नागार्जुन सबसे पहले अपने को उनका समर्थक मानने लगे। इसका कारण यह भी था कि नागार्जुन स्वयं भी ऐसे ही निर्धन परिवार में जनमे थे। इस वर्ग के प्रति उनकी सहानुभूति सहज और आत्म-प्रेरित थी। साथ ही रूढ़ियों और अन्ध-विश्वासों के खोखलेपन और भारतीयों को उनसे चिपका देख कवि के हृदय में रूढ़ियों के प्रति क्षोभ और आक्रोश उत्पन्न हो गया और उन्होंने खुलकर अपनी दृढ़ लेखनी से इन जर्जरित परम्पराओं पर प्रहार किया। उच्च वर्ग के शोषण के प्रति लेखक के मन में जो प्रतिक्रिया हुई, उसने इनके प्रति तीखे व्यंग्य को जन्म दिया। नागार्जुन का व्यंग्य भीतरी चोट पहुँचाने वाला बन कर सामने आया।

दलितों के उत्पीड़न से उत्पन्न सहानुभूतिपूर्ण विचारों के प्रस्फुटन में मार्क्सवादी विचारधारा ने सहायता पहुँचायी। देहात में रहने के कारण देहाती जीवन की कठिनाइयाँ, वातावरण एवं परिवेश को उन्होंने निकट से अनुभव किया था। अपनी जन्मभूमि मिथिला के प्रति उनका अपार प्रेम, हिमालय के सौन्दर्य के प्रति उनकी मुग्धता, कालिदास के प्रकृति-प्रेम का प्रभाव आदि के कारण ही उनकी रचनाओं में देहाती जीवन, जनता और प्रकृति का सजीव चित्रण है। दूसरे, उनका संस्कृत, मैथिली और हिन्दी का परिपुष्ट ज्ञान, जिसके कारण भी साहित्यिक क्षेत्र में आने का बल उन्हें मिला। मिथिला में संस्कृत के विद्वान घर-घर में पाये जाते हैं। नागार्जुन का परिवार भी संस्कृत

१. रवीन्द्र भवन दिल्ली (मैथिली अकादमी) से १७ मार्च, १९६९ का आया हुआ पत्र—डा० प्रभाकर माचवे के सौजन्य से।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पंडितों की यशस्वी परम्परा वाला घराना था। आगे चलकर निराला, राहुल सांकृत्यायन, प्रेमचंद आदि के साहित्य का भी उन पर प्रभाव पड़ा। समस्याओं ने उन्हें अनुभूति दी और मैथिली, संस्कृत और हिन्दी के ज्ञान ने सशक्त अभिव्यक्ति। इस प्रकार देश की विविध परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में जिस साहित्यिक पृष्ठभूमि का निर्माण हुआ, उस पर खिले पुष्पों में—सबसे अलग आकर्षण था, क्रान्ति का लाल रंग था और रूढ़ियों, आडम्बरों को मसल देने वाली प्रखरता थी। स्पष्टवक्ता होने के कारण खरी-खोटी सुना देना, दोटूक बातें कह देना—नागार्जुन का जन्मजात गुण था ही, यह अलग बात है कि इसके कारण उन्हें कुछ हानि भी उठानी पड़ी हो। जो भी हो, पीड़ितों के शोषण ने उन्हें सफल व्यंग्यकार के रूप में हमारे सामने उपस्थित किया। इसलिए उनके साहित्य में नेताशाही, आडम्बर, अत्याचार एवं प्राचीन परम्पराओं पर जमकर प्रहार किये गये हैं।

सादा परिवेश होते हुए भी नागार्जुन का दृष्टिकोण सदैवविज्ञान-सम्मत रहा है। इस चरम प्रगतिशील विचारधारा के साहित्यकार ने इसीलिए मनुष्य के विकसित जीवन की व्याख्या की है। मानवीय संस्कृति के प्रति आस्था और उसके उत्कर्ष का संगीत इनके साहित्य में सतत सुनायी पड़ता है।

समाजवादी यथार्थवादी प्रभाव :

नागार्जुन पीड़ित वर्ग के पक्षधर बनकर अपने साहित्य में उपस्थित हुए। जिस समय इन्होंने साहित्य-सृजन आरम्भ किया उस समय समाजवादी यथार्थवाद की ओर साहित्यकारों का आग्रह प्रबल होता जा रहा था। नागार्जुन स्वयं अभावों का आसव पान कर, उच्च वर्ग का शोषण झेलकर, सामाजिक परिस्थितियों और यातनाओं को समझ चुके थे, लेकिन उन्होंने प्रतिकूल परिस्थितियों से पराजित होना कभी स्वीकार नहीं किया। उनकी स्वभावगत विशेषताओं पर समाजवादी यथार्थवादी प्रभाव बड़ा अनुकूल सिद्ध हुआ।

समाजवादी यथार्थवाद— समाजवादी यथार्थवाद का तात्पर्य साहित्य में व्यक्त इस विचारधारा से है जिसमें निम्नवर्गीय समाज की यन्त्रणाओं, पीड़ाओं एव उच्च समाज के शोषण का चित्रण इनसे त्राण दिलाने की भावना के साथ किया गया हो तथा मानवता के सुनहले भविष्य की आकांक्षा व्यक्त की गयी हो। साहित्य में सर्वहारा वर्ग वीरता के साथ संघर्षरत दिखाई दे, अन्याय का प्रतिकार करे, इसमें निराशा की भावना न हो, पर नये समाज के निर्माण की ओर संकेत इसमें किया गया हो। इस प्रकार लेखक का प्रयास एक वर्गहीन समाज की स्थापना करना है। समाजवादी यथार्थवाद की मूल भावना साहित्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

को जीवन से सम्बन्धित करने या इसे जीवन की समस्याओं के समाधान देने में समर्थ बनाना है। जीवन और जगत को सँवारना, सुधारना इसका महान लक्ष्य है, यह आकाशीय पुष्प तोड़कर लाने का सपना नहीं देखता। समाजवादी यथार्थवाद की दृष्टि कठोर धरती के संघर्षरत जीवन पर रहती है। यह स्थिर जीवन का अभिलाषी नहीं, सतत गतिशील रहने वाले जीवन को व्यक्त करने वाली विचारधारा है। "समाजवादी यथार्थवाद सामाजिक विषमताओं के मूल कारण की पहचान कर उन्हें नष्ट करने का प्रतिक्रियात्मक हल प्रस्तुत करता है। इसके अन्दर ऐसे समाजों का चित्र उपस्थित किया जाता है जो उपेक्षित निम्न श्रेणी के हों तथा जीवन-यापन के लिए प्रस्तुत अपनी विषम परिस्थितियों से संघर्ष कर रहे हों।"[1]

वस्तुतः समाजवादी यथार्थवाद, मार्क्सवाद का साहित्यिक संस्करण है। उपेक्षित जन-समुदाय की मूकवाणी को स्वर देना तथा शोषण, उत्पीड़न और गलित समाज का अंकन करना, इसका उद्देश्य है। परन्तु "यह कहना नितान्त भ्रान्तिमूलक है कि अन्याय, शोषण को जो व्यक्त करे, जिसमें मजदूरों की पुकार हो, किसानों का क्रन्दन हो, जो वर्गवाद का गला टीप दे तथा पूँजीवाद की पूँछ में पलीता लगा दे"[2] वही प्रगतिवादी साहित्य है। ऐसा साहित्य प्रगतिवादी साहित्य नहीं, वर्गवादी साहित्य है। वस्तुतः समाजवादी यथार्थवादी साहित्य उसे ही कहा जा सकता है जो समाज के किसी खास वर्ग को ही नहीं, वरन् सम्पूर्ण समाज को प्रेरित करे तथा उसे साथ लेकर चलते हुए उन्नति के सामान्य धरातल पर ला खड़ा करे। "समाजवादी यथार्थवाद जीवन की समस्त वास्तविकताओं का अंकन करते हुए मनुष्य को आगे बढ़ने की आकांक्षाओं और सम्भावनाओं को व्यक्त करता है। विश्व के महान कवि और कलाकार मनुष्य के इन्हीं स्वप्नों को अपनी कला में मूर्त करते हैं।"[3] इस प्रकार जीवन की समस्याओं के अत्यन्त निकट उसके समाधान के लिए आतुर दिखाई पड़ने वाली यह विचारधारा है। इस साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि "वह समाज के मूल में सक्रिय क्रान्तिकारी शक्तियों को पहचान कर और उनके द्वारा बढ़ते हुए आन्दोलन का उल्लेख करके पूँजीवाद के नाश और निम्न वर्ग की विजय में पूरी आस्था व्यक्त करे जिसमें निराशा तथा जीवन के—दाँव हारे हुए निम्न स्तर के लोगों में—आशा का संचार हो और वे अपने को इस योग्य बना

१. हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद : डा० त्रिभुवन सिंह, पृ० ३१।
२. कृष्णदेव प्रसाद गौड़ : सरस्वती पत्रिका, जुलाई १९४२।
३. प्रो० प्रकाशचन्द्र गुप्त : आज का हिन्दी साहित्य : यथार्थवाद, पृ० १९।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सकें कि समाज की विषम परिस्थितियों से वीरता के साथ संघर्ष कर सकें।"[१]

साहित्य एक शक्तिशाली अस्त्र है—इसका प्रयोग रूसी राज्यक्रान्ति के बाद समाज की नयी बननेवाली तस्वीर को सँवारने में किया गया। पर साहित्य का इस प्रकार राजनीति के शिकंजे में बँध कर चलना ठीक नहीं, क्योंकि साहित्य तब पार्टी प्रचार का लाउडस्पीकर बन जाता है। साहित्य की प्रवृत्ति जब प्रचारात्मक हो जाती है तब उसकी साहित्यिकता भी समाप्त हो जाती है। जब रचना प्रचार के करीब चली जाती है तो वह नारा बन जाती है, पार्टी का घोषणापत्र या नेता का वक्तव्य मात्र। राजनैतिक वक्तव्यों का साहित्यिक अनुवाद साहित्य नहीं हो सकता।

भारत में रूसी विचार को ज्यों-का-त्यों स्वीकार नहीं कर लिया गया। यहाँ समाजवादी यथार्थवाद अपने मूल रूप से विकसित होकर अग्रसर हो रहा है। इसीलिए भारत में उसका उग्र रूप साहित्य में 'सुन्दरं' की भावना के कारण ठण्डा हो गया है। हमारे यहाँ "प्रगतिवादी उपन्यासकार का उद्देश्य परिस्थितियों तथा चरित्रों में उस विकासोन्मुख चेतना को पकड़ना तथा स्वरित करना है जो समाजवादी व्यवस्था की प्रतिष्ठापना में योग दे।"[२]

संक्षिप्त इतिहास एवं हिन्दी साहित्य में प्रवेश :

समाजवादी यथार्थवाद का प्रादुर्भाव रूस से हुआ। २३ अप्रैल, १९३२ के प्रस्ताव से रूसी लेखकों एवं कला की प्रगति के लिए एक नवीन मानदण्ड प्रस्तुत हुआ। हिन्दी में मार्क्सवादी सिद्धान्तों की अवतारणा 'प्रगतिशील लेखक संघ' के द्वारा हुई। इस संघ का प्रथम अधिवेशन पेरिस में श्री ई० एम० फोरस्टर की अध्यक्षता में सन् १९३५ में हुआ। इसके बाद लन्दन में इसकी स्थापना में डा० मुल्कराज आनन्द, सज्जाद जहीर और भवानी भट्टाचार्य का प्रयास रहा। इसकी स्थापना भारत में सन् १९३६ में हुई। यहाँ प्रथम अध्यक्ष मुंशी प्रेमचंद थे। अधिवेशन स्थल लखनऊ को चुना गया था। प्रेमचंदजी ने अपने ओजस्वी भाषण में साहित्य को जीवन-धर्मी बताया—"हमें ऐसे साहित्य की आवश्यकता नहीं जिससे नैराश्य छा जाए। हमारी कसौटी पर वही साहित्य खरा उतरेगा जिसमें उच्च चिन्तन हो, स्वाधीनता का भाव हो, सौन्दर्य का सार हो, जो सृजन की आत्मा हो, जीवन की सच्चाइयों का प्रकाश हो, हममें

१. डा० त्रिभुवन सिंह : हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद, पृ० ३३।
२. डा० सुषमा धवन : हिन्दी उपन्यास (शोध ग्रन्थ), पृ० २८४।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गति, संघर्ष और बेचैनी पैदा करे, सुलाये नहीं, क्योंकि अब ज्यादा सोना मृत्यु का लक्षण है।"[१]

प्रगतिशील लेखक संघ का दूसरा अधिवेशन कलकत्ता में हुआ। गुरुदेव टैगोर उसके सभापति थे, पर अस्वस्थता के कारण वे न आ सके। उनका संदेश पढ़कर सुनाया गया। सम्मेलन में लेखकों को नई प्रेरणाएँ दी गयीं। इस प्रकार प्रगतिवाद का प्रचार जनता में प्रगतिशील चेतना के माध्यम से हुआ। वस्तुतः "साहित्य में प्रगतिवाद का जन्म ही जनसमूह की राजनीतिक चेतना के फलस्वरूप हुआ। चिर सुपुप्त मानवता जाग पड़ी और उसने मुट्ठी भर धन-कुबेरों के इशारे पर नाचने से इन्कार कर दिया। जन-समूह ने अपने जीवन की बागडोर स्वयं अपने हाथों में ले ली और अपने शोषक सत्ताधारियों के विरुद्ध इन्क्लाब घोषित किया। साहित्य में भी जनता के हृदय में उठती इन लहरों का प्रतिबिम्ब पड़ा और फलस्वरूप प्रगतिवाद का जन्म हुआ। अतः रूढ़ अर्थ में प्रगतिवाद निश्चय ही मार्क्स के वर्ग-युद्ध पर अपना आधार रखता है। इसी हेतु संसार की मानवता को कुचलने एवं उसे अब तक पददलित रखने वाले धनिक वर्ग के प्रति तीव्रता एवं कटुता इसमें स्वाभाविक है।"[२] "इस नवीन पुनर्जागरण ने देश के साहित्य को अपनी दिशा परिवर्तित करने में महत्त्वपूर्ण योग दिया।"[3] इस प्रकार मार्क्सवादी विचारधारा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित कर रही थी। हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन को भी इसने काफी प्रभावित किया, क्योंकि हम राष्ट्रीय स्वाधीनता की माँग कर रहे थे और यह आर्थिक स्वाधीनता की। इस प्रकार प्रगतिवाद ने साहित्य और जीवन को पूर्णतया प्रभावित किया। डा० सुषमा धवन ने प्रगतिवाद और समाजवाद में कोई अन्तर नहीं माना है और समाजवादी यथार्थवादी उपन्यासकारों के लिए 'प्रगतिवादी उपन्यासकार' शब्द का प्रयोग किया है। 'प्रगतिवादी' शब्द को हम विस्तृत अर्थ ग्रहण करने में समर्थ मानते हैं, जो प्रगतिशील विचारधारा से युक्त साहित्य एवं मार्क्सवादी साहित्य को व्यक्त करता है। 'समाजवादी यथार्थवाद' उपन्यासों में साम्यवादी जीवन-दृष्टि अपनानेवाली विचारधारा के अभिव्यक्तिकरण के लिए प्रयुक्त होता है। दोनों का आधार एक ही है। प्रगतिवाद भी समाजवादी विचारधारा का प्रचारक है और समाजवादी यथार्थवादी विचारधारा भी प्रगतिवादी है।

दोनों में अन्तर नहीं होते हुए भी साहित्य में प्रगतिवाद ही प्रचलित है।

१. साहित्य का उद्देश्य, : प्रेमचंद, पृ० १०, ११, १९।
२. हिन्दी साहित्य : एक परिवृत्त : शिवनन्दन सहाय, पृ० २५३।
३. डा० शिवकुमार मिश्र : नया हिन्दी काव्य, पृ० १४८।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"समाजवादी यथार्थवाद' का दृष्टिकोण अपनाकर लेखक अतीत और भविष्य के द्वन्द्व को वर्त्तमान के क्षणों में देखता है, जो मृतप्राय है उसे अस्वीकार कर वह जीवन के विकासमान तत्त्वों की प्रतिष्ठा करता है और उन्हें कलात्मक रूप देता है। इसी अन्तर्द्वन्द्व का चित्रण करना आज के कलाकार का मुख्य ध्येय है।"[१]

समाजवादी यथार्थवाद के समर्थक साहित्यकारों को जनता के जीवन के साथ कदम मिलाकर चलना चाहिए। इसी मार्क्सवादी दृष्टि ने प्रगतिवादी साहित्यकारों को प्रभावित और प्रेरित किया। उपन्यासकारों में यशपाल, राहुल सांकृत्यायन, रांगेय राघव, नागार्जुन, भैरवप्रसाद गुप्त, अश्क आदि की कृतियों में समाजवादी यथार्थवाद की स्थापना देखी जा सकती है। कविता में प्रगतिवाद—शिवमंगलसिंह सुमन, त्रिलोचन शास्त्री, रामविलास शर्मा, केदारनाथ अग्रवाल, गजानन माधव मुक्तिबोध, शमशेर बहादुर सिंह, नागार्जुन आदि की रचनाओं में प्रयुक्त हुआ। इस प्रकार कवि-मानस को उद्वेलित करने का कारण रहा—निम्न वर्ग के प्रति तीव्र संवेदना का भाव जो प्रगतिवादी विचारधारा का आधार है।

समाजवादी यथार्थवाद के हिन्दी साहित्य में प्रवाहित वेग में अधिकतर साहित्यकार अवगाहन करने लगे। हिन्दी साहित्य में प्रगतिवाद का आविर्भाव एक नये युग का उदय है, जिसने प्रत्येक चेतना-सम्पन्न साहित्यकार को प्रभावित किया है। नागार्जुन इस प्रभाव से वंचित कैसे रहते। उन पर भी समाजवादी यथार्थवाद का पूरा प्रभाव पड़ा।

जब मैंने नागार्जुनजी से मार्क्सवादी विचारधारा के सम्बन्ध में कुछ जानना चाहा तो उत्तर मिला कि "अब इस युग में आकर इतना तो स्पष्ट ही प्रतीत होता है कि मार्क्सवादी विचारधारा त्रिपथगा बन गयी है। इस त्रिपथगा नदी की कौन-सी प्रखर शाखा कहाँ तक बहुजन का कल्याण करेगी यह तो आगे अभी देखना है, इस त्रिपथगा यानी तीन दिशाओं में बहनेवाली नदी की किसी एक धारा के अन्दर शोषक समाज का सर्वाधिक रक्त मिला होगा। भारत का मौजूदा शासकवर्ग उस शोषक समाज की सुरक्षा के लिए अभी और कितने पैंतरे बदलेगा, यह सब इस जन-कवि की अन्तर्दृष्टि से न पहले ओझल था न अब ओझल है।"

हम देखते हैं कि निम्न वर्ग के शोषण के विरुद्ध तीव्र प्रतिक्रिया इस जन-कवि के हृदय में है, और इसे बराबर अभिव्यक्ति उनके साहित्य में मिली है।

१. प्रकाशचन्द्र गुप्त : आज का हिन्दी साहित्य, पृ० २१।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उच्च वर्ग के अत्याचार और विलासपूर्ण जीवन के विरुद्ध आक्रोश का मूल मात्र कवि-कल्पना नहीं, भोगा हुआ यथार्थ है । इसी ने नागार्जुन को विद्रोही स्वर दिया—व्यंग्यीय तिक्तता से उनकी अभिव्यक्ति और भी पैनी हो गयी• और कवि ने भ्रष्टाचारी शासकों, उच्च वर्ग के अत्याचारियों, पाखंडी पंडितों आदि पर सीधे प्रहार किये हैं । हमने देखा है कि इस प्रकरण में उनके जीवन में झेले गये अनुभवों की प्रतिक्रिया ही मुख्य कारण बनी है । कवि के जीवन का स्पष्ट प्रतिबिम्ब उनके साहित्य में दिखाई पड़ता है । किसानों और खेतिहर जनता के समर्थन में नागार्जुन के विचार—उनके संघर्षों का स्वयं नेतृत्व करने के कारण उत्पन्न हुए हैं । इस साहित्यकार ने उनके प्रति मात्र बौद्धिक समर्थन ही नहीं दिया, बल्कि उनके कन्धे से कन्धे लगाकर वह उनके आन्दोलनों का सक्रिय 'साथी' रहा है । मार्क्सवादी विचारधारा का प्रभाव नागार्जुन के साहित्य में इसीलिए लक्षित होता है ।

साम्प्रतिक स्थिति और नागार्जुन :

नागार्जुन का जन-सम्पर्क विशाल है, अतएव वह यदि चाहें तो एम० एल० ए० या एम० पी० भी बन सकते हैं । वर्षों उन्होंने राजनीतिक क्षेत्र में काम किया है; चार-छः बार जेल भी गये हैं । वामपंथी आन्दोलनों की कई पर्तों से होकर गुजरे हैं ।··· ये सारी परिस्थितियाँ किसी भी व्यक्ति के लिए साम्प्रतिक स्थिति में बहुत ही महत्त्वपूर्ण मानी जायँगी, लेकिन लगता है किन्हीं खास कारणों से उन्हें आज की राजनीति से नफरत हो गयी है । जैसी दृढ़ता बनाम जितनी बेहयाई राजनीति के लिए अपेक्षित है उतनी दुर्दान्त धैर्य शक्ति एक संवेदनशील साहित्यकार कहाँ से लायेगा ?

बहरहाल नागार्जुन कभी पटना, कभी इलाहाबाद और कभी दिल्ली में रहते हैं । कुछ लिखकर जो प्राप्त हो जाय उसे ग्रहण करते हुए अपनी कृति प्रकाशक के हवाले कर देते हैं । छल-प्रपंच की राजनीति से दूर, साहित्यिक गुटबन्दियों से परे रहते हुए अपने लेखन-कर्म पर आरूढ़ हैं ।

व्यक्ति के विभिन्न पक्ष :

निम्नवर्गीय परिवार में जनमे नागार्जुन ने सन् १९३० के आसपास साहित्य में प्रवेश किया । सन् १९३५ से प्रारम्भ हुए प्रगतिशील आन्दोलन और हिन्दी साहित्य पर प्रगतिवादी प्रभाव ने उन्हें काफी प्रभावित किया । इसका प्रमुख कारण था, अपने अभावों से ग्रस्त जीवन से उत्पन्न प्रतिक्रिया, और इन कष्टों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में समाज के कष्टों को मिलाकर देखना। निम्नवर्गीय समाज, जहाँ पूँजीपतियों के शोषण से त्रस्त था, वहीं देश की गुलामी उन्हें कुछ सोचने को विवश कर रही थी। मजदूर वर्ग सतत श्रमरत रहते हुए भी भूखों मर रहा था और जमींदार वर्ग ऐश-आराम में लिप्त था। आजादी के लिए गाँधीजी का अहिंसक आन्दोलन चल रहा था। असहयोग आन्दोलन, सत्याग्रह, धरना देना आदि के साथ ही गर्म विचार के लोग क्रान्तिकारी कार्यों में भी लगे थे। इन सारी स्थितियों को नागार्जुन ने देखा और अनुभव किया कि बिना संगठित हुए मजदूरों का कल्याण नहीं होगा। अहिंसा के कुछ भक्त अनैतिकता की राह भी अपना चुके थे। इनसे और जमींदारवर्ग के प्रति, नागार्जुन के हृदय में आक्रोश स्वाभाविक था। पीड़ित वर्ग के प्रति आत्मीय संवेदना से उद्वेलित हो नागार्जुन ने जो साहित्य रचा वह पीड़ा, असन्तोष, आक्रोश और कुछ कर डालने की भावना से भरा हुआ है। अपनी शोषित स्थिति से उठ खड़े होने की चेतना उसमें विस्तार पाती देखी जा सकती है। अन्य साहित्यकारों की अपेक्षा नागार्जुन की पीड़ा इस वर्ग के प्रति देखी और भोगी गयी है और इसलिए उनकी रचनाएँ अधिक प्रभावशाली हैं। वस्तुतः नागार्जुन का गरीब ब्राह्मण परिवार में जन्म लेना और अभावों में जीवन व्यतीत करना, उनकी सशक्त अभिव्यक्ति के लिए वरदान सिद्ध हो गया। अपनी मिथिला भूमि की प्राकृतिक सुषमा ने इस कवि को अपनी ओर कम आकर्षित न किया।

दुबला-पतला शरीर, मोटे खद्दर का कुर्त्ता, पाजामा, मझौला कद, आँखों पर ऐनक, पैरों में चप्पलें, चेहरे पर उत्साह और पीड़ित वर्ग के प्रति व्यथा की मिली-जुली प्रतिक्रिया के भाव—यही नागार्जुन हैं। बड़ी फक्कड़ और अक्खड़ तबियत नागार्जुन ने पायी है। रहन-सहन की यह सादगी उनके आचरण में पूरी-पूरी उतर आयी है। अपने प्रति लापरवाह, किन्तु समाज-हित में सतत चिन्तनशील यह व्यक्ति दलित वर्ग के प्रति कितना संवेदनशील होगा—यह उनके साथ थोड़ी ही देर रहकर जाना जा सकता है। देश में व्याप्त भ्रष्टाचार, राजनीतिक धड़ेबाजी, आडम्बर, रूढ़ियों और साम्प्रदायिकता के विरुद्ध नागार्जुन के मन में तीव्र आक्रोश है। पूँजीवादी और साम्राज्यवादी शक्तियों से इनका वैर है। निम्नवर्गीय समाज के दुःख-दर्दों को जहाँ वे अपना समझते हैं वहीं इस वर्ग के प्रति उनमें सहानुभूति देखी जा सकती है।

बातचीत में सरल और विनोदप्रिय, किन्तु गलत बातों का बड़ी दृढ़ता से खंडन करनेवाला यह साहित्यकार—साहित्य के लिए ही जीवित है। साहित्य ही इसकी श्वास है, इसकी दिनचर्या साहित्य-चर्चा ही है। नये लेखकों से मिलने पर नागार्जुन बड़ी रुचि से उनकी रचना सुनकर प्रेरणा देते हैं। किसी भी स्थान पर कुछ दिन रुक वे जमकर लिखते हैं। लेकिन कब इस फक्कड़

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का चिमटा दूसरी जगह गड़ जायेगा, कहना कठिन है, और फिर किसी स्थान से तबियत उचट जाने के बाद बाबा नागार्जुन को रोक पाना सचमुच ही कठिन है। कहना मुश्किल है कि नागार्जुन कब कहाँ चले जायँगे—कभी पटना, कभी इलाहाबाद, कभी दिल्ली, कभी दरभंगा। ये अपने मैथिली नाम 'यात्री' को सार्थक करते रहते हैं। दरअसल, घुमक्कड़ी वृत्ति इन्हें बौद्ध धर्म में दीक्षित होने पर मिली।

नागार्जुन ऐसे साहित्यकार हैं, जो अभावों में ही जनमे हैं। पीड़ित वर्ग के कष्टों को इन्होंने स्वयं झेला है। निस्संदेह ऐसा ही व्यक्ति भारत की निम्नवर्गीय जनता का सच्चा सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व कर सकता है। देश की स्वतन्त्रता तथा खुशहाली के लिए बड़े उच्च स्वर से आह्वान उनके काव्य में मिलता है।

वे पहले भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य थे। लेकिन चीनी आक्रमण के बाद तटस्थ हो गये। फिर भारत में कम्युनिस्ट पार्टी के कई टुकड़े हुए। लेकिन नागार्जुन का झुकाव किसी के साथ न रहा। किसी भी पार्टी के साथ उनका समर्थन वहीं तक है जहाँ तक वह मजदूर और किसानों का पूरा-पूरा हित-चिन्तन करती है, गरज कि निम्न वर्ग की पार्टी बनकर रहती है। हमारे विचार से भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की राजनीति का केवल सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व नागार्जुनजी द्वारा हुआ है। इसलिए यदि उन्हें केवल मजदूर-किसानों का समर्थक कहा जाये तो अधिक उचित होगा।

सबसे पहले नागार्जुन भारत के हैं। भारत की संस्कृति के प्रति, प्रकृति के प्रति, अपनी धरती के जर्रे-जर्रे के प्रति गहरा लगाव इस कवि के मन में है। इसीलिए चीनी आक्रमण के समय कवि ने चीन-विरोधी जो अनेक कविताएँ लिखीं, उनसे नागार्जुन के पाठकों को बड़ी प्रसन्नता हुई, वहीं उनके इस परिवर्तन से विभिन्न प्रतिक्रियाएँ भी हुईं। चीन की विस्तारवादी नीति पर व्यंग्य करते हुए कवि ने स्वयं राइफल लेकर युद्ध में जाने और शत्रुओं को मजा चखाने की घोषणा की। पाकिस्तानी आक्रमण के समय भी उसने भारतीय जनता का मनोबल ऊँचा किया है, वहीं भारत-पाक-मैत्री के लिए भी प्रेरणा दी है। रूस ने साम्राज्यवादी नीति के परिणामस्वरूप कुछ वर्ष पूर्व चेकोस्लाविया पर अचानक आक्रमण कर वहाँ के प्रधानमन्त्री डूबचेक को जो गिरफ्तार किया—इस घटना से क्षुब्ध हो नागार्जुन ने डूबचेक और चेकोस्लाविया के समर्थन में और रूस की आक्रमक नीति पर व्यंग्य करते हुए कविता लिखी।

नागार्जुन सिद्धान्ततः मार्क्सवादी हैं। इसीलिए शोषित समाज की पीड़ा और वर्ग-संघर्ष उनकी रचनाओं में पूरे आवेग के साथ उभर कर आये हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समाजवादी यथार्थवादी विचारधारा को व्यक्त करते हुए यशपाल, रांगेय राघव, भैरव प्रसाद गुप्त ने भी उपन्यास लिखे हैं, पर इन लोगों के उपन्यासों में पीड़ित वर्ग के प्रति सहभोक्ता की उस तीव्र संवेदना का अभाव है, जो नागार्जुन के उपन्यासों का प्रमुख आकर्षण है। साथ ही ये उपन्यासकार, कुछ हद तक और यशपाल पूर्णतया, फ्रायड से प्रभावित हैं। उच्छृंखल काम-भावना और नारी की स्वच्छन्दता के समर्थन से जहाँ उनका नारी-विषयक दृष्टिकोण स्वस्थ नहीं रह पाया है वहाँ नागार्जुन इस स्थान पर काफी मर्यादित और संयमित रहे हैं। उनकी नारी पुरुष की प्रेरणा बनकर उपन्यासों में आयी है।

नागार्जुन की प्रतिभा बहुमुखी है। काव्य, उपन्यास, बाल-साहित्य, निबन्ध, अनुवाद सब ओर उनकी गति देखी जा सकती है। साहित्य सदन, अबोहर (पंजाब) से निकलनेवाले पत्र 'दीपक' (हिन्दी मासिक) का सम्पादन भी उन्होंने सन् १९३५ में किया है। लाहौर से निकलनेवाले 'विश्वबन्धु' (साप्ताहिक) का सन् १९४२-४३ में तथा 'कौमी बोली' मासिक हैदराबाद (सिंध) से निकलनेवाले पत्र का भी उन्होंने सम्पादन किया। उपन्यासों में आंचलिकता के वे जनक हैं। मैथिली, संस्कृत और हिन्दी के विद्वान नागार्जुन को साहित्य अकादमी ने उनकी मैथिली काव्यकृति 'पत्रहीन नग्न गाछ' पर पुरस्कार प्रदान किया है।

नागार्जुन अपने व्यंग्य में बेलौस और दो टूक हैं। गलत कामों के लिए वे सबको फटकारते हैं। सिन्डीकेट और इन्डीकेट दोनों की अवसरवादी राजनीति पर उन्होंने करारे व्यंग्य किये हैं। निजलिंगप्पा, मोरारजी आदि को फटकारा है तो इन्दिराजी की गलत बातों पर उन्हें भी नहीं छोड़ा है। अमेरिकी साम्राज्यवादी नीति और विएतनाम पर उसके आक्रमण के विरुद्ध उन्होंने कई कविताएँ लिखी हैं। देश में शिवसेना के तथाकथित सेनापति बाल ठाकरे के कार्यों की भी निन्दा की है। विश्व राजनीति की महत्त्वपूर्ण घटनाओं पर भी कवि ने अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। गाँधी शताब्दी के अवसर पर लिखी कविता में उन्होंने बापूजी के चेलों द्वारा सत्य और अहिंसा के पवित्र सिद्धान्तों को राख कर देने पर व्यंग्य किया है। देश के युवक वर्ग एवं दलितवर्ग के प्रति जितनी सहानुभूति उनके हृदय में है, उच्च वर्गीय आडम्बर और उनकी शोषक नीतियों के प्रति उतना ही आक्रोश भी उनमें है।

नागार्जुन का हिन्दी साहित्य में महत्त्वपूर्ण स्थान है। प्रेमचंद-सी भारतीय कृषक-मजदूर वर्ग के प्रति आत्मीयता, निराला-सा फक्कड़पन और अक्खड़पन तथा अनुचित बातों पर कबीर-सी फटकार—सबका मिला-जुला रूप ही नागार्जुन के व्यक्तित्व का आधार है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

द्वितीय अध्याय

नागार्जुन प्रणीत काव्य : वर्गीकरण एवं भाव-विधान

(अ)—(१) प्रकृति एवं प्रणयपरक रचनाएँ। (२) सामाजिक यथार्थवादी कविताएँ। (३) व्यंग्यप्रधान रचनाएँ। (४) देश-प्रेम की भावना से ओतप्रोत काव्य। (५) विविध रचनाएँ। (ब)—खंडकाव्य : भस्मांकुर।

नागार्जुन हिन्दी की प्रगतिवादी काव्यधारा के एक महत्त्वपूर्ण स्तम्भ हैं—उनमें एक ओर वर्ग-वैषम्य के शिकार पात्रों के प्रति तरल संवेदना तथा इसके लिए उत्तरदायी व्यवस्थाओं के विरुद्ध तीव्र आक्रोश है, तो दूसरी ओर स्वदेशी शासकों द्वारा किये जा रहे अनुचित कार्यों के प्रति प्रखर व्यंग्य की फटकार भी सुनाई पड़ती है। कवि ने राजनीति पर सतर्क दृष्टि रखी है, और इसलिए महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं पर सामयिक कविताओं की रचना की है, जिसका रूप प्रायः व्यंग्यात्मक है। इन सबके साथ उनके कवि ने प्रकृति-नटी का शृंगार भी बड़ी तन्मयता से किया है। आँखों से पान किया हुआ कवि ही प्रकृति के विविधवर्णी रूप-दृश्य को कविता में चित्रित कर सकता है। अपनी धरती से अनुराग की परिचायक हैं नागार्जुन की प्रकृतिपरक कविताएँ। इन कविताओं द्वारा नागार्जुन ने यह सिद्ध कर दिया कि प्रगतिवादी कवि सिर्फ दुःख-दर्द और विद्रोह का ही कवि नहीं होता बल्कि अपने देश की मिट्टी से जुड़ा भी होता है।

नागार्जुन के काव्य में देश-प्रेम का तीव्र स्वर साम्प्रदायिकता एवं प्रान्तीयता का विरोधी रूप ले, एक राष्ट्रीयता की भावना का प्रसारक बन, निरन्तर ध्वनित होता रहता है। कहीं उन्होंने देश-रक्षा के लिए जनता का आह्वान किया है तो कहीं आततायी शत्रुओं को मार भगाने का संकल्प भी लिया है। जहाँ कवि भावुक अनुभूतियों से घिर उठा है वहाँ उसने प्रणय-गीत भी गाये हैं—पर ये वासनोत्पन्न नहीं वरन् इसके मूल में जीवन-संगिनी के प्रति जीवन भर साथ निभाने की आकांक्षा निहित है। कुछ विविध विषयों पर भी नागार्जुन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ने कविताएँ लिखी हैं जैसे महापुरुषों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए या पौराणिक विषयों से सम्बन्धित जैसे पाषाणी, चन्दना आदि।

कुल मिलाकर उनके काव्य में हमें सामाजिक अस्वस्थता को समाप्त करने और स्वस्थ समाज के निर्माण की तैयारी दिखाई देती है। उनका आक्रोश पूँजीवादी और साम्राज्यवादी शक्तियों के विरुद्ध जोरदार है। अनुभूतियों का आवेग उनमें तीव्रतम है। कल्पना कहीं विशृंखलित नहीं होती है।

नागार्जुन द्वारा रचित काव्य-कृतियाँ :

नागार्जुन की काव्य-कृतियाँ—'युगधारा', 'प्यासी पथराई आँखें', 'सतरंगे पंखोंवाली' शीर्षक से प्रकाशित हुई हैं। ये फुटकर कविताओं के संग्रह हैं। इनके अतिरिक्त 'खून और शोले', 'प्रेत का बयान' और 'चना जोर गरम' 'अब तो बन्द करो हे देवि यह चुनाव का प्रहसन' नामक लघु पुस्तिकाएँ भी नागार्जुन रचित देखने में आयी हैं। किन्तु ये सब कृतियाँ अनुपलब्ध हैं। नागार्जुन का एक खण्डकाव्य भी अभी-अभी प्रकाशित हुआ है जिसका नाम है—'भस्मांकुर'। इसमें काम-दहन के प्रसंग पर बरवै छन्द में ८५४ पंक्तियाँ कवि ने लिखी हैं।

नागार्जुन १९३० '३५ से कविता लिखने लगे, पर उन्होंने अपनी रचनाओं को सम्भाल कर रखने की ओर कभी ध्यान नहीं दिया। ये घुमक्कड़ और अक्खड़ प्राणी प्रारम्भ से रहे। ये मान-सम्मान को हमेशा ठोकर मारते रहे। कविताएँ सम्भालकर न रखने का परिणाम यह हुआ कि इनकी अनेक महत्त्वपूर्ण रचनाएँ अतीत के अन्धकार में विलीन हो चुकी हैं, जिनके नाम भर अब लेखक को याद हैं। 'युगधारा' के प्रकाशक का इस सम्बन्धी मन्तव्य पठनीय है :

"कुछ खो गई हैं, कुछ खो जाने की स्थिति में हैं, कुछ मित्रों के पास बिखरी पड़ी हैं और बाकी इस यात्री कवि के थैले में दरभंगा, पटना, इलाहाबाद, दिल्ली, दिल्ली-इलाहाबाद-पटना-दरभंगा सफर करती फिर रही हैं।"[१]

उपलब्ध पत्र-पत्रिकाओं से हमने अनेक महत्त्वपूर्ण कविताएँ संग्रहीत की हैं—और कुछ कवि के थैले में सफर कर रही पाण्डुलिपियों से नोट की हैं।

वर्गीकरण :

हमने नागार्जुन-प्रणीत काव्य के पाँच विभाजन किये हैं, पर काव्यधारा का विभाजन करना सचमुच ही एक दुष्कर कार्य है। क्योंकि प्रायः कवि का उन्मुक्त

१. युगधारा—भूमिका।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हृदय एक साथ विविध भाव अपनी कविता में उपस्थित कर देता है, ऐसी अवस्था में वर्गीकरण की स्पष्ट रेखा वहाँ नहीं खींची जा सकती है। फिर भी सुविधानुसार यह विभाजन मोटे तौर से कर लिया गया है। मेरा यह आग्रह नहीं है कि एक प्रवृत्ति की कविता में अन्य प्रवृत्तियों के गुणों का सर्वथा अभाव होगा ही क्योंकि सामाजिक यथार्थ का चित्रण करते हुए सम्बन्धित व्यक्ति को कवि ने व्यंग्य वाण का निशाना भी बनाया है, कहीं प्रकृति-चित्रण सम्बन्धी कविता के बाद भी कवि का बौद्धिक चिन्तन मुखरित होता लगता है। ऐसी अवस्था में वर्गीकरण की यह दीवार हिलने लगती है।

नागार्जुन की कविताओं को सबसे पहले हम प्रकृतिपरक एवं प्रणयपरक रचनाओं के अन्तर्गत देखने का प्रयास कर रहे हैं।

१. प्रकृति एवं प्रणय-परक रचनाएँ :

नागार्जुन ने प्रकृति और प्रणय की भाव-भरी कविताएँ की हैं। उनकी प्रकृति हमें जीवन-संग्राम में उत्साह देती प्रतीत होती है। 'वसन्त की अगवानी' ऐसी ही कविता है। प्रणय-सम्बन्धी रचनाओं में हमें ग्राहस्थिक प्रेम का उज्ज्वलतम रूप मिलता है, जो देखा-देखी के क्षणिक आवेश से उत्पन्न उद्दाम यौवन की तनहाइयों के मुक्ति-मात्र के लिए आतुर नहीं, वरन् जिसमें अपने जीवन साथी के साथ सारा जीवन निभाने की उत्सुकता है।

प्रथमतः हम कवि की प्रकृति-सौन्दर्य से युक्त रचनाओं का विवेचन करेंगे।

(क) प्रकृति-चित्रण से युक्त रचनाएँ :

नागाजुन प्रारम्भ से ही यात्री रहे हैं। लंका, तिब्बत, हिमालय की तराई और भारत के अनेक स्थानों में वे खूब घूमे हैं। परिणामस्वरूप उनके द्वारा प्रकृति सुन्दरी का किया गया शृंगार बड़ा ही सजीव बन पड़ा है। इन कविताओं में व्यक्त ग्राम सौन्दर्य, जहाँ प्रकृति उन्मुक्त हास बिखेर रही है, पाठकों का मन मोह लेता है।

प्रकृति सौन्दर्य से युक्त कवि की सर्व प्रशंसित एवं लोकप्रिय रचना 'बादल को घिरते देखा है' में कवि ने अमल धवल गिरि के शिखरों पर सचमुच ही मेघ को मँडराते देखा है। प्रस्तुत कविता में कहीं कवि ने समतल देशों से आ-आकर हिमालय की झीलों में तैरते हुए हंसों को एवं निशाकाल के चिर अभिशापित चकवा-चकई को शैवालों की हरी दरी पर प्रणय कलहरत देखा है, तो कहीं—

दुर्गम बर्फानी घाटी में
शत सहस्र फुट ऊँचाई पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अलख नाभि से उठने वाले
निज के ही उन्मादक परिमल
के पीछे धावित हो होकर
तरल तरुण कस्तूरी मृग को
अपने पर चिढ़ते देखा है
बादल को घिरते देखा है।[१]

सतरंगे पंखोंवाली में भी 'वसन्त की अगवानी' और 'नीम की दो टहनियाँ' प्रकृति-चित्रण से युक्त उच्चकोटि की कविताएँ हैं।

'वसन्त की अगवानी' में वसन्त-आगमन का दृश्य कवि ने उपस्थित कर दिया है। वसन्त-प्रसार का एक चित्र हैं :

वृद्ध वनस्पतियों की ठूठी शाखाओं में
पोर-पोर टहनी-टहनी का लगा दहकने
टूसे निकले, मुकुलों के गुच्छे गदराए
अलसी के नीले फूलों पर नभ मुसकाया।[२]

कविता के अन्त में कवि का चिन्तन उभर आया है। उसे स्मरण हुआ कि वसन्तागमन के अवसर पर सरस्वती की पूजा होती है। कवि को ठौर-ठौर पर माँ सरस्वती दिखाई दीं। वे कहती हैं— बेटा! लक्ष्मी का अपमान न करना।

बुद्धि और वैभव दोनों यदि साथ रहेंगे
जन जीवन का यान तभी आगे निकलेगा।[3]

वस्तुतः पूँजीवाद के दोषों का एकमात्र कारण ही बुद्धि का अभाव है। यदि पूँजी के साथ प्रज्ञा का समावेश हो जाय तो पूँजीपति शोषण और अत्याचार के स्थान पर स्वयं निर्धनों को ऊपर उठाने का प्रयास करने लगेंगे। प्रकृति-चित्रण के साथ ही सामयिक विचार भी व्यक्त हुए हैं।

'नीम की दो टहनियाँ'[४] कवि को सीखचों के पार झाँकती हुई दिखाई देती हैं, वहीं रजनीगंधा[५] की सुवास और शीतल समीर के हल्के झोंके उसे जेल-जीवन की कटुता कम करते लगते हैं।

शिशिर की शीत कितनी प्राणलेवा है, शीत की तेजी तीर बनकर चुभ

१. रूपाम्बरा, पृ० २७८-७९।
२. सतरंगे पखोंवाली, पृ० ३१।
३. सतरंगे पंखोंवाली, पृ० ३२।
४.—वही,—पृ० ३३।
५. युगधारा, पृ० ११८।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रही है। इसीलिए कवि को वह विषकन्या के समान दिखाई दी है जिसके हजारों हाथ हैं :

हजार बाँहों वाली शिशिर विष-कन्या
उतरी लेकर साँसों में प्रलय की वन्या
हिमदग्ध होठों के प्राणशोषी चुम्बन
तन-मन पर लेप गए ज्वालामय चन्दन[1]

'कुहरा क्या छाया' कविता में, जब शिशिर की तेजी बीस गुनी बढ़ गयी, कवि को रात-दिन सब कुहरे में डूब गये लगते हैं। रवि-शशि की हालत कुहरे ने क्या कर दी है :

रवि शशि दुबक गये
ओढ़ कर झीनी नीहारिका का लिहाफ़[2]

इन कविताओं में प्रकृति का मानवीकरण स्पष्ट है।

'कोयल आज बोली है' कविता में भी कवि ने वसन्त की मदमस्त प्रकृति का वर्णन किया है। कोयल की कूक के साथ टेसू भी लाल हो जाता है, अलसी फूल उठती है, आम्र-मँजरियों का सेहरा आम के पेड़ों पर बँधा होता है। दोपहर में रवि-रश्मियों की प्रखरता से हरी-भरी प्रकृति त्रस्त हो जाती है। अब मौसम बदलता जा रहा है, धूप क्रमशः तेज होती जा रही है, और फिर पछिया हवा के थपेड़े, उनसे तो—

दरक गये केलों के पात
लेते ही करवट
तेजाब की फुहारें
छिड़कने लगा सूरज[3]

कवि द्वारा ग्रामश्री का आत्मीयता से युक्त चित्रण 'बहुत दिनों के बाद' कविता में किया गया है। प्रवास से लौटने पर अपने ग्राम की विशेषताओं को, जो उसे विछोह में याद आती रही हैं, अचानक सामने पा कवि का हृदय प्रफुल्ल हो गया है। पकी सुनहली फसलों की मुसकान देख कवि प्रसन्न हुआ है। अपनी गँवई पगडंडी की चन्दन-वर्णी धूल को स्पर्श कर वह उत्फुल्ल हो उठा है।

'झुक आये कजरारे मेघ,' 'शरद पूर्णिमा,' 'काली सप्तमी का चाँद,' 'हिम कुसुमों का चंचरीक' आदि इसी प्रकार की प्रकृति-चित्रण से युक्त रचनाएँ हैं जिनमें कवि ने प्रकृति के सजीव स्वाभाविक दृश्य उपस्थित कर दिये हैं।

१. ज्ञानोदय, जनवरी १९६५, पृ० ६७।
२. पाण्डुलिपि से।
३. ज्ञानोदय, फरवरी १९६१, पृ० १३।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहीं-कहीं इन कविताओं के अन्त में कवि को युग-पीड़ा का बोध भी हो गया है। कवि जनता-जनार्दन का बड़ा आदर करता है। वही कवि के लिए लक्ष्मी है। इसीलिए शरद पूर्णिमा भी जन-लक्ष्मी का अभिनन्दन कर रही है।

'वर्षा-मंगल' में कवि ने वर्षा की सारी विशेषताओं को इस तरह उपस्थित कर दिया है, जैसे वर्षा होने ही वाली है। 'युगधारा' में कवि ने 'बादल को घिरते देखा' था, यहाँ वह 'शिशु-घन-कुरंग' को नभ में चौकड़ियाँ भरते देख रहा है। बादलों का घुमड़ना, विद्युत का चमकना, दादुर का संगीत और फिर धरती का धुल जाना—ये सब वर्षा के कुछ मोहक रूप हैं। कीचड़ भी कवि को 'हरिचन्दन' लग रहा है। ये सारी कविताएँ कवि की स्वस्थ दृष्टि को परिचायक हैं। वर्षा की मीठी फुहार में कवि ने हल का अभिनन्दन किया है।[1]

इस प्रकार प्रकृति की विभिन्न छवियों का अंकन नागार्जुन ने किया है। वर्षा में मेघ उन्हें 'धिन धिन धा' बजते हुए लगते हैं। शिशर विष-कन्या जग को अपनी हजार बाँहों से डँसती प्रतीत होती है। वहीं 'शरद पूर्णिमा' और 'वसन्त की अगवानी' में प्रकृति के रम्य दृश्य उपस्थित किये गये हैं।

नागार्जुन के प्रकृति-चित्रण सम्बन्धी कविताओं की विशेषता यह है कि उनमें प्रकृति का मानवीकरण कर चित्रण किया गया है। शिशर 'हजार बाँहों वाली विष कन्या' है। 'कुहरे में रवि का छिप जाना उसके द्वारा झीनी नीहारिका का लिहाफ ओढ़ने' के समान उन्हें लगता है तो कहीं 'शिशु घन कुरंग नभ में चौकड़ियाँ भरते' दिखाई देते हैं।

प्रकृति-चित्रण की इन कविताओं में कवि ने दृश्य-चित्रांकन कर दिया है। 'बादल को घिरते देखा है,' 'वसन्त की अगवानी' आदि ऐसी ही कविताएँ हैं। इसी प्रकार प्रकृति-चित्रण के अन्तर्गत आलंकारिक उपादान भी प्रस्तुत किये गये हैं।

संक्षेप में, कहा जा सकता है कि नागार्जुन ने प्रकृति का बड़ा सजीव वर्णन किया है, जिसमें कवि की आत्मीयता सहज ही देखी जा सकती है।

(ख) प्रणय-परक रचनाएँ :

प्रणय का सम्बन्ध प्रगाढ़ भावकुता भरे क्षणों से है। नागार्जुन के कवि हृदय में अपनी प्रेयसी पत्नी के लिए बड़े कोमल भाव हैं। उनके साथ बीते क्षणों की स्मृति में कवि खो जाता है। प्रवासी जीवन अपना लेने पर, विरहावस्था

१. 'कविताएँ' १९६५ संपादक : अजितकुमार एवं विश्वनाथ त्रिपाठी, कविता: वर्षा मंगल, पृ० ८२।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में स्मृति के ये कण उड़-उड़ कर कवि-हृदय पर जम रहे हैं, पर कवि के प्रणय चित्रों की यह विशेषता है कि हम उनमें कहीं भी सामाजिक शील का ध्वंस नहीं बल्कि सहज ग्राहस्थिक प्रेम का स्वस्थ रूप पाते हैं। उनमें शालीनता का भाव सर्वत्र विद्यमान है। 'सिन्दूर तिलकित भाल' 'कविता अपनी गरिमा के कारण प्रणय-परक रचनाओं का भाल ही है। इसमें प्रियतमा की स्मृति के साथ ही कवि मिथिला अंचल की स्मृतियों में डूब जाता है। उसे आम, लीचियाँ, धान के खेत, कमल, कुमुदिनी, ताल, मखाना, वेणु वन आदि भी दृष्टि के सामने मँडराते दीख रहे हैं। विरह-जनित करुणा को अन्तिम पद में साकार कर 'सिन्दूर-तिलकित भाल' को उसने याद किया है। सबसे अधिक प्रिय-प्रेयसी पत्नी ही होती है, इसीलिए अपने गाँव-घर, पुष्प, फलादि का स्मरण करके अन्तिम प्रिय श्रेष्ठ वस्तु पर आकर कवि का ध्यान केन्द्रित हो गया है। नागार्जुन का यह प्रणय स्वस्थ, जीवन्त और प्रेरणास्पद है।

कवि के स्वस्थ प्रेम के उदाहरण-स्वरूप एक ही प्रमाण पर्याप्त हैं :

तुम नहीं हो पास, मैं तो तरसता हूँ
प्यार के दो बोल सुनने के लिए
एक की ही दस अंगुलियाँ नहीं हैं काफी कदाचित
रेशमी परितृप्तियों का जाल बुनने के लिए।

और इसलिए मिलन होने पर कवि ने समाज-स्वीकृत 'रेशमी परितृप्तियों' का जाल बुन ही लिया :

बहुत दिनों के बाद
अबकी मैंने जी भर भोगे
गंध-रूप-रस-शब्द-स्पर्श सब साथ-साथ इस भूपर।

और अब भुरुगवा तारा उगा तो कवि ने देखा :

पास ही सोई पड़ी श्लथ कुन्तला
प्रेयसी की थपथपाई पीठ
जग गई तो दिखा कर तारे बचे दो-चार
कहा मैंने पकड़ उसका हाथ
दो घड़ी का हमारा इनका रहा है साथ
हो रहे विदा, गा दो सुमुखि एक विहाग।

जब सुमुखि प्रेयसी गुनगुनाने लगी तो कवि ताल में अधखिला अरविन्द लाने घुस गया। इस प्रकार प्रेम को जीवन की आवश्यक, स्वाभाविक एवं प्रेरणादायी अनुभूति के रूप में स्वीकार कर नागार्जुन का कवि चला है न कि मात्र शारीरिक आवश्यकता का आधार मान कर।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऋतु-संधि कविता में नागार्जुन का हृदय मेघ का आह्वान कर अपनी प्रियतमा के पास उसे भेजना चाहता है जिस प्रकार कालिदास के यक्ष ने भेजा था।

नागार्जुन उस प्रेम की चर्चा करते हैं, जिसमें जीवन-साथी से अन्त तक साथ निभाने की प्रतिज्ञा की जाती है। उनकी कविताओं में कहीं प्रेम का छिछला स्वरूप और मांसलता नहीं दिखाई पड़ती है।

२. सामाजिक यथार्थवादी कविताएँ :

नागार्जुन के साहित्यकार को पीड़ित जनता के कष्टों ने सर्वाधिक प्रभावित किया है। उन्होंने देखा है कि निम्न वर्ग श्रमरत रहते हुए भी भरपेट भोजन नहीं जुटा पाता है। अभावों के पलने में झुलते तथा जीवन की कठिनाइयों से जूझते और डटे रहते इस वर्ग को नागार्जुन ने चित्रित किया है। दूसरी ओर धनिक वर्ग है जो ऐश-आराम में लिप्त है—कम काम और अधिक आराम यही उसके जीवन का ध्येय है। अर्थात यह वर्ग शोषण कर टिका हुआ है। परिणाम-स्वरूप उच्च वर्ग के प्रति गहरी कटुता के भाव नागार्जुन में हैं जो आक्रोश का रूप ले लेते हैं। नागार्जुन ने निम्न वर्ग के अभावों को स्वयं झेला है और उनकी दृढ़ता बहुत कुछ इन अभावों और अभियोगों से उत्पन्न रोष की मिली-जुली प्रतिक्रिया ही है जिसने अपने प्रसार-विस्तार में व्यंग्य की व्यूह-रचना कर अपने प्रति-द्वन्द्वियों को परास्त कर दिया है। "व्यक्तिगत दुःख पर न रुक कर वे बार-बार व्यापक दुःख पर प्रकाश डालते हैं और यही सच्चे कवि की पहचान है। अतः धरती, जनता और श्रम के गीत गाने वाले इस युग के संवेदनशील कवियों में नागार्जुन का नाम सदैव अमर रहेगा।"[१]

देश में व्याप्त वर्ग-वैषम्य के ये चित्र नागार्जुन द्वारा साम्यवादी विचार-धारा में आस्था रखने के कारण व्यक्त हुए हैं। नागार्जुन का पीड़ित-शोषित वर्ग फिर भी सतत संघर्ष और श्रमरत रहा है। कवि को उनके अच्छे दिन लौट आने की पूरी आशा है।

भारत पर सन् १९६२ के चीनी आक्रमण से पूर्व नागार्जुन के काव्य में इसी सामाजिक यथार्थवाद का समर्थन खूब मिलता है। इसमें चीन और रूस की प्रशंसा के स्वर तो हैं ही, इन देशों को बुरा बताने वालों को भी नागार्जुन ने कोसा है, कहीं उसे 'लाल पताकाएँ फहराती' हुई दिखाई दी हैं :

लाल पताकाएँ फहराईं, नील गगन मुस्काया।

१. नयी कविता : नये कवि : विश्वम्भर मानव।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कवि भारत में भी कम्युनिज्म लाना चाहता है :

चीन समूचा लाल हो गया
या **अब है भारत की बारी ।**
चीन विरोधी बकवासों से हल होगा न सवाल ।[1]

इन कविताओं में कवि का साम्यवाद की ओर स्पष्ट आकर्षण देखा जा सकता है । इसी के परिणामस्वरूप उनके काव्य में दलित वर्ग की दयनीय स्थिति के चित्र तथा इसकी उत्तरदायी व्यवस्थाओं के विरुद्ध आक्रोश व्यक्त किया गया है । स्वदेशी शासकों की अकर्मण्यता के लिए उनके कान उमेठे गये हैं ।

सतरंगे पंखोंवाली काव्य-संग्रह की 'देखना ओ गंगा मइया,' 'खुरदुरे पैर,' 'नाकहीन मुखड़ा,' इसी प्रकार मजदूर वर्ग के प्रति कवि की ममता से भरी हुई कविताएँ हैं ।

'देखना ओ गंगा मइया' कविता में कवि की दृष्टि पुल पर से गुजरती हुई ट्रेन से यात्रियों द्वारा गंगा में फेंके गये पैसे खोजते हुए मल्लाहों के नंग-धड़ंग छोकरों पर पड़ती है । कवि गंगा मइया से प्रार्थना करता है कि वह उन्हें निराश न करे । इन गरीब बच्चों की छोटी-छोटीआवश्य कताएँ हैं—कहीं आम चूस लेने की, बीड़ी पी लेने की या हमउम्र छोकरी के लिए टिकुली ला देने की । कवि गंगा मइया को आश्वस्त करता है कि गरीब बच्चे बड़े होकर जब चप्पू चलाएँगे तो —

पुष्ट होगा प्रवाह तुम्हारा इनके भी श्रम स्वेद जल से ।[2]

'खुरदुरे पैर' कविता में कवि की दृष्टि सायकल रिक्शा चलाने वाले उस मजदूर के गुट्ठल, घट्ठों वाले कुलिश कठोर पैरों पर गयी है । और तब—

देर तक टकराये
उस दिन इन आँखों से वे पैर
भूल नहीं पाऊँगा—फटी बिवाइयाँ ।
खुब गईं दुधिया निगाहों में
धँस गईं कुसुम-कोमल मन में ।[3]

'अकाल के बाद' कविता भी कवि की सामाजिक यथार्थवादी विचारधारा को प्रकट कर रही है ।

'गीले पाँक की दुनिया गई है छोड़' कविता में कवि गंगा की बाढ़ का वर्णन करने के बाद शेष रह जाने वाले कीचड़ पर मल्लाहों के छोकरों को चलता देख

१. जनशक्ति, जनवरी १९६०, पटना ।
२. सतरंगे पंखोंवाली, पृ० १९-२० ।
३. सतरंगे पंखोंवाली, पृ० २१ ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपनी इच्छा प्रकट करता है :

मन यही करता है कि मैं भी
उन्हीं में से एक होता
और—
नंगे पैर, नंगा सिर
समूचा बदन नंगा
विचरता पंकिल पुलिन पर ।[१]

कवि अपने को इसी निम्न वर्ग में से एक मानता है। इसका कारण उसने 'मित्र को पत्र' में स्पष्ट किया है।

क्योंकि हमको स्वयं भी तो तुच्छता का भेद है मालूम
कि हम पर सीधे पड़ी है गरीबी की मार
सुविधा प्राप्त लोगों ने सदा ही समझा भू-भार ।[२]

प्रायमरी स्कूल का शिक्षक भी इसी निर्धन वर्ग में से है जो अल्प वेतन पर अपने बड़े परिवार का उदर-पोषण करने का असफल प्रयास कर रहा है। भूख से मरकर यमराज के सामने वह अपनी स्थिति स्पष्ट कर रहा है, क्योंकि यहाँ तो कोई उसकी दयनीय दशा पर तरस खाने वाला है नहीं। निम्न और मध्यवर्ग के ये पात्र अध्यापक और छोटे बाबू के रूप में दुनियादारी का छकड़ा बड़ी कठिनाई से खींच रहे हैं।[3]

देश के मजदूरों और किसानों की स्थिति का वास्तविक अंकन कवि ने किया है :

बीज नहीं है, बैल नहीं है, बरखा बिन अकुलाते हैं
नहर रेट बढ़ गया खेत में पानी नहीं पटाते हैं
नहीं खेत से कनका भर भी दाना उपजा पाते हैं
पिछला कर्ज चुका न सके, साहू की झिड़की खाते हैं।[४]

'सन्त विनोबा' कविता में जमींदारी उन्मूलन के बाद भी ग्रामीण किसानों की छीनी जाती हुई जमीनों को देख कवि क्षुब्ध हो पुकार उठा है :

कहाँ गया जमींदारी उन्मूलन का फर्मान
छिने जा रहे गाछी-गोचर-पोखर और श्मशान
गाँव-गाँव में लूट मची है भैरो बने लठैत ।[५]

१. सतरंगे पंखोंवाली, पृ० ५३ ।
२. युगधारा, पृ० ३० ।
३. युगधारा, पृ० १०९, जया कविता, पृ० ११७ ।
४. प्रेत का बयान (संकल्प आज दुहराते हैं), पृ० १० ।
५. युगधारा, पृ० ११९ ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कवि इस निष्कर्ष पर पहुँच गया है कि जब तक देश में जमींदार और व्यापारी मौजूद हैं तब तक भारत माता के मंदिर में न्याय नहीं हो सकता, क्योंकि नेतृत्व करने वाले स्वयं भी अपने आदर्शों से फिसल रहे हैं। देश में पैदा हुए मुखौटेवाले नेता का रूप देखिए :

जमींदार हैं साहूकार हैं, बनिया हैं व्यापारी हैं
अन्दर-अन्दर विकट कसाई बाहर खद्दरधारी हैं,
सब घुस आये भरा पड़ा है भारतमाता का मंदिर
एक बार जो फिसले अगुआ फिसल रहे हैं फिर फिर फिर।[१]

कवि इस सामाजिक असमानता को प्रश्रय देने का सीधा आरोप काँग्रेसियों पर लगाता है। वह तो डंके की चोट कहता है :

खादी ने मलमल से अपनी साँठ-गाँठ कर डाली है,
बिड़ला-टाटा-डालमिया की तीसों दिन दिवाली है।[२]

यही कारण है कि देश में भूख, महामारी और अकाल आज ताण्डव नृत्य कर रहे हैं :

मँडराती है यम की नानी खेतों में खलिहानों में
भूख, अकाल, महामारी की फसल उगी मैदानों में
लूट-पाट की होड़ मच गई नरभक्षी हैवानों में
लटक रहा ताला गल्ले की सरकारी दूकानों में।[३]

फिर—

सौ का खाना एक खा रहा आती नहीं डकार।[४]

उपर्युक्त पंक्तियों में कवि की साम्यवादी विचारधारा का तीव्र वेग आसानी से देखा जा सकता है, जिसमें उसने खुलकर काँग्रेस सरकार पर आरोप लगाये हैं। जमींदारों के अत्याचार, भूख, बाढ़ और अकाल से सर्वाधिक पीड़ित विहार रहा है। लेकिन भूख से मरने के बाद भी वहाँ क्या होता रहा है:

मरो भूख से फौरन आ धमकेगा थानेदार
लिखा लेगा घर वालों से 'वह तो था बीमार'।[५]

आजादी के बाद इतने वर्ष बीत जाने पर भी मजदूरों और किसानों को, जो देश के सच्चे अन्नदाता हैं, दाने-दाने के लिए तरसते देख कवि को लगता है कि इनके माध्यम से भारतमाता अपना दुःख व्यक्त कर रही है। सन् १९६० के

१. हंस, जून १९४९, अंक १, पृ० ६४०।
२. हंस, मई १९४९, अंक ८, पृ० ४९२।
३. प्रेत का बयान, पृ० ५।
४. वही, पृ० ९।
५. जनशक्ति (स्वतन्त्रता दिवस विशेषांक) १४ अगस्त १९६०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वतन्त्रता दिवस पर उसने लिखा :

जीभ कटी है भारतमाता मचा न पाती शोर
देखो धँसी-धँसी ये आँखें, पिचके-पिचके गाल
कौन कहेगा आजादी के बीते तेरह साल ।

स्वतन्त्रता के तेरह वर्ष बीत जाने के बाद भी शासन श्रमिकों की दशा नहीं सुधार पाया, सत्ता में जाकर नेतागण मदहोश हो गये हैं। मजदूरों और किसानों पर कैसे-कैसे अत्याचार हो रहे हैं :

लाख-लाख श्रमिकों की गर्दन कौन रहा है रेत
छीन चुका है कौन करोड़ों खेतिहरों के खेत
किसके बल पर कूद रहे हैं सत्ताधारी प्रेत ।[1]

कवि ने नेहरूजी की समाजवादी नीति को सपना कहा है और इसी कारण नागार्जुन ने सीधे नेहरू पर प्रहार करना और उनके कार्यों से देश का अहित होना सिद्ध करने का प्रयास किया, जिसने कहीं-कहीं शुद्ध नारेबाजी का रूप ले लिया है। नागार्जुन की ऐसी कविताओं में साम्यवादी रंग सामान्य से अधिक दिखाई देता है। यहाँ वे कवि कम और पार्टी कार्यकर्त्ता अधिक लगते हैं।

किन्तु नागार्जुन को मजदूरों के रहन-सहन का बड़े निकट से अनुभव है। 'घिन तो नहीं आती है' कविता में वह इस वर्ग की पीड़ाओं के यथार्थ चित्र देते हुए पाठकों के मन में उनके प्रति सहानुभूति जगाते हैं :

कुली मजदूर हैं
बोझा ढोते हैं, खींचते हैं ठेला
धूल-धुँआँ भाप से पड़ता है सबका
थके-माँदे जहाँ-तहाँ हो जाते हैं ढेर ।[2]

अपनी साम्यवादी विचारधारा के कारण पूँजीपति के घर विवाह होते देख कवि ने कहा है :

रेशम की यह चकाचौंध मणिमुक्ता का उद्दीपन
पास-पड़ोस उजागर बिजली लेती अंगड़ाई
थिरक रही है माइक पर उस्तादों की शहनाई ।

पैसों की इस थिरकन के बाद कवि की दृष्टि दलित वर्ग पर जाती है।

१. जनशक्ति (स्वतन्त्रता दिवस विशेषांक), १४ अगस्त १९६० ।
२. प्यासी पथराई आँखें, पृ० २९ ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यही जीवन की यथार्थ और कटु स्थिति है जिसे कवि पाठकों को दिखाता है :

चाट रहे हैं कुछ प्राणी बाहर जूठन के दोने
चहक रहे हैं अन्दर ये लक्ष्मी के पुत्र सलोने
कला गुलाम हुई इनके आगे, कविता पानी भरती है
सौ सौ की मेहनत इनकी मुस्कानों पर मरती है ।[१]

'काली माई' कविता में देवी-देवताओं का विरोध कर इसी असमानता को स्पष्ट किया गया है ।[२]

प्रगतिवादी विचारधारा के अनुरूप नागार्जुन के काव्य में पीड़ित वर्ग के प्रति बड़ी निश्चल संवेदना व्यक्त हुई है । उसने देश में अभाव ही अभाव देख कर 'खाली नहीं और खाली' कविता में मकान, दुकान, स्कूल, ट्रेन सबको खाली नहीं बता कर अन्त में लिखा है :

खाली है हाथ खाली है पेट
खाली है थाली खाली है प्लेट ।[3]

जो खाली होने चाहिए वे भरे हुए हैं और जो भरे-पूरे होने चाहिए वे खाली हैं । इस वर्ग-वैषम्य को मिटाना होगा । सेठों और जमींदारों के पास धन का संग्रह अब नहीं होने दिया जायगा । सारी जमीन सरकार की होगी और वह मजदूरों-किसानों में बाँटी जायगी । सच्चा मजदूर-राज्य कायम करने के लिए कवि कहता है :

सेठ और जमींदारों को नहीं मिलेगी एक छदाम
खेत खान दुकान मिलें सरकार करेगी दखल तमाम
खेत-मजूरों और किसानों में जमीन बँट जायगी ।
नहीं किसी कमकर के सिर पर बेकारी मँडराएगी
नौकरशाही का यह रद्दी ढाँचा होगा चूरम चूर
सुजला सुफला के गायेंगे गीत प्रसन्न किसान-मजूर ।[४]

इन पंक्तियों में जमींदारी प्रथा के उन्मूलन से, किसानों के सुखी भविष्य के प्रति, आशा प्रकट की गई है ।

कवि किसानों और मजदूरों के लिए भी आजादी का सुख उपलब्ध कराना चाहता है जो उसकी राय में अभी केवल उच्च वर्ग को ही प्राप्य है । लेकिन

१. प्यासी पथराई आँखें, पृ० ३४ ।
२. —वही— , पृ० ३७ ।
३. युगधारा, पृ० ११३ ।
४. हंस, अप्रैल १९४८, अंक ७, ('लाल भवानी' कविता से) ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यह स्थिति बदलेगी और तब किसान :

सुजला सुफला शस्य श्यामला माता के गुण गाएँगे
पानी की खातिर पौधों को कभी नहीं तरसाएँगे
बच्चों जैसी फसलों पर निशि दिन सिनेह बरसाएँगे
नाहक सिर पर कोटि-कोटि का कर्जा नहीं चढ़ाएँगे ।[१]

यही जनवादी दृष्टि नागार्जुन के काव्य का प्रमुख आकर्षण है जिसमें जन-शक्ति को सर्वोपरि मानकर उसमें चेतना का शंख फूँकना कवि को अभिप्रेत है । 'जन वन्दना' कविता में कवि की यही आशावादी दृष्टि विकसित हो रही है :

कल व्यक्ति व्यक्ति के हेतु सुलभ होंगे
अवश्य मौक्तिका ऽ ऽ भरण ।[२]

सुख-सूर्य का उदय होते ही पीड़ाओं के अन्धकार का अवसान अवश्यम्भावी है । यह कार्य युग की गंगा लाने वाले तरुण वर्ग को पूरा करना है—उसका रास्ता अवश्य दुर्गम है पर उसकी सफलता निस्संदेह सामने है :

लक्ष्य स्पष्ट है पंथ कठिन है
रात्रि शेष यह आगे दिन है ।[3]

कवि तरुण वर्ग का ध्यान व्यक्ति-व्यक्ति के दुःख की ओर आकृष्ट करके उसे मिटाने के लिए उनका आह्वान कर रहा है :

निविड़ अविद्या से मन मूर्च्छित
तन जर्जर है भूख-प्यास से
व्यक्ति-व्यक्ति दुख दैन्य ग्रस्त है
दुविधा में समुदाय पस्त है
लो मशाल अब घर-घर को आलोकित कर दो ।[४]

नागार्जुन ने देखा है कि देश में अन्नाभाव की समस्या नहीं वस्तुतः उसका कारण अन्न-संग्रहकों की देशद्रोही वृत्ति है । इन अन्नचोरों ने अपने गोदामों में अन्न छिपा-छिपा कर महँगाई और बेकारी का वातावरण देश में उत्पन्न कर दिया है । इसी को स्पष्ट करते हुए कवि ने सन् १९६५ में 'अन्न-पच्चीसी' कविता लिखी । 'जनशक्ति' के सम्पादक ने इस पर अपनी टिप्पणी इस प्रकार दी है :

"इस रचना को अपनी काव्यात्मक गरिमा के कारण नागार्जुन की श्रेष्ठतम रचनाओं में से एक माना जा सकता है । मौजूदा अन्न-संकट की पृष्ठभूमि में हिन्दी के अन्य किसी कवि ने इससे अधिक प्राणवन्त रचना का प्रणयन नहीं

१. प्रेत का बयान, पृ० १।
२. जन-वन्दना (युगधारा), पृ० ११ ।
३. अरुणोदय (युगधारा), पृ० २ ।
४. प्यासी पथराई आँखें, पृ० २८ ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किया। यह कविता एक ओर जहाँ मेहनतकश वर्ग के समक्ष उपस्थित महँगी, अन्न-संकट एवं उसकी संघर्षशील शक्ति का चित्र उपस्थित करती है, दूसरी ओर शीश महल में बैठकर नायलोन की जाली बुननेवाले कवियों के लिए एक चुनौती भी है। चुनौती का यह स्वर उन्हीं कवियों का हो सकता है जो अपनी रचनाओं में जीवन को जीते हैं, आम जागरण से कटे हुए नहीं हैं।"

इस कविता में सत्य को भुला देनेवाले खामख्याली कवियों और भत्ता खींचनेवाले विधायकों को नागार्जुन ने फटकारा है। कवि चुनौती के स्वर में कहता है, यदि अन्न-चोरी बढ़ती जायगी तो भूखे मरनेवाले लोगों की क्रान्ति विश्व को हिला देगी। शासन की बन्दूक भी वहाँ फेल हो जायगी :

कूच करेंगे भक्कड़ थर्राएगी दुनिया सारी
काम न आएँगे रत्तीभर विधि निषेध सरकारी
बन्दूकों पर हावी सैनिकों की लाचारी
सरे आम कीड़े खाएँगे बेदम अत्याचारी।

राजनीति आज गुटबन्दी और भाई-भतीजावाद में फँस कर पंगु हो गयी है। इसी ओर कवि ने संकेत किया है :

गुलछर्रे वे उड़ा रहे हैं गुटबन्दी के बल पर
उनकी निष्ठा टँगी हुई है केवल अपने दल पर
भाई और भतीजे हावी उनकी हलचल पर
हम तो यों ही तरस खा गये उनकी घुटी अकल पर।

नागार्जुन ने इस नाजुक समय में अन्न छिपाकर कृत्रिम अभाव उत्पन्न करने वाले देशद्रोही बनियों को लूट लेने का जनता से आह्वान किया है।[1]

इस प्रकार कवि ने निम्न वर्ग को आगे बढ़ने की प्रेरणा दी है। मजदूरों और किसानों को वह देश का वास्तविक मालिक समझता है। इसीलिए कवि मजदूर, किसान और धान की बाली का अभिनन्दन करता है :

चम-चम चमके हँसिया प्यारा, झूमे बाली धान की
जय हो इसी निशान की, जय मजदूर किसान की।

मजदूरों को प्रेरणा देता हुआ कवि देश की वास्तविक स्थिति पर निर्भीकता से प्रकाश डालता है :

देश हमारा भूखा-नंगा घायल है बेकारी से
मिले न रोटी-रोजी भटके दर-दर बने भिखारी से
स्वाभिमान सम्मान कहाँ है, होली है इन्सान की।

१. जनशक्ति (पटना), २८ फरवरी १९६५।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बदला सत्य अहिंसा बदली लाठी, गोली, डंडे हैं
कानूनों की सड़ी लाश पर प्रजातन्त्र के झंडे हैं।
निश्चय राज्य बदलना होगा शासक नेताशाही का
पद लोलुपता दलबन्दी का भ्रष्टाचार तबाही का।[1]

निःसंदेह देश की सामाजिक अवस्थाओं का ज्यों का त्यों प्रतिबिम्ब नागार्जुन की इन कविताओं से मिलता है। सचमुच में आज सत्य और अहिंसा बदल गयी है। निहत्थे युवकों का खून बहाया जा रहा है। तरुण शक्ति का यह ह्रास और निम्न वर्ग की तबाही देख कवि अन्तर्वेदना से भर उठा है। कानून आज मृत हो गया है। उसकी आत्मा पर नहीं, उसके निर्जीव शव पर प्रजातन्त्र का आधार टिका हुआ है। अन्तिम पंक्तियों में कवि का आक्रोश तीव्र होता लगता है। वेदना-विवशता का आधिक्य जब बढ़ जाता है तब उसकी परिणति आक्रोश में ही होती है। अतः इन पंक्तियों से आवेश की लपटें उठती प्रतीत होती हैं।

सन् १९६२ के पूर्व कवि और श्रमिक वर्ग में सम्बन्ध स्थापन का माध्यम कम्युनिस्ट पार्टी थी। पर उसके बाद नागार्जुन ने इस वर्ग से सीधा सम्बन्ध जोड़ लिया है। पहले पार्टीबाजी के रंग से रँगी होने के कारण नागार्जुन की कविताओं में उथलापन था, पर अब वह एक ओर तरुण शक्ति को देश में कायाकल्प करनेवाली सबसे बड़ी शक्ति मानता है, दूसरी ओर श्रमिक वर्ग का समर्थन यथापूर्व करता जा रहा है। कवि पूँजीवादी और साम्राज्यवादी शक्तियों का प्रबल शत्रु है। साथ ही कवि देश में पनप रहे नक्सलवाद का भी विरोधी है। जहाँ जनता को ही कुचला जा रहा हो, भारतमाता के केश खींचे जा रहे हों वहाँ कवि अपवित्र दलों की भर्त्सना क्यों न करे।

महाराष्ट्र की अशान्त स्थिति पर कवि का विचार है कि इसे मजदूर वर्ग ही बदल सकता है। शिवसेना की हिंसक वृत्तियों पर भी कवि ने प्रहार किया है :

चौपाटी के तट पर होगा फासिस्टों का अब अंतिम संस्कार
क्रुद्ध क्षुब्ध मजदूर करेंगे, शिव सैनिक भस्मासुर का संहार।[2]

'महाराष्ट्र का सबसे भारी रोग' भी इसी प्रकार की कविता है जिसमें शिवसेना की जनहित-विरोधी हलचलों और सत्तासीन नेताओं का भी उनसे आतंकित होना दिखाया गया है।

कवि सिर्फ तरुण वर्ग और मजदूर शक्ति के प्रति ही नहीं, बल्कि तुतलाते बच्चों के प्रति भी आशावान है। अमेरिका द्वारा विएतनाम की शांति-प्रिय जनता के शोषण और अत्याचारों को मिटाने की आशा कवि इन नवयुग के

१. जनयुग, ४ जनवरी १९६८।
२. —वही—, २१ जून १९७०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शिशु दूतों से ही करता है। साम्राज्यवादी दैत्यों का संहार भी इन बच्चों से होगा, ऐसा कवि का विश्वास है। शिशुओं द्वारा 'मेले नाम तेले नाम विएनाम विएनाम' के स्वर ही वे अंकुर हैं जिनमें शोषण-विरोधी आँधी का प्रसार करने की भावी सम्भावनाएँ निहित हैं। यह बाल सेना सम्प्रदायवाद का भूत भी भगायेगी :

निर्भय होकर शोषण की बुनियादें यह खोदेंगे
फिरकाबंदी जातिवाद का झाड़ेंगे यह भूत
निविड़ विषमता को मिटायेंगे नवयुग के शिशु दूत।[1]

निस्सन्देह कवि पर्याप्त आशावादी आधार लेकर चला है। शोषकों के प्रति आक्रोश और पीड़ित वर्ग के प्रति सहानुभूति नागार्जुन में परिव्याप्त है।

हमारा विचार है कि वाद विशेष की गर्मी भी अब नागार्जुन में दब गयी है। अब वे पार्टी के घेरे को तोड़कर खुले प्रांगण में आ गये हैं, जहाँ से वे श्रमिकों और किसानों के अधिकारों के लिए, साम्राज्यवादी एवं पूँजीवादी दैत्यों के चंगुल से उन्हें छुड़ाने के लिए सतत प्रयत्नशील हैं और इस वर्ग का सच्चा सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। सच्चे जन-कवि की भूमिका कैसी हो सकती है, इसका अनुमान उनके काव्य को पढ़कर हो जाता है।

३. व्यंग्य-परक रचनाएँ :

नागार्जुन ऐसे प्रखर बौद्धिक चेतना-सम्पन्न कवि हैं, जिन्होंने राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति पर और देश की सामाजिक और आर्थिक व्यवस्थाओं पर सतर्क दृष्टि रखी है। विद्रोही वृत्ति एवं खरी-पैनी बात सुनाना उनकी कविता का मुख्य गुण है। इसके परिणामस्वरूप देश में व्याप्त राजनीतिक भ्रष्टाचार एवं सामाजिक असमानताओं आदि पर पैने व्यंग्य उन्होंने किये हैं। कवि की इस विषयक सफल सक्रियता का ही यह परिणाम है कि नागार्जुन हिन्दी कवियों में मुख्य रूप से एक प्रमुख व्यंग्यकार माने जाते हैं। चुटीलापन नागार्जुन के व्यंग्य की विशेषता है। उनकी कविताओं में एक ललकार है, प्रतिद्वन्द्वी की बुराइयों को उघाड़कर उसे लगायी गयी फटकार है। कवि के व्यंग्य का स्तर कहीं-कहीं बहुत ऊँचा और कहीं अत्यन्त छिछला भी हो गया है। ऐसा वहीं हुआ है जहाँ कवि व्यक्तिगत छींटाकशी से भी आगे बढ़ गया है।

पं० नेहरू पर इसी प्रकार की छिछली व्यग्यपूर्ण कविताएँ नागार्जुन ने लिखी हैं। उनकी दृष्टि में सारे काँग्रेसी और खादीधारी चोर हैं और उन्हें कवि के व्यंग्य का निशाना बनना पड़ा है।

१. जनयुग, ६ सितम्बर १९७०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किन्तु नागार्जुन के व्यंग्य ने हास्य का रूप नहीं लिया है। यों व्यंग्य-मिश्रित वक्र मुस्कान कहीं-कहीं अवश्य ही पाठकों के होठों पर खेल जाती है, पर स्पष्ट हास्य का नागार्जुन में सर्वथा अभाव है, क्योंकि "व्यंग्य परिहास की तरह कभी प्रयोजनहीन नहीं होता। इसकी शुद्धता सदैव संदिग्ध होती है। सोद्देश्यता व्यंग्य कविता की प्राण है।"[१]

नागार्जुन का व्यंग्य सर्वत्र प्रयोजनयुक्त बनकर उपस्थित हुआ है। उनमें सोद्देश्यता इस रूप में परखी जा सकती है कि निम्न वर्ग की दयनीय स्थिति सुधारने में अक्षम कर्णधारों पर वे जमकर व्यंग्य प्रहार करते हैं। देश के आर्थिक और सामाजिक ढाँचों को बदलना उनका लक्ष्य प्रतीत होता है। व्यंग्य की सोद्देश्यता अमृतराय के विचारों में भी व्यक्त हो रही है—"व्यंग्य पाठक के क्षोभ या क्रोध को जगाकर प्रकारान्तर से उसे अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए सन्नद्ध करता है।"[२] नागार्जुन के व्यंग्य का यही उद्देश्य है। शोषित जनता इन्हें पढ़कर राहत महसूस करती है, क्योंकि इसमें कवि ने उसका अपना पक्ष लिया है, इसे उठ खड़े होने की प्रेरणा दी है।

कवि ने व्यंग्यपूर्ण रचनाओं में धार्मिक रूढ़ियों एवं सामाजिक अव्यवस्थाओं पर भी व्यंग्य किया है। पर यह बात निःसंदेह है कि नागार्जुन की व्यंग्य रचनाओं का अधिकांश राजनीतिक स्थितियों और नेताओं पर किये गये व्यंग्य से ओतप्रोत है। हमने देखा कि व्यंग्य नागार्जुन के काव्य का प्रमुख आकर्षण है। इसीलिए हम उसका वर्गीकरण निम्न बिन्दुओं के अन्तर्गत करके अध्ययन करेंगे।

धार्मिक रूढ़ियों या अन्धविश्वासों पर व्यंग्य :

कवि द्वारा रचित 'चौराहे के उस नुक्कड़ पर' कविता में अन्धश्रद्धालुओं तथा उनकी श्रद्धा का दुरुपयोग करनेवाले पाखंडी साधुओं पर व्यंग्य स्पष्ट है। ये साधु अपने करतब दिखाकर भोली जनता की जेबें खाली करवा लेते हैं :

काँटों पर नंगा सोया है
ठिठक गया मैं लगा देखने
उस औघड़ बाबा के करतब

१. लेख—समकालीन हिन्दी कविता में व्यंग्य विद्रूप : हरिनारायण मिश्र, ग्रन्थ—नई कविता, सम्पादक—वासुदेवनन्दन प्रसाद सिंह, पृ० ९६।
२. अमृतराय : नई कहानियाँ (सम्पादकीय), नवम्बर १९६९।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आगे है—

और पाँच पैसे दस पैसे
जैसी श्रद्धा सिक्के वैसे
निकल रहे हैं जैसे तैसे
श्रद्धा का तिकड़म से नाता

जय हे भिक्षुक जय हे दाता
पियो सन्त हुगली का पानी
पैसा सच है दुनिया फानी। [1]

'काली माई'[2] कविता में भी काली माई की हिंसा और रक्तप्रियता पर व्यंग्य किया गया है।

सामाजिक स्थितियों पर व्यंग्य :

नागार्जुन की व्यंग्य कविताओं में सामाजिक स्थितियों से भी सम्बन्धित कविताएँ मिलती हैं। किन्तु कहीं-कहीं इस प्रकार की कविताओं में राजनैतिक नेताओं पर भी व्यंग्य स्पष्ट है। सामाजिक अवस्थाओं पर किये गये व्यंग्य का उद्गम स्रोत दूषित राजनीति ही बनी है।

कवि ने देखा है कि आज सच बोलना भी एक जुर्म हो गया है। सच बोलने पर हानि उठानी पड़ती है और झूठ बोलनेवाले मेवा-मिसरी चखते हैं। चापलूसों की इस बढ़ती हुई कद्र पर कवि ने व्यंग्य किया है, जिसमें सामाजिक अव्यवस्था स्पष्ट हो रही है। पर इसका मूल दूषित राजनीति ही है :

सपने में भी सच न बोलना, वरना पकड़े जाओगे
भैय्या लखनऊ-दिल्ली पहुँचो मेवा-मिसरी पाओगे
माल मिलेगा रेत सको यदि गला मजूर किसानों का
हम मरभुक्खों से क्या होगा चरण गहो श्रीमानों का। [3]

'तो फिर क्या हुआ' कविता में प्रज्ञाकर गुण निधान प्राचार्य पर, जो देश की बहुसंख्यक जनता की हानि पर कहते हैं—'तो फिर क्या हुआ', यह तो नाश और निर्माण के चक्र हैं—व्यंग्य किया गया है; क्योंकि यही प्राचार्यजी को लल्ला के शिकागो न जा सकने पर आसमान फीका दिखाई देने लगता है और इस पर कवि ने उनसे पूछ ही लिया—'तो फिर क्या हुआ ?' इस प्रकार सामाजिक

१. प्यासी पथराई आँखें, पृ० ३२।
२. —वही—, पृ० ३७।
३. 'सच न बोलना' (कविता) 'हंस', जून १९४८, पृ० ६४०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्थितियों पर व्यंग्य करते हुए यह एक सुन्दर कविता है। 'विजयी के वंशधर' भी इसी प्रकार की कविता है। 'जयति नखरंजनी' कविता में आधुनिकाओं की उस फैशनपरस्ती पर व्यंग्य है जिसमें मतदान के बाद ऊँगली पर स्याही लगने से सुन्दरता का नष्ट हो जाना समझा जाता है।[१] इससे पता चलता है कि आजादी के बाद देश का विकास किस ओर हो रहा है—देश के प्रति प्रेम गौण हो रहा है और फैशन के प्रति आग्रह बढ़ रहा है। इस कविता से नये भारत में उदित हुए इस नये वर्ग की भूमिका का पता चलता है।

'विज्ञापन सुन्दरी' और 'प्लीज एक्सक्यूज मी' भी इसी प्रकार के व्यंग्य हैं जिनमें आधुनिकाओं पर व्यंग्य किया गया है। झूठी शान दिखाने का आडम्बर आज समाज में कितना बढ़ता जा रहा है और इस व्यर्थ प्रयास में महिलाएँ अपना स्तर कितना गिरा सकती हैं, इसका बोध इनसे होता है।

'अजी धन्य हो कवि कोकिल तुम' शीर्षक कविता में भी युग-बोध से दूर रहकरलिखनेवाले कवियों पर व्यग्य किया गया है।[२] ढलते दिनमान के तथाकथित छायावादी कवि पर व्यंग्य भी बड़ी उच्चकोटि का है।[३]

राजनीतिक भ्रष्टाचार एवं नेताओं पर व्यंग्य :

नागार्जुन के व्यंग्य का सबसे आकर्षक रूप राजनीतिक कविताओं में देखा जा सकता है, जिसमें उन्होंने कहीं भ्रष्ट स्वदेशी शासकों, साम्राज्यवादी राज्याध्यक्षों, सर्वोदयी नेताओं आदि पर उनकी अनैतिकता और कर्त्तव्यहीनता को देखकर व्यंग्य किया है। इस कवि ने इतनी अधिक राजनीतिक कविताएँ लिखी हैं कि 'नागार्जुन की राजनीतिक कविताओं में व्यंग्य' विषय पर स्वतन्त्र रूप से एक शोध ग्रन्थ तैयार हो सकता है।

नागार्जुन ने देखा है कि गाँधीजी देश में राम-राज्य लाने की कल्पना कर रहे थे, पर उनके चेलों की करतूतों से देश में राम के स्थान पर रावण का नाच हो रहा है। देश-व्यापी भ्रष्टाचार को रावण मानकर कवि ने करारा व्यग्य किया है, जिसने अन्तिम पंक्ति में आक्रोश का रूप ले लिया है :

राम राज में अबकी रावण नंगा होकर नाचा है
सूरत शकल वही है भैय्या बदला केवल ढाँचा है

१. सतरंगे पंखोंवाली, पृ० ३५।
२. युगधारा, पृ० ९०, ९१।
३. —वही—, ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नेताओं की नीयत बदली फिर तो अपने ही हाथों :
भारतमाता के गालों पर कसकर पड़ा तमाचा है।[1]

प्रस्तुत कविता में अवसरवादी नेताओं पर जमकर व्यंग्य किया गया है। नागार्जुन की व्यंग्यपूर्ण लेखनी के शिकार प्रायः काँग्रेसी नेतागण ही हुए हैं। इसी कविता में तत्कालीन भारतीय राजनीति में अमेरिकी हस्तक्षेप एवं गाँधीजी के चेलोंकी बेशरमी पर भी व्यंग्य किया गया है। नेहरूजी को सीधे लक्ष्य करके नागार्जुन ने लिखा है :

वतन बेच कर पंडित नेहरू फूले नहीं समाते हैं,
फिर भी बापू की समाधि पर झुक-झुक फूल चढ़ाते हैं।

'चनाजोर गरम' कविता में भी काँग्रेसियों पर व्यंग्य किया गया है :

चना है बना मसालेदार
खाइये भी तो यह सरकार
मिलेगा परमिट बारम्बार
मिलेंगे सौदे सभी उधार
नया हो जायेगा घर-बार
कि लद-लद कर आवेगी कार

नेहरू सरकार की देशसेवा पर कवि को बड़ा संदेह है। चुनाव में काँग्रेसी उम्मीदवारों के कारनामे का वर्णन इन पंक्तियों में स्पष्ट हुआ है :

वोट मिलना लगता आसान
कहीं पर भोज कहीं गुनगान
कहीं पर थोक नगद नगदान।[2]

कवि खादीधारी नेताओं को रँगा हुआ सियार मानता है। आजादी के बाद काँग्रेसी शासकों ने अपने पर जब-जब संकट घिरा पाया है, तब-तब देश पर संकट की बात कर जनता का ध्यान हटाया है। नागार्जुन इस चालाकी से परिचय करा रहे हैं :

वतन नहीं है खतरे में, खतरे में हैं नेतागण
रंग धुल रहा स्यारों का अब कौन करेगा पालागन।

नेतागण, जनता को सुखी भविष्य के सपने दिखाकर, वर्त्तमान में त्याग करने का भाषण दिया करते हैं, इस पर भी व्यंग्य किया गया है।

गोविन्द वल्लभ पंत उस समय भारत के गृहमंत्री थे जब ये पंक्तियाँ

१. हंस, जून १९४८ (रामराज कविता), पृ० ४९३, पद क्र० ७।
२. हंस, जनवरी १९५२, पृ० २३।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लिखी गयी थीं :

आजादी की कलियाँ फूटीं, पाँच साल में होंगे फूल
पाँच साल में कमल निकलेंगे, रहे पंतजी झूला झूल
पाँच साल कम खाओ भैय्या, गम खाओ दस-पन्द्रह साल
अपने हाथों से झोंको यों अपनी ही आँखों में धूल।

इसी प्रकार पंचवर्षीय योजनाओं से निम्न वर्ग का समुचित विकास नहीं हुआ। सन् १९६० में आजादी के तेरह साल बीत जाने पर भी योजनाएँ कागजों पर ही रह गयीं। निर्माण-कार्यों में व्याप्त भ्रष्टाचार का नमूना बाँध का स्वाधीन होता हुआ बालू बतला रहा है :

पाँच वर्ष की बनी योजना एक दो नहीं तीन
कागज के फूलों ने ले ली सबकी खुशबू छीन
बलिहारी कागजी खुशी की क्यों न बजायें बीन
फटे बाँध से बालू बोले हम भी हैं स्वाधीन
अश्वमेध का घोड़ा दौड़ा चित है चारों नाल
कौन कहेगा आजादी के बीते तेरह साल।[1]

'प्रेत का बयान' में भी देश में व्याप्त अकाल, भुखमरी और शासकों की अक्षमता पर व्यंग्य किया गया है।[2]

नेतागण आज गाँधी के नाम का उपयोग वोट लेने के लिए कर रहे हैं। यह देख कवि ने उनपर तीखा व्यंग्य किया है। इस तिक्तता का आधार कवि की अन्तर्वेदना ही है जिसके कारण वह 'महामानव' के नाम का दुरुपयोग और जनता का यह शोषण होते नहीं देख सकता। स्वराज्य-प्राप्ति के लिए जनता ने बलिदान इसलिए नहीं दिया था कि—

'बेच बेच कर गाँधीजी का नाम
बटोरो वोट
बैंक बैलेंस बढ़ाओ
राजघाट पर बापू की वेदी के आगे अश्रु बहाओ।[3]

इसमें कवि ने बड़ी बुलन्दी और दबंगता से काँग्रेसियों पर व्यंग्य किया है। 'भूस का पुतला' और 'बजट वार्तिक' भी उच्चकोटि की व्यंग्य कविताएँ हैं।

प्रेत का बयान पुस्तिका में कवि ने पीच रोड पर नेताजी की मचलती हुई तीस हजारी कार पर व्यंग्य किया है। 'चीलों की चली बारात' और 'मास्टर'

१. जनशक्ति (स्वतन्त्रता दिवस विशेषांक), १४ अगस्त १९६०।
२. युगधारा, पृ० १००।
३. युगधारा, पृ० १०४, १०५।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भी ऐसी ही व्यंग्यात्मक कविताएँ हैं जिनमें आक्रोश, जनता की पीड़ा और नेताओं की कर्त्तव्याभिमुखता से उत्पन्न विचारों की मिली-जुली प्रतिक्रिया है।

खून और शोले में आक्रोश से भरकर कवि ने नेहरू सरकार को 'नाजियों का वाप' तक कह डाला है। बी० एन० कालेज, पटना में हुए पुलिस जुल्म से क्षुब्ध कवि ने पुलिस अफसरों के 'भूसा भरे दिमाग' पर व्यंग्य किया है।[१]

'खड़ी है यह ट्रेन' और 'नेहरू' कविता में विदेशों में पंचशील का अलख जगाने, किन्तु देश के भीतर पुलिस जुल्म करवाने का आरोप नेहरू पर लगाते हुए व्यंग्य किया गया है।[२]

आज नेतागण भाषणों के द्वारा अपनी सेवा-भावना और कर्त्तव्यनिष्ठा के प्रदर्शन में खूब लगे हैं, पर उनके इन वक्तव्यों को रचनात्मक रूप मिलता नहीं दिखाई देता। हम कवि के इस विचार से सहमत हैं कि 'झंडा ऊँचा रहे हमारा' गीत गाने से झंडा ऊँचा नहीं होगा। पर यहाँ ऐसा ही किया जा रहा है। झंडे का ऊँचा होना तभी माना जा सकता है जब साधारण से साधारण व्यक्ति का जीवन भी ऊँचा उठ रहा हो।

दस हजार दस लाख मरें, पर झंडा ऊँचा रहे तुम्हारा
कुछ हो काँग्रेसी शासन का डंडा ऊँचा रहे तुम्हारा।[3]

'मैं हूँ सबके साथ' कविता में भी नागार्जुन ने काँग्रेसी कुशासन पर व्यंग्य किया है।

प्यासी पथराई आँखें काव्य-संग्रह में 'भारती सिर पीटती है' कविता में राजनीतिज्ञों द्वारा रुग्ण निराला के प्रति बरती गयी लापरवाही पर व्यंग्य करते हुए कवि ने लिखा है :

राजनीतिक अकड़ में जड़ ही रहा संसद भवन[४]

'वे तुमको गोली मारेंगे' बड़ी सुन्दर व्यंग्यपूर्ण रचना है जिसमें पार्टीविहीन जनतन्त्र में क्या स्थिति होगी पर व्यंग्य किया गया है :

नभ से मुस्काएगा तब डाकू मानसिंह
वह जयप्रकाश पर पान-फूल बरसाएगा।[५]

जयप्रकाश बाबू पर मानसिंह का यह पुष्प-समर्पण करना बड़ी भीतरी चोट पहुँचानेवाला व्यंग्य है।

१. खून और शोले, पृ० ६।
२. —वही—, पृ० १०, ११।
३. —वही— ।
४. प्यासी पथराई आँखें, पृ० १०, ११।
५. —वही—पृ० ५६।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देश में व्याप्त भ्रष्टाचार, पुलिस आतंक और जन-धन की फिजूलखर्ची पर नागार्जुन ने खूब व्यंग्य किये हैं। 'आओ रानी हम ढोएँगे पालकी' एवं 'टके की मुस्कान करोड़ों का खर्चा' कविताओं में रानी ऐलिजाबेथ के भारत आगमन पर और यहाँ की सरकार द्वारा उसके स्वागत के लिए किये गये अपव्यय पर व्यंग्य किया गया है। रानी क्या आ गयी है—हमारे देश के मिनिस्टर, संसद सदस्य आदि भाव-विभोर हो गये हैं। कवि ने लिखा है :

पार्लमेन्ट के प्रतिनिधियों से आदर लो, सत्कार लो
मिनिस्टरों से शैक हैण्ड लो, जनता से जय जयकार लो
धन कुबेर उत्सुक दीखेंगे उनको जरा दुलार लो
होठों को कम्पित कर लो, रह-रह के कनखी मार लो।

देशी नवाबों और राजाओं को देश का स्वतन्त्र होना अधिक बुरा लगा, क्योंकि उनका राज चला गया। कवि ने 'टके की मुस्कान करोड़ों का खर्चा में' उन्हें भी नहीं छोड़ा है :

पछताते हैं राजा पछताते नवाब
देखते हैं पुराने दिनों के ख्वाब
राजा होंगे स्वतन्त्र स्वतन्त्र होंगे राजा
लौटेगी शाहन्शाही, शासन होगा ताजा
एक होगा राजाधिराज बहादुर
गाएँगे यश झींगुर और दादुर।

नागार्जुन की यह विशेषता है कि सामयिक समस्याओं पर उनकी प्रतिक्रिया तुरन्त व्यक्त होती रही है। देश की आजादी का दुरुपयोग करनेवाले नेता, जमींदार और पूँजीपति सबको उन्होंने व्यंग्य का निशाना बनाया है।

कवि की इधर की कविताओं में राजनीतिक घटनाओं पर काफी सुन्दर व्यंग्य लिखे गये हैं। अवसरवादिता, चुनाव के टिकट प्राप्त करने की दौड़-धूप, नेताओं के आडम्बर, चीनी घुसपैठ, रूस की साम्राज्यवादी नीति, नक्सलवाद, शिवसेना, सिण्डिकेट, इण्डिकेट, आदि सबपर कवि की दृष्टि रही है और उनमें व्याप्त बुराइयों पर व्यंग्य किया गया है। सामयिकता बोध नागार्जुन की सबसे बड़ी विशेषता है। कवि ने जिसे अनुचित समझा है उसे कभी माफ नहीं किया है। सदैव जनशक्ति का आदर करनेवाला, अवसरवादी नेताओं का नकाब उलटनेवाला रूप ले यह जन-कवि उपस्थित हुआ है। हमारा विचार है, प्रारम्भिक स्थिति से नागार्जुन के व्यंग्यों में अब पर्याप्त सुधार होता जा रहा है। बौद्धिकता उनका प्रमुख गुण बनती जा रही है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'त्रिमूर्ति' शीर्षक कविता में उन्होंने फिजो, दलाईलामा और जयप्रकाश को उपस्थित करके व्यंग्य किया है :

फिजो (दलाईलामा की याद में)—

तुम भागे तो पहुँचे हिन्दुस्तान
नभ में गूँजा स्वागत का ऐलान
और आज मैं खुद आया हूँ भाग
स्वागत में ये तोप रहे हैं दाग
किन्तु इधर नेहरू उगलेंगे आग ।

दलाईलामा (फिजो की याद में)—

नहीं लौटने का तुम लेना नाम
हम दो हैं एक सरीखा काम
शत्रु करें शीर्षासन का व्यायाम
मुक्ति मार्ग है लन्दन के फुटपाथ

फिजो भागकर लन्दन चला गया था ।

जयप्रकाश (दोनों की याद में)—

समझ रही है जनता अपनी भूल
चाऊ-नेहरू चाटेंगे अब धूल
तुम दोनों पर बरसाऊँगा फूल ।[1]

'जयति जयति सर्वमंगला' कविता में भी अवसरवादी नेताओं पर व्यंग्य है :

भूमिदान करवाने की लो, सनक सवार हुई है सिर पर लोमश मुनि के
दुर्वासा उपकुलपति बनने की फिराक में
घात लगाये घूम रहे हैं
क्यों न गवर्नर इन्हें बना लेते हो दादा ।[2]

सन् १९६२ में भारत पर चीनी आक्रमण के बाद नागार्जुन की विचार-धारा में पर्याप्त परिवर्तन आ गया । जो कवि कभी चीन की प्रशंसा के गीत गाता था वह उसका कट्टर विरोधी हो गया । चीनी घुसपैठ की प्रतिक्रिया से उत्पन्न मानसिक उद्वेलन व्यंग्य और आक्रोश के रूप में व्यक्त हुआ है ।

१. जुलाई १९६०, जनशक्ति, पटना ।
२. हंस—शान्ति अंक, पृ० १३३ ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सन् १९६० में कवि ने चीन के समर्थन में लिखा था :

जाने क्या-क्या बकवाता है सेठों का अनुराग
भले-भले मुँह उगल रहे हैं चीन-विरोधी आग ।[1]

किन्तु १९६२ के बाद चीनी नेताओं को उसने स्वयं आड़े हाथों लिया है। माओ को कमसिन बताकर उसके साथ छेड़खानी की है :

बूढ़ा हुआ बीमार, विदा हुआ स्तालिन
माओ मगर हमेशा रहेगा कमसिन ।[2]

कवि ने पाकिस्तान और चीन के अपवित्र गठ-बन्धन को साथ-साथ वायलिन बजाना निरूपित किया है। उसने लिखा है :

आ गये अब तो दिन ऐश के
मार्क्स तेरी दाढ़ी में जूँ ने दिये होंगे अंडे
निकल रहे हैं उन्हीं में से कम्युनिज्म के पंडे ।

चीन ने मार्क्स और लेनिन के साम्यवादी विचारों को एक ओर छोड़ दिया। इसी ओर संकेत करते हुए कवि ने चाऊ के पीले चेहरे के लिए लिखा है :

पीले बिलौटे ने मार दिया पंजाऽऽ
सर हुआ घायल लेनिन का गंजाऽऽ
हँसता रहा लिउ—शाओ—ची—फि फि फि ।[3]

पंचशील के सिद्धान्तों और शान्ति के कपोतों से चीनी आक्रमण का मुकाबला करनेवालों पर 'जी हाँ, पेकिंग ही रहते थे, कल तक मेरे नाना' कविता में व्यंग्य किया गया है। हम पंचशील की नदी बहा रहे थे। हिन्दी-चीनी भाई-भाई के नारे लगा रहे थे और वे सैन्य तैयारी में लगे थे। अब आज हार जाने के बाद लगाओ देखें ये नारे :

अब तो मुँह में दही जम गया
अब तो आती है उबकाई
बोलो फिर से कौन कहेगा
हिन्दी-चीनी भाई-भाई ।

कवि ने सी० पी० आई० के नेताओं पर बड़ा तीखा व्यंग्य किया है। यह दल रूसी वक्तव्यों को ही अपना आदर्श वाक्य मानता है। रूस के बयान ही इसकी नीति निर्धारित करते हैं। चीनी आक्रमण होने पर भी रूस ने चीन-

१. जनशक्ति, पटना, १४ अगस्त, १९६० ।
२. पाण्डुलिपि से ।
३. पाण्डुलिपि से ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विरोधी या समर्थन-सम्बन्धी कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की। ऐसी अवस्था में भारत के सी० पी० आई० नेता भी चुप रहे। इसी स्थिति पर यह व्यंग्य है :

अकड़ गई है ख्रुश्चेव की जीभ
कहाँ कुछ कहा है उसने
चीनी कामरेडों से
तो आप तब तक चुप रहेंगे
जब तक ख्रुश्चेव कुछ नहीं बोलेगा।[1]

ख्रुश्चेव का नाम इसलिए आया है कि उस समय ख्रुश्चेव ही रूस के प्रधानमंत्री थे।

'कामरेड आर० पी० दत्त' (रजनी पाम दत्त : ब्रिटेन के प्रख्यात कम्युनिस्ट नेता) कविता में कवि ने कामरेड की भारत-विरोधी नीति पर व्यंग्य किया है।

शान्ति सैनिक विना खून बहाये देश की रक्षा करना चाहते हैं, किन्तु कपोतों और नारों से शत्रु को परास्त नहीं किया जा सकता, फिर भविष्य में अपने नाती-पोतों को आप क्या उत्तर देंगे यदि—

शान्ति सैनिक के लट्टू का रंग कैसा होता है
पूछेगा आप से आपका नाती
क्या होगा उत्तर सोच कर रखिये।[2]

मियां 'अय्यूब' पर लिखी कविता में नागार्जुन ने देश के उन नेताओं पर, जो अपने को विस्तृत दृष्टिकोण-सम्पन्न सिद्ध करने की मदिर लालसा में खोये-खोये हैं, व्यंग्य किया है। वे देश की समस्याओं से बेखबर हैं। उनका बस चले तो वे समूचा देश ही शत्रु-चरणों में भेंट चढ़ा दें। कवि अय्यूब से पूछता है :

सच बोलो चाहिए तुम्हें कश्मीर
राजाजी बतला देंगे तदबीर
चाहिए तुम्हें पाँचों नदियों का पानी
दिलवा देंगे मुंशी और मसानी
चाहिए तुम्हें क्या जयपुर जैसलमेर
रानी गायत्री से पूछो नाहक करते देर
चाहिए क्या तुम्हें त्रिपुरा कूच बिहार
जयप्रकाश हैं बिल्कुल ही तैयार

१. पाण्डुलिपि से।
२. —वही—।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रिय है तुमको आसाम
कृपलानी को ठोको डबल सलाम ।[1]

कवि ने 'ताशकंद की जय हो' कविता में समझौते से खिन्न होकर व्यंग्य किया है ।

नागार्जुन ने रूस के विरोध में भी कविताएँ लिखी हैं । इसका कारण है रूसी कूटनीति जिसे वस्तुतः कपट नीति कहना चाहिए । भारत में मित्रता जताते हुए भी रूसी नेता अन्दर ही अन्दर चालें चलते रहे हैं । इसीलिए कवि मार्क्स और लेनिन के ताला-चाभी रूस को सौंप रहा है :

क्रान्ति तुम्हारी तुम्हें मुबारक
भ्रान्ति तुम्हारी तुम्हें मुबारक
कूट कपट की भीतरघाती
शान्ति तुम्हारी तुम्हें मुबारक ।

रूस ने अचानक चेकोस्लाविया की राजधानी प्राग पर अपने टैंक चढ़ा दिये । इस आक्रमण से शान्तिप्रिय चेक जनता ही नहीं, रूस को शान्तिप्रिय देश समझनेवाले राष्ट्र भी हतप्रभ हो गये । विश्व कम्युनिस्ट प्रतिनिधियों के मास्को शिखर सम्मेलन में चेकोस्लावाक प्रतिनिधि की ओर से प्रस्तुत बयान में नागार्जुन ने रूसी हरकत पर बड़ा ही पैना व्यंग्य किया है :

जी, आपको गलतफहमी हुई है
जी, हमने ही इन्हें चिढ़ाया था पहले
जी, बल्कि परेशान किया था हमने इन्हें
जी, बिल्कुल झूठा, इन्होंने हमारे कान कहाँ उमेठे,
जी, उल्टे हमीं ने इन्हें गालियाँ दी थीं,
जी, वो तो यूँ ही दिखाई दे गई प्राग में रूसी टैंकों की कतार
जी, वो तो मांगलिक रथयात्रा थी हमारे अँग्रेजों की
जी, सच मानिए
डबचेक को हमने दे दिया है अवकाश ।[2]

इस प्रकार नागार्जुन ने काँग्रेसियों को ही नहीं कामरेडों को भी अपने व्यंग्य का निशाना बनाया है । चीनी आक्रमण के बाद जिसने चीन की भर्त्सना नहीं की नागार्जुन ने उन सबसे मीठी चुटकी ली है । बंगाल के अण्डरग्राउण्ड

१. पाण्डुलिपि से ।
२. —वही— ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कामरेड, जो चीन की ओर अभी भी प्रिय दृष्टि से निहार रहे हैं, के लिए कवि ने लिखा है :

पूर्वोत्तर हिन्दुस्तान
मिलने वाला है दान
बंगाल के अण्डरग्राउण्ड कामरेडों को
कलिम्पोंग होगी उनकी राजधानी
हुक्म चलायेगी लाल चीन की रानी,
पेकिंग में बैठकर ।[1]

भारतीय फौजों द्वारा 'वौमदिला' खाली करने पर भी नागार्जुन ने व्यंग्य-पूर्ण कविता लिखी है ।

बंगाल के नक्सलवादियों की हिंसक हरकतों से कवि बड़ा क्षुब्ध है । तरुण शक्ति का यह प्रतिगामी उत्साह कवि के क्षोभ का कारण रहा है । इन्हीं पर कवि ने मीठा व्यंग्य किया है :

देखो तो इन किशोरों का हठ
करेंगे तैयार कानू सान्याल का मठ
निकलेगा उसमें से विप्लव का व्रजयान
आरूढ़ी होंगे उसमें से कल्की भगवान
कन्धे से लटकती होगी बन्दूक
आगे होगी लाल किताबों की सन्दूक
हम भी रहेंगे शामिल, करते चलेंगे कीर्तन
चालू रहेगा भाव विभोर गायन
नक्सल बड़ीर लाल आगुन
छड़िये पड़क दिके दिके ।

नक्सलवादी लाल आग पर व्यंग्य स्पष्ट है । 'नरवरों वाली दिल्ली से अब ऊब गयी है कलकत्ता' शीर्षक कविता भी बंगाल के नक्सलवाद द्वारा आगजनी की घटनाओं को स्पष्ट करती हुई उनपर व्यंग्य कर रही है । ट्रेनें जलाना वहाँ साधारण बात है, इसीलिए कवि ने पूछा है :

बोलो कैसे पहुँचेगी यह गाड़ी कलकत्ता
भारत में हनोई सी दीख रही है कलकत्ता ।[2]

१. पाण्डुलिपि से ।
२. —वही— ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नागार्जुन को गाँधी पर अपार श्रद्धा है, किन्तु गाँधी के चेलों ने गाँधी को मात्र पूजा का प्रतीक बना दिया है। उसे श्रद्धांजलियों में डुबो दिया है। गाँधी की शिक्षाओं को उन्होंने अपने आचरण में नहीं ढाला। किन्तु उन उपदेशों को भी अपने स्वार्थ-साधन के सत्र रूप में प्रयोग किया है। गाँधीवादी खान-पान ही इन नेताओं का मुख्य 'आयटम' आज बना हुआ है। इन्हीं सर्वोदयी कार्यकर्त्ताओं पर कवि ने व्यंग्य किया है :

दिन दिन पदयात्रा, कर्महीन
चिन्तन का केवल चमत्कार
बतला दो बापू क्या थे तुम
गोरस मधु सेवन फलाहार ?

आज गाँधी के ये चेले गाय के धारोष्ण दूध, शहद आदि में ही गाँधीवाद को डुबो कर बैठे हैं :

श्रद्धा दोहन की नई रीति
नूतन मठ का नव परिष्कार
बतला दो बापू क्या थे तुम
जीवनदानी का नभ विहार ?

इन पंक्तियों में जयप्रकाश नारायण के जीवनदान और वायुयान सफर पर व्यंग्य किया गया है। प्रजातन्त्र के रथ पर भी रूढ़िवाद, जातिवाद और फिरकापरस्ती छायी हुई है। देश में जगह-जगह दंगे हो रहे हैं। गाँधी, जो अहिंसा का सबसे उज्ज्वलतम प्रकाशपुंज था, उसकी शिक्षाओं का हमने क्या उपयोग किया ? वस्तुतः हम तो ऊपरी आडम्बर करते हैं, चरखा कातते हैं और बापू को रजत फ्रेम में कैद रखते हैं, उन्हें और उनकी शिक्षाओं को बाहर नहीं निकलने देते :

यरवदा चक्र पर कातूँगा
सूतों के लच्छे सुबह शाम
तुम रजत रूप में कैद रहो
जी, नित्य करूँगा मैं प्रणाम।

और उसका परिणाम क्या होगा :

फिर तो अपनी कोठी होगी
चमकीली होगी नई कार
नाती-पोते बहकेंगे तो
बहुएँ लेंगी उनको सुधार
फिर तो मुझे सुलभ होंगे
गोरस मधु सेवन फलाहार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दुनिया भर को दिखलाऊँगा
चिन्तन का अद्भुत चमत्कार।

गाँधी ने साम्प्रदायिक विद्वेष की आग बुझाने में अपना बलिदान दे दिया। कवि जब देश में फिर साम्प्रदायिक वैमनस्य के बादल मँडराते देखता है तो क्षुब्ध हो जाता है। ऐसा अभी गाँधी के प्रमुख चेतना-केन्द्र अहमदाबाद में हुआ। हिन्दू-मुस्लिम एक-दूसरे के खून के प्यासे हो गये। ३० जनवरी, १९७० को गाँधी पुण्य तिथि के अवसर पर कवि ने जो कविता लिखी उसमें दंगों की आग में हाथ सेंकनेवाले नेताओं पर व्यंग्य किया गया है। वस्तुतः कवि देख रहा है कि नेतागण जनता को मूर्ख बनाकर अपने उल्लू सीधे कर रहे हैं। राजनीति सिण्डीकेट के झगड़े में फँसी है। देशसेवा नहीं, अब कुर्सी-आराधना ही नेताओं का प्रमुख लक्ष्य होता जा रहा है। इसीलिए कवि ने लिखा :

मैं देख रहा श्वापद बैठे सिंहासन पर
मैं देख रहा नटराज जमे हैं अनशन पर।

'नटराज' शब्द से मुरारजी देसाई पर व्यंग्य किया गया है। अहमदाबाद के दंगों में शान्ति-स्थापना के लिए कुछ समय बाद वे अनशन पर बिराजे थे। गाँधी स्वयं ऐसी आग में निर्भय होकर कूद जाते थे और शान्ति स्थापित कर देते थे, पर टाटा-बिड़ला को अपना समझनेवाले ये वर्त्तमान नेतागण दंगे के बाद मात्र स्टेटमेण्ट देते फिरते हैं। इनकी कथनी और करनी में भेद स्पष्ट है। इसी से दलितों के सपने साकार नहीं हो रहे हैं। इसी को लक्ष्य कर लिखा गया है :

दायित्व नहीं कुछ लेता हूँ, मैं देख रहा;
गिरगिट के अण्डे सेता हूँ, मैं देख रहा,
दलितों के सपने सपने हैं, मैं देख रहा,
फिर मंत्र पुराने जपते हैं, मैं देख रहा,
टाटा, बिड़ला ही अपने हैं, मैं देख रहा।

निम्न पंक्तियों में कवि ने जयप्रकाश नारायण के लिए व्यंग्य किया है :

मैं धनपतियों के दिल पिघलाता रहता हूँ
पीड़ित जनता को मैं सहलाता रहता हूँ
मैं विश्व वेदना में हकलाता रहता हूँ
दंगाग्रस्तों की गलियों से मैं दूर-दूर
सन् बयालिस की मादक सुधियों में चूर-चूर
मैं पुलिस गाड़ियाँ देख रहा हूँ घूर-घूर[1]।

१. जनयुग, २५ फरवरी १९७०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'गाँधी के तीन बन्दर' कविता में अपने-आपको गाँधी का पटु शिष्य मानने वाले तीन बन्दरों पर कवि ने व्यंग्य की मीठी चुटकी ली है। ये बन्दर गाँधी के भी ताऊ हैं, जो गाँधी-सूत्रों को अपनी इच्छानुसार परिभाषित करके उलझा रहे हैं :

बापू के भी ताऊ निकले तीनों बन्दर बापू के
सरल सूत्र उलझाऊ निकले तीनों बन्दर बापू के।

आगे है :

दिल की कली खिली है, खुश हैं तीनों बन्दर···
बूढ़े हैं फिर भी जवान तीनों बन्दर···
सेठों के हित साध रहे हैं···
युग पर प्रवचन लाद रहे हैं···

सर्वोदयी समाज के ये मठाधीश प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सत्ताधारी काँग्रेस से लाभान्वित हो रहे हैं, फिर भी प्रत्यक्ष रूप से अपने को दलातीत सिद्ध करने में कोई कसर नहीं उठा रखते :

दल से ऊपर, दल से नीचे
मुस्काते आँखें मींचे हैं तीनों बन्दर···
करें रात दिन टूर हवाई
बदल-बदल कर चखें मलाई तीनों···[1]

देश की हर प्रमुख राजनैतिक घटना पर नागार्जुन ने निर्भीक होकर मत प्रकाशन किया है। जमींदारों या सेठों के अत्याचार हों, या स्वदेशी नेताओं का भ्रष्टाचार, चीनी घुसपैठ हो या अन्न-संकट, राष्ट्रपति चुनाव हो या काँग्रेस की फूट—सबमें व्याप्त अनीतियों को उसने सम्बन्धित का कान पकड़ कर दिखला दिया है।

सन् १९६९ के राष्ट्रपति चुनाव में वी०वी०गिरि और नीलम संजीव रेड्डी खड़े हुए थे। रेड्डी काँग्रेस के उम्मीदवार थे जिन्हें सिंहवन हल्ली, निजलिंग-गप्पा, मोरारजी देसाई, कामराज, एस० के० पाटील, अतुल्य घोष का समर्थन प्राप्त था। इन्दिरा गाँधी ने स्वयं रेड्डी का नाम प्रस्तावित किया था, पर वे गिरि साहब को समर्थन दे रही थीं। काँग्रेस में फूट का बुनियादी आधार यही रहा। नागार्जुन ने अपना समर्थन गिरि को दिया। उसका कारण शायद यह रहा होगा कि आरम्भ से गिरि साहब मजदूरों के नेता रहे हैं। इस वर्ग की उन्होंने बहुत सेवा की जबकि ये पाँचों पूँजीपतियों के ग्रूप के माने जाते रहे।

१. पाण्डुलिपि से।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इसी कारण ३-८-६९ को लिखी 'आओ आओ' कविता में सिण्डिकेट पर व्यंग्य किया गया है :

मानव लौटा वहाँ चाँद का जिस्म खुरच कर
यहाँ छछून्दर बना बिलौटा सगी बहिन की नाक कुतर कर
पाँचों खूनी पाँचों हाथी जाने किधर छिपे जंगल में
उनका पट्ठा काँप रहा थर-थर दंगल में
जन-मन अंकुश लटक रहा भाले सा ऊपर
जबरन ठेला गया अभागा हद के अन्दर।

नील आर्म्सस्ट्रांग उसी समय चन्द्र-विजय कर लौटा था।

पार्टी विभाजन के इस नाजुक दौर में चौहान साहब चुप रहे। कई दिनों तक वे करिश्मा देखते रहे, अनुमान करते रहे कि ऊँट किस करवट बैठता है। जहाँ पार्टी-अनुशासन का प्रश्न था उनका झुकाव कामराज आदि की ओर आभासित होता था। जहाँ उनके मंत्री पद की खैरियत की बात थी वे इन्दिरा गाँधी की दया पर निर्भर थे। वस्तुतः वे दोनों हाथों में लड्डू रखना चाहते थे। तभी कई दिनों तक अपनी स्थिति उन्होंने स्पष्ट नहीं की। नागार्जुन ने उनकी इसी चालाकी पर व्यंग्य किया है :

कामराज के और चव्हाण के पकड़ो कान पास बैठाओ,
निजलिंगी लिंगायतजी को चन्दन वन की राह दिखाओ[1]

'भले पधारे निजलिंगप्पा' कविता में निजलिंगप्पा के स्वागत में सबको टोरी-टप्पा गाने के लिए कवि ने कहा है। उन पर व्यंग्य किया है :

नजर टिकी थी बस कंचन पर
हाँ भाई हाँ सारा जीवन
मक्खन मलता रहा बदन पर
सत्तर चूहे खाकर रीझा
वृद्ध बिलौटा अब जन-मन पर[2]

'आए दिन बहार के' कविता में चुनावी टिकट की दौड़-धूप और जीतने के बाद कार-बंगलों के सपनों पर भी व्यंग्य किया गया है।

राजनीतिक गतिविधियों में व्यस्त और अपने उल्लू सीधे करते हुए नेताओं से युक्त यह देश कवि को एक चिड़ियाखाने के समान दिखाई देता है जिसमें सब जानवर अपनी-अपनी करतूतें दिखा रहे हैं।

१. पाण्डुलिपि से।
२. नया संसार, दैनिक में प्रकाशित।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कवि के इस चिड़ियाखाने को देखने-समझने में पाठकों को देर न लगेगी :

देखा सबने चिड़ियाखाना
सुना चीखना और चिल्लाना
धवल टोपियाँ फेंक रहे थे
मगर गधों से रेंक रहे थे
धोती-कुर्त्ते में थे हाथी
सुअर ऊँट थे जिनके साथी

बैलों के पीछे अनबोले
मचल रहे थे साँप-सपोले
बार पास था, कार पास थी
बुढ़िया कंगारू उदास थी[1]

काँग्रेसियों पर 'फिर भी हमें न देना वोट' कविता में काँग्रेसी भाई-भतीजावाद एवं स्वार्थसिद्धि पर व्यंग्य स्पष्ट है :

बीस साल तर माल उड़ाए
पुर-परिजन के नयन जुड़ाए
अपनी नावें पार लगा लीं
बहती बेड़े बहुत बुड़ाए[2]

'सोशलिज्म में अबकी सचमुच अर्थ जुड़ गया' कविता में सिण्डिकेट नेताओं पर व्यंग्य किया गया है। कहीं कवि ने उन्हें 'व्याकुल उल्लू', 'मुद्राराक्षस' आदि उपाधियाँ दी हैं।

'तुम रह जाते दस साल और' कविता में कवि ने नेहरू की नीतियों पर व्यंग्य किया है। कवि ने नेहरू से लाभान्वित होनेवाले नेताओं को भी अपनी पकड़ में लपेट लिया है। कवि का विचार है कि यदि नेहरू दस साल और रह जाते तो काँग्रेसी कार्यकर्त्ता खादी की ओट में गाँजा बेचा करते। नेहरू सबका तेज-हरण करवा देते। यहाँ तक कि संध्या और प्रभात भी उनके कार्यकाल में डरे-डरे रहते :

होता सबका ही तेज-हरण, जुगनू कर लेती आत्मघात
हँसते गुलाब खिलते गुलाब, कमलों की करता कौन बात
महलों की महँगी बिजली से डरती संध्या, डरता प्रभात
जमती अशोक के सिंहों पर बेशर्म उल्लुओं की जमात।

१. जनयुग, १५ जनवरी १९६७।
२. पाण्डुलिपि से।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तब प्रशासन में उल्लू ही उल्लू दिखाई देते। कवि का विचार है कि यदि नेहरू और दस साल रह जाते तो लोग पानी का स्वाद ही भूल जाते···फिर क्या होता ?

भाता न किसी को दूध-दही, पानी का जाता स्वाद भूल
बोतल की मस्ती के मारे सब कहते सबको 'डैम फूल।

और देश के राजनीतिक नेताओं का क्या हश्र होता ?

गेरुआ पहनते जयप्रकाश, नर्मदा किनारे बस जाते
डाँगे हो जाते राज्यपाल, लोहिया जेल में बल खाते
गोपालन हो जाते नजरबंद राजाजी माथा घुटवाते
जनसंघी अटलबिहारीजी भिक्षा की झोली फैलाते।[1]

डाँगे को, विरोध के कारण, राज्यपाल पद देकर चुप कर दिया जाता, पर जय बाबू को तो नर्मदा किनारे ही गति मिलती और वाजपेयीजी की हालत तो और भी दयनीय हो जाती।

सन् १९६७ के आम चुनाव में कई पुराने काँग्रेसी धराशायी हो गये। जनता ने नये खून को मौका देना उचित समझा। इस प्रकार इन काँग्रेसियों की बरसों की ठेकेदारी खत्म हो गयी। उसी स्थिति पर व्यंग्य करते हुए नागार्जुन ने 'बूढ़ा शेर' कविता लिखी। इन काँग्रेसियों की हालत कवि को अशक्त बूढ़े शेर के समान दिखाई दी :

परसों था जंगल का राजा
कल था घायल बूढ़ा शेर
आज मगर यह झींख रहा है
जुग का कायल बूढ़ा शेर

आगे कवि ने बूढ़े काँग्रेसियों की अकुलाहट को सामने लाया है :

दाँत झड़े नाखून घिस गए
अकुलाता है बूढ़ा शेर
विगत सुखों की याद आ रही
पछताता है बूढ़ा शेर
लाशें बिछी पड़ीं बैलों की पछताता है बूढ़ा शेर
चलो विधान-सभा के अन्दर
देखो जी तुम बूढ़ा शेर

१. पाण्डुलिपि से।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कवि का विचार है कि अभी भी ये तथाकथित काँग्रेसी अपने रँगीन सपनों को फिर से पूरा करने की धुन में उचित-अनुचित सब साधनों का उपयोग करेंगे। युवक वर्ग जो अभी निर्वाचित हुआ है उसे वे फुसलाएँगे :

गीदड़ जय जयकार मनाए
अभी जियेगा बूढ़ा शेर
इन बछड़ों को फुसलाएगा
जाने कब तक बूढ़ा शेर[1]

कविता की विशेषता यह है कि रचनाकाल के चार वर्ष पश्चात् भी उसमें वही प्रभाव बना हुआ है।

राष्ट्रपति चुनाव में नागार्जुन ने गिरि और श्रीमती इन्दिरा गाँधी के समर्थन में कविता लिखी। पर इसका यह तात्पर्य नहीं कि वह इन्दिरा का भक्त ही बन गया। 'चलो चलो धरना दें चलकर दिल्ली के दरबार में' कविता में कवि ने श्रीमती गाँधी पर व्यंग्य किया है :

जगततारिणी प्रगट हुई है नेहरू के परिवार में
उसके कई मुखौटे देखो, छपते हैं अखबार में
जान्सन विल्सन सभी जुटे हैं, पूजा में उपचार में
कोसिजिन भी दिखता तत्पर सेवा में सत्कार में।[2]

३०-१०-६८ को नागार्जुन ने एक व्यंग्य रचना लिखी। इस कविता में देश में हो रहे अहित के कारक व्यक्ति पर व्यंग्य किया गया है। एक बन्दरिया को उपस्थित कर देश की राजनीति में उसकी बदगुमानी स्पष्ट की गयी है। बन्दरिया की पहचान पाठकों पर ही छोड़ दी गयी है :

छतरी वाला जाल छोड़कर
अरे, हवाई डाल छोड़कर
एक बन्दरिया कूदी धम से
बोली तुमसे बोली हमसे
बचपन में ही बापूजी का प्यार मिला था
सात समुन्दर पार पिता के धनी दोस्त थे
देखो मुझको यही नौ लखा हार मिला था
पिता मरे तो हमदर्दी का तार मिला था
आज बनी मैं किष्किन्धा की रानी
सारे बन्दर सारे भालू भरा करें अब पानी।

१. जनयुग, १० सितम्बर, १९६७।
२. पाण्डुलिपि से।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अन्त में नागार्जुन व्यंग्य के लहजे में जिस देवी के बन्दरिया स्वभाव और झूठे घमंड तथा तथाकथित गाँधीवादी पर्दादारी पर चोट करते हैं उससे नागार्जुन की व्यंग्य-प्रखरता का पता चलता है :

तीन रंग का घाघरा, ब्लाउज गाँधी छाप
एक बन्दरिया उछल रही देखो अपने आप[1]

इस प्रकार के व्यंग्य, स्तर की दृष्टि से, उच्चकोटि के इसलिए हैं कि इनमें किसी का नाम लेकर गाली नहीं दी गयी है। 'भारतमाता ग्रामवासिनी' पन्तजी की कविता के ढंग की 'भारतपुत्री नगरवासिनी' कविता भी इसी प्रकार उच्च कोटि की व्यंग्यपूर्ण रचना है :

विकट व्यूह, अति कुटिल नीति है
उच्च वर्ग से परम प्रीति है
घूम रही है वोट माँगती
कामराज कटु हास हासिनी[2]

अन्तिम पद में जॉन्सन को खुश करने के लिए भारत-पुत्री के घुटने टेकने पर व्यंग्य किया गया है।

'रानी मक्खी' इसी कोटि की तीसरी रचना है जिसमें मधुमक्खियों की रानी को ताजे फूलों के चखने की बधाई देते हुए व्यंग्य किया गया है :

इधर झींगुरों की जमात है
उधर सजी भौंरों की महफिल
गीध पा गए दुआ तुम्हारी
धड़क रहा है अपना तो दिल
तुम्हें मुबारक शाही नखरे
तुम्हें मुबारक छत्ते की गद्दी नौलखी[3]

आगे कवि ने कल्पना की है कि मंत्री मक्खी आदि रानी की सेवा में जुटे रहेंगे और दुनिया भर के क्रूर जानवर और मनुष्यभक्षी रानी को बधाई देंगे। इस प्रकार कवि ने रानी की हिंसक वृत्तियों की ओर संकेत किया है। देश की राजनीति को मधुमक्खी का छत्ता मानकर नेताओं पर इस कुशलता से व्यंग्य कर देना नागार्जुन जैसे कवियों के ही बस की बात है। स्पष्ट है कि कवि का बौद्धिक पक्ष और राजनीतिक ज्ञान पूर्ण परिपक्व है। 'दिन लद गए सिंहासन-राय के'[4] कविता में राजनीति की रस्साकशी पर व्यंग्य है।

१. पाण्डुलिपि से।
२. पाण्डुलिपि से।
३. जनयुग, ७ अप्रैल, १९६८।
४. —वही—, २२ जनवरी १९६७।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चुनावी टिकट-प्राप्ति-प्रतियोगिता में जो सिर-फुटौवल नेतागणों में होती है उसकी झलक 'रोये बड़े-बड़े बलिदानी' कविता में देखी जा सकती है :

भालू ठेकेदार बने हैं
जामवन्त के सब अपने हैं
धनपतियों ने लम्बी तानी
कामराज की मति सठियानी
रोये बड़े-बड़ बलिदानी
टिकटों की थी विकट कहानी[१]

'किस्सा नायाब तमाशे कुसुमपुर महानगरी'[२] शीर्षक से नागार्जुन की पाँच कविताएँ प्रकाशित हुईं जिनमें हाईकमान और अन्य नेताओं की सत्ता-लोलुपता स्पष्ट की गयी है।'' कवि ने चंद विधायकों को उपस्थित करके उनसे कोरस गवाया है जो बड़ी सुन्दर रचना है।

'आखिर तो इन्सान हैं भाई मोरारजी'[३] में मुरारजी पर तथा 'डालर रोया विलख-विलख कर' कविता में जॉन्सन पर व्यंग्य है :

जाने कैसे बीच हाट में
सौ सेठों का सेठ घिर गया[४]

'देवी लिबर्टी' नागार्जुन की बड़ी तेज व्यंग्य रचना है। इसमें अमेरिकी साम्राज्यवादी अत्याचारों पर प्रहार किया गया है।[५]

अमेरिका के शांतिप्रिय नेता 'मार्टिन लूथर किंग' की हत्या के समाचार सुन कवि को बड़ा धक्का लगा। इस समाचार पर अमेरिकी टिप्पणियों के प्रकाशन को देख नागार्जुन ने 'हत्यारा' कविता में उस पर व्यंग्य किया है। 'शिकागो होगा हनोई' में भी जॉन्सन की नीतियों की बखिया उधेड़ी है।[६]

'विएतनाम' कविता में भी अपनी आजादी के लिए अमेरिकी भेड़ियों से लड़ने वाली बहादुर विएतनामी जनता का कवि ने अभिनन्दन किया है। अमेरिका को गोरी नागिन सम्बोधित करके उस पर व्यंग्य किया है :

वाह, एशिया के सीने पर अन्ध झील में
खौल रहा है बर्बरता का काला पानी।

१. जनयुग, ८ जनवरी १९६७।
२. —वही—, ४ फरवरी १९६८।
३. मुक्तधारा, ३१ अगस्त १९६८।
४. जनयुग, ७ अप्रैल १९६८।
५. —वही—, ३० जनवरी १९६८।
६. —वही—, १४ अप्रैल १९६८।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अच्छा ही है खिंच आयी है निविड़ नील में
अब न चलेगी गोरी नागिन की मनमानी।

कवि का विचार है :

विकृत रक्त का होगा शोधन विएतनाम में।[1]

नागार्जुन ने प्रादेशिक राजनीति पर दृष्टिपात करते हुए 'भज गोविन्दं मूढ़मते'[2] कविता लिखी जिसमें मध्यप्रदेश की तत्कालीन राजनीतिक उथल-पुथल पर व्यंग्य स्पष्ट है। 'हिलेगी कैसे दुम' भी नागार्जुन की इसी प्रकार की सत्तासीन नेताओं के तत्कालीन चुनाव-चिह्न (बैलजोड़ी) पर इंगित करते हुए एक प्रसिद्ध रचना है।

विजयलक्ष्मी पंडित के त्यागपत्र की खबर सुनकर नागार्जुन ने 'रूठ के चली गयी बुआ' कविता उन्हें लक्ष्य करते हुए लिखी है।[3]

महाराष्ट्र में शिवसेना की काफी धाक है। उसके सरगना बाल ठाकरे को कवि ने 'महाराष्ट्र का सबसे भारी रोग' बताया है क्योंकि उससे कई भयभीत हैं :

शिव सेना की वर्दी डाटे जमा रहा लय ताल ठाकरे
सभी डर गये बजा रहा है गाल ठाकरे
गूंज रही सह्याद्रि घाटियाँ मचा रहा भूचाल ठाकरे
मन ही मन कहते राजाजी जिये भला सौ साल ठाकरे
चुप है कवि डरता है शायद खींच नहीं ले खाल ठाकरे[4]।

नागार्जुन ने व्यंग्य कविता में एक अभिनव प्रयोग किया है। 'मंत्र' कविता में मंत्रोच्चार की विधि से बहुत ही कम शब्द रखकर उसे अधिकाधिक अर्थगर्भित बनाया है :

ओं शब्द ही ब्रह्म है
ओं शब्द और शब्द और शब्द
ओं वक्तव्य ओं उद्गार और घोषणाएँ
ओं दलों में एक दल अपना दल ओम्
ओं अंगीकरण, शुद्धीकरण, राष्ट्रीकरण
ओं गद्दी पर आजन्म वज्रासन

१. जनयुग, १७ दिसम्बर १९६७।
२. पाण्डुलिपि से।
३. —वही— ।
४. जनयुग, ७ जून १९७०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओं ट्रिब्यूनल ओं आश्वासन
ओं गुट निरपेक्ष, सत्ता सापेक्ष जोड़ तोड़
ओं छल छन्द ओं मिथ्या ओं होड़म होड़
ओं बकवास ओं उद्घाटन।

यहाँ नागार्जुन ने व्यंग्य को एक उच्च स्तर प्रदान किया है। कम-से-कम शब्दों में वर्त्तमान राजनीतिक जोड़-तोड़ स्पष्ट कर दी है।

१९७१ में लोकसभा चुनाव के बाद नागार्जुन ने एक और बड़ी सुन्दर व्यंग्य कविता लिखी है। कवि ने देखा है कि देश में गुटबन्दी बढ़ गयी है। एक दल-विशेष बड़ी दृढ़ता से कुर्सी पर पद्मासन मारे बैठा है। पद की प्रथम तीन पंक्तियों में तो दल की नेत्री तथाकथित देवीजी की प्रशंसा की गयी है, किन्तु चौथी पंक्ति में व्यंग्य स्पष्ट है :

कीर्ति पताका फहराती हो किस प्रकार अम्बर में
लोल-लहरियों पर सवार हो जन-मन के सागर में
देवि, तुम्हारे स्वर सुरभित हैं, युग के आह्वानों से
तरुण तुर्क रुद्राक्ष की तरह लटक रहे कानों से[1]

देश की वर्त्तमान राजनीति यह है कि विरोधी भी अपनी भूमिका ठीक से नहीं निभा पा रहे हैं। कवि को वे निस्तेज और अकर्मण्य से दिखाई देते हैं, और जो लोग दल के टिकट पर निर्वाचित होकर आये हैं उनके लिए देवीजी का पूजन-आराधन आवश्यक हो गया है :

प्रतिपक्षी भी सुस्त पड़ गये जाने क्या है कारण
निर्वाचित प्रभु पूजा करते, गुण गाते हैं चारण[2]

वस्तुतः हमारे यहाँ कानून की आत्मा को भुलाकर मात्र उसके शरीर का उपयोग किया जा रहा है। दूसरी ओर अहिंसक कहलानेवाली यही सरकार तरुण वर्ग पर गोलियाँ भी बरसा रही है। इसी स्थिति पर नागार्जुन ने व्यंग्य प्रहार किया है :

संविधान की रुई रुपहली भद्र लोग धुनते हैं
देवि, तुम्हारे स्टेनगनों से तरुण मुण्ड भुनते हैं।[3]

आज देश में समाजवाद का नारा बड़ी जोर से सुनाई देता है, पर निम्न वर्गीय समाज की स्थिति में कोई अन्तर नहीं आया। स्पष्ट है कि इस प्रकार

१. अब तो बंद करो हे देवि, यह चुनाव का प्रहसन ! पृ० ५
२. —वही— ।
३. —वही— ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के नारे चुनाव जीतने के शक्तिशाली अस्त्र और जनता को भुलावे में डालने के स्टंट मात्र हैं। नेतागण विलास में जीवन बिता रहे हैं। महँगाई आसमान छू रही है और साधारण जन अर्धनंगा, अर्धभूखा घूम रहा है। क्या यही समाजवाद का आना है ? इसलिए कवि ने व्यंग्य किया है :

अधभूखे, अधनंगे डोलें हरिजन गिरिजन वन में
खुद तो चिकनी रेशम डाटे उड़ती फिरो गगन में
महँगाई की सूर्पनखा को कैसे पाल रही हो
शासन का गोबर जनता के मत्थे डाल रही हो [1]

नागार्जुन का विचार है कि विरोध में बोलनेवालों को चुप करने के लिए इस 'देवी' के हाथों में कई शस्त्र हैं। कहीं बरछा है, भाला है, तो कहीं पद्मश्री और पद्मभूषण की उपाधियाँ हैं। कोई कब तक इस 'देवी' के वार से बच सकता है ? इस देवी की तुलना कवि निर्गंध पुष्प से करता है :

मध्यवर्ग की दुम हैं हम, तुम उच्च वर्ग की दुम हो
जिसका रस औषध बनता है, वह निर्गंध कुसुम हो
पग-पग पर तुम लगा रही हो परिवर्तन के नारे
जनयुग की सतरंगी छलना, तुम जीतीं हम हारे [2]

भूख लगने पर आज भूखों को आश्वासन की मीठी वाणी से चुप करा दिया जाता है। कवि का विचार है कि यहाँ भोली जनता की आडम्बरप्रियता का अपने हित में खुलकर उपयोग किया जा रहा है। 'जनयुग की सतरंगी छलना तुम जीतीं हम हारे' में कवि व्यवस्था की छद्म प्रगतिशीलता को भी उघाड़ रहा है :

आश्वासन की मीठी वाणी भूखों को भरमाती
पाला पड़ता है लेकिन वह नंगों को गरमाती
जनमन को आडम्बर प्रिय हैं, प्रिय हैं उसको नाटक
खोल दिये हैं तुमने कैसे इन्द्रसभा के फाटक [3]

सरकार महँगाई की रोक-थाम में असफल सिद्ध हुई है। जब तक इस पर रोक नहीं लगती 'समाजवाद' का नारा एक भ्रम है, फरेब है। लेकिन जनता इसे न समझकर 'मधुर-मदिर भ्रम' में डूबी हुई है। कवि उन तथाकथित देवीजी को अपने नव-निर्वाचित सामन्तों (एम० पी०) को सम्भालने को कह रहा है। स्पष्ट है कि उनकी गतिविधियों का मुख्य अंग समर्थक सामन्तों की नियमित गिनती का हो गया है। आज जन-हित के महत्त्व की बात नहीं रह गयी। सदन के कितने सदस्य मुझे समर्थन दे रहे हैं, और जो न दे रहे हैं उन्हें साम-दाम-

१. अब तो वन्द करो हे देवि, यह चुनाव का प्रहसन, पृ० ६।
२-३.—वही—, पृष्ठ ७।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दण्ड-भेद यानी येन-केन-प्रकारेण पक्ष में किया जाय। आज यही देश-सेवा है। यही राजनीति है। कवि ने इस पर भी व्यंग्यात्मक प्रहार किया है :

महँगाई की सूर्पनखा के दाँत हो गये पैने
चमके चिकने ध्वज पटलों पर महाकाल के डैने।
मधुर-मंदिर भ्रम हमें मुबारक, तुम्हें मुबारक सपने
देवि, सम्भालो यहाँ-वहाँ नव सामन्तों को अपने [१]

इस शासन में भ्रष्टाचार इस तेजी से बढ़ रहा है कि इसमें संलग्न भ्रष्ट लोग भद्र वेश धारण कर स्वच्छन्दता से विचरण कर रहे हैं, क्योंकि उनकी आराध्या ने उन्हें अभयदान दे रखा है। वे स्वयं भी मानो समुद्र में उठती हुई लहरों के झाग पर आसन मारे—कल्पना के सूर्य और चाँद-तारों को गिनने में संलग्न हैं। इससे कवि को यह तात्पर्य प्रतीत होता है कि उनकी योजनाओं से निम्न वर्ग को लाभ नहीं पहुँचनेवाला है। समुद्र के झाग पर बैठना ही व्यर्थ है, और उस पर बैठकर कल्पना के चन्द्र-तारागण आदि को गिनना भ्रमजाल में गोते लगाने के समान ही है। नागार्जुन ने लिखा है :

लाभ-लोभ के असुर भद्र वेशों में घूम रहे हैं
तुम पर अर्पित फूलों की पंखुड़ियाँ चूम रहे हैं
फेनिल लहरों के रजित छत्रों पर आसन मारे
गिनती जाओ कल्पित सूरज, कल्पित चाँद सितारे। [२]

इस कविता के द्वारा कवि ने एक जन-कवि के रूप में अपनी वास्तविक भूमिका हमारे सामने स्पष्ट कर दी है। आज देश में—'कूप ही में यहाँ भाँग पड़ी है' वाली स्थिति दिखाई दे रही है। बड़े-बड़े वादों और आश्वासनों के नाम पर जनता को भरमाया जा रहा है। कवि, राजनीतिज्ञ, लेखक आदि भी अपना स्वार्थ सिद्ध होता देख अँध समर्थन देने में व्यस्त हैं। ऐसी स्थिति में पहली वार केवल नागार्जुन ने ही व्यंग्य में सारी धोखाधड़ी को स्पष्ट कर दिया है। हमारा विचार है कि नागार्जुन ने एक सच्चे जन-कवि के रूप में सामान्य जन को भ्रम-निद्रा से जाग्रत कर अपने आधार को टटोलने की प्रेरणा दी है। कविता में व्यंग्य उच्च स्तर का है। कवि ने किसे लक्ष्य बनाया है यह तो स्पष्ट हो ही जाता है, इसलिए उसने किसी का नाम नहीं लिया। आज शासक वर्ग का दिमागी दिवालियापन इस स्थिति में पहुँच गया है कि वह आलोचना सुनना जरा भी पसन्द नहीं करता। दूसरी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि प्रजातन्त्र में 'व्यक्ति विशेष की पूजा' स्वच्छ एवं निष्पक्ष प्रशासन के मार्ग में बहुत बड़ी

१. अब तो बंद करो··· पृ० ११।
२. —वही— ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाधा उपस्थित कर देती है। सफल प्रजातन्त्र की इस मूलभूत आवश्यकता को सब अपने किन्हीं स्वार्थों की होती जा रही पूर्ति के कारण भूलते जा रहे हैं।

सत्य को स्वीकार करने, सुनने या अभिव्यक्त करने का साहस होना चाहिए, जिसका अभाव आज किसी-न-किसी रूप में दिखाई पड़ रहा है। चारो ओर 'प्रशंसा की बिखरती फुहार' के इस युग में नागार्जुन ही एकमात्र कवि दिखाई देते हैं जो स्पष्टवक्ता के रूप में, निर्भयता से, अनुचित को अनुचित कहने का साहस कर रहे हैं। इस दृष्टि से उनकी कविताएँ विशेष महत्त्व रखती हैं।

किन्तु नागार्जुन की कुछेक कविताओं में, जहाँ वे व्यक्तिगत आरोपों पर उतर गये हैं, उनके व्यंग्य का स्तर बड़ा हल्का भी है। डा० इन्द्रनाथ मदान के अनुसार, "नागार्जुन का व्यंग्य कहीं-कहीं अति तीक्ष्ण बनकर औचित्य की सीमा का उल्लंघन कर बैठता है।"[1]

हमारा विचार है कि यदि नागार्जुन व्यंग्य रचनाओं में थोड़ा-सा संयम और रखते तो निःसंदेह वे कहीं और अधिक सफल होते। ऐसा प्रायः उन राजनैतिक नेताओं के लिए, जिन्हें कवि जनहित की ओर से बेखबर मानता है, किया गया है। इसके पार्श्व में नेताओं की स्वार्थपरता और पीड़ित-दलित वर्ग की दयनीय स्थिति तथा उनके प्रति उमड़ी हुई कवि की अन्तर्वेदना है। जनता का शोषण होते देख नागार्जुन की सहनशीलता जवाब दे गयी है, और उसने व्यंग्य, आक्रोश एवं क्षोभ-मिश्रित प्रहार करना प्रारम्भ कर दिया है। यही कारण है कि नागार्जुन के व्यंग्य में पैनापन आया है।

नागार्जुन इस युग के बेजोड़ व्यंग्यकार हैं। डा० रामविलास शर्मा के अनुसार, "भारतेन्दु और बालमुकुन्द गुप्त ने हमारे साहित्य में जो व्यंग्य और जिन्दादिली पैदा की, नागार्जुन उसका समर्थ प्रतिनिधि है।" प्रो० प्रकाशचन्द्र गुप्त के अनुसार, ""रचना ऊबड़-खाबड़ तो है, पर चट्टान की भाँति मजबूती भी रखती है।" डॉ० नामवर सिंह कहते हैं कि "हिन्दी में व्यंग्य या तो निराला ने लिखा या नागार्जुन (और केदार) ने।"[2]

हमने कवि द्वारा लिखी आरम्भिक व्यंग्यपरक कविताओं से आज तक के व्यंग्य विकास को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। उनके व्यंग्य का स्तर क्रमशः निखरता हुआ हमें प्रतीत होता है। हम डॉ० हरिनारायण मिश्र के निम्नलिखित कथन से सहमत हैं, "नागार्जुन की व्यंग्य रचना में कबीर की तल्खी, भारतेन्दु की करुणा और निराला की विनोद-वक्रता का विलक्षण सामंजस्य है।"

१. आधुनिक कविता का मूल्यांकन : डॉ० इन्द्रनाथ मदान, पृ० ६२।
२. डॉ० हरिनारायण मिश्र : 'समकालीन हिन्दी कविता में व्यंग्य विद्रूप', ग्रन्थ —नई कविता, पृ० १०० : सम्पादक—वासुदेवनन्दन प्रसाद सिंह।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निस्सन्देह वे वर्त्तमान हिन्दी कविता के एकमात्र सफल व्यंग्यकार हैं। कवि के स्वाभाविक विवरण के अनुकूल उसकी व्यंग्य-पद्धति निजी परिस्थितियों तथा तीखे अनुभवों से साहित्यिक उत्तरदायित्व को निभाने में अधिक सफल और महत्त्वपूर्ण है। श्री वी० नारायणन कुट्टी का विचार है, "व्यंग्य प्रगतिवादी कविता की बहुमूल्य विभूति रही है, जिसका अपूर्वदर्शित विकास नागार्जुन जैसे कवियों के हाथों हुआ है।"[१]

मेरे विचार से अकेले नागार्जुन की ही कविता पढ़कर हिन्दी कविता के व्यंग्य का आरम्भिक रूप—विकास और उत्कर्ष की अवस्थाओं को जाना जा सकता है। वे हिन्दी व्यंग्य काव्य के एकमात्र सबल सशक्त प्रतिनिधि हैं, व्यंग्य के विभिन्न स्तरों से उनकी कविता सजी हुई है। अशिव का प्रतिकार और समाज के मंगल का ध्येय उससे ध्वनित हो रहा है।

४. देश-प्रेम की भावना से ओत-प्रोत काव्य :

अपनी मातृभूमि के कण-कण से कवि को गहरा लगाव है। जनता की पीड़ा को कवि ने अपनी पीड़ा समझा है और जब देश पर विपत्तियों के बादल मँडराये हैं, कवि भारतीय जनता के साथ रहा है। हमें नागार्जुन के काव्य में हिन्दुस्तान की पूरी तस्वीर देखने को मिलती है। यहाँ की प्रकृति, यहाँ की संस्कृति, जन-भावनाएँ, जनता के दर्द, राजनीतिक गतिविधियाँ, नेताओं के कारनामे, आदि विविध रूप नागार्जुन के काव्य में देखकर यदि यह कहा जाय कि इस कवि ने भारतीय जीवन को ही अपने काव्य में प्रतिबिम्बित कर दिया है तो अनुचित नहीं होगा और देश के प्रति कवि के इसी महत्त्व में उसका मातृ-भूमि-प्रेम हिलोरें लेने लगता है।

कवि द्वारा स्वार्थी नेताओं पर किये गये व्यंग्य से उसकी देश-भक्तिपूर्ण भावना की दृढ़ता का परिचय मिलता है। अपने देश की जनता का यह शोषण होते वह कैसे देख सकता है। भ्रष्ट नेताओं का विरोध देख कुछ लोग नागार्जुन को विद्रोही कहते हैं। वस्तुतः सच्चा कवि स्वभाव से ही विद्रोही होता है। वह चली आती हुई गलत परम्पराओं के आगे सिर नहीं झुकाता, वह अपने देश की जनता को गुलामी, दासता और शोषण की ठोकरें खाते देख चुप नहीं रह जाता, वरन् अपने देश की जनता को जाग्रत करता है। उसमें चेतना का शंखनाद भर अपनी गिरी हुई स्थिति से उठ खड़े होने की प्रेरणा देता है। शोषकों और

१. हिन्दी की नई कविता : वी० नारायणन कुट्टी, पृ० १०२।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अत्याचारियों से संघर्ष के लिए वह जनता को उकसाता है। निराशा नहीं, किन्तु आशा और समय की पुकार के स्वर वह साहित्य द्वारा जनता में भरता है।

हमारे यहाँ जो कवि या लेखक सरकार में व्याप्त बुराइयों की पोल खोलता है, अच्छी नजर से नहीं देखा जाता। वस्तुतः शुरू से यह देश प्रथा-पूजकों का रहा, इसलिए जनता का एक बहुसंख्यक वर्ग यह चाहता है कि उसके समान सब अन्ध-भक्त हों, सरकार की उचित-अनुचित नीतियों का समर्थन करते जायँ। पर नागार्जुन जैसे कवियों को यह स्वीकार्य नहीं। स्वच्छ प्रशासन की स्थापना करना, स्वस्थ जनतन्त्र की जड़ें मजबूत करना उनका ध्येय रहा है। सरकार की गलत बातों का विरोध करने से उनकी देशभक्ति में कोई अन्तर नहीं पड़ता, हमारी समझ से उसकी जड़ें और मजबूत ही होती हैं। इसी कारण कवि की तेजस्विता ने क्रान्ति वीरों का अभिनन्दन किया है। देश तो आजाद हो गया पर बहुसंख्यक जनता को सरकार ने आजादी की खुशियाँ उपलब्ध नहीं होने दीं। तैलंगाना में तो स्वतन्त्रता के बाद स्पष्ट रूप से क्रान्ति भड़क उठी थी। उसी की ओर इंगित करते हुए नागार्जुन ने लिखा :

कोर्ट की दीवार पर चुपचाप जो पोस्टर अभी चिपका गया
वह कौन था ?

अभी चलती ट्रेन से, लीफलेट गिरा गया
वह कौन था ?

राजपथ के रुचिर उर पर
चाक से जो स्पष्ट अक्षर लिख गया
वह कौन था ?[१]

कुछ कविताओं में स्पष्ट रूप से कवि का देशप्रेमी हृदय उभर कर सामने आ गया है। श्री उमेश मिश्र के अनुसार, "कवि नागार्जुन की काव्य-रचनाओं का एक पक्ष राष्ट्रीय कविताओं से भी सम्बन्धित रहा है, इन कविताओं में कवि ने सच्चे राष्ट्रप्रेमी और देशसेवक के रूप में अपने भावों को व्यक्त कर लोक-मंगल की कामना प्रकट की है।"[२]

कवि का देश-प्रेम निम्न पंक्तियों में स्पष्ट परिलक्षित है :

खेत हमारे, भूमि हमारी, सारा देश हमारा है
इसीलिए तो हमको इसका चप्पा-चप्पा प्यारा है।[3]

महात्मा गाँधी के महाबलिदान से कवि का हृदय वेदना-विह्वल हो गया,

१. १९४९ में अकोला से प्रकाशित 'प्रवाह' पत्रिका से।
२. हिन्दी का प्रगतिवादी काव्य : उमेश मिश्र, पृ० १४७।
३. हंस—अप्रैल १९४८, अंक ७, पृ० ५२५।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इसकी अभिव्यक्ति 'युगधारा' की 'शपथ' कविता में उसने की है। इस लम्बी कविता में कवि ने अपने साथ सम्पूर्ण प्रकृति को रोता हुआ देखा है :

तीन तीन गोलियाँ, बाप रे
मुँह से कितना खून बहा है
महा मौन यह पिता तुम्हारा
रह-रह मुझे कुरेद रहा है
इसे न कोई कविता समझे
यह तो पितृ वियोग व्यथा है।

३० जनवरी, १९४८ को कवि की मनोदशा देखिए—

पर न आज रोके रुक पातीं
आँखें मेरी भर-भर आतीं
रोता हूँ लिखता जाता हूँ
कवि को बेकाबू पाता हूँ।

कैसे इस कोरे कागज पर पूरी पीर उतार सकूँगा।

इन पंक्तियों में बापू के प्रति कवि का प्रेम प्रकट हो रहा है। कवि ने बापू को व्यक्ति-व्यक्ति के हृदय में विद्यमान पाया है। सरदार पटेल को, उनके गृहपति होते हुए, बापू की हत्या हो जाने पर कवि ने धिक्कारा है। गाँधीजी की हत्या से कवि के मन पर गहरा आघात पड़ा है। इसीलिए कवि ने शपथ ली है। बापू-बलिदान के लिए उत्तरदायी 'हिटलरी वंशजों' से जबतक यह मातृभूमि रहित न हो जायगी, साम्प्रदायिकता के दैत्य तब तक बने रहेंगे :

तब तक मैं इनके खिलाफ लिखता जाऊँगा।
लौह लेखनी कभी विराम न लेगी।[1]

'तर्पण' कविता में बापू के हत्यारे को मानवता का महाशत्रु कहा गया है। कुछ लोग उसे पागल सिद्ध करके छुड़वा देना चाहते थे। कवि ने ऐसे लोगों को फटकारा है। इस कविता में भी गाँधी के पद-चिह्नों पर चलते रहने की प्रतिज्ञा उसने ली है :

मैदानों में काँटे चुन-चुन
पथ के रोड़ों को हटा-हटा
तेरे उन अगणित स्वप्नों को
हम रूप और आकृति देंगे।[2]

. युगधारा—'शपथ' पृ० ५८।
२. —वही—, 'तर्पण', पृ० ५२।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'भारतमाता' कविता में कवि के देश के प्रति असीम राग का पता सहज ही चलता है। भारत के नभ, जल, हरियाली आदि के प्रति अपना प्यार प्रकट करने के बाद वह कहता है :

देवि, तुम्हारी वसुंधरा का बित्ता-बित्ता रत्नाकर है।

अन्त में कवि भारत-भूमि के सामने सिर झुकाता है। इस कविता में देश के प्रकृति-सौन्दर्य को देखकर यह स्पष्ट होता है कि कवि उस पर कितना मुग्ध है। हिमालय की उसने वन्दना की है। कहीं चंचल सरिताओं को, रम्य हरीतिमा से ढँकी घाटियों और पर्वतों को उसने सराहा है।

कवि के देश-प्रेम के मूल में एक राष्ट्रीयता और भावनात्मक एकता की भावना स्पष्ट परिलक्षित होती है। **प्यासी पथराई आँखें** काव्य-संग्रह की 'द्याकचो खोकोन ओई जे गाँधी महत्ता' ऐसी ही कविता है। कवि का प्रश्न है कि क्या चितरंजनदास केवल बंगाल के ही लिए हुए हैं ? क्या उनकी प्रतिमा दिल्ली में नहीं लग सकती ? महापुरुष देश और काल की मनुष्यकृत संकुचित सीमा में बंध कर नहीं रहते। उनके वरदान समस्त मानव जाति के सुख और शान्ति के लिए होते हैं। इसी भावना से प्रेरित हो कवि प्रश्न करता है :

लाला लाजपतराय की प्रतिमा मद्रास में
दिखाई नहीं पड़ेंगे लखनऊ में सत्यमूर्त्ति
सुभाष और जे० एफ० सेन गुप्त क्या सीमित रहेंगे
भवानीपुर और शाम बाजार की दुकानों तक ?
तिलक नहीं निकलेंगे पूना से बाहर।[१]

नागार्जुन की देशभक्ति का प्रबल रूप भारत पर चीनी घुसपैठ के समय १९६२ में हमारे सामने आया। प्रिय मातृभूमि पर चीन का अपवित्र आक्रमण देख कवि की भावनाएँ उद्वेलित हो उठीं—हृदय-सिन्धु में देश भक्तिकी लहरें तरंगें लेने लगीं। इस समय की कविताओं में कवि द्वारा जनता को एकता के सूत्र में बँधकर, दुश्मनों को मजा चखा देने का आह्वान किया गया है। पाकिस्तानी हमले के समय भी हम नागार्जुन की कविताओं में यही भावना पाते हैं। इनमें देश-प्रेम और उसकी रक्षा में कवि का हुंकार सुनाई देता है। कवि अन्तर्राष्ट्रीय सर्वहारावाद में विश्वास रखता चला आ रहा था, पर चीन मार्क्सवाद के मूल सिद्धान्तों को ठुकरा कर विस्तारवादी बन गया तो कवि ने चीनी नेताओं को फटकारा और स्पष्ट कहा कि वह सबसे पहले इस धरती का पुत्र है, उसे अपनी

१. प्यासी पथराई आँखें से।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जनता से प्यार है :

आज तो मैं दुश्मन हूँ तुम्हारा
पुत्र हूँ भारतमाता का
और कुछ नहीं हिन्दुस्तानी हूँ महज
प्राणों से भी प्यारे हैं मुझे अपने लोग
प्राणों से भी प्यारी है मुझे अपनी भूमि।[१]

इस कविता के अन्त में कवि ने चीनी नेताओं को अपनी राइफल का निशाना बनाया है। वह चीन-विरोधी हो गया है और उसने चीनी राज्याध्यक्ष माओ को गाली देते हुए लिखा है :

वह माओ कहाँ है ? वह माओ मर गया
यह माओ कौन है, बेगाना है यह माओ
आओ इसको नफरत की थूकों से नहलाओ
आओ इसके खूनी दाँत उखाड़ दें
आओ इसको जिन्दा ही कब्र में गाड़ दें।[२]

तय है, इन पंक्तियों में जहाँ कवि को माओ से शिकायत है वहीं दब हुआ प्यार भी है। कारण कि वह जिस क्रान्तिकारी माओ को श्रद्धा दे बैठा था आज वही उसके देश का दुश्मन साबित हुआ। इसीलिए नागार्जुन के जनवादी कवि ने पुराने माओ को याद किया है।

माओ—जिसने शान्ति की हिरन और अहिंसा की गाय को दबोच लिया है, पंचशील की धज्जियाँ बिखेर दीं, उसके प्रति कवि का यह रोष स्वदेशभक्ति का परिचायक है। शत्रुओं को सबक सिखाने के लिए कवि स्वयं शस्त्र-चालन सीखना चाहता है। 'तप्त लहू की धार बह चली' इसी प्रकार की कविता है :

जी करता है, सीखूँ मैं बन्दूक चलाना
जी करता है, सीखूँ मैं फौलाद गलाना
जी करता है, जन-मन में भड़काऊँ शोले
जी करता है, नेफा पहुँचूँ दागूँ गोले।

चीनी बर्बरता ने विश्वशान्ति को खतरे में डाल दिया है। कवि को मानवता का सर्वनाश होते दिखाई दे रहा है। पर भारत के रण-बांकुरों ने तो सीमाओं पर अपने यौवन का बलिदान कर ही लिया। उनका अभिनन्दन करते

१. पाण्डुलिपि से।
२. धर्मयुग, रविवार, २७ जून १९६३, पृ० १।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हुए नागार्जुन ने लिखा है :

सीमाओं पर लहराया भारत का यौवन
छलक गया लहू, शर्म से पिघला कंचन[1]

युद्ध में शत्रुओं का मुकाबला पंचशील के नारों से नहीं होता। कवि का विचार है कि पंचशील का भाव घट गया है। इसीलिए चीनी घुसपैठ के समय 'शिवजी' को भी रावण की याद आ रही है।[2]

भारत-पाक-युद्ध के समय 'एक्शन में आ गये लाख लाख जवान' कविता में भारतीय जवानों को संगठित होने की प्रेरणा दी गयी है। हम अभी तक शान्ति के समर्थक रहे, पाक हरकतों को तरह देते रहे, किन्तु अब :

इक-तरफा शान्ति का हो चुका अवसान
आज नहीं वही है जो कल था हिन्दुस्तान
करेगा बर्दाश्त कौन अब ये अपमान
झाड़ देंगे अय्यूब का हिटलरी गुमान
खबरदार दुश्मन, दुश्मन सावधान[3]

शत्रुओं का सामना करने के लिए जनता शिव-संकल्प ले एकता के सूत्र में बँध गयी—वह युद्ध-ज्वर से गर्म हो दुश्मन को हर तरह से निपटने के लिए तैयार है। भारत-पाक-युद्ध के समय देश की इसी दृढ़ एकता का प्रदर्शन 'फिलहाल' कविता में किया गया है।

'राष्ट्र के अपमान हमने धो दिये हैं' इसी अवसर पर लिखी बड़ी ओजस्वी कविता है। हमारी सेनाएँ रावी पार करके ही दम लेतीं पर मजबूरियाँ हमारे सामने आ गयीं। फिर भी देश में जातीय एकता का जो परिचय उस समय मिला, उससे राष्ट्र के सारे अपमान धुल गये :

फ्रन्ट पर सौ जातियाँ बिल्कुल डटी हैं
राष्ट्र के अपमान हमने धो दिये हैं
चन्द्रभागा व्यास सतलज के तटों पर
एकता के बीज हमने बो दिये हैं।

कवि उन वैमानिकों की आरती उतारने की प्रेरणा देता है, जिनके कारण देश-माता आज 'उग्रतारा' बन गयी है। ओज जैसे कविता से टपक रहा है :

पिट रही थी अहिंसा हमने बचाया
शस्त्र पर रिपु-मुण्ड को हमने नचाया

१. कविता—'तप्त लहू की धार वह चली' (पाण्डुलिपि से)।
२. कविता—'आई याद रावण की त्रिशूल लगा हिलने' (पाण्डुलिपि से)।
३. पाण्डुलिपि से।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रक्त-नद में तिरगा फहरा रहा है
मनोबल का समुन्दर लहरा रहा है ।[१]

वस्तुतः पाक हमले के दुर्भाग्यपूर्ण बीजों का वपन देश-विभाजन के समय ही हो गया था । हम भाई-भाई के समान रहते थे, पर फूट और बँटवारा हमने कबूल किया । विभाजन का भूत हमारे ऊपर सवार हो गया था । 'फिर वही भस्मासुर अठारह साल बाद' सिंहनाद करता हुआ झपटा चला आ रहा है । कवि ने अय्यूब को चाऊ, हिटलर और शैतान का महबूब कहा है । अय्यूबशाही को समाप्त कर पुनः उसी भाईचारे से रहने की प्रेरणा देना इस कविता का लक्ष्य है । पाकिस्तान के लिए कवि ने लिखा है :

पाप वह साम्राज्यवादी शाप का
शाप वह जनतन्त्र के परमार्थ का
कर रहा बदनाम वो इस्लाम को
ठग रहा वो कोटि-कोटि आवाम को
सजग जनबल उसे दिखला दें उठो
स्वप्न गाँधी के उठो साकार हो ।

गाँधी का स्वप्न था कि हिन्दू-मुसलमान एकता और भाईचारे से रहेंगे, उसी के लिए कवि आह्वान कर रहा है :

उठो फिर से, भारत-पाक, एक हो
विश्व मैत्री की धुरी हो, टेक हो
रह गयी थी कौमियत मंझधार में ।[२]

आगे कवि ने विना किसी को पंच बनाये भारत-पाक जनता को प्रायश्चित्त करने और गले लग जाने की सीख दी है ।

पाकिस्तान की जनता या इस्लाम से कवि को कोई नाराजी नहीं है, उसे क्रोध है पाकिस्तान के फिरकापरस्त शासकों— अय्यूब और भुट्टो—से जो बाहरी शक्ति के दम पर भारत से टकराने की मूर्खता कर रहे हैं ।

'नहर इच्छोगिल का अंचल' कविता में उसे पैटन टैंकों की कब्रगाह बताया है । भारत में सभी जातियों की एकता से कवि अत्यन्त प्रसन्न है :

हिन्दू-मुस्लिम, क्रिस्तान सिक्ख
पारसी यहूदी रक्त अमल
लहराता है अनुपम सागर
खिल रहे यहाँ सौ लाख कमल

१. पाण्डुलिपि से ।
२. —वही— ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अहिंसा शक्तिशालियों का शस्त्र है। शान्त-शिष्ट अहिंसकों को यदि कोई छेड़ता है तो उसका फल उसे मिलेगा ही। बाहरी शक्तियों पर इतराने वाले पाकिस्तानी दानव-दल के लिए नागार्जुन ने लिखा है :

वे हिटलर के नाती पोते
बाहरी शक्ति जिनका संबल
देखो पिटकर भागे कैसे
वे पाकिस्तानी दानव-दल[1]

अपने देशप्रेम से युक्त कविताओं में कवि देश की मनमोहनी प्राकृतिक छटा पर मोहित है। देश से साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार और शोषण को दूर करके वह जनता में भावनात्मक एकता कायम करना चाहता है। कश्मीर से कन्याकुमारी तक की जनता में वह परस्पर भाईचारे के सूत्र देखने को आतुर है—और अखण्ड भारत की कामना कर रहा है। देश पर चढ़ आनेवाले साम्राज्यवादी दैत्यों को सबसे पहले वह अपनी गोली का निशाना बनाना चाहता है, कवि अपनी मातृभूमि की रक्षा प्राणपण से करने को उत्सुक है।

लगभग तेईस वर्ष पहले नागार्जुन ने एक कविता लिखी थी जो १९४८ ई० में 'जनशक्ति' में छपी थी, जबकि बिहार सरकार अपनी जनता पर जुल्म ढा रही थी। उस समय मुख्यमन्त्री थे श्रीकृष्ण सिंह।

मातृभूमि के प्रेम में रत जनता की बलिदानी भावना और दीवानगी इन पंक्तियों में प्रस्फुटित हो रही है। अत्याचारी का प्रतिकार करने के लिए भले ही उसके पास शस्त्र न हो तो भी यदि उसमें देश के लिए सर्वस्व समर्पण ही बलवती आकांक्षा है तो ऐसे सपूतों के हाथों में आकर बाँस का फट्ठा भी तलवार बन जाता है :

भू माता के वक्षस्थल पर जिनके पंर टिके होते हैं
उनकी खातिर बरसा करते, आसमान से नये-नये हथियार
अरे ! बाँस का फट्ठा ही तलवार बन गया।

ये सारी पंक्तियाँ स्वतन्त्रता के लिए संघर्षरत किसी भी राष्ट्र की जनता के स्वाभिमान और दृढ़ निश्चय को सूचित कर रही हैं। 'कविता की लोकप्रियता का प्रश्न : आज का संदर्भ' शीर्षक लेख में श्रीकृष्ण बिहारी मिश्र ने ज्ञानोदय, (नवम्बर, १९६९, पृ० ९०में) लिखा है : "नागार्जुन की कविता की लोकप्रियता का रहस्य उनका सम-सामयिकता बोध है, किन्तु इस लोकप्रियता के साथ एक बड़ा खतरा यह है कि युग के परिवर्तन के साथ ही सामयिकता-बोध बासी पड़ जाता

१. पाण्डुलिपि से।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है और कविता अपना आकर्षण गँवा बैठती है।" पर नागार्जुन की उपर्युक्त उद्धृत ऐसी अनेक कविताएँ हैं, जो युगचेतना की अभिव्यक्ति के बाद भी वर्षों उपरान्त तरोताजा बनी हुई हैं। सम-सामयिकता बोध हमारे कवि में बासी नहीं पड़ा है। इसे हम नागार्जुन की बहुत बड़ी उपलब्धि मानते हैं। निश्चय ही ऐसी कविताएँ मात्र लोकप्रियता अर्जित करने के ध्येय से ही नहीं लिखी गयी हैं, इन कविताओं में नागार्जुन का देशप्रेम सहज प्रकट हुआ है।

निस्संदेह देश-प्रेम की अभिव्यक्ति नागार्जुन-काव्य की प्रमुख विशेषता है।

५. विविध कविताएँ :

(अ) श्रद्धांजलि की भावना से युक्त कविताएँ :

नागार्जुन ने देश के साहित्यकारों, महान नेताओं आदि को अपनी कविताओं में श्रद्धांजलि अर्पित की है। **युगधारा** की 'रवि ठाकुर', 'चन्दना', 'पाषाणी', **संतरंगे पंखोंवाली** काव्य-संग्रह की 'कालिदास' **प्यासी पथराई आँखें** की 'भारती सिर पीटती है' 'लुमुम्बा' आदि इसी प्रकार की रचनाएँ हैं।

'रवि ठाकुर' कविता में विश्वकवि टैगोर के महान गुणों की चर्चा करते हुए कवि का प्रश्न है, उच्च कुल में जन्म लेकर, वैभव-सम्पन्न होते हुए भी आप जन-जन के दर्द को समझने वाले कैसे बन गये ?

कहाँ से मिली तुम्हें इतनी अनुभूतियाँ
पीड़ित मनुष्यता के निम्न स्तर की ?

अपने अभावग्रस्त जीवन का वर्णन करते हुए कवि ने टैगोर द्वारा सौंपी गयी विश्वभारती की आरती उतारने का उन्हें आश्वासन दिया है।

कवि ने 'भिक्षुणी' कविता में बौद्ध भिक्षुणी का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है। भिक्षुणी को अल्प आयु में ही बौद्ध विहार में माता-पिता ने पहुँचा दिया था। यौवन की दहलीज पर पैर रखते ही उसे नारी जीवन के लिए तप की निरर्थकता का बोध हो रहा है। भगवान अमिताभ से वह बड़े सरल प्रश्न कर रही है। अमिताभ का रूप देख, उसके मन में बलिष्ट पुरुष के भुजपाश के प्रति नारी का सहज आकर्षण व्यक्त हो रहा है। उसका कथन है कि बौद्ध धर्म का हीनयान-महायान तो सब मैं समझ गयीं, पर यह न जान सकी कि **मानव मानवी का सहज यान क्या है ?**

'जीवन की यही ग्रन्थि' सुलझाने के लिए भिक्षुणी आतुर है। अन्त में वह अपने हृदय की सच-सच बात भगवान अमिताभ से कह रही है :

कोई एक होता
कि जिसको

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपना मैं समझती
भले ही वह पीटता, भले ही मारता
किन्तु किसी क्षण में प्यार भी करता
जीवन रस उड़ेलता मेरे रिक्त पात्र में
भूख मातृत्व की मेरी मिटा देता
स्त्रीत्व का सुफल पाकर अनायास
धन्य मैं होती
कृत्य-कृत्य होती
भगवान अमिताभ तब
पूजा के समय पर कितने उत्साह से
घण्टा मैं बजाती
तन्मय हो कितनी आरती उतारती
पास होता नटखट शिशु खेलता
यदि किसी भद्र मुख प्रतिमा से ढिठाई वह करता
दिखा-दिखा तर्जनी में उसे रोकती [1]

बौद्ध भिक्षुणी का अपने जीवन से ऊब कर मातृत्व की लालसा व्यक्त करना, वासना-गर्भित कुंठा नहीं, वस्तुतः उसका विकास स्त्री-सुलभ सहज भावनाओं के क्रोड़ में हुआ है। उसकी तन्मयता जीवन के प्रति है, वासना के प्रति नहीं, इसलिए उसके ध्यान में पुरुष-सहवास की कामुक मुद्राएँ नहीं, नटखट शिशु की चपलताएँ क्रीड़ा कर रही हैं। अन्त में वात्सल्य रस का प्रवाह असीम वेग से फूट कर बहता प्रतीत हो रहा है। कुछ आलोचकों ने इस पर फ्रायडीय चिन्तन का प्रभाव माना है, जो गलत है।

'चन्दना' शीर्षक से लिखी लम्बी कविता में सेठ और सेठानी द्वारा खरीदी हुई एक बालिका की कहानी है, जिसे दोनों ने बड़े लाड़-प्यार से पाल कर बड़ा किया है, पर स्त्रियोचित ईर्ष्या के कारण सेठानी ने उसे बन्दीगृह में डाल दिया। महावीर भिक्षा लेने आये हैं, चार दिनों की भूखी-प्यासी चन्दना के हाथों भिक्षा में 'कुल्थी' ग्रहण करते ही उसके दुःख दूर हो गये। अन्त में चन्दना भी जगत को नश्वर समझ महावीर के साथ परमार्थ में लग गयी।[2]

'पाषाणी' कविता में कवि ने अपनी मौलिक प्रतिभा से 'अहिल्या-उद्धार' को एक नया रूप दे दिया है। अपने उद्धार के बाद, नागार्जुन की अहिल्या राम

१. युगधारा, पृ० २०।
२. युगधारा, पृ० २९ से ३५।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

से एक नारीव्रत रहने की प्रतिज्ञा करवाती है :

छूकर अम्ब तुम्हारे दोनों पैर
होता राघव राम प्रतिज्ञाबद्ध
जीवन भर वह तुम्हें रखेगा याद
नारी के प्रति कभी न होगा क्रूर,
नहीं करेगा वह दूसरा विवाह
सदा रहेगा एक पत्निव्रत-शील ।

अन्तःपुर में षोड़शियों का जमघट न होने देने और क्रय-क्रीत दासी का अपमान स्वप्न में भी न करने की प्रतिज्ञा श्रीराम लेते हैं। इस रूप में राम का चरित्र अभी तक रखे गये राम-रूपों से अधिक सौम्य, महान और शालीन है।

'रामकथा' (प्रवन्धकाव्य) का एक अंश ही नागार्जुन ने लिखा है। पूरा प्रवन्ध काव्य वे लिखनेवाले हैं। प्रस्तुत अंश में दोनों युवराज यज्ञ-रक्षा के लिए विश्वमित्र के साथ वन को जा रहे हैं। कवि द्वारा राम-लक्ष्मण के मनोवैज्ञानिक चित्रण में पाठक को जकड़ रखने की पूरी क्षमता है :

याद आ रहे मुझको बारम्बार
वृद्ध पिता के सजल स्निग्ध वे नेत्र
शिशिर निशा के हिमाच्छन्न शशि तुल्य
माताओं के मुँह आते हैं याद
विदा काल के वे मर्मान्तक दृश्य

यह दृश्य याद आने पर राम की दशा कैसी हो गयी है :

लगा टूटने धीरज का जब बाँध
शत-दल नील कमल पर से जल-बिन्दु
ढुलक पड़े दो बार श्वास-क्रम-दीर्घ
नासापुट कम्पित—निस्तेज—कपोल
अग्रज की यह दशा देख सौमित्र
हुए और भी व्यथित हुए निःशब्द[1]

इस प्रकार इस लघु अंश ने कवि की प्रवन्ध काव्यलेखन-पटुता को स्पष्ट कर दिया है।

सतरंगे पंखोंवाली काव्य-संग्रह की 'कालिदास' शीर्षक रचना अत्यन्त ही सफल और बौद्धिक कविता है। कवि अपने पात्रों की वेदनाओं को जब स्वयं

१. सरस्वती (हीरक जयन्ती), अंक १९६५'।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की वेदना से एकाकार कर लेता है, तभी श्रेष्ठ काव्य का सृजन होता है। यही विश्वास इस कविता का आधार है। कालिदास ने इन्दुमती के मृत्यु-शोक में अज को विकल चित्रित किया है। शिवजी ने जब कामदेव को भस्म कर दिया तब रति के विरह को कालिदास ने अपनी पीड़ा माना तभी वे श्रेष्ठ काव्य की रचना कर सके। कवि का प्रश्न है :

रति का क्रन्दन सुन आँसू से
तुमने ही तो दृग धोए थे ?
कालिदास सच-सच बतलाना
रति रोई या तुम रोए थे ?

नागार्जुन को विश्वास है कि यक्ष के विरह को चित्रित करते समय कालिदास स्वयं उसके दुःख से भर उठे होंगे। अपने कल्पनालोक में मेघ के साथ-साथ वे स्वयं भी यक्ष द्वारा निर्दिष्ट स्थानों पर उड़ते फिरे होंगे। तभी उसकी पीड़ा को वे ज्यों-का-त्यों युग के सामने रख सके :

वर्षा ऋतु की स्निग्ध भूमिका
प्रथम दिवस आषाढ़ मास का
देख गगन में श्याम घन घटा
विधुर यक्ष का मन जब उचटा
खड़े-खड़े तब हाथ जोड़कर
चित्रकूट के सुभग शिखर पर
उस बेचारे ने भेजा था
जिनके ही द्वारा संदेशा
उन पुष्करावृत्त मेघों का
साथी बनकर उड़नेवाले
कालिदास सच-सच बतलाना
परपीड़ा से पूर-पूर हो
थक-थक कर औ चूर-चूर हो
अमल धवल गिरि के शिखरों पर
प्रियवर तुम कब तक सोए थे
रोया यक्ष कि तुम रोए थे
कालिदास सच-सच बतलाना।[1]

महाकवि निराला, नागार्जुन की श्रद्धा के मुख्य केन्द्र रहे हैं। निराला का सारा जीवन बड़ा संघर्षपूर्ण व्यतीत हुआ। अन्तिम समय भी जब वे बीमार थे,

१. सतरंगे पंखोंवाली, पृ० ४३।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कोई राजनीतिज्ञ उनकी खोज-खबर लेने नहीं पहुँचा। कवि ने महाप्राण निराला की याद करते हुए उनके प्रति बरती गयी उपेक्षा की ओर संकेत करते हुए दिखाया है कि महाकवि के महाप्रयाण से सब दुखी हैं :

तिमिर में रवि खो गया, दिन लुप्त है बेसुध गगन,
भारती सिर पीटती है लुट गया है प्राण धन।[१]

इसी काव्य संग्रह में एक कविता उन्होंने 'लुमुम्बा' के लिए लिखी है। लुमुम्बा काँगो का एक महान देशभक्त क्रांतिकारी नायक था। गोरे महाप्रभुओं ने अमानुषिक ढंग से उसकी हत्या कर दी। शांति के इस मसीहा का महाबलिदान कवि के हृदय में उसके प्रति अपार श्रद्धा का स्रोत प्रवाहित कर देता है। अफ्रीकी जनता की सेवा में रत लुमुम्बा के महान् कार्यों का स्मरण करते हुए कवि ने उस 'गोरी कूटनीति' की ओर संकेत किया है, उसकी अमरता और महाबलिदान का गौरव-गान किया है :

तुम मरकर भी अमर रहोगे, लोगे ही प्रतिशोध
कालनेमि को भस्म करेगा जन-मन का यह क्रोध
कोटि कोटि काले कण्ठों की सुन-सुन कर ललकार
वह देखो, गोरे दनुजों पर भय का चढ़ा बुखार।[२]

नागार्जुन ने रामवृक्ष बेनीपुरी के लिए भी अपनी भावपूर्ण काव्यांजलि समर्पित की है। रचना में उर्दू शब्दों के बाहुल्य ने विशेष आकर्षण उत्पन्न कर दिया है। बेनीपुरी की साहित्य-सेवा का स्मरण करते हुए कवि ने लिखा है :

नौरंगी नूर के जादूगर को सलाम
नये अदब के नादावर को सलाम
'माटी की मूरत' के कीमियागर को सलाम
बेनीपुरी को सलाम, अपने रहबर को सलाम।

यद्यपि नागार्जुन का लगाव कम्युनिस्ट पार्टी से रहा और बेनीपुरी का सोशलिस्ट पार्टी से, किन्तु बेनीपुरी के निधन पर कवि नागार्जुन की संवेदना बेनीपुरी के वामपंथी जीवन और जनवादी रचना से सहज जुड़ गयी। बेनीपुरी के साहित्य में युग की टीस और बेचैनी मुखरित हुई है। इसीलिए कवि बेनीपुरी को 'हमसफर' और 'हमसफीर' कहकर अपना सलाम पहुँचाता है :

हमसफीर को सलाम हमसफर को सलाम
सूबा-ए-बिहार के जौहर को सलमा

१. प्यासी पथराई आँखें, पृ० १०-११।
२. —वही—, पृ० १७।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अवामी जद्दोजहद के तेवर को सलाम
फनकार को सलाम, सखुनवर को सलाम ।[1]

ऐसी बात नहीं कि नागार्जुन अपने अग्रज साहित्यकार निराला और सहकर्मी बेनीपुरी को ही श्रद्धांजलि अर्पित कर रह गये, बल्कि उन्होंने अपने अनुज साहित्यकार राजकमल चौधरी के प्रति भी अपनी काव्यात्मक श्रद्धांजलि प्रकट की है ।

११-७-६७ को नागार्जुन ने राजकमल चौधरी के प्रति लिखी कविता में श्रद्धांजलि व्यक्त करते हुए चौधरी का बाह्य और आन्तरिक प्रतिबिम्ब स्पष्ट किया है । उनकी साहित्य-सेवा का स्मरण करते हुए उन्होंने लिखा है :

तुम वही पंक जिसकी फसलें होतीं शतदल
युग की भ्रमरावलि करती है गुनगुन अविरल
युगनद्ध मिथुन की भावभूमि तुम रस-पिच्छल
तुम स्वेद सुरभि, हारा जिससे मृगमद परिमल ।[2]

केदारनाथ अग्रवाल के लिए भी 'ओ जन-मन के सजग चितेरे' कविता नागार्जुन ने लिखी है । केदार और नागार्जुन परम मित्र हैं, इसलिए बाँदा के निवासी, एडवोकेट केदार के मुवक्किल और जजों से भी अधिक नागार्जुन ने उन्हें पहचाना है—आत्मीयता के मधु से इस कविता का एक-एक शब्द सना हुआ है । अपने मित्र के प्रति ऐसा भाव-स्निग्ध एवं निश्छल उद्गार हिन्दी कविता में देखने को नहीं मिलता है :

केन कूल की काली मिट्टी वह भी तुम हो
कालिंजर का चौड़ा सीना वह भी तुम हो
ग्रामवधू की दबी हुई कजरारी चितवन वह भी तुम हो
कुपित कृषक की टेढ़ी भौंहें वह भी तुम हो
खड़ी सुनहली फसलों की छवि छटा निराली, वह भी तुम हो ।
लाठी लेकर कालरात्रि में करता जो उनकी रखवाली,
वह भी तुम हो ।[3]

लेनिन के लिए भी कवि ने श्रद्धांजलि समर्पित करते हुए एक कविता लिखी है, जिसमें मजदूरों के मसीहा की महानता का उल्लेख करते हुए नागार्जुन ने 'लाल सलाम' भेजा है ।[4]

१. पाण्डुलिपि से ।
२. —वही— ।
३. सतरंगे पंखोंवाली, पृ० ६३ ।
४. जनयुग, १७ अप्रैल १९७० ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(आ) युद्ध से नफरत एवं शांति का समर्थन करनेवाली कविताएँ :

नागार्जुन को मानवता का संहार करनेवाले युद्ध-प्रिय राष्ट्रों से घृणा है। इन राष्ट्रों की साम्राज्यवादी नीति की नागार्जुन के कवि ने तीव्र भर्त्सना की है। वे चाहते हैं कि मनुष्य शांति से रहे और श्रमरत होकर अपना जीवन बिताये।

कवि ने ऐटम बम बनानेवाले राष्ट्रों की हिंसक वृत्ति पर प्रहार करते हुए कहा है कि ये बम युद्धभूमि में नहीं, बल्कि जनाकीर्ण आबादी पर गिराये जाएँगे; सम्भवतः :

सोमनाथ पर
विश्वनाथ पर
उज्जयिनी के महाकाल पर

या 'नृत्य-निरत संथाल जनों पर' ये बम गिरेंगे, और लोगों का जो ताजा-ताजा खून बहेगा उससे तृप्त होंगे ऐसे लोग जो मनुष्य नहीं हैं :

युद्धाकांक्षी मानवाभास पागल पिशाच दस बीस पचास
जिनके गलित कुष्ट के मारे घुटा जा रहा मानवता का श्वास[1]

कवि का विचार है कि युद्ध करना, मानवता का संहार करना तो सरल बात है, पैटन टैंक तोड़ने से ही कुछ नहीं हो जाता, समस्या सामने आये ज्वलन्त प्रश्न की है और वह है—आसमान छूती हुई महँगाई से गरीब जनों को छुटकारा दिलाना :

पैटन टैंक उन्होंने तोड़े
महँगाई के टैंक कौन तोड़ेगा ?

कवि जितना आवश्यक सीमाओं की सुरक्षा मानता है उतना ही जरूरी आन्तरिक आर्थिक नियन्त्रण को भी मानता है। चूँकि नागार्जुन प्रगतिशील कवि हैं, इसलिए उनकी नजर महँगाई के पीछे भी गयी है। जनता का सारा ध्यान सीमाओं पर रहे और अन्दर में जमाखोर-लुटेरे महँगी से फायदा उठायें—कवि इस चालाकी से उलझी जनता को सावधान कर रहा है तथा महँगाई पर सरकार की चुप्पी का कारण जानना चाहता है :

डटे हुए हैं वे भौगोलिक सीमाओं पर
आर्थिक हित के छोरों की निगरानी कौन करेगा ?

माना कि बाहर के शत्रुओं को मार कर आप भगा देंगे लेकिन देश के आन्तरिक लुटेरों को नकेल कौन पहनाएगा ?

१. युगधारा, पृ० १०२।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस प्रकार कवि ने एक-एक प्रश्न सामने उपस्थित किया है जिसमें ध्वंस की अपेक्षा सृजन का संगीत सुनाई देता है। देश में पुलिस द्वारा किये जा रहे तरुण शक्ति के संहार से कवि चिन्तित है :

सजग पहरुए रहे सम्भाले कन्धों पर बन्दूक
अंदर अंदर
पौधों की हरियाली चाटेंगे बेशक शम्बूक
सिंहवाहिनी तो दनुजों का रक्त पियेगी
धरती की प्यासी फसलों को पानी देगा कौन ?[१]

इस कविता में कवि की दृष्टि मृत्यु पर नहीं, जीवन पर दिखाई देती है। देश के निर्माण और उन्नति के अन्य कार्यों को करना वह युद्ध से भी आवश्यक मानता है। दोनों स्थितियों की उसने तुलना की है। स्पष्ट है कि वह ह्रास का नहीं, निर्माण का आराधक है।

'धरती' कविता में उससे प्राप्त वरदानों का स्मरण किया गया है। मानव की इस उन्नति के लिए जुटे वैज्ञानिकों को श्रम और शांति का सेतु कहा गया है। युद्ध-व्यसनी दानवों की निंदा की गई है।[२]

'हंस' के शांति अंक में नागार्जुन की 'जयति जयति सर्वमंगला' शीर्षक से एक लम्बी कविता प्रकाशित हुई है। कवि ने इस कविता में विविध विन्दुओं पर दृष्टि रखी है। वह श्मशानी शांति नहीं चाहता है। वह सगुण शांति का आराधक है :

माँग रही तरुणाई वो हथियार
द्विपद भेड़िये को दहलाए जिसकी पैनी धार
जिसकी छाया में जनलक्ष्मी करे अश्क विहार
जिसके बल पर सगुण शांति के सपने हों साकार

इस कविता में अपने अभावग्रस्त जीवन की याद करते हुए संसार के राष्ट्राध्यक्षों की जंगखोर नीति और तिसपर उनके द्वारा शांति के कपोत उड़ाना, शांति की सीख देना—कुछ ऐसी विडम्बना दिखाई पड़ी कि शांति पर क्या कविता लिखी जाय—फिर आज जिस शांति की बात की जा रही है कवि उसे मरघटी शांति मानता है। उसका विचार है कि ऐसी शांति उसके प्रस्तावकों को ही मुबारक हो :

शून्य सांत्वना देनेवाली शांति तुम्हारी तुम्हें मुबारक
यह ढकोसला यह आध्यात्मिक शांति तुम्हारी तुम्हें मुबारक

१. पाण्डुलिपि से।
२. युगधारा, पृ० ९६।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कवि को—

नहीं श्मशानी शांति चाहिए
नहीं वैष्णवी शांति चाहिए
नहीं भैरवी शांति चाहिए
नहीं निर्गुणी शांति चाहिए
हम इच्छुक हैं सगुण शांति के

आज शांति-शांति की बात करनेवाले अपनी पेटी में पिस्तौल लिये घूम रहे हैं, किन्तु ऊपर से ये—

राजघाट में बापू की शिव समाधि पर
मनो-मनोरम फूल चढ़ाते ही रहते हैं

आज—

हमें शांति की सीख दे रहे, चील-गीध के चचे-भतीजे

मजा यह है कि शांति के ऐसे ही समर्थकों का देश में स्वागत होता है। वस्तुतः ऐसी शांति व्यर्थ है, छलावा है।

जो ऊपर से शांति की बातें करते हुए मन में युद्ध की बातें सोचा करते हैं, कवि उनकी कटु शब्दों में भर्त्सना करता है। वह जनता की शक्ति में विश्वास प्रकट करता है—जनता में ही आशाओं को मूर्त करने की क्षमता है :

जन सामान्य हमारी सारी आशाओं का प्राण केन्द्र है

इसीलिए यह जन-कवि जनहित का तीव्र अभिलाषी बन सार्थक शान्ति चाहता है। मात्र शान्ति-गोष्ठियों या थोथी शान्ति वार्त्ताओं में उसकी आस्था नहीं है। वह जनता की सुख-समृद्धि के लिए प्रयत्नशील वैज्ञानिकों का अभिनन्दन करता है जो अपनी प्रतिभा मानव-कल्याण में व्यय कर रहे हैं। ऐटम बम बनाने वालों की वह तीव्र शब्दों में निंदा करता है। निष्कर्षतः नागार्जुन की शान्ति रचनात्मक है।

'कैसा लगेगा तुम्हें' कविता में बमों की विनाशकारी लीला दिखाकर कवि प्रश्न करता है : 'यह सब तुम्हें कैसा लगेगा ?'[१]

कवि ने 'विएतनाम' की जनता का, जो साम्राज्यवादी अमेरिकी भेड़ियों से जूझती रही और अभी भी जूझ रही है, अभिनन्दन किया है।[२]

'रहे गूँजते बड़ी देर तक'[३] कविता में भी शिशुओं के मुख से 'मेले नाम तेले नाम, विएनाम-विएनाम' सुनकर कवि के कानों में ये रसीले बोल गूँजते

१. सतरंगे पंखोंवाली, पृ० ५७।
२. पाण्डुलिपि से।
३. —वही— ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहे हैं। अमेरिका के साम्राज्यवादी इरादों को ये नवयुग के शिशु दूत मिटाकर ही दम लेंगे—ऐसी कवि को इनसे आशा है।[1]

१९५२ में कवि ने 'जयति कोरिया' कविता लिखकर विएतनाम पर अमेरिकी हमले की भविष्यवाणी कई वर्ष पहले व्यक्त कर दी थी।

'आज कोरिया, विएतनाम कल परसों फिर कश्मीर'[2] पंक्ति विएतनाम पर अमेरिकी अत्याचार होते देख सत्य सिद्ध हो रही है। सम्भव है, कल अमेरिका कश्मीर पर आक्रमण करे।

इस कविता में शोषण और आक्रमण से पिसती जनता का अभिनन्दन किया गया है।

'हटे दनुज दल मिटे अमंगल' में अशिव का प्रतिकार और मानव-कल्याण की आशा व्यक्त की गयी है। जल-थल-नभ सबकी शान्ति का कवि इच्छुक है। विश्वम्भर मानव ने लिखा है :

"अपनी रचनाओं में नागार्जुन ने शाप से अधिक वरदान को, ईर्ष्या से अधिक सद्भावना को, घृणा से अधिक स्नेह को और युद्ध से अधिक शान्ति को स्थान दिया है। कर्म की शक्ति में उनका अटूट-अगाध विश्वास है।"[3]

(इ) अन्य स्फुट कविताएँ :

इस वर्ग में हम कवि द्वारा रचित अन्य फुटकर कविताओं की विवेचना करेंगे।

कवि ने नये लेखकों को प्रेरणा देते हुए 'माँजो और माँजो' कविता लिखी है। उन्हें अपनी अभिव्यक्ति को सशक्त बनाने के लिए प्रेरणा दी है। काव्य-कला का परिचय देते हुए उसने स्पष्ट किया है :

वस्तु है—भूसी, रूप है चमत्कार
ध्वनि और व्यंग्य पर मरता है संसार

कवि, भावों के दलदल से काव्य-कला को बाहर निकालने की प्रार्थना करता है।[4]

१. जनयुग, दिनांक ६ सितम्बर १९७०।
२. युगधारा, पृ० १११।
३. नई कविता : नये कवि, विश्वम्भर मानव।
४. युगधारा, पृ० ११५।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'जया' कविता चार साल की बालिका से कवि के हेलमेल का वर्णन है।[१] गुलाबी चूड़ियाँ[२] प्रायवेट बस के ड्रायवर की सीट के ऊपर उसकी बेटी ने लटका रखी है। उसे देख-देख ड्रायवर की आँखों में 'दुधिया वात्सल्य' तैर जाता है। पितृ-स्नेह को स्पष्ट करती हुई भावनापूर्ण कविता कवि के निश्छल और कोमल हृदय की परिचायक है। कहीं कवि को पुत्र की 'दन्तुरित मुस्कान' बड़ी छविमान लग रही है।[३] 'बोला ढाकुरिया का पानी', 'मधुक्षरा', श्रम-जीवियों और बुद्धजीवियों के दृष्टिकोण को स्पष्ट करनेवाली कविताएँ हैं। 'वे और तुम' में कवि सहभोक्ता या समसम्वोदित होकर श्रमिकजनों से यह प्रकट कर रहा हैं कि हम भी श्रमिक हैं, हमारी समस्या तुम्हारी जैसी ही है। हम दोनों एक ही दर्द पाल रहे हैं :

वे लोहा पीट रहे हैं
तुम मन को पीट रहे हो
वे पत्तर जोड़ रहे हैं
तुम सपने जोड़ रहे हो
उनकी घुटन ठहाकों में घुलती है
और तुम्हारी घुटन ?
उनींदी घड़ियों में चुरती है।

वे हुलसित हैं
अपनी ही फसलों में डूब गये हैं
तुम हुलसित हो
चितकबरी चाँदनियों में खोये हो
उनको दुख है
तरुण आम की मंजरियों को पाला मार गया है
तुमको दुख है
काव्य-संकलन दीमक चाट गये हैं।

पुलिस जुल्म से पीड़ित विद्यार्थी वर्ग को कवि ने बड़ी सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि से देखा है। आज ज्ञान के ये मंदिर पुलिस की दखल से दूषित हो रहे हैं। यह बड़ी दुर्भाग्यपूर्ण बात है कि पुलिस छात्रों को पीटती रहे और कॉलेज का अधिकारी वर्ग विवश बना रहे। शिक्षा-प्रणाली देश की आवश्यकताओं और तरुण उत्साह को उचित मोड़ देने के ध्येय से न होने का ही यह परिणाम है

१. युगधारा, ('जया') पृ० ११६।
२. प्यासी पथराई आँखें, पृ० २५।
३. सतरंगे पंखोंवाली, पृ० ४९।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कि कालेज उपद्रव-स्थल बनते जा रहे हैं। अपराध छात्रों के सिर रहता है। वस्तुतः वास्तविक अपराधी वे हैं जो छात्रों की उच्छृंखल मनोवृत्ति का रचनात्मक कार्यों में उपयोग नहीं करते। इसी के फलस्वरूप वी० एन० कालेज पटना में हुए गोलीकांड से व्यथित हो नागार्जुन ने 'ऐसा क्या अब फिर फिर होगा' कविता लिखी जिसमें पुलिस की गोली से शहीद हुए छात्र के रक्तस्थल को देखती हुई माताओं, बहनों, बहुओं की निगाहों के विभिन्न ढंग प्रस्तुत किये गये हैं। कवि ने निगाहों को क्रुद्ध, क्षुब्ध, सरल, तरल, स्तब्ध, शून्य आदि कहा है। स्पष्ट है कि नारियों की इस विह्वल व्यथित दृष्टि को कवि ने बड़े ध्यान से देखा है। उस तरुणी की, जिसका दूल्हा जो इस काण्ड में गोली का शिकार हो गया, देखते हुए कवि सोचता है :

ऐसा क्या अब फिर-फिर होगा
ज्ञानपीठ ये दूषित होंगे बार-बार क्या ?[1]

'नई पौध' में तरुणों की मनोदशा का चित्रण करते हुए उनके ग्राम से शहर में आने और उपद्रव करने पर नागार्जुन ने नेताओं द्वारा ग्राम-प्रेम जाग्रत करने का असफल प्रयास सूचित किया है :

बीस विनोबा और सौ जयप्रकाश
मना नहीं पाएँगे इनको[2]

देश में बढ़ते हुए हिंसक वातावरण को देख कवि इस निष्कर्ष पर पहुँचा है कि वस्तुतः अहिंसा और हिंसा जुड़वा बहनें हैं। हिंसा बड़ी बहन है और अहिंसा छोटी। हिंसा को व्यापक अधिकार प्राप्त है जिसके कारण वह मनचाही जगह विचरण करती है, इसीलिए देश में जहाँ चाहे उसे देखा जा सकता है। अहिंसा को केवल लाड़-प्यार और दुलार ही मिला है। रचना में व्यंग्यपूर्ण मौलिक कल्पना व्यक्त हुई है।[3]

इस प्रकार नागार्जुन प्रणीत काव्य में हमें जीवन के दर्शन होते हैं—उस जीवन के जिसे मनुष्य जोह रहा है, सजा रहा है, सँवार रहा है और जिसके लिए संघर्ष कर रहा है। युग-चेतना और मनुष्य के बेहतर जीवन की आकांक्षा उनके काव्य में तरंगें लेती लगती है। वर्त्तमान युग की जटिलताओं, सामाजिक विषमताओं और साम्प्रदायिकता के मोहजाल को छिन्न-भिन्न कर एक ऐसे समाज के निर्माण में वे प्रयत्नशील दिखाई देते हैं, जो वर्ग-विहीन हो, शोषणहीन हो,

१. सतरंगे पंखोंवाली, पृ० ५९।
२. पाण्डुलिपि से।
३. पाण्डुलिपि से।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जहाँ की परम्पराएँ व्यक्ति के विकास में बाधक नहीं साधक बनें, जहाँ के नेता सदाचारी और जनता देशभक्त हों।

(ब) खण्डकाव्य : भस्मांकुर

'भस्मांकुर' नागार्जुन का सद्यः प्रकाशित खण्डकाव्य है। कवि ने पौराणिक आख्यान से इसकी विषयवस्तु का चयन किया है। महाबली राक्षस 'तारक' जब देवताओं को बहुत अधिक सताने लगा तब देव-समाज ब्रह्मा से प्रार्थना करने गया। नेतृत्व का भार विष्णु पर सौंपा गया क्योंकि इस प्रकार के प्रतिनिधिमंडलों का सफल नेतृत्व वे पूर्व में कई बार कर चुके थे।

ब्रह्मा ने कहा कि यदि शिवजी हिमालय की पुत्री पार्वती से विवाह कर लें तो उनसे उत्पन्न पुत्र इस राक्षस का संहार कर सकेगा।

लेकिन तपस्या में लीन भगवान शंकर का ध्यान पार्वती की ओर आकृष्ट करना और उनका समागम करवाना बड़ा टेढ़ा काम था, जिसका भार कामदेव ने अपने ऊपर लिया। वह अपने सखा और सहयोगी वसन्त के साथ कैलाश शिखर की ओर चला।

नागार्जुन रचित 'भस्मांकुर' का आरम्भ वहीं से होता है।

वसंत ने कैलाश के उस अंचल में जादू कर दिया।[1] सारी शिखर-मालाएँ हरियाली से ढँक गयीं। शिवजी के मन को चंचल करने के लिए यह सारी सुन्दरता आवश्यक थी न……।

पार्वती अपने स्वप्न में शिव-मिलन के दृश्य ही देखती है।

कभी-कभी ध्यान-मग्न शिव की वह परिचर्या करने भी आती है। शिवजी प्रीति-स्निग्ध नेत्रों से पार्वती की ओर देखते हैं।

किन्तु जब शिव अपना ध्यान भंग होते देखकर इसका कारण जानने के लिए चारो ओर दृष्टि दौड़ाते हैं तो उन्हें "लता कुंज की ओट में मदन दिखाई पड़ गया"। फिर क्या था, शिव का क्रोध तो पुराण-प्रसिद्ध है, "रुद्र का कोपानल भड़का तो अगले ही क्षण कामदेव भस्म हो चुका था।"[2]

अपने पति का यह करुण अन्त देख रति विह्वल हो जाती है। वह भी आत्मदाह करना चाहती है। वसंत उसे समझाता है, आकाशवाणी होती है और उससे आश्वस्त होकर रति और वसंत की प्रसन्नता लौट आती है।

१. भस्मांकुर, भूमिका, पृ० १।
२. —वही—, पृ० ६।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस अति संक्षिप्त कथावस्तु को नागार्जुन ने अपनी प्रखर कल्पना से सजा दिया है। कवि ने संक्षिप्त प्रसंग को उठाकर समुचित विस्तार दिया है, पर उसका ध्यान लक्ष्य से हटा नहीं है। आरम्भ से अन्त तक एक ही कथा नागार्जुन ने इसमें रखी है।

'कुमारसम्भव' कालिदास का बड़ा ही प्रसिद्ध काव्य है। मदन-दहन का यह कथानक नागार्जुन ने उसी से लिया है। 'भस्मांकुर' नाम भी अपने आप में विलक्षण संकेत है, जो भस्म हो चुका है वह फिर वहीं से अंकुरित हो उठेगा। यदि नागार्जुन पुराने ढंग का कोई शीर्षक चुनते तो 'मदन-पराभव', 'कंदर्प-दर्प-हरण', 'मनमथ-मथन', 'स्मर-विजय' जैसा कोई नाम इस खण्डकाव्य का पड़ जाता। कवि द्वारा प्रयुक्त नामगत यह नवीनता कथावस्तु के अभिनव गठन की ओर भी इंगित करती है।

आरम्भ में कुछ दूर तक हमें वसन्त-वैभव की कुछ झाँकियाँ मिलती हैं। वसन्त कामदेव का चिरपरिचित सखा है। दिन-रात वे साथ रहते हैं। मित्र के कंधों पर देवराज इन्द्र ने बहुत बड़ा दायित्व डाल दिया है। वसन्त अपने सखा के दायित्व को मानकर आगे निकल आता है।

शिवजी की समाधि के क्षेत्र में वसन्त का आकस्मिक अवतरण ही इस खंडकाव्य का आरम्भिक अंश बना है :

असमय अंकुर, असमय लतावितान
वृद्ध वनस्पतियों का नव परिधान
असमय मुकुलोद्गम, मधुमद चहुँ ओर
असमय कुसुमविलास, हास-हिलकोर
गुंजित अलिदल, कम्पित कलिकाकोर
असमय चंचल दखिन पवन चितचोर
असमय हरियाली का पारावार
असमय पिककुल मुखरित बारंबार[1]

तत्पश्चात् गीत-शैली में वसन्त के पाँच स्वगत उद्गार आते हैं।

आगे हिरण और खरगोश के जोड़ों पर वासन्ती आकस्मिकता का प्रभाव अंकित किया गया है।

सौन्दर्य की स्वामिनी पार्वती भी इस नैसर्गिक विस्फोट से आश्चर्य-चकित है।

१. भस्मांकुर, पृ० १।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शिवजी से उसके भावी मिलन और आलिंगन को नागार्जुन ने बड़ी मनोवैज्ञानिकता और मौलिक कल्पना से प्रकृति के उपादानों द्वारा आभासित करवा दिया है :

शाखाएँ हो उठीं खूब छतनार
रोक न पायीं आलिंगन की चाह
लतिकाओं ने पकड़ी सुख की राह
दीर्घ प्रलंबित थाम लिये भुजदण्ड[1]

कृत्रिम वसन्त के प्रभाव से काँटों के भी रूप बदल गये हैं—भ्रमर अब इनसे भी अनुदान पाएँगे और फिर :

झुरमुट में यदि निर्मित हो मधुछत्र
वहाँ चलेगा क्यों न भला रसपान।[2]

इस प्राकृतिक आकस्मिकता से पार्वती का आश्चर्यचकित रह जाना स्वाभाविक ही है। अभी रात्रि शेष में पर्वत-पुत्री ने सपने देखे हैं। स्वप्न में पार्वती ने पहली बार तरुण वृषभ पर सवार तरुण शम्भु को देखा है। वह कई रूपों में किशोर शंकर को देख रही है।

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से किशोरी गिरिजा के ये स्वप्न बड़े ही इंगितपूर्ण हैं। आज तक हमारी परम्परागत कथा-कृतियों में पार्वती ने कभी ऐसे स्वप्न नहीं देखे थे। निःसंदेह कवियों द्वारा अभी तक साहित्य में वर्णित पार्वती से नागार्जुन द्वारा 'भस्मांकुर' में उपस्थित पार्वती इस कारण से भिन्न हो गयी है।

'रात्रिशेष में देखा अद्भुत स्वप्न' का स्मरण पार्वती करती हैं। प्रातःकाल होते-होते जो स्वप्न आते हैं—कहा जाता है कि वे सत्य सिद्ध होते हैं। इन स्वप्नों को साकार होना है, इसीलिए नागार्जुन पार्वती से कहलाते हैं :

रात्रि शेष में देखा अद्भुत स्वप्न
तरुण वृषभ पर दोनों हुए सवार
मैंने उनकी कमर रखी है थाम
. . . . . .
हँसकर प्रिय ने थपकाए थे गाल
इतने भर से मैं हो उठी निहाल
तरुण वृषभ की त्वरित हो उठी चाल।[3]

१. भस्मांकुर, पृ० ६।
२. —वही—, पृ० ७।
३. भस्मांकुर, पृ० ९।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वप्न दृश्यों की यह अवतरणिका पाठकों को कथा-गुम्फन के अभिनवत्व की ओर बढ़ा देती है। स्वप्न का विवरण सुनकर दो सखियों में से बड़ी (विजया) अभिज्ञान शाकुन्तलम् की प्रियंवदा की भाँति ढिठाई से अपने व्यंग्य कसती है :

सर्प-स्पर्श-सुख की आदत तो डाल
भुगतेंगे फिर 'होगा जो भी हाल…[1]

आगे रति को साथ लिये हुए कामदेव स्वयं सामने आता है। लगता है, वसन्त द्वारा की गयी तैयारियों का मुआइना करने निकला है :

उधर शिशिर, मधुमास इधर, इस पार
नहीं कहीं भी दीख रहा पतझार
नन्दन वन ही लाया यहाँ उतार
बन्धु ले गया मुझसे बाजी मार।[2]

रति और मदन के आपसी वार्त्तालाप, काम सफल होते की पूर्ण आशा, वसन्त की याद आना, रति की दृष्टि में संदेह का उदय होना, रति का मूर्च्छित हो जाना, होश में आने पर वसन्त को सामने देखना, फिर तीनों मित्रों का साथ बैठना आदि दृश्य नागार्जुन की बड़ी सूक्ष्म दृष्टि के परिचायक हैं। स्वाभाविक और भावी घटनाओं के संकेत इनमें विद्यमान हैं। तीनों मित्रों के मधुपान का दृश्य उद्धृत करने का लोभ हम संवरण नहीं कर पा रहे हैं :

चला देर तक उनका वह मधुपान
वर्ण-गंध-रुचि खींच रहे थे ध्यान
खटरस फल थे सज्जित विविध प्रकार
बीच-बीच में बदला जिनसे स्वाद
पत्र-चषक भरते, तिर उठती आप
रति के रतनारे नयनों की छाप
हिलती दृगछाया से करते खेल
पाननिरत दोनों मित्रों के होंठ[3]

कामदेव ने पहली बार गिरिजा को देखा तो आश्वस्त हो गया कि शिव इसे स्वीकार करेंगे ही :

अतिसुन्दर मुखमण्डल, चंपक कान्ति
हुई मदन को स्वर्ण चन्द्र की भ्रान्ति

१. भस्मांकुर, पृ० ११।
२. —वही—, पृ० १२।
३. भस्मांकुर, पृ० १७।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भृकुटि-सुरेखित आयत पक्ष्मल नेत्र
उन्मद अलि परिपंखित पद्म समान
तिल पुष्पोपम नासा, ललित कपोल
कंबुग्रीव, कुंचितशिति कुन्तल जाल
ढले हुए-से कंधे, मदु भुज-नाल
तनिक उगे सींगों-से युगल उरोज
निराभरण सम-अंतराल, अरुणाभ
शिशु नागिन-सी रोमावलि निःशंक
लटक रही है नाभि-विवर की ओर।[१]

रति, काम और वसन्त की बातचीत से स्पष्ट है कि यहाँ कवि की दृष्टि में न तो पुराना शिव है, न पुरानी पार्वती। यह भी स्पष्ट है कि इस खण्डकाव्य के मुख्य पात्र शिव और गौरी नहीं हैं। रति, काम और वसन्त ही इसके मुख्य पात्र हैं।

समाधि में जमे हुए शिव का वर्णन भी कई दृष्टियों से नया है। यहाँ शिवजी मंजुल मुखकांति वाले आकर्षक दिखाये गये हैं। हाड़-कपाल की मालाओं वाला उनका वीभत्स रूप यहाँ नहीं है।

आतंकित कामदेव की रूह काँप रही है। अपनी प्राणप्रिया रति का साहचर्य कामदेव के दिल को थामे हुए है। उसका निवेदन है :

रहो यहीं तुम अनुपल मेरे पास
हों महसूस तुम्हारे सुरभित श्वास
कुंचित कुन्तलराशि···मिले यदि स्पर्श
रग-रग में भर जाती है नव-स्फूर्ति[२]

शिव समझ नहीं पा रहे हैं कि आज उनका चित्त समाधि से बार-बार उचट क्यों रहा है? आज क्यों समाधि में मध्यान्तर जल्दी-जल्दी आया है?

इधर रति मदन को बीच-बीच में उत्साहित करनेवाली बातें कहती है। असमय वसन्त के द्वारा ठूठों में किये गये स्नेह संचार और उद्दीप्त पार्वती के अनुभावों की ओर वह बार-बार मदन का ध्यान आकृष्ट करती रहती है। ये आकस्मिक अनुभाव शिव की मूँदती और खुलती पलकों से भी व्यक्त होते हैं।

१. भस्मांकुर, पृ० १९।
२. —वही—, पृ० २८।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नैसर्गिक विकृतियों से उद्वुद्ध थिरकनों का आभास कैलाश भी दे रहा है। अन्ततः इन अनहोनी विकृतियों की ओर शिव का ध्यान जाता है और वे मूल कारण का पता लगाने के लिए अपनी निगाहें इधर-उधर फेंकते हैं।

खेल खत्म होने में बेहद फुर्ती बरती गयी है। आठ-दस पंक्तियों में रतिनाथ का काम तमाम कर दिया गया है :

देखा प्रभु ने खर्वाकृति सकुमार
वीर मदन बस साध चुका है लक्ष्य
प्रत्यंचा से छूटेगा अब तीर
भड़क उठा कोपानल, तड़का भाल
महारुद्र निज को पाये न सँभाल
विद्युत-गति से छूटा, नयन-कृशानु
हुआ प्रमाणित प्रभु का लक्ष्य अचूक
भस्म हो गया तत्क्षण मदन-शरीर
इर्द-गिर्द में व्यापी हा-हा-कार
गुंजित धरती, अनुगुंजित आकाश[1]

अगले ही क्षण अपने गणों को साथ लेकर शंकर अदृश्य हो गये। अचेत होकर 'कदली स्तम्भ' के समान पार्वती गिर पड़ी और उधर संज्ञाशून्य रति-रानी का भी यही हाल था।

होश आने पर रति को हम विलाप करते हुए पाते हैं। वह देवताओं को कोसती है। कुछ देर तक विलाप करने के बाद वह आत्म-दहन के लिए तैयार हो जाती है। शोकमग्न हतप्रभ वसन्त सामने आ जाता है।

इसी समय आश्वासन की आकाशवाणी गूँज उठती है। कामदेव की जय-जयकार से दिग्-दिगन्त मुखर हो जाते हैं। अभी कुछ देर पहले जो हाहाकार उठा था उसकी अनुगूंजों पर जय-जयकार के ये अनुरणन व्याप्त हो जाते हैं :

कौन मदन, तुमको कर सकता नष्ट ?
जयति-जयति भस्मांकुर, जयति अनग……
अतनुगिरा से गूंज उठा माहौल
नभ से भू तक व्याप गया अनुनाद[2]

अन्त में होता यह है कि स्वच्छ बर्फ की कलियों के अंबार के नीचे मदन का भस्मीभूत शरीर ढँक जाता है। वसन्त और रति भी अदृश्य से हो चुके होते हैं। हमारे सामने धवल-शुभ्र कैलाश शेष रह जाता है।

१. भस्मांकुर, पृ० ३५।
२. —वही—, पृ० ४४।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कालिदास ने स्पष्ट कहा था कि पार्वती जिस शिव को अपने सौन्दर्य से नहीं जीत सकी उसे तपोबल से जीतने का संकल्प करके वह फिर से साधना में निमग्न हो गयी।

यहाँ, लेकिन अन्त में कवि अपना संशय व्यक्त करता है कि क्या बेचारी पार्वती के हृदय में कभी क्षणभर के लिए भी अपने सौन्दर्य का घमण्ड पैदा हुआ होगा……?

'भस्मांकुर' के कवि नागार्जुन अन्तिम पंक्तियों तक आते-आते बहुत आशावान हो उठे हैं, तभी वे कहते हैं :

तरुण तापसी का प्रशांत सौन्दर्य
खींच सकेगा निश्चय अपनी ओर
महारुद्र की महिमा को इस बार !! [1]

'भस्मांकुर' में आदि से अन्त तक एक ही छन्द रखा गया है—वरवै।[2]

नागार्जुन ने वरवै छन्द का प्रयोग 'युगधारा' में संकलित 'पाषाणी' कविता में भी किया है और ८५४ पंक्तियों में सर्वथा नूतन भाव लिये हुए उनका यह खण्डकाव्य इस दृष्टि से अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है।

'भस्मांकुर' खण्डकाव्य में रति, मदन और वसन्त वार्त्तालाप करते हैं। इनकी बातचीत की भाषा अति सरल है, कवि का प्रयास ऐसे स्थलों पर बोलचाल के लहजों को अपनाने का रहा है। इससे यह लाभ हुआ है कि कवि कृत्रिमता से बच गया है। एक उदाहरण देखिए :

दिया मदन ने पत्नी का मुँह मूँद !
कहने लगा :
हुआ क्या तुमको आज ?
बकती क्या-क्या बातें ऊटपटांग
पगली तू होती है इनके कौन ?
हाँ, हाँ निश्चय, अधिक पी गई आज····
खीचूँगा मैं तो वसन्त के कान
क्यों खींचोगे उस गरीब के कान ?
रति बोली : इसमें उसका क्या दोष ?[3]

१. भस्मांकुर, पृ० ४८।
२. —वही—,भूमिका, पृ० ११।
३. भस्मांकुर, पृ० २०-२१।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वैसे कवि के द्वारा प्रस्तुत वर्णन-प्रसगों में संस्कृत-गर्भित चुस्त वाक्यों की छटा भी यत्र-तत्र देखी जा सकती है।

प्रगतिवादी कवि के रूप में प्रसिद्ध नागार्जुन द्वारा पौराणिक आख्यान पर रचित उक्त खण्डकाव्य कवि की प्रखर प्रतिभा का द्योतक है। कवि की इस प्रतिभा के संकेत पूर्व में रचित कुछ कविताओं से मिल गये थे। 'भस्मांकुर' कवि की सबल प्रबन्ध-क्षमता का पता देता है। कामदहन के अल्प प्रसंग पर ८५४ पंक्तियाँ रच डालना—भविष्य में कवि से किसी प्रबन्ध काव्य की प्राप्ति के लिए हमें आश्वस्त करता है। 'रामकथा' प्रबन्ध काव्य का कुछ अंश नागार्जुन ने लिखा भी है जो 'सरस्वती' के 'हीरक जयंती' अंक में प्रकाशित हुआ था।

'भस्मांकुर' खण्डकाव्य में कवि की हास्य-व्यंग्य-प्रियता का हलका-सा स्पर्श भी देखा जा सकता है। यथा :

वीर मदन बस साध चुका है लक्ष्य
प्रत्यंचा से छूटेगा अब तीर
(पुष्प धनुष था, पुष्प पुष्प थे बाण)[1]

हास्य रस के अतिरिक्त प्रस्तुत खण्डकाव्य में शिवजी द्वारा पार्वती को प्रीति-स्निग्ध आँखों से देखने तथा पार्वती के स्वप्न-प्रसंग में शृंगार रस की छटा देखी जा सकती है। शिव द्वारा मदन-दहन के अवसर पर रौद्र रस का संचार होता है और रति के विलाप में करुण रस का। इस प्रकार शान्त, हास्य, शृंगार, रौद्र और करुण रसों का स्वाद भस्मांकुर को पढ़ते समय मिलता है।

'भस्मांकुर' में कवि ने बिम्ब-निर्माण की दृष्टि से कई शास्त्रीय बिम्ब हमें दिये हैं। कवि हिमालय के सौन्दर्य पर मुग्ध है। धवल धूमिल हिमाच्छादित नगपति का सौन्दर्य-वर्णन नागार्जुन की लेखनी से कई बार निःसृत हुआ है। किन्तु भस्मांकुर खण्डकाव्य में हिमालय को कामदेव ने लताओं-पुष्पों आदि से सजा दिया है। अतः यहाँ भी बड़ा ही सजीव प्रकृति-चित्रण कवि ने किया है। रम्य दृश्य मानो नेत्रों के सम्मुख आ उपस्थित हुए हैं :

पग-पग पर ऋतुपति का छवि-संभार
दिशा-दिशा में किशलय-कुसुम-प्रसार
विविध गंध बंधुर समीर-संचार

१. भस्मांकुर, पृ० ३५।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पिकरव, अलिगुंजन, झिल्ली-झंकार
स्निग्ध-सुकोमल सतरंगी संसार
मुखर हिमाचल,पिघले तरल-तुषार
प्रकृति-परी ने सजा हरित शृंगार
त्वरा-भरित झरने हो उठे उदार[१]

'भस्मांकुर' में कामदेव जैसे सुकोमल प्रतिपक्ष पर शिव जैसे प्रबल पराक्रमी को प्रहार करता देख लगता है, कवि के मस्तिष्क में, विश्व के शक्तिशाली राष्ट्रों द्वारा कमजोर देशों पर किये जा रहे आक्रमणों की स्मृति भी उभर रही है। यहाँ शिव माध्यम हैं, कवि का स्पष्ट संकेत अमेरिका जैसे आक्रामक राष्ट्रों की ओर प्रतीत होता है, जो विएतनाम जैसे छोटे से राष्ट्र को कुचल रहे हैं। तभी उसने लिखा है :

कुसुम-सुकोमल-प्रतिपक्षी पर हाय
बरसा दी उसने सौ मन बारूद[२]

छंद, भाषा, भाव आदि विभिन्न दृष्टियों से उक्त कृति अनूठी है। भावनाट्य के रूप में इसे सफलता से रंगमंच पर अभिनीत किया जा सकता है।

१. भस्मांकुर, पृ० १२।
२. —वही—, पृ० ३८।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तृतीय अध्याय

नागार्जुन-काव्य : शिल्प-विधान

शिल्प : कविता में शिल्प का विशेष महत्त्व होता है। कवि कविता में शब्दों के रख-रखाव, सजावट तथा वाक्य-निर्माण द्वारा जो कारीगरी करता है वही शिल्प होता है। शिल्प का सम्बन्ध पूरी तरह कला से है। भाव, अनुभूति, संवेदना, विचार आदि का शिल्पन कर कवि कविता का शृंगार करता है। काव्य को कला और शिल्प की कसौटी पर परख कर उसकी श्रेष्ठता की जाँच की जाती है। शिल्प के माध्यम से कवि अपनी अभिव्यक्ति को प्रखर बनाता है और कविता को एक रूप देता है।

यहाँ हम नागार्जुन-काव्य पर इसी दृष्टि से विचार करेंगे। प्रगतिवादी कवियों का मुख्य लक्ष्य जन-चेतना को जाग्रत करना या उसे प्रतिबिम्बित करना रहा है। अल्प-शिक्षित जनता को प्रेरित करने के लिए उसके स्तर तक पहुँच कर कविता लिखने के कारण शब्दों की सजावट पर इनका ध्यान कम गया है। इस ओर विशेष सतर्क न रहने के कारण शिल्प-विधान की दृष्टि से जहाँ कहीं उनकी असावधानी भी प्रकट हुई है वहीं वे अपने ध्येय 'अशिक्षित श्रमिक जनता' को अपील करने में सफल भी रहे हैं।

प्रगतिवादी कविता की इसी सोद्देश्यता को नजर-अन्दाज करते हुए डॉ० शिवकुमार मिश्र ने नागार्जुन की कविताओं में कला और शिल्प-सम्बन्धी उदासीनता निरूपित की है : "कला और शिल्प के प्रति नागार्जुन भी अपने अन्य मित्रों की भाँति उदासीन रहे हैं।"[1] उनका विचार है कि "कला और शिल्प

१. नया हिन्दी काव्य : डॉ० शिवकुमार मिश्र, पृ० १८६।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के अभाव में न केवल उनकी अनेकानेक रचनाएँ, नीरस और रुक्ष हैं, बल्कि अनेक तो मात्र अभिधात्मक उक्तियाँ बन कर रह गयी हैं।"[१]

डॉ० शिवकुमार मिश्र की तरह और भी आलोचकों ने ऐसा ही एकांगी मत व्यक्त किया है। वस्तुतः इस प्रकार की आलोचना नागार्जुन की केवल कुछ जनवादी कविताओं को देखकर ही व्यक्त की गयी है।

इन जनवादी कविताओं का उद्देश्य साधारण जन (प्रायः निरक्षर जनता) को प्रेरणा देना रहा है। श्रमरत किसानों और खेतिहरों के लिए लिखे जाने के परिणामस्वरूप कवि के लिए यह प्रायः अनिवार्य-सा हो जाता है कि वह उपर्युक्त लोगों में उनके स्तर की ही बात करे, ऐसी कविताएँ लिखे जिन्हें वे समझ सकें। अब मात्र उन्हीं कविताओं को लेकर नागार्जुन के शिल्प-विधान के प्रति हो-हल्ला मचाना हमारी समझ में एकांगी या अपूर्ण अध्ययन के परिणामस्वरूप उत्पन्न अर्थहीन प्रतिक्रिया है।

नागार्जुन शिल्पवादी कवि नहीं हैं, किन्तु उनका शिल्प-विधान ठोस है। उनकी हिन्दी कविताओं में शिल्प-विधान की दृष्टि से अनेक कविताएँ उल्लेखनीय हैं—'जनवंदना', 'पाषाणी', 'बादल को घिरते देखा' आदि, और सद्यः प्रकाशित खण्डकाव्य 'भस्मांकुर' ने तो इस कवि के शिल्प-सौष्ठव का बड़ा ही सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत किया है। जिन आलोचकों ने कवि पर कलागत अनगढ़-पन का आरोप लगाया है उन्होंने नागार्जुन की समग्र कविताओं का पारायण करके यदि अपना मत व्यक्त किया होता तो यह भूल न हुई होती।

नागार्जुन की कविताओं में रूपप्रकारिता कोई अलग वस्तु नहीं है। शिल्प और छन्द के प्रति नागार्जुन का कवि सजग रहा है, पर आग्रही नहीं।

(अ) विविध रूप :

"विषयवस्तु की अन्विति, संयोजना, अभिव्यंजना या प्रस्तुतीकरण के ढग को ही कला में रूप कहा जाता है। इस दृष्टि से काव्य-कला के प्रसंग में छन्द, तुक, अलंकार, रीति, शैली, प्रबन्धात्मकता आदि ऐसी विशिष्टताओं को, जिनका सम्बन्ध कथ्य से न होकर कथन-विधि से है, रूप के अन्तर्गत लिया जा सकता है।"[२]

काव्य के विविध रूप होते हैं—गीत, प्रगीत, मुक्तक, प्रबन्ध, खण्डकाव्य।

१. नया हिन्दी काव्य : डॉ० शिवकुमार मिश्र, पृ० १८९।
२. साहित्य की शैली : डॉ० गणपतिचन्द्र गुप्त, पृ० २०५।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'भस्मांकुर' के नाम से पौराणिक आख्यान पर आधारित एक खण्डकाव्य भी प्रकाशित हुआ है जो कवि नागार्जुन की अन्तिम काव्यकृति है।

छन्द की दृष्टि से मुक्तछन्द और छन्दबद्ध दोनों रूप हमें नागार्जुन-काव्य में प्राप्त होते हैं। छन्दबद्धता का निखरा रूप निराला, राजकमल चौधरी पर लिखी कविताओं में भी देखा जा सकता है। मुक्तछन्द से युक्त इस कविता में कवि ने भावों को कितनी सफलता से इस रूप में पिरो दिया है :

शिवजी की तीसरी आँख से
निकली हुई महाज्वाला में
घृतमिश्रित सूखी समिधा-सम
कामदेव जब भस्म हो गया
रति का क्रंदन सुन आँसू से
तुमने ही तो दृग धोये थे ?
कालिदास, सच-सच बतलाना
रति रोई या तुम रोये थे ?[1]

नागार्जुन द्वारा कहीं-कहीं संस्कृतनिष्ठ भाषा के प्रयोग से छन्दबद्ध कविताएँ अत्यन्त श्रेष्ठ बनी हैं। उनके अनुसार, "आज छन्दों में एक ललकार और स्वरों में एक दृढ़ता होनी चाहिए।"[2]

प्रस्तुत कविता में कवि के इन विचारों की पूरी-पूरी झलक दिखाई देती है :

मैंने देखा, युग अंध-पंगु है, ठहरा है
मैंने देखा, सारा समाज ही बहरा है
मैंने देखा, मेरे विवेक पर पहरा है
मैंने देखा, लहलह द्रोहानल लहरा है
मैं सुनता हूँ, जल-जल कर झंडा फहरा है।[3]

कहीं-कहीं मुक्त और छन्दबद्ध दोनों का सम्मिलित रूप भी दिखाई देता है। जैसे—'अबके इस मौसम में कोयल आज बोली है' कविता में। इसमें कुछ अंश अतुकान्त और कुछ तुकान्त हैं। मुक्त और छन्दबद्ध प्रयोगों के साथ काव्य के अन्य रूप भी नागार्जुन की कविता में मिलते हैं। डॉ० हरिनारायण मिश्र ने इस सम्बन्ध में लिखा है : "मुक्त वृत्त और अतुकान्त शैलियों के साथ-साथ नचारी,

१. सतरंगे पखोंवाली, पृ० ४२।
२. स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी साहित्य : बेचन शर्मा, पृ० २५१।
३. गाँधी पुण्यतिथि, ३० जनवरी १९६९ पर लिखी 'अहमदाबाद' कविता से।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सोहर और पद्यबद्ध कथन-शैली में जब उन्हें रचना करते देखते हैं, तो यह विश्वास दृढ़ हो जाता है कि कवि की अभिव्यंजना-प्रणाली में पूरा वैविध्य है।"[१] और इन काव्य-रूपों को अपनाने का ही यह परिणाम है कि नागार्जुन के इस प्रकार के गीत मिथिला के मेलों और उत्सवों के अवसर पर गाये जाते रहे हैं। नागार्जुन मूल रूप में एक जनकवि हैं। उन्होंने युग की सामयिक समस्याओं को गीतों में अच्छी तरह व्यक्त किया है।

कहीं उन्होंने अपनी कविता को लय के अनुसार भी सजाया है। निम्न कविता को गाते समय उसके किस शब्द पर जोर देना और दोहराना चाहिए, स्पष्ट हो जाता है :

मचा रहे थे उधम बहो ो ो त
अमन के पंडुक शांति के कपो ो ो त
पीले बिलौटे ने मार दिया पंजाऽऽ
सर हुआ घायल लेनिन का गंजाऽऽ[२]

नागार्जुन ने विविध छंदों में रचनाएँ की हैं। मुक्तछंद में भी उन्होंने विविध प्रयोग किये हैं। श्री उमेश मिश्र के अनुसार, "नागार्जुन तथा 'सुमन' जैसे कवियों ने परम्परागत कवित्त, सवैये तथा कुंडलिया आदि को भी प्रश्रय दिया है।"[३] नागार्जुन की 'अन्न-पच्चीसी' इसी प्रकार की कविता है, जिसमें 'साखी' रूप को उन्होंने अपनाया है :

कबिरा खड़ा बजार में, लिये लुकाठी हाथ
बंदा क्या घबराएगा जनता देगी साथ
छीन सके तो छीन ले, लूट सके तो लूट
मिल सकती कैसे भला अन्नचोर को छूट
आज गहन है भूख का, धुंधला है आकाश
कल अपनी सरकार का होगा पर्दाफाश
अर्जुन नागा ने कहे साखी के ये बोल
साथी को समझाइये रचना है अनमोल

अन्तिम दोहा है :

अन्न ब्रह्म ही ब्रह्म है बाकी ब्रह्म पिशाच
औघड़ मैथिल नागजी अर्जुन यही उवाच।[४]

१. डॉ० हरिनारायण मिश्र : लेख—'नागार्जुन की कविता' ('अवन्तिका' पत्रिका अक्तूबर १९५६)।
२. पाण्डुलिपि से।
३. प्रगतिवादी काव्य : उमेश मिश्र, पृ० २८६।
४. जनशक्ति, पटना, २८ फरवरी १९६५।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ये सब प्रयास नागार्जुन ने अपनी कविताओं को जन-जीवन के निकट लाने के लिए किये हैं। नागार्जुन साहित्य को केवल थोड़े-से बुद्धिजीवी वर्ग के पठन-पाठन की वस्तु नहीं, वरन् उसे जनता की चीज बनाना चाहते हैं। इसके लिए मात्र थोथी तुकबाजी की चली आती परम्परा को भी वे बदलना चाहते हैं।

नागार्जुन के अनुसार, "आज मात्र तुक्कड़ों का जमाना नहीं, जनगीति और जनकाव्य का जमाना है।" नागार्जुन कविता में मैं के संकुचित घेरे में फँसे रहने को उर्जस्वित 'अहम्वाद' की संज्ञा देते हैं। उनका विचार है कि आज कविता जन-समुदाय के लिए हो।[1] इसके लिए कवियों को चाहिए कि वे जनता में प्रचलित काव्य-रूपों को अपनाएँ।

इसी शुभ प्रयास को भारतेन्दुजी ने मुकरियाँ आदि जन-गीतों के रूप को अपना कर आरम्भ किया था। नागार्जुन ने भी उन्हीं के अनुसार 'चनाजोरगरम' मुकरियों के रूप में लिखा, जो सफल जन-गीत है। सामयिक समस्याओं के प्रकाशन का गुण इनमें होने से सहज ही ये जन-जन का कण्ठहार बनने में समर्थ हैं।

नागार्जुन ने प्रबन्धकाव्य 'रामकथा' का कुछ अंश लिखा है जो 'सरस्वती' के 'हीरक जयन्ती' अंक में प्रकाशित है। उससे कवि की प्रबन्ध-पटुता की झलक हिन्दी पाठकों को मिली।

खड़ीबोली के आरंभिक काल में मराठी और गुजराती कवियों की देखा-देखी हमारे यहाँ भी वसंततिलका, शिखरिणी, मालिनी, शार्दूल, विक्रीड़ित आदि संस्कृत छंदों में रचनाएँ की जाने लगी थीं। बाद में मैथिलीशरण गुप्त और लोचनप्रसाद पाण्डेय आदि समर्थ कवियों ने प्राकृत अपभ्रंश वाली छंद-परम्परा का अनुगमन किया। संस्कृत के छंद छूट गये। यों अब भी क्वचित् कदाचित् कोई कवि संस्कृत छंदों का अनुसरण कर लेता है। 'भारत-भारती' और 'जयद्रथ वध' की कृपा से हरिगीतिका छंद बहुत लोकप्रिय हुआ।

नागार्जुन को बचपन में हरिगीतिका ने पहली बार आकर्षित किया। उन्होंने मैथिली की अपनी प्रारंभिक रचनाओं में हरिगीतिका छंद का प्रयोग किया। विभिन्न छांदस्-प्रयोगों की दृष्टि से लोक-भाषाएँ बड़ी ही उपयुक्त माध्यम होती हैं। इसका प्रमाण साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत उनका मैथिली काव्य संग्रह 'पत्रहीन नग्न गाछ' की कतिपय रचनाओं से मिलेगा।

नागार्जुन ने ८५४ पंक्तियों में 'भस्मांकुर' खंडकाव्य बरवै छंद में रचा है। इसके कुछ ही अंश को देखकर कवि के सौन्दर्य बोध को समझा जा सकता है।

१. स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी साहित्य : डॉ० बेचन शर्मा, पृ० २५१।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नागार्जुन के पांडित्य का निखरा हुआ रूप इसमें मिलता है। भाव-विधान और शिल्प-विधान दोनों ही दृष्टियों से प्रस्तुत कृति श्रेष्ठतम है।

(ब) बिम्ब-विधान एवं प्रतीक :

बिम्ब : काव्य में बिम्ब का तात्पर्य उस चित्र से है, जिसे कवि अपनी कविता द्वारा पाठकों के हृदय में उपस्थित कर देता है। बिम्ब अँग्रेजी शब्द 'इमेज' का हिन्दी रूपान्तर है। कवि की अनुभूति पाठक के हृदय से तादात्म्य तभी स्थापित कर सकती है जब वह सफल बिम्ब प्रस्तुत करे। "साहित्य के क्षेत्र में साहित्यकार बहुत से विषयों का वर्णन इन बिम्बों के माध्यम से ही करता है।"[१]

"बिम्ब कल्पना और स्मृति की वह क्रिया है, जो शब्दों द्वारा रूप (चित्र) प्रस्तुत करके पाठक के मन को प्रभावित करती है। बिम्ब-विधायक कल्पना पुनरुत्पादक कल्पना होती है। कवि अतीत की घटनाओं, स्थितियों और अनुभूत पदार्थों को उनके रंग, ध्वनि, गति, आकार-प्रकार के साथ शब्द-चित्रों के रूप में उपस्थित करता है।[२] काव्य-बिम्ब शब्दार्थ के माध्यम से कल्पना द्वारा निर्मित एक ऐसी मानस-छवि है, जिसके मूल में भाव की प्रेरणा रहती है।[3]

बिम्ब को इन्द्रियग्राह्य बनाने की चेष्टा के सम्बन्ध में डा० प्रेम प्रकाश गौतम का मत है : "वे बिम्ब जो हमारी कल्पना को दृश्य में उपस्थित करते हैं, साधारण बिम्ब होते हैं, जो बिम्ब दृश्य उपस्थित करने के साथ हमारी अन्य इन्द्रियों (जिह्वा, घ्राणेन्द्रियों, स्पर्श, चेतना और नाद चेतना) को भी प्रभावित करते हैं, वे काव्य-दृष्टि से अधिक उत्कृष्ट होते हैं।"[४] "काव्य की दृष्टि से बिम्ब वस्तुतः बिम्ब या चित्र नहीं होता, अपितु एक ऐसा शाब्दिक विवरण होता है, जो हमारे मानस बिम्बों को उदित करता है।"[५] सेसिल डेलेविस का कहना है : "बिम्ब ऐसा ऐन्द्रिय शब्द-चित्र है, जिसमें अलंकारिता और भावावेग का संदर्भ होता है और जो पाठकों में भावोत्तेजन पैदा करता है।"[६]

१. डॉ० गणपतिचन्द्र गुप्त : साहित्य की शैली, पृ० ३१३।
२. डॉ० प्रेमप्रकाश गौतम, लेख—प्रतीक और बिम्ब का मनोविश्लेषण, साहित्य-संदेश, जुलाई-अगस्त १९६७, पृ० ७।
३. डॉ० नगेन्द्र : काव्य बिम्ब, पृ० ५।
४. साहित्य संदेश, जुलाई-अगस्त १९६७, पृ० ८।
५. डॉ० गणपतिचन्द्र गुप्त : साहित्य की शैली, पृ० ३२५।
६. साहित्य संदेश—जुलाई-अगस्त, १९६७, पृ० ६,७।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विम्ब के कई भेद किये गये हैं किन्तु डॉ० गणपतिचन्द्र गुप्त विम्ब के विभिन्न भेद अनावश्यक एवं असंगत मानते हैं। डॉ० नगेन्द्र के अनुसार, "कुछ अन्य दृष्टियों से भी इनके भेदों का विस्तार किया जा सकता है। पाश्चात्य आलोचनाशास्त्र में अनेक प्रकार से विम्बों के इतने अधिक भेद कर दिये गये हैं कि वे प्रायः एक दूसरे की सीमा में प्रवेश कर जाते हैं और अर्थ के समस्त प्रकार और रूप विम्बात्मक हो जाते हैं।"[१] विम्ब के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए वह लिखते हैं : "विम्ब काव्य का अत्यन्त प्रभावी माध्यम है और इसलिए काव्य के संदर्भ में उसका मूल्य असंदिग्ध है, परन्तु वह स्वतन्त्र नहीं है, माध्यम ही है, प्राणतत्त्व नहीं है, काव्य का सहकारी मूल्य अवश्य है, प्राथमिक मूल्य नहीं है।"[२]

प्रतीक : प्रतीक उस शब्द, शब्द-चित्र, रूपक, पुराण कथा या अन्यविध आख्यान को कहते हैं जो अपने अर्थ को छोड़कर किसी अन्य समान और सम्बद्ध अर्थ को व्यंजित करता है, और कवि की किसी विशिष्ट अनुभूति के सम्प्रेषण में सहायक होता है। काव्य सम्बन्धी प्रतीक के लिए, जैसा डॉ० बच्चन सिंह का कहना है, तीन बातें आवश्यक हैं—(१) उसका कवि की निजी दृष्टि की सृष्टि होना, (२) काव्य-संदर्भ से युक्त होना, (३) मूल्यों पर अन्तर सम्बन्ध स्थापित करना।[3]

"प्रतीक अनुभूति के सम्प्रेषण का साधन है, प्रतीक-योजना करते हुए कवि का उद्देश्य अपने को अर्थ की अभिव्यक्ति, अपने अनुभव का प्रेषण करना है। अर्थ-प्रेषण ही कवि को अभिप्रेत होता है, विम्ब प्रस्तुत करना नहीं।"[४]

डॉ० विमलकुमार के अनुसार, "विम्ब-विधान में जहाँ सम्मूर्तन और चित्रोपमता को प्रधानता दी जाती है, वहाँ प्रतीक-विधान में एक अभिव्यक्ति लाघव के साथ किसी सूक्ष्म सत्य, सौन्दर्य या प्रभाव की संकेत-व्यंजना की जाती है।"[५]

विम्ब में साहित्यिक सौन्दर्य का जो रूप देखा जा सकता है, सूक्ष्म-से-सूक्ष्म भावों की चित्रोपमता का जो गुण प्रदान किया जाता है उसके कारण विम्ब का

१. डॉ० नगेन्द्र : काव्य विम्ब ; पृ० १७।
२. —वही—, पृ० ६२।
३. डॉ० प्रेमप्रकाश गौतम : प्रतीक और विम्ब का मनोविश्लेषण, साहित्य संदेश, जुलाई-अगस्त, १९६७, पृ० ६-७।
४. —वही— ।
५. —वही— ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रतीक की अपेक्षा अधिक महत्त्व होता है।

हम यहाँ नागार्जुन-काव्य में बिम्ब और प्रतीक पर विचार करेंगे।

नागार्जुन-काव्य में बिम्ब :

नागार्जुन संस्कृत के पंडित हैं। उनके ऊपर कालिदास के साहित्य का बहुत अधिक प्रभाव है। इसी के परिणामस्वरूप उनके काव्य में कहीं-कहीं उच्च कोटि का शास्त्रीय बिम्ब भी मिलता है। कवि ने अमल-धवल गिरि के शिखरों पर बादलों का घिरना एवं वहाँ के अन्य प्राकृतिक सौन्दर्य को पाठकों की आँखों के समक्ष उपस्थित कर दिया है। दृश्य या चाक्षुष बिम्ब का सफल उदाहरण यह कविता है। "दृश्य या चाक्षुप बिम्ब आकारवान होते हैं, इनका स्वरूप सबसे अधिक स्पष्ट होता है, क्योंकि उसके आयाम अधिक मूर्त्त होते हैं।"[१] 'बादल को घिरते देखा है' में नागार्जुन ने कई अछूते दृश्य बिम्बों को पकड़ा है :

अमल-धवल गिरि के शिखरों पर
बादल को घिरते देखा है
छोटे-छोटे मोती जैसे अतिशय शीतल वारिकणों को
मानसरोवर के उन स्वर्णिम कमलों पर गिरते देखा है।[२]

प्रस्तुत कविता में कवि के बिम्ब-निर्माण की सशक्तता का पता चलता है। पहले क्रमशः वह चित्र उपस्थित करता है और उसके बाद कभी शैवालों की हरी दरी पर प्रणय कलहरत चकवा-चकई को या अन्य किसी रम्य दृश्य में किन्नर-किन्नरियों को वंशी वादन करते या कहीं निज के ही उन्मादक परिमल को खोजते, चिढ़ते मृगों को हमें दिखाता है। उक्त कविता में एक-एक चित्र सजीव है। चित्र खींचने में नागार्जुन का कौशल सर्वत्र है। यही कारण है कि नागार्जुन की कविताओं में उच्च कोटि के बिम्ब आये हैं। प्रस्तुत कविता में कई बिम्ब आये हैं जो कई भावों को प्रकट कर रहे हैं :

पूस मास की धूप सुहावन
फटी दरी पर बैठा है चिर रोगी बेटा
राशन के चावल से कंकड़ बीन रही पत्नी बेचारी
गर्भ-भार से अलस शिथिल हैं अंग-अंग

१. डॉ० नगेन्द्र : काव्य बिम्ब, पृ० ९।
२. बादल को घिरते देखा है (युगधारा), पृ० ७५।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छप्पर पर बैठी है बिल्ली
किसके घर से जाने क्या कुछ खा आई है
चला-चला कर जीभ स्वाद लेती होठों का[1]

नागार्जुन घुमक्कड़ स्वभाव के हैं, अधिकतर प्रवास पर रहने के कारण उन्हें अपनी प्रिय मिथिला भूमि याद आती रही है। "जब कल्पना प्रायः निष्क्रिय रहती है और स्मृति के द्वारा ही बिम्ब की उद्बुद्धि होती है, तब स्मृत बिम्ब की सृष्टि होती है। अतीत के अनुभव के आधार पर यथार्थपरक बिम्ब स्मृत बिम्ब कहलाते हैं।"[2] इसी स्मृत बिम्ब को निम्न पंक्तियों में देखा जा सकता है :

घोर निर्जन में परिस्थिति ने दिया है डाल !
याद आता तुम्हारा सिन्दूरतिलकित भाल !
.. ..
याद आता मुझे अपना वह 'तरउनी' ग्राम
याद आतीं लीचियाँ, वे आम
याद आते मुझे मिथिला के रुचिर भू-भाग
याद आते धान
याद आते कमल, कुमुदिनि और तालमखान।[3]

नागार्जुन ने बिम्ब-सृजन की दृष्टि से कहीं-कहीं नये प्रयोग भी किये हैं। निम्न कविता में कवि की सूक्ष्म दृष्टि और उससे देखे गये रूप को ज्यों-का-त्यों उपस्थित कर देने की क्षमता देखी जा सकती है। दृश्य बिम्ब का सफल प्रयोग इसमें कवि ने किया है :

ग्रामवासिनी—
नगरवासिनी
माताओं-बहनों-बहुओं की
रुकी निगाहें,
झुकी निगाहें
क्रुद्ध निगाहें,
क्षुब्ध निगाहें
अरुण निगाहें,
करुण निगाहें
डरी निगाहें,
भरी निगाहें

१. हंस (शांति अंक)।
२. डॉ० नगेन्द्र : काव्य बिम्ब, पृ० ३०।
३. सिन्दूर तिलकित भाल (सतरंगे पंखोंवाली) पृ० ४७।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तरल निगाहें,
सजल निगाहें
व्यथित निगाहें,
मथित निगाहें
स्तब्ध निगाहें,
शून्य निगाहें
देख रहीं बी० एन० कॉलेज के बरामदे पर सखा शोणित पंक ।[1]

नागार्जुन ने इसी प्रकार के दृश्य-बिम्बों को काफी प्रस्तुत किया है। 'खुरदरे पैर' कविता में रिक्शा-चालक के गुट्ठल घट्ठों वाले कुलिश-कठोर पैरों को दिखाकर कवि ने लिखा है :

देर तक टकराए
उस दिन आँखों से वे पैर
भूल नहीं पाऊँगा फटी बिवाइयाँ
खुब गई दुधिया निगाहों में
धँस गई कुसुम कोमल मन में ।[2]

'बहुत दिनों के बाद', 'देखना ओ गंगा मैय्या', 'ओ जन मन के सजग चितेरे', 'वसन्त की अगवानी' आदि कविताएँ भी कवि की देखी हुई वस्तुओं के बिम्ब उपस्थित करने में पूर्ण समर्थ हैं।

'शिशिर-विषकन्या' कविता में अमूर्त्त वस्तु का मानवीकरण कर स्पृश्य बिम्ब उपस्थित किया गया है। "स्पृश्य बिम्ब में स्पृश्यजन्य संवेदनों के समन्वय से बिम्ब का निर्माण होता है।"[3] प्रस्तुत कविता स्पृश्य बिम्ब का सफल उदाहरण है :

हजार बाँहों वाली शिशिर विष-कन्या
उतरी लेकर साँसों में प्रलय की वन्या
हिमदग्ध होठों के प्राणशोषी चुम्बन
तन मन पर लेप गए ज्वालामुखी चन्दन
एक-एक शिरा में सौ-सौ सुइयों की चुभन
अद्भुत वह भुजपाश, अद्भुत आलिंगन
तृण तरु झुलस गए, पड़ा है ओसमय तुषार

१. खून और शोले, पृ० ४।
२. सतरंगे पंखों वाली, पृ० २१।
३. डॉ० नगेन्द्र : काव्य बिम्ब, पृ० ६।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहीं कवि ने दृश्य-श्रव्य विम्वों का सम्मिलित रूप भी उपस्थित किया है। उदाहरणार्थ :

तुम वही पंक जिसकी फसलें होती शतदल
युग की भ्रमरावलि करती गुन गुन अविरल।[1]

यहाँ भँवरों की गुनगुनाहट कर्णेन्द्रियों से सम्बन्ध स्थापित कर रही है।

जहाँ कवि सरल अनुभूतियों से भर उठा है वहाँ उसने सरल विम्व भी उपस्थित किये हैं। 'वापू के प्रति' कविता में कवि ने लिखा है :

शिशु सुलभ सरल मुस्कान लिये
शायद तुम हम पर हँसते हो
छोड़ो इस दिल में क्या है
नाहक ही अन्दर धँसते हो।[2]

कविता में गाँधीजी के साथ एक भोले वालक का चित्र भी उभरता है। इस प्रकार नागार्जुन के काव्य में उच्चकोटि के क्लासिकल विम्वों से लेकर वस्तु-प्रधान विम्व तक की छटा विखरी हुई है। प्राचीन परम्परा से मंडित हो कवि जहाँ उपस्थित हुआ है वहाँ उसने उच्च स्तर के विम्व हमें दिये हैं। कहीं उनका स्तर हल्का भी है। फिर इधर विम्व-विरोधी विचारधारा के प्रसारण से काव्य में विम्व के स्थान पर सपाटवयानी का जोर भी वढ़ता जा रहा है। विम्व के विरोध में डॉ० नामवर सिंह लिखते हैं :

"जिसे विम्व कहा जाता है उसके विना भी कविताएँ लिखी गयी हैं और विम्वधर्मी कविताओं से किसी भी तरह कम अच्छी नहीं कही जा सकतीं। कविता में विम्व-रचना सदैव वास्तविकता को मूर्त ही नहीं करती, कभी-कभी वह वास्तविकता का अमूर्तन भी करती है। कविता में विम्व वास्तविकता के साक्षात्कार का ही सूचक नहीं होता, प्रायः वह वास्तविकता से वचने का एक ढंग भी रहा है। काव्य-भाषा के लिए भी प्रायः विम्व-योजना हानिकारक सिद्ध हुई है। विम्व के कारण कविता वोलचाल की भाषा से अक्सर दूर हटी है।[3]

डॉ० नामवरसिंह विम्व की अपेक्षा सपाटवयानी काव्य में उपयुक्त समझते हैं, और इसी गुण से कविता को वोलचाल की भाषा के निकट देखते हैं।

उनके अनुसार, "जहाँ तक मूर्तिमत्ता का प्रश्न है, वह तथाकथित विम्ववादी

१. राजकमल चौधरी के लिए लिखी कविता (पाण्डुलिपि से)।
२. पाण्डुलिपि से।
३. डॉ० नामवर सिंह : कविता के नये प्रतिमान, पृ० १३९।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काव्य सिद्धान्त को अपनाये विना भी सम्भव है।" अपने कथन के प्रमाणस्वरूप विद्वान आलोचक ने नागार्जुन की 'अकाल और उसके बाद' कविता प्रस्तुत की है :

कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास
कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त

दाने आए घर के अन्दर कई दिनों के बाद
धुआँ उठा आँगन से ऊपर कई दिनों के बाद
चमक उठीं घर भर की आँखें कई दिनों के बाद
कौए ने खुजलाईं पाँखें कई दिनों के बाद [१]

डॉ० नामवर सिंह इस कविता की मूर्तिमत्ता के सम्बन्ध में लिखते हैं : "चूल्हा, चक्की, छिपकलियाँ, चूहों और कौए के अलावा दाने और धुएँ जैसी रोज की जानी-पहचानी मामूली चीजों के द्वारा दो विरोधी स्थितियों को जिस प्रकार मूर्त किया गया है वह साधारण कवि-कौशल नहीं। यहाँ चीजों का सिर्फ वर्णन नहीं, क्रिया-व्यापार दिखाया गया है और क्रिया-व्यापार के चयन में भी एक दृष्टि है जिसे आचार्य शुक्ल ने व्यापार-शोधन नाम दिया है। 'चूल्हा-रोया' को यदि एक मुहावरा भी मान लें, तो 'चूल्हा और उदास चक्की' के पास 'कानी कुतियाँ का सोना' एक मर्मस्पर्शी क्रिया-व्यापार है, जो मन में भाव-चित्र जगाता है। अनाज के लिए सिर्फ दाने का प्रयोग है और अन्तिम स्पर्श "कौए ने खुजलाई पाँखें'। घर भर की खुशी के हिस्सेदार भी कौन-कौन और कहाँ-कहाँ के प्राणी हैं—क्या यह सब सूक्ष्म पर्यवेक्षण और यथार्थ चित्रण मात्र है, वास्तविकता के मर्म की यह आन्तरिक पहचान कोई नैतिक दृष्टि नहीं ? एक मूर्त्तिमत्ता यह भी है, किन्तु तथाकथित बिम्बवादी मूर्तिमत्ता से कितनी अलग है।"[२]

नागार्जुन ने विभिन्न प्रकार के बिम्ब अपने काव्य में प्रस्तुत किये हैं। ऐन्द्रिक बिम्बों और स्मृत बिम्बों का सफल चित्रण उन्होंने किया है। कहीं-कहीं अभिधात्मक उक्तियों में कवि के बिम्ब-निर्माण-कौशल का ह्रास भी दिखाई देता है तो कहीं उसने शास्त्रीय शैली का बिम्ब भी अपनी संस्कृतनिष्ठ भाषा से युक्त कविताओं में प्रस्तुत किया है।

१. सतरंगे पंखोंवाली पृ० ३०।
२. डॉ० नामवर सिंह : कविता के नये प्रतिमान, पृ० १४०-४१।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नागार्जुन-काव्य में प्रतीक :

नागार्जुन एक प्रमुख व्यंग्यकार हैं। सफल व्यंग्य के लिए प्रतीक बड़े आवश्यक और उपयोगी होते हैं, वस्तुतः प्रतीक की आड़ में ही कवि अपने इच्छित लक्ष्य पर बेखटके वार कर सकता है। नागार्जुन ने काँग्रेसियों पर व्यंग्य करते समय प्रतीक का उपयोग किया है। 'भुस का पुतला' कविता में काँग्रेसी नेताओं को 'भुस का पुतला' कहा गया है। देश की समस्याओं को सुलझाने में उनकी असमर्थता कवि को खेत में खड़े मौन पुतले के समान ही दिखाई देती है। इस प्रतीक का उद्घाटन निम्न पंक्तियों में होता है :

सरग था ऊपर नीचे था पाताल
अपच के मारे बुरा था हाल
दिल दिमाग भुस का, खद्दर की थी खाल।[1]

नागार्जुन की इधर की कविताओं में भी अत्योक्ति पद्धति पर प्रतीक-योजना का सफल प्रयोग किया गया है। 'एक बंदरिया' को उपस्थित कर उसके माध्यम से किसी और ओर संकेत करना कवि का अभिप्रेत है :

छतरी वाला जाल छोड़कर
अरे, हवाई डाल छोड़कर
एक बन्दरिया कूदी धम से
बोली तुमसे बोली हमसे
बचपन में ही बापूजी का प्यार मिला था
सात समन्दर पार पिता के धनी दोस्त थे
देखो, मुझको यही नौलखा हार मिला था
पिता मरे तो हमदर्दी का तार मिला था
आज बनी मैं किष्किन्धा की रानी
सारे बन्दर सारे भालू भरा करें अब पानी
मुझे नहीं कुछ और चाहिए, तरुणों से मनुहार
जंगल में मंगल रचने का मुझ पर दारमदार
जी, चन्दन का चर्खा लाओ कातूँगी मैं सूत
बोलो तो किस-किस के सिर से मैं उतार दूँ भूत।[2]

स्पष्ट है कि बन्दरिया के द्वारा, गाँधीजी की लाड़ली, पिता की मृत्यु पर देश-विदेश से शोक-संदेशों को प्राप्त करनेवाली, अपने प्रतिद्वन्द्वियों से पानी

१. युगधारा (भुस का पुतला) पृ० १७०।
२. पाण्डुलिपि से।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भरवा लेनेवाली जिस महिला नेत्री की ओर कवि संकेत करता है वह अपरिचित नहीं। कवि का यह प्रतीक बेजोड़ तथा व्यंग्यीय तिक्तता से भरा हुआ है।

'रानी मक्खी' भी इसी प्रकार की प्रतीक शैली में लिखी कविता है। देश की राजनीति को कवि ने मधुमक्खी का छत्ता माना है और उसमें ऐश-आराम फरमाती हुई रानी मक्खी को देखकर कहा है :

इधर झींगुरों की जमात है
उधर सजी भौंरों की महफिल
गीध पा गए दुआ तुम्हारी
धड़क रहा है अपना तो दिल
तुम्हें मुबारक शाही नखरे
तुम्हें मुबारक छत्ते की गद्दी नौलक्खी।[1]

सन् १९६९ में राष्ट्रपति चुनाव के समय लिखी कविता 'आओ आओ' में भी मध्य में प्रतीक उपस्थित किये गये हैं :

मानव लौटा वहाँ चाँद का जिस्म खुरच कर
यहाँ छछून्दर बना बिलौटा सगी बहिन की नाक कुतर कर
पाँचों खूनी पाँचों हाथी जाने किधर छिपे जंगल में
उनका पट्ठा काँप रहा थर-थर दंगल में।[2]

'अच्छा हुआ कि जनता को मिल गयी तुम्हारी थाह' कविता भी कवि ने नेपाल की आन्तरिक राजनीति पर प्रतीक रूप में लिखी है।[3] युगधारा की 'कवि' कविता को भी इसी श्रेणी में रखना उचित होगा।[4] 'बूढ़ा शेर',[5] 'देखा सबने चिड़ियाखाना'[6] भी इसी कोटि की कविताएँ हैं।

अभिव्यंजना : कवि दृश्य जगत के बिम्बों, घटनाओं, भावों, रूपों को ग्रहण कर अपनी भावना के अनुरूप कविता में अभिव्यंजित करता है। कोई भी प्रतिच्छवि कवि के मन में अभिव्यंजित होकर ही काव्यरूप लेती है। प्रत्येक कवि कविता में बहिर्जगत को अपने मन के अनुकूल प्रकट करता है। यह प्रकट

१. पाण्डुलिपि से।
२. —वही—।
३. जनशक्ति, १ जनवरी, १९६१, पटना।
४. युगधारा, (कवि) पृ० ९०-९१)।
५. जनयुग, १० सितम्बर, १९६७।
६. —वही—, १५ जनवरी, १९६७।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करना ही व्यंजना है। इस लिए कविता में जब सपाटबयानी आती है तो कविता का आन्तरिक सौन्दर्य नहीं रहता है।

कविता में कवि अपनी विशिष्ट दृष्टि, अवधारणा आदि के कारण यथार्थ को विरूपित कर जब प्रकट करता है तब काव्य में अभिव्यंजना की सृष्टि होती है। इसी कारण अभिव्यंजनावादी कविता में यथार्थ विशिष्ट रूप में आता है जिसपर कवि की वैयक्तिक दृष्टि की छाप रहती है। ऐसी कविताओं में भावों की व्यंजना पर्याप्त होती है और अर्थ-वैविध्य की छटा से काव्य प्रस्फुटित होता रहता है।

अभिव्यंजनावाद वस्तु को यथावत लेने के पक्ष में नहीं है। वह वस्तु को अपनी दृष्टि के अनुसार काव्य में अभिव्यक्त करने का कायल है, क्योंकि इससे कविता में भाव-सौष्ठव और कलात्मक सौन्दर्य आता है।

(स) नागार्जुन-काव्य में अभिव्यंजना :

नागार्जुन ने अपनी अभिव्यक्ति को सशक्त बनाने के लिए काव्य में कई नवीन प्रयोग किये हैं। वस्तुतः वे सीधे-सादे और खरी-खोटी बात सुनाने वाले, प्रगतिशील विचारधारा के एक सम्पन्न कवि हैं। और इसका प्रभाव उनकी अभिव्यक्ति में सहज ही देखा जा सकता है। इसीलिए कहीं-कहीं उनकी रचना में अभिधात्मकता आ गयी है। यह सच है कि इन अभिधात्मक उक्तियों में कहीं साहित्यिक सौन्दर्य का अभाव भी देखा जा सकता है; जैसे :

ठीक ही तो फर्माते हैं आप
मार्केट डल है जनरल बुक्स का
चारों ओर स्लीपिंग मगर दो साल हो गए
बेटा जकड़ा है बोन टी० बी० की गिरफ्त में
पचास ठो रुपइया और दीजियेगा ?

किन्तु प्रमुख व्यंग्यकार की दृष्टि से उन्होंने अभिनव प्रयोग भी किये हैं जो उनकी अभिव्यंजा-शक्ति के परिचायक हैं :

ओं शब्द ही ब्रह्म है
ओं शब्द और शब्द और शब्द और शब्द
ओं प्रणव ओं नाद ओं मुद्राएं
ओं वक्तव्य ओं उद्धार ओं घोषणाएँ
ओं दलों में एक दल अपना दल ओम्
ओं गद्दी पर आजन्म बज्रासन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओं ट्रिब्यूनल, ओं आश्वासन
ओं गुटनिरपेक्ष सत्ता-सापेक्ष जोड़-तोड़
ओं छल छन्द ओं मिथ्या, ओं होड़म-होड़
ओं बकवास, ओं उद्घाटन
ओं मारण—मोहन उच्चाटन।[1]

इसमें केवल कुछ शब्दों के द्वारा देश में व्याप्त राजनीतिक भ्रष्टाचार की ओर संकेत किया गया है। यह बड़ी इंगितगर्भित कविता है।

इस प्रकार अभिव्यंजना की दृष्टि से नागार्जुन कविता में नयी-नयी टेकनीक अपनाना चाहते हैं। व्यंग्य को उन्होंने एक उत्कृष्ट रूप प्रदान किया है। कवियों की घिसी-पिटी अभिव्यंजना-विधि की वे आलोचना करते हैं।

अपने इन्हीं विचारों के कारण नागार्जुन का यह प्रयास रहा है कि नूतन अभिव्यंजना शैलियों को लेकर वे उपस्थित हों। चले आते पुराने रूपों का वे बेझिझक हो बहिष्कार कर देते हैं। उन्होंने अपनी कविता में इस प्रकार के अनेक प्रयोग किये हैं। पर वे प्रयोगवादी नहीं हैं। प्रयोगवाद एक अलग विचार-धारा है जिसमें कवि अस्पष्टता एवं कुंठित मनोवृत्ति से ग्रस्त दिखाई देते हैं। आचार्य वाजपेयी के अनुसार, "प्रयोगवादी कवि शास्त्रीय ज्ञान के अभाव, कुंठा, निराशा और घुटन से ग्रस्त होकर सम्मुख आते हैं।" जबकि नागार्जुन आस्था, विश्वास, स्पष्टता, पांडित्य और कवि-कर्म के प्रति ईमानदारी से युक्त होकर सामने आये हैं।

नागार्जुन के इन नवीन प्रयोगों को उनकी भाषा-शैली में भी देखा जा सकता है। "कवि की अलंकार-योजना, अभिप्रेत भावना को वहन करने में पूर्ण सक्षम है और इसमें प्रभविष्णुता उत्पन्न करने की भी यथेष्ट शक्ति है। उपमाएँ दैनिक जीवन से ली गयी हैं।"[2] एक उदाहरण पर्याप्त होगा :

घिसे हुए पीतल-सी पांडुर
पूस मास की धूप सुहावन

इसमें नित्य की देखी-भाली वस्तुओं से उपमा देने के कारण अपनत्व की भावना की व्यंजना अधिक है। नागार्जुन कविता में शब्दों पर अधिक ध्यान देना चाहते हैं। उनका विचार है कि काव्य-कला आज भावों के दलदल में दबी हुई है। इसी कारण उन्होंने शब्दालंकारों का अधिक प्रयोग किया है।

१. पाण्डुलिपि से।
२. डा० हरिनारायण मिश्र : नागार्जुन की कविता ('अवन्तिका' पत्रिका, सितम्बर-अक्टूबर, १९५६)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'माँजो और माँजो' कविता में उद्‌बोधन देते हुए वे लिखते हैं :

एक-एक शब्द है दुधारू गाय
उसका दुरुपयोग करना न हाय
हाय रे दैव ! हाय भगवान
शब्द को दिया क्यों अर्थ का दान
ध्वनि ही ध्वनि देते देते मात्र लय-तान
भावों की दलदल में आकण्ठ निमग्न है काव्य-कला
त्राहि त्राहि कर रही उद्धार करो उसका ।[१]

इस प्रकार कवि शब्दों के प्रयोग की ओर से विशेष सतर्क है । उसका शब्द-चयन बड़ा अनूठा है । 'जयति नखरंजनी 'कविता के अन्त में आधुनिकाओं के लिए उसने लिखा है :

जयति नखरंजनी !
जयति दृग-अंजनी !
भक्त-भ्रम-भंजनी !
नवयुग निरंजनी ![२]

इस पंक्ति में 'भक्त-भ्रम-भंजनी' तीनों शब्द बड़े इंगित-गर्भित हैं, जिनसे बड़ी मीठी चुटकी ली गयी है ।

कुछ आलोचक नागार्जुन पर कलात्मक सौन्दर्य के पूर्ण निखार में असावधानी का आरोप लगाते हैं । श्री उमेश मिश्र को कवि नागार्जुन के कलापक्ष से शिकायत है :

"नागार्जुन की कविताओं में यद्यपि कलात्मक सौन्दर्य का पूर्ण रूप से निखार नहीं हो पाया है, फिर भी वस्तु पक्ष की दृष्टि से उनका काव्य विशेष समृद्ध है । जिन कविताओं में कला और वस्तु का पूर्ण समन्वय है, उनकी उत्कृष्टता में संदेह नहीं किया जा सकता ।"[३]

मुझे तो यह कवि की असावधानी नहीं, प्रत्युत अभिजात तथा सांस्कारिक अभिव्यंजना शक्ति के प्रति जनकवि की जानबूझ कर बढ़ती गयी उपेक्षा लगती है ।

गौतम बुद्ध ने अपने शिष्यों से कहा था : "जनता के बीच जनता की समझ में आनेवाली वचनावली का सहारा लो, सीदी-सादी उपमाओं, मुहावरों का सहारा लो ।" प्राकृत और अपभ्रंश के महाकवि पुष्पदन्त और स्वयंभू, सिद्ध

१. युगधारा (माँजो और माँजो), पृ० ११५ ।
२. सतरंगे पंखोंवाली, पृ० ३५ ।
३. प्रगतिवादी काव्य : उमेश मिश्र, पृ० १६७ ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कवि सरहप्पा, डोम्बी पा, आदि अनेकानेक भाषाओं के जानकार कवि थे। सुदूर अतीत के उन साहित्य-साधकों पर आज भला कौन विवेचक शिल्प-विधान-सम्बन्धी असावधानियों का आरोप लगायेगा ?

नागार्जुन कबीर को अपना भावात्मक उस्ताद मानते हैं। उस कबीर को जिसने आभिजात्य वाक्य-पद्धति की रत्ती भर परवाह न की और जो जनकवि ही बना रहा।

मैंने नागार्जुन की संस्कृत और प्रांजल अभिव्यक्ति वाली पचासों कविताएँ देखी हैं, जो या तो किसी एक पुस्तक में अब तक संकलित नहीं हो पायीं या संकलित होने पर भी व्यावहारिक असुविधाओं के चलते प्रचार-प्रसार न पा सकीं। अशिक्षित, अल्पशिक्षित, किसानों-मजदूरों की समझ में आने लायक 'भाखा' में लिखी उनकी पचासों कविताएँ अभिव्यंजना की दृष्टि से यदि अपभ्रंश कोटि में रख दी जायँ तो नागार्जुन को तनिक भी आपत्ति नहीं होगी। दूसरी ओर परिनिष्ठित शैली में रची गयी अपनी संस्कृत, हिन्दी और मैथिली की ढेर सारी रचनाओं के लिए हम कवि के भीतर सहज ही एक प्रकार का सात्त्विक अभिमान पाते हैं।

वर्षों तक नागार्जुन की जनवादी कविताएँ मात्र पार्टी पत्रिकाओं में छपती रही हैं, कुछेक आलोचकों ने उन्हीं रचनाओं को मूल्यांकन का मूल उपादान मान लिया और बड़ी आसानी से यह बात उछाल दी गयी कि "प्रस्तुत कवि कला और शिल्प की दृष्टि से बड़ा ही असावधान रहा है।"

स्थानाभाव के कारण मेरे लिए यहाँ यह सम्भव न होगा कि नागार्जुन की परिनिष्ठित अभिव्यंजना वाली अनेकों रचनाओं की मात्र शीर्षक-सूची भी दे दूँ। प्रस्तुत शोध ग्रन्थ की परिसीमा में यह सब नहीं रखा जा सकता।

(द) शैली और भाषा :

कविता में शैली का जितना महत्त्व भाव को चमत्कारी और प्रेषणीय बनाने के लिए होता है उतना ही कवि की पहचान के लिए भी।

शैली रचनाकार का वैयक्तिक कौशल है जो उसकी निजता का परिचायक होती है। हिन्दी कविताओं में नागार्जुन की शैली बिल्कुल अपनी है। नागार्जुन के काव्य में उनका सारा व्यक्तित्व झाँकता हुआ दिखाई देता है। मजदूर-किसानों के प्रति उनकी सहानुभूति, पूँजीपतियों, जमींदारों या अवसरवादी नेताओं के प्रति उनके द्वारा व्यक्त फटकार, और जीवन के प्रति आस्था के स्वर नागार्जुन के व्यक्तित्व की विशेषता है, जो उनकी शैली के प्रमुख

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आकर्षण वन काव्य में अपना सौरभ विखेर रहे हैं। शैली की दृष्टि से नागार्जुन की रचनाओं में तीन प्रकार की शैली दृष्टिगोचर होती है—(क) वर्णनात्मक, (ख) उद्‌बोधनात्मक, (ग) व्यंग्यात्मक। तीनों प्रकार की शैलियों का कवि ने प्रयोग किया है, लेकिन व्यंग्यात्मक शैली में कवि पूर्ण रूप से सफल हुआ है।

नागार्जुन काव्य-लेखन में व्यंग्यात्मक शैली पूरे हिन्दी साहित्य में अकेली है। उनके कहने का लहजा, ढंग, वाक्यों का ऊवड़-खावड़पन आदि उनका अपना है। कवि की शैली में एक प्रकार का चमत्कार मिलता है जो पाठक को अपनी ओर तुरत खींच लेता है।

वर्णनात्मक शैली में कवि की लम्वी कविताएँ सम्मिलित की जानी चाहिए जिनमें किसी स्थिति पर विस्तारपूर्वक कहने का कवि ने प्रयास किया है। नागार्जुन की 'चन्दना', 'विजयी के वंशधर', 'पाषाणी' 'जयति जयति सर्व मंगला', 'मित्र को पत्र' आदि अनेक कविताएँ इसी कोटि में रखी जा सकती हैं।

उद्‌वोधनात्मक शैली वहाँ देखी जा सकती है, जहाँ कवि का चिन्तन पक्ष उभरा है और फलस्वरूप उसने कुछ उद्‌वोधन देने का प्रयास किया है। इस शैली के दर्शन हमें वर्णनात्मक कविताओं में भी कहीं-कहीं दिखाई देते हैं। किन्तु कवि की यह प्रवृत्ति नीरस या मात्र उपदेशात्मक वनकर ही नहीं रह गयी है। अभिव्यक्ति का ढंग ऐसा है कि पाठक उससे सहमत होता चलता है। कहीं प्रकृति-चित्रण सम्वन्धी कविताओं में भी उद्‌वोधन का यह रूप देखा जा सकता है। 'वसन्त की अगवानी' कविता के अन्त में माँ सरस्वती का स्मरण होने पर कवि ने लिखा है :

> जग वसन्त की अगवानी में वाहर निकला
> माँ सरस्वती ठौर-ठौर पर पड़ी दिखाई
> प्रज्ञा की उस देवी का अभिवादन करने
> आस्तिक-नास्तिक सभी झुक गए, माँ मुस्काई
> बोली—बेटे, लक्ष्मी का अपमान न करना
> जैसी मैं हूँ, वह भी वैसी माँ है तेरी
> धूर्तों ने झगड़े की बातें फैलाई हैं
> हम दोनों ही मिल-जुल कर संसार चलातीं
> बुद्धि और वैभव दोनों यदि साथ रहेंगे
> जन-जीवन का यान तभी आगे निकलेगा।[1]

कहीं कवि ने युवकों का अभिनन्दन करते हुए स्पष्ट कहा है :

> लो मशाल अब घर-घर को आलोकित कर दो।

१. सतरंगे पंखों वाली—(वसन्त की अगवानी,) पृ० ३२।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'स्वदेशी शासक', 'उद्बोधन' आदि कविताओं में भी हमें कवि की इस शैली के दर्शन होते हैं।

व्यंग्यात्मक शैली नागार्जुन-काव्य का प्रमुख आकर्षण है। उनकी अधिकांश कविताएँ इस शैली से ओतप्रोत हैं। कहीं इसका प्रखर रूप उनके काव्य में दिखाई देता है। स्वदेशी नेताओं के भ्रष्टाचार, पूँजीपतियों द्वारा मजदूरों का शोषण, अस्वस्थ रूढ़ परम्पराओं आदि सब पर तीखे व्यंग्य उन्होंने किये हैं। इस व्यंग्य ने "रामराज्य के सपने टूटने पर तेवर बदलती हुई हिन्दुस्तानी जनता की रोषभरी फुफकार का रूप ग्रहण कर लिया है।"[१] नागार्जुन के व्यंग्य में कहीं मीठी चिकोटी और कहीं तिक्तता से युक्त आक्रोश का रूप हमें दिखाई देता है। वी० नारायणन् कुट्टी के अनुसार, "स्वस्थ और मार्मिक व्यंग्य करने के लिए सच्चा अनुभव, तीव्र अनुभूति और मानसिक स्वस्थता एवं तटस्थता अनिवार्य रूप से अपेक्षित है, जिसके अभाव में व्यंग्य करने का प्रयास मात्र आक्रोश रह जाता है।"[२]

किन्तु नागार्जुन के व्यंग्य में इन सब गुणों के साथ आक्रोश भी देखा जा सकता है, जो कवि ने अशिव शक्तियों पर व्यंग्य करते हुए व्यक्त किया है। तेजी और गर्मी ने नागार्जुन के काव्य में आक्रोश का रूप ले लिया है। प्रायः शोषितों की असहनीय पीड़ाओं को देख, उसकी तीव्र प्रतिक्रिया उत्तरदायी परिस्थितियों के विरुद्ध व्यंग्य-मिश्रित आक्रोश का रूप ले नागार्जुन-काव्य में उभरी है। नेताओं को जनहित की स्पष्ट अवहेलना करता एवं मात्र अपनी स्वार्थ-सिद्धि में संलग्न होता देख कवि ने इसे 'रामराज्य में रावण का नंगा नाच' निरूपित किया है, वह आक्रोश से भर पुकार उठा है :

रामराज्य में अबकी रावण नंगा होकर नाचा है
सूरत शकल वही है, बिल्कुल बदला केवल ढाँचा है
नेताओं की नीयत बदली, फिर तो अपने ही हाथों,
भारत-माता के गालों पर कसकर पड़ा तमाचा है।[3]

व्यंग्यात्मक शैली के विविध रूप हमें नागार्जुन में दिखाई देते हैं। किसी-किसी कविता में व्यंग्य, आक्षेप, हास्य, आक्रोश और प्रहार एकसाथ दिखाई पड़ते हैं। व्यंग्य-रचना के लिए नागार्जुन ने विविध शैलियाँ अपनायी हैं। "चनाजोर गरम' के लटके की शैली से लेकर मुक्त वृत्त के आधुनिकतम रूप को उन्होंने व्यंग्य-रचना का माध्यम बनाया है। इसमें नाटकीय शैली बेहद सराही

१. डॉ० रामविलास शर्मा : युगधारा (कवर)।
२. वी० नारायणन् कुट्टी : हिन्दी की नई कविता।
३. हंस ('रामराज्य' शीर्षक कविता), जून १९४९, पृ० ४९३, पद क्र० ७।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जा चुकी है। सौदा, प्रेत का बयान, मास्टर, अमलेन्दु एम० एल० ए० आदि इसी शैली की रचनाएँ हैं, जिन्होंने व्यंग्य रचना के क्षेत्र में नवीन प्रतिमान प्रस्तुत किये हैं।"[१]

नागार्जुन के व्यंग्य की नाटकीय शैली के कारण ही कुछ रचनाएँ अपना अलग आकर्षण रखती हैं; जैसे 'फिजो दलाई' और 'जयप्रकाश' के सम्बन्ध में लिखी व्यंग्य कविताएँ।[२]

इसी प्रकार 'बापू के भी ताऊ निकले तीनों बन्दर बापू के' कविता में भी 'चनाजोर गरम' वाले लटके की शैली अपनायी गयी है। 'चनाजोर गरम' से 'मंत्र' कविता तक व्यंग्य की विभिन्न शैलियाँ नागार्जुन-काव्य में प्रयुक्त हुई हैं जिनमें कवि ने विनोद-वक्रता से लेकर पैनेपन तक का निर्वाह किया है।

निःसंदेह नागार्जुन की शैली प्रवाहपूर्ण है। सर्वत्र ही उसमें स्थिति के अनुसार लचक दिखाई देती है। देशप्रेम या राष्ट्ररक्षा की भावना से युक्त कविताओं में ओज देखा जा सकता है। बुराइयों का खण्डन करते समय उसमें पैनापन आ गया है। इसी प्रकार शृंगार और प्रकृति-चित्रण से युक्त कोमल भावों को व्यक्त करते समय नागार्जुन की शैली शान्त, गम्भीर और तत्सम्बन्धी भावों को वहन करने में योग्य सिद्ध हुई है।

भाषा : नागार्जुन-काव्य में तत्सम-तद्भव शब्दों की संगति से एक नयी काव्य-भाषा के दर्शन होते हैं। उनकी कविता में जातीय-विजातीय, संगत-असंगत शब्दों की ऐसी मैत्री दिखाई देती है जैसी किसी कवि में नहीं। इसी प्रयोग के कारण नागार्जुन में हमें कविता की भाषा का मौलिक स्वरूप दिखलाई पड़ता है।

नागार्जुन प्रणीत काव्य में संस्कृतनिष्ठ शब्दों से युक्त भाषा के दर्शन भी होते हैं :

> **तुम मानवता के दूषित-गलित अवयवों पर**
> **प्रलयांत वह्नि बन बरस रहे**
> **हो रहा तुम्हारे लोहित-नील-स्फुलिंगों से**
> **त्रिभुवन का तम-तोम-हरण**
> **हे कोटि शीर्ष, हे कोटि बाहु, हे कोटि चरण।**[3]

'भारत-माता', 'शरद पूर्णिमा', 'काली सप्तमी का चाँद' आदि कविताओं में भी संस्कृतनिष्ठ भाषा का यही गम्भीर रूप दिखाई देता है।

१. हरिनारायण मिश्र : समकालीन हिन्दी कविता में व्यंग्य विद्रूप, ग्रन्थ : 'नई कविता' पृ० १०२—सम्पादक, वासुदेवनन्दन प्रसाद सिंह।

२. जनशक्ति, ३१ जुलाई, १९६०।

३. युगधारा (जनवन्दना कविता), पृ० १०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'रामकथा' के संक्षिप्त अंश में, जो 'सरस्वती' के हीरक जयन्ति अंक, १९६५ में प्रकाशित हुआ था, इसी प्रकार की भाषा का रूप देखा जा सकता है।

(अ) ग्रामीण लोकभाषा के शब्द :

नागार्जुन ने अपनी कविता में ग्रामीण बोल-चाल के शब्दों को भी स्थान दिया है। कहीं-कहीं मैथिली के कुछ शब्दों को उन्होंने अपने मूल रूप में हिन्दी कविताओं में स्थान दिया है; जैसे—'छुच्छी'[1] 'पचास ठो रुपया'। लोकभाषा के अन्य शब्द—'कलमुँही, बंसफोड़, जिमदारी, मुच्छड़, पछिया, छूंछे बोम्मारा, इत्ता-इत्ता सा, बतकही, ताल पोखर, गाछी, सुरती, नुक्कड़, छिनाल, चुल्लू, तलइया' आदि। इसी प्रकार के अनेक शब्दों को उन्होंने काव्य में स्थान दिया है। रंग धुल रहा स्यारों का, तीसों दिन दिवाली है, हमलावर मुँह की खाएँगे—ग्रामीण रूप के प्रयोग से भाषा आकर्षणत्व प्राप्त कर गयी है।

चूँकि नागार्जुन जनवादी कवि हैं, इसलिए उनकी कविताओं में सर्वत्र लोकभाषिक आग्रह दिखाई पड़ता है। जनता की बात, जनता के लिए, जनता की भाषा में ही सम्भव है। नागार्जुन की कुछ कविताओं का वाक्य-विन्यास संस्कृत-शब्द-गर्भित, लोकभाषिक, उर्दू-अँग्रेजी मिश्रित होता है। नागार्जुन भाव के अनुसार भाषा गढ़ते हैं। लोकभाषा के शब्दों के प्रति नागार्जुन का आग्रह स्पष्ट है।

इस प्रकार नागार्जुन ने बेझिझक हो मैथिली शब्दों, मुहावरों, उपमाओं को अपने काव्य में स्थान दिया है। मैथिली शब्दों के प्रयोग की स्वाभाविकता को न समझ सकने के कारण कुछ लोग नागार्जुन की भाषा पर ऊबड़-खाबड़ होने का आरोप लगाते हैं, पर इसी विशेषता के कारण उनकी भाषा में एक अछूती आत्मीयता के दर्शन होते हैं। मिथिला की माटी की सोंधी-सोंधी महक उनके काव्य से उभरती-सी लगती है। भाषा का यह ठेठपन ही एक आकर्षण है, अपने को समष्टि में मिला देने की उत्सुकता है और इसी गुण के कारण नागार्जुन जनता और धरती के गायक के रूप में सामने आते हैं।

ग्रामीण शब्दों के अतिरिक्त नागार्जुन-काव्य में बंगला भाषा के शब्द भी मिलते हैं—कवि पर बंगला का यह प्रभाव मैथिली से बंगला की निकटता के कारण है।

१. युगधारा ('जनवन्दना' कविता), पृ० १०५।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बंगला शब्द— द्याकचो खोकोन, ओइ जो गाँधी महत्ता, नक्शल वड़ीर लाल भागुन, छड़िए पड़क दिके-दिके।

अँग्रेजी शब्द—रेस कोर्स, प्लीज एसक्यूज मी, ट्राम-ड्यूटी, गियर, प्लान, केरियर, प्रायवेट, सिक्योर आदि कई अँग्रेजी शब्दों का भी नागार्जुन ने प्रयोग किया है।

उर्दू शब्द—मुताविक, अमानत, निगाहों, बेरुखी, नदारद, लिवास, सोहवत आदि। रामवृक्ष वेनीपुरी के लिए श्रद्धांजलि स्वरूप लिखी गयी कविता में उर्दू शब्दों के कारण भाषा में एक भव्यता आ गयी है :

> **शख्श की बेबसी को सलाम, उकताहट को सलाम**
> **अब्र की तपिश को सलाम, जमीं की तरावट को सलाम**
> **हमसफीर को सलाम, हमसफर को सलाम**
> **सूबा-ए-बिहार के जौहर को सलाम।**[1]

नागार्जुन ने तत्सम और ग्रामीण बोलचाल के शब्दों के अलावा अँग्रेजी, उर्दू और बँगला के शब्दों का प्रयोग अपने काव्य में किया है और ये शब्द उनके काव्य-प्रवाह में घुल-मिल गये हैं। इस प्रकार नागार्जुन ने जहाँ अपनी भाषिक प्रयोग-क्षमता सिद्ध की है वहीं हिन्दी भाषा को समृद्ध बनाने का प्रयास भी किया है। उन्होंने हिन्दी-भाषा की उस विशालहृदयता, जिसके अन्तर्गत कई भाषाओं के शब्दों को पचाकर अपने में मिला लेनेवाला गुण है, का परिचय दिया है।

कवि की भाषा हमेशा भावानुकूल रही है। इस दृष्टि से कवि की 'बादल को घिरते देखा है', 'रवि ठाकुर', 'मनुष्य हूँ', 'जयति-जयति नखरंजनी', 'भिक्षुणी', 'जन-वन्दना', 'भारतवर्ष', 'कालिदास', 'ओ जन-मन के सजग चितेरे', 'फिर वही भस्मांकुर अठारह साल बाद' आदि कविताएँ उल्लेखनीय हैं। देशरक्षा की भावना को व्यक्त करने सम्बन्धी कविताओं में एक ललकार है, प्रकृति-चित्रण तथा प्रणय-सम्बन्धी कविताओं की भाषा कोमल शब्दों से युक्त है। 'सिन्दूर तिलकित भाल' इसी प्रकार की कविता है। साहित्यिक श्रेष्ठता की दृष्टि से ये कविताएँ महत्त्वपूर्ण हैं। संस्कृतनिष्ठ भाषा से युक्त ये कविताएँ निहित भावों को लेकर उपस्थित हुई हैं। राजकमल चौधरी के लिए नागार्जुन ने लिखा है :

> **तुम वही पंक जिसकी फसलें होतीं शतदल**
> **युग की भ्रमरावलि करती गुन-गुन अविरल**

१. पाण्डुलिपि से।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

युगनद्ध मिथुन की भावभूमि तुम रस-पिच्छल
तुम स्वेद सुरभि हारा जिससे मृगमद परिमल ।[१]

इस कविता में नागार्जुन की भाषा का प्रांजल रूप राजकमल के प्रति संचित गहरी आत्मीयता, सरसता और मार्मिकता के साथ उपस्थित हुआ है ।

किन्तु कुछ स्थल ऐसे भी हैं जिनमें कवि का भाषिक प्रमाद हमें दिखाई देता है । राम-लक्ष्मण और विश्वामित्र को वन-मार्ग से जाते देख नागार्जुन लिखते हैं :

धरकर पगडंडी आगे की ओर
बढ़े जा रहे थे तीनों ज्यों चोर ।[२]

राम, लक्ष्मण और विश्वामित्र जैसे महापुरुषों को चोर कहना अनुपयुक्त एवं हास्यास्पद है । यहाँ उपमान की योजना उपमेय की प्रकृति के अनुकूल नहीं है—'ओर' के तुक के लिए ही 'चोर' शब्द आया है । नागार्जुन के कवि-कर्म का यह गौण-दोष है जो उनकी कविताओं में यत्किंचित् मिलता है ।

ऐसे स्थल परिमाण में इतने अल्प हैं कि उनसे कवि के शिल्प-सौष्ठव को कोई आघात नहीं पहुँचता ।

व्यंग्यपूर्ण कविताओं में कवि की भाषा सम्बद्ध व्यक्ति पर सीधा निशाना मारने में समर्थ दिखाई देती है और व्यंग्य की विभिन्न शैलियों के अनुरूप ही कवि की भाषा के दर्शन होते हैं । व्यंग्य कविताओं में भाषा चलती हुई, चुस्त और चुटीली प्रयुक्त हुई है । उदाहरणार्थ :

बापू के भी ताऊ निकले तीनों बन्दर बापू के
सरल सूत्र उलझाऊ निकले तीनों बन्दर बापू के[३]
या, जमती अशोक के सिंहों पर बेशर्म उल्लुओं की जमात ।

कवि की भाषा सम्बन्धी इन्हीं विशेषताओं को देख डॉ० शिवकुमार मिश्र का मत है : "कवि की भाषा भावों के अनुरूप कहीं सरल, साधारण बोलचाल के तथा जनपदीय शब्दों से युक्त है, तो कहीं संस्कृत की समास शैली में ढली तत्सम शब्दों से पूर्ण अलंकृत तथा उदात्त है ।[४]

नागार्जुन की भाषा पर कवि के ग्रामीण लोकजीवन से घनिष्ठतम सम्पर्क होने, साथ ही मिथिला के संस्कृतज्ञ परिवार में जन्म लेने और संस्कृत का अध्ययन करने तथा जीवन के विस्तृत क्षेत्र में उतर आने के कारण ग्रामीण,

१. पाण्डुलिपि से ।
२. सरस्वती (हीरक जयन्ती अंक), १९६५ ।
३. पाण्डुलिपि से ।
४. डॉ० शिवकुमार मिश्र : नया हिन्दी काव्य, पृ० १८९ ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तत्सम, अँग्रेजी आदि शब्दों का प्रभाव पड़ा है। इसी कारण वे अपने कृतित्व को इन भाषाओं के शब्दों तथा ग्रामीण लोक-भाषा के ठेठ शब्दों के प्रयोग से अछूता नहीं रख सके हैं। लोक-भाषा के शब्दों का प्रयोग कवि की जनवादी कविताओं में विशेष देखा जा सकता है।

नागार्जुन के काव्य में अपनी भाषा-सम्बन्धी इन्हीं विशेषताओं के कारण विभिन्न भावों को सहज ही व्यक्त कर देने की क्षमता दिखाई देती है।

छान्दसिक निपुणता, बिम्ब-निर्माण की अपूर्वता, रूपक एवं प्रतीकों को दैनिक जीवन से चयन करने की सजगता तथा शैली और भाषा में निजत्व की परिचयता के कारण नागार्जुन का शिल्प-विधान अपने-आप में अनूठा है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चतुर्थ अध्याय

समशील कवियों के बीच नागार्जुन : महत्त्व और मूल्यांकन

हिन्दी के प्रगतिवादी कवियों में नागार्जुन का महत्त्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने इस धारा के वेग और चमक में पर्याप्त वृद्धि की है। यहाँ हम उन्हें उनके समशील कवियों—रामविलास शर्मा, केदारनाथ अग्रवाल, शिवमंगल सिंह 'सुमन', राँगेय राघव और त्रिलोचन शास्त्री—के साथ रखकर अध्ययन करेंगे।

सामन्तवाद, साम्राज्यवाद, पूँजीवाद और साम्प्रदायिकता के विरोध में प्रगतिवादी कवियों ने कड़ा प्रहार तथा रूस और चीन की कम्युनिस्ट सरकार के प्रति विरोध में गहरा प्रेम प्रकट किया है। इनकी कविताओं में रूस की क्रांति और चीन की जनक्रांति पर उत्साह व्यक्त किया गया है; देश में समाजवाद-स्थापना की दृढ़ आकांक्षा व्यक्त की गयी है।

देश के दलित वर्ग के समर्थन में नागार्जुन के समशील कवियों ने भी काव्य-सृजन किया है। इस वर्ग के प्रति इन कवियों की विशेष सहानुभूति रही है। सभी कवियों में आस्था और विश्वास का स्वर ध्वनित होता लगता है। शासकीय मिशनरी की अक्षमता पर प्रहार, ईश्वर और धर्म के प्रति उदासीनता का भाव, परम्परागत रूढ़ियों का भंजन, देश-प्रेम, विश्व-शांति और जीवन के प्रति आस्था की अभिव्यक्ति इनकी विशेषता रही है। पर इन प्रगतिवादी कवियों पर भारतीय संस्कृति का प्रभाव होने से उसका रूप अपने रूढ़ सैद्धान्तिक ढाँचे से भिन्न है।

इन कवियों के काव्य में हमने निम्न विशेषताएँ देखी हैं :

सामाजिक यथार्थवादी रूप :

यह प्रवृत्ति इन कवियों के काव्य में प्रमुख रूप से पायी जाती है। इसके अन्तर्गत इन कवियों ने श्रमिकों, पीड़ितों, किसानों को काव्य में स्थान देकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

युगीन वैषम्य और आस्था के ओज भरे स्वरों को मुखरित किया है, साथ ही साम्यवाद की गूँज भी इनमें सुनाई देती है।

केदारनाथ अग्रवाल के अनुसार आजादी के बाद भी गरीबों की वही दशा है। आजादी का चमकीला विहान उनकी झोपड़ियों का अँधेरा नहीं हर सका। वे कहते हैं :

किन्तु झोपड़ी वहीं खड़ी है
नहीं ईंट तक नई लगी है
बड़ी गरीबी भरी पड़ी है
वही धुआँ है, वही क्षुधा है
वही कर्ज है, वही सूद है।[1]

केदार ने देश की बहुसंख्यक जनता के जीवन को परखा है और पाया है :

अधिकांश जनता का
रद्दी की टोकरी-सा जीवन है
सत्ताहीन, अर्थहीन
बेकार चिरे-फटे टुकड़ों सा पड़ा है।[2]

अपनी इसी विचारधारा के कारण इन कवियों के काव्य में रूस और चीन का समर्थन देखा जा सकता है। श्री शिवमंगल सिंह 'सुमन' रूस की लाल सेना की प्रशंसा कर रहे हैं जो रूढ़ियों को कुचलती और लहर-सी लहराती जा रही है :

युगों की खड़ी रूढ़ियों को कुचलती
लहर की लहर से सदा ही मचलती
अँधेरी निशा में मशालों-सी जलती
चली जा रही है बढ़ी लाल सेना।[3]

'पुरवैय्या' के बहने से सुमनजी को चीन-जागरण की सूचना मिली है। सुमनजी का कवि कहीं पर साम्यवादी रंग में बिल्कुल रँग गया है :

लाल निशान लाल सैनिक
आँखों में लाल सुरूर है

१. हंस, फरवरी १९४८, अंक ५।
२. आधुनिक हिन्दी कविता में अप्रस्तुत योजना : डॉ० जगदीश नारायण त्रिपाठी, पृ० ८७ से उद्धृत।
३. नई कविता : नये कवि, पृ० १७५, विश्वम्भरनाथ मानव से उद्धृत।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दस हफ्ते दस साल बन गए
मास्को अब भी दूर है ।[१]

अपनी आरम्भिक कविताओं में इन कवियों ने रूस-चीन की प्रशंसा करते हुए भारत में भी लाल सवेरा लाने की आशा प्रकट की है। जब तैलंगाना में कम्युनिस्टों द्वारा कृषक-क्रान्ति हुई तो नागार्जुन ने भी तैलंगाना में लाल सवेरा और लाल भवानी को प्रकट होते देखा :

होशियार कुछ देर नहीं है लाल सवेरा आने में
लाल भवानी प्रकट हुई है सुना कि तैलंगाने में ।

त्रिलोचन शास्त्री भी चीनी क्रान्ति से बेहद प्रभावित दिखते हैं और चीनी क्रान्ति के जनक माओ की अभ्यर्थना में दलितों के शोषण-मुक्त होने पर उल्लास व्यक्त करते हैं :

तुम थे माओ, जीवन के सौ अंकुर फूटे
बन्धन टूटे, दलितों ने गौरव धन लूटे ।[२]

कहीं इन कवियों ने जनवादी सरकार की स्थापना की आकांक्षा व्यक्त करते हुए तत्कालीन काँग्रेसी प्रशासन की कटु आलोचना की है। खद्दरधारियों की स्वार्थ-नीति को नागार्जुन की तरह केदार ने भी चित्रित किया है। वे भी शोषणहीन समाज स्थापित करना चाहते हैं। अभी वे देख रहे हैं :

देश की छाती दरकते देखता हूँ
थान खद्दर के लपेटे स्वार्थियों को
देश-पूजा की कमाई में जुटा मैं देखता हूँ ।[३]

नागार्जुन पूँजीपतियों से इन खद्दरधारियों की दोस्ती का पर्दाफाश कर रहे हैं :

खादी ने मलमल से अपनी सांठगांठ कर डाली है,
बिड़ला टाटा डालमिया की तीसो दिन दिवाली है ।[४]

नागार्जुन और केदार में काँग्रेस शासन के विरुद्ध आक्षेपों के स्वर एक-से हैं। कहीं नागार्जुन में आक्षेप के साथ आक्रोश भी है। अपनी साम्यवादी विचार-धारा का प्रभाव नागार्जुन में भी तीव्र है। इस दृष्टि से वे डॉ० रामविलास शर्मा के निकट पहुँचते-से लगते हैं।

१. नई कविता : नये कवि से।
२. दिगन्त : त्रिलोचन शास्त्री, पृ० ६०।
३. हंस; अप्रैल १९४१, पृ० ७।
४. हंस (रामराज कविता), मई १९४९, पृ० ४९२।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नागार्जुन जन-जन की पीड़ा को देख त्रस्त हो उसे मिटाने के लिए तरुण शक्ति का आह्वान कर रहे हैं :

तन जर्जर है भूख-प्यास से
व्यक्ति-व्यक्ति दुख-दैन्य ग्रस्त है
लो मशाल अब घर-घर को आलोकित कर दो।

जर्जरित जीवन को प्रगतिशीलता की मशाल से आलोकित कर वर्गविहीन समाज की स्थापना इन कवियों का लक्ष्य रहा है।

सुमनजी भी युवक शक्ति के हाथों मशाल थमा रहे हैं और उनकी शक्ति के प्रति आश्वस्त हैं। 'आज शोषक शोषितों में हो गया जग का विभाजन' की स्थिति को दूर करने के लिए वे कहते हैं :

हाथ बढ़ाओ लो मशाल आगे बढ़ जाओ
दुनिया भर के पद-दलितों का हाथ बँटाओ।[1]

डॉ० रामविलास शर्मा भी पूँजीपतियों और शोषक जमींदारों के शोषण का चित्रण करते हैं। निम्न वर्ग से ली जानेवाली बेगारी और उनकी घुटन के स्पष्ट चित्र इनके काव्य में है। 'रूप-तरंग' में कवि ने लिखा है :

इस धरती पर जो श्रम करते हैं
उनके तन की पर्तों में अब सूख गया है
रक्त, रेत पर गिरी हुई जल की बूँदों-सा।[2]

कवि का विश्वास है कि इन सामन्ती कुचक्रों से मजदूर वर्ग को अवश्य मुक्ति मिलेगी और इसीलिए आस्था के स्वर भी डॉ० रामविलास शर्मा के काव्य में हैं। वे चली आती सामन्ती संस्कृति के सर्वनाश के लिए सतत प्रयत्नशील दिखाई देते हैं और नवयुग की श्रमरत जनता की पदचाप उन्हें 'गंगा की धारा' के समान सुनाई देती है :

गत सामन्ती संस्कृति के मिटते ढूहों पर
अवश्य सुनाई देगी फिर
गंगा की अविरल धारा सी
नवयुग की श्रमकर जनता की पदचाप नई।[3]

१. विश्वास बढ़ता ही गया, पृ० ३१।
२. प्रगतिवादी काव्य : श्री उमेश मिश्र, पृ० १७३।
३. लेख—प्रगतिवादी हिन्दी कविता : मूलचंद सेठिया, नई कविता : वासुदेवनंदन प्रसाद सिंह, पृ० २६।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रामविलास शर्मा को मानव की महानता पर बड़ी आस्था है। 'किसान, कवि और उसका पुत्र' कविता देखिये जो कवि में हृदय की आर्द्रता और दृष्टि की दृढ़ता को एक साथ व्यंजित कर रही है :

यह मानव का हृदय क्षुद्र इस्पात नहीं है
भय से सिहर उठे वह तरु का पात नहीं है।[१]

स्वभाव से विद्रोही—राँगेय राघव देश के दलित वर्ग के प्रति बड़ा करुणा-पूर्ण हृदय ले उपस्थित हुए हैं। शोषक-पूँजीपतियो ने निम्न वर्ग को उसके वास्तविक अधिकारों से वंचित कर रखा है। कवि ने उनसे तड़प कर प्रश्न किया है :

मैं आज सभ्यता के पुतले
धन दीवानों से पूछ रहा
यह क्या सूअर ही बना दिया
हरिजन के बच्चों को तुमने।[२]

राह के दीपक की 'मजदूर', 'पिघलते पत्थर' की उफान आदि इसी प्रकार की कविताएँ हैं, जिनमें सामाजिक वैषम्य के पात्र—मजदूरों—की घुटती जिन्दगी के चित्र हैं।

कवि का विचार है कि पूँजीपतियों के ये अत्याचार अब मिटाने होंगे। इसके लिए कवि अगुआई करता है और संकल्पवद्ध होता है :

तो युग-युग का लेकर संगीत
बदलेंगे विनिमय का माध्यम
हम हैं नवयुग के अग्रदूत
शोषक का करने दर्प चूर।[३]

केदार भी आस्था के इन्हीं स्वरों को मुखरित करते हैं। जनशक्ति के प्रति आस्था और विश्वास की भावना उनकी भी प्रमुख विशेषता रही है। जीवन की विरोधी परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए कवि हुंकार उठा है :

ऐ दधीचो, शक्ति का डंका बजाओ
शांति का ज्वालामुखी सूरज उगाओ

१. विश्वम्भरनाथ मानव : नई कविता : नये कवि, पृ० १६७ से उद्धृत।
२. राह के दीपक, पृ० ४७।
३. प्रगतिवादी काव्य : उमेश मिश्र, पृ० २२२।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लाल सोने का सबेरा चमचमाओ
लेखनी के लोक में आलोक लाओ ।[1]

निस्सन्देह साम्यवादी विचारों की गर्मी इस प्रकार की पंक्तियों में उफनती लग रही है। यह ओज नागार्जुन, सुमन, त्रिलोचन, रामविलास शर्मा, राँगेय राघव—सब में है। साथ-ही अपने देश के मजदूरों-किसानों-पीड़ितों-दलितों के प्रति इनमें तीव्र संवेदना व्यक्त होती दिखाई देती है। जहाँ इन पर प्रहार होता है वहीं कवि का आक्रोश सुलग उठता है और वह पूँजीवादी-साम्राज्य-वादी शक्तियों को ललकार उठता है। केदार तो लेखनी को क्रांति-करवाल ही बना रहे हैं :

काव्य में रति राग की इति हो गई
लेखनी अब क्रांति की असि हो गई ।[2]

इन कवियों का विचार है कि जो श्रम करेगा धरती उसी की होगी। इसीलिए केदार कहते हैं :

यह धरती है उस किसान की
जो बैलों के कन्धे पर
बरसात-घाम में
जुआ भाग्य का रख देता है
खून चाटती हुई वायु में ।[3]

इस प्रकार जब मजदूरों का अपनी भूमि पर अधिकार होगा और वे श्रम करेंगे तभी सुख-सूर्य का उदय होगा। सुमनजी भी श्रम और कर्मशीलता के आधार पर सुख-प्रसार की कामना अभिव्यक्त करते हैं। अध्यवसाय के बल पर उन्होंने उत्कर्ष की उच्चतम सीमा-रेखा को स्पर्श करने का विश्वास प्रकट किया है :

मलिन अश्रु कण अशुभ यहाँ
श्रमकण की ही पूजा
स्वर्ग नर्क के लिए
बनाया गया न पथ दूजा ।[4]

निष्कर्षतः सभी कवियों ने पूँजीवाद के प्रति तीव्र आक्रोश व्यक्त किया है। असमानता को देख अत्यन्त क्षुब्ध हो वे साम्यवादी व्यवस्था लाने के लिए कटि-

१. मेलजोल (केदारनाथ अग्रवाल षष्ठिपूर्ति विशेषांक) ६ जुलाई १९७० पृ० ७७।
२. —वही— —वही— ।
३. —वही— —वही— पृ० ७९ ।
४. विश्वास बढ़ता ही गया : पृ० ७०, ७१ ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बद्ध दिखाई देते हैं। मजदूरों और किसानों का समर्थन करते हुए उनका स्वर ओज-भरा है।

देश-प्रेम में विभोर :

देश-प्रेम एवं एकता की प्रबल भावनाएँ इन कवियों के काव्य में हिलोरें लेती लगती हैं। कहीं बेशर्म चीन की नापाक हरकतों के लिए वे स्वयं उसे दण्ड देने को उद्यत दिखाई देते हैं। नागार्जुन तथा उनके इन समशील कवियों ने चीनी घुसपैठ के पहले चीन-रूस समर्थित काव्य लिखा है, पर १९६२ के बाद इन कवियों का स्वर चीन-विरोधी हो गया है। हमारा विचार है कि १९३६ और १९६२ के ये दो वर्ष भारत में प्रगतिवादी विचारकों को सर्वाधिक प्रभावित करनेवाले सिद्ध हुए हैं। १९३६ से १९६२ तक के काव्य में कवियों को लाल पताकाएँ एवं रूस-चीन की साम्यवादी व्यवस्था प्रेरणा देती रही है पर चीनी घुसपैठ के बाद इन कवियों की विचारधारा बदल गयी है जिसने कहीं-कहीं काव्यात्मक अभिव्यक्ति भी पायी है। १९६२ के चीनी आक्रमण के बाद सुमन, केदार और नागार्जुन ने तो स्पष्ट रूप से चीन को ललकारा है।

चीनी आक्रमण के समय सुमनजी ने 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' में बड़े जोश के साथ उद्बोधनात्मक स्वर में लिखा :

चामुण्डों के मुण्डों की माल अधूरी है
काली के कर का खप्पर अब भी रीता है
जो हम-हुमस से वरण मौत का करता है
वह राष्ट्र अमर हो जाता
युग-युग जीता है।

केदार चीनियों के हार जाने की भविष्यवाणी कर भारतीय जनता का आत्मबल बढ़ा रहे हैं :

नत होंगे ही अब अवनत प्रलयंकर चीनी
हत होंगे ही अब अनहत प्रलयंकर चीनी।[1]

नागार्जुन ने इस समय चीन-विरोधी अनेक कविताएँ लिखीं, जिससे उनका देश-प्रेमी हृदय उनके विरोधियों के सम्मुख भी स्पष्ट हो गया। वे तो स्वयं नेफा जाकर गोले दागना चाहते हैं और राइफल प्रशिक्षण लेने के लिए स्वयं तैयार हैं। चाऊ-एन-लाई, माओ, लिऊ-शाओ-ची सब की उन्होंने

१. लेख—प्रगतिवादी हिन्दी कविता : मूलचंद सेठिया, ग्रन्थ : नई कविता, संपादक : वासुदेवनंदन प्रसाद सिंह, पृ० २३ से।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भर्त्सना की है। चीन-विरोधी प्रबल भावनाएँ हमें इस समय केवल नागार्जुन में ही विशेष रूप से दिखाई देती हैं।

वैसे देश-प्रेम का सागर सभी कवियों में तरंगित होता रहा है।

केदार मरकर देश की मिट्टी में मिल जाने को उत्सुक दिखाई देते हैं। उनमें उत्सर्ग की बलवती भावना का वेग तीव्रतम होकर उभरा है :

मर जाऊँगा तब भी तुमसे मैं दूर नहीं हो पाऊँगा
मेरे देश, तुम्हारी छाती की मिट्टी में हो जाऊँगा
मिट्टी की नाभि से निकला मैं ब्रह्मा होकर आऊँगा।
गेहूँ की मुट्ठी बाँधे मैं खेतों-खेतों छा जाऊँगा
और तुम्हारी अनुकम्पा से पक कर सोना हो जाऊँगा।

सुमन-काव्य में भी देश-प्रेम का स्वर अपने स्वाभाविक ओज के साथ प्रकट हो रहा है। कवि को जहाँ कहीं देश की मिट्टी बोलती लगती है, वहीं वह शहीदों का अभिनन्दन करता है। उमंग और उत्साह से युक्त देशप्रेम सम्बन्धी कविताएँ सुमन-काव्य की अपनी विशेषता है।

राँगेय राघव के हृदय-सिन्धु में भी देश-प्रेम और राष्ट्र-भक्ति ज्वार लेती लगती है। 'राष्ट्र की पुकार' 'तड़कती बेड़ियाँ', 'अमर गीत', 'तलवार की जीत', 'मांझी' आदि में कवि की राष्ट्रीयता अभिव्यक्त हुई है।"

रामविलास शर्मा ने भी राष्ट्र-भक्ति के इसी अनुष्ठान में 'आजाद पताका' और 'झंडा ऊँचा रहे हमारा' शीर्षक कविताओं से अपनी देशभक्ति प्रकट की है।

रामविलास शर्मा देश में एक राष्ट्रीयता और भावनात्मक एकता का प्रसार करते दिखाई देते हैं। यह स्वर नागार्जुन में अत्यन्त तीव्र है। वे भारत-पाक एक देखना चाहते हैं। नागार्जुन ने प्रान्तीयता और साम्प्रदायिकता का जमकर विरोध किया है। कवि त्रिलोचन भी इसी भावना से ओत-प्रोत दिखाई देते हैं।

देश-प्रेम की अभिव्यक्ति इन सभी कवियों में हुई है। देश की प्राकृतिक सुषमा पर मुग्ध होना भी देश-प्रेम है, जिसकी भी अभिव्यक्ति नागार्जुन में देखी जा सकती है। नागार्जुन में प्रकृति-परक कविताओं की भरमार है। किन्तु कवि के देश-प्रेम की विशेषता यह रही है कि उसने देश की समस्त ज्वलन्त समस्याओं को अपने काव्य में उठाया है। अन्न-समस्या, देश-रक्षा, आन्तरिक शांति स्थापना, भ्रष्टाचार-विरोध, साम्प्रदायिक वैमनस्य की समाप्ति आदि पर उसने ध्यान केन्द्रित करके उनका समाधान दिया है। देश में आये घुसपैठियों को तो सफाया करने के लिए दृढ़प्रतिज्ञ है ही, पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देश की भीतरी व्यवस्था पर भी नागार्जुन ने सतर्क दृष्टि रखी है। ऐसी जागरूकता उनके अनेक समशील कवियों में नहीं दिखाई देती। हर तात्कालिक समस्या पर नागार्जुन की कलम चली है।

नागार्जुन की एक ही कविता का उल्लेख करना इस दृष्टि से पर्याप्त होगा जिसमें कवि पैटन टैंक के साथ-ही महँगाई के टैंक तोड़ने के लिए भी चिन्तित है। और भी विभिन्न समस्याओं पर कवि ने ध्यान आकर्षित करने का प्रयास किया है। इसमें भी कवि का अपने देश के प्रति प्रेम छलक रहा है और महँगाई के प्रति सचेष्ट दृष्टि। सीमा के शत्रु पर प्रहार के साथ-साथ महँगाई के शत्रु पर भी वह प्रहार करने को कह रहा है :

पैटन टैंक उन्होंने तोड़े
महँगाई के टैंक कौन तोड़ेगा ?
सेबर जेट विमान गिराये उन हाथों ने
जातिवाद के सम्पाती की चोंच कौन झाड़ेगा ?
डटे हुए हैं वे भौगोलिक सीमाओं पर
आर्थिक हित के छोरों की निगरानी कौन करेगा ?
पड़ी पिटाई भागे बाहर के डाकू
लेकिन अन्दर के दुष्टों को कौन यहाँ नाथेगा ?
बाहर बाहर
सजग पहरुए रहे सम्भाले कन्धों पर बन्दूक
अन्दर अन्दर
पौधों की हरियाली बेशक चाटेंगे शम्बूक
सिंहवाहिनी तो दनुजों का रक्त पियेगी
धरती की प्यासी फसलों को पानी देगा कौन ?[१]

कवि देश के भीतर रहनेवाली जनता को एकता के सूत्र में बाँधकर उसे देश में शान्ति और सुव्यवस्था बनाये रखने के लिए प्रेरणा दे रहा है, तभी न सिंहवाहिनी का मनोबल बढ़ेगा और वह दनुजों को दण्ड दे सकेगी। यह भी देश-प्रेम ही है, किन्तु उनके समशील कवियों से कितना भिन्न !

श्रम की आराधना एवं शांति का समर्थन :

श्रमिकों का समर्थन करते हुए सभी कवियों ने श्रम की महत्ता स्वीकार की

१. पाण्डुलिपि से।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है। इस दृष्टि से उदासीनता के स्थान पर उमंग और जोश उनके काव्य का गुण है।

त्रिलोचन शास्त्री ने कर्मशीलता द्वारा नव-निर्माण को सम्भव माना है। संकट और व्यवधानों का निवारण उन्होंने श्रम द्वारा स्वीकार किया है :

यत्न कर यत्न, यों पूजा में बैठ जाने से
सकट आए हैं, नहीं इससे टला है कोई।[1]

सभी कवियों में इस दृष्टि से साम्य देखा जाता है। ये भी कवि युद्ध और साम्राज्यवादी शक्तियों का विरोध कर शान्ति और सुख की कामना करते दिखाई देते हैं। कहीं-कहीं इनमें उद्बोधनात्मक स्वर भी सुनाई देता है।

नागार्जुन की 'जयति जयति सर्वमंगला' शान्ति के लिए लिखी एक लम्बी कविता है, जिसमें कवि सगुण शान्ति चाहता है। 'हटे दनुज दल मिटे अमगल' कविता में वे अशिव शक्तियों को मिटाकर जन-कल्याण के लिए आतुर दिखाई देते हैं।

सुमनजी ने भी भारत के युद्ध-विरोधी स्वर को मुखरित किया है, युद्ध के विषम वातावरण को उत्पन्न करनेवाली मनोवृत्तियों और परिस्थितियों के दमन का स्वर उनमें बहुत प्रवल है। उन्होंने भारतवासियों के उस दृढ़ संकल्प को अभिव्यक्त किया है जो युद्ध की समस्त सम्भावनाओं को कुचल देना चाहता है :

एक स्वर है एक सरगम
एक है गति एक है लय
युद्ध का ज्वालामुखी हो कहीं हरदम
शांति की बाँहें बढ़ाए है हिमालय।[2]

त्रिलोचन शास्त्री केवल भारत ही नहीं, विश्व के मानव की कल्याण-कामना कर रहे हैं :

केवल भारत ही नहीं विश्व का मानव जागे
फूले फले बढ़े अपने मन का सुख पाये।[3]

इतना ही नहीं, वे तो जहाँ मरण का सन्नाटा है, वहाँ भी जीवन लाने की वात करते हैं :

गाओ हाँ, उर के तारों पर, जी भर गाओ
जहाँ मरण का सन्नाटा है, जीवन लाओ।[4]

१. नया हिन्दी काव्य : शम्भूनाथ सिंह, पृ० २५३।
२. —वही— पृ० २७१।
३. दिगन्त, पृ० ५४।
४. —वही— , पृ० १३।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

केदार युग की बहती हुई गंगा को देख अपना आशावादी दृष्टिकोण प्रस्तुत कर रहे हैं। इस गंगा से प्राचीन के ध्वंस और नवीन संस्कृति के निर्माण के प्रति वे आश्वस्त हैं :

युग की गंगा
सब प्राचीन डुबोएगी ही
नयी बस्तियाँ
शांति निकेतन
नव संसार बसाएगी ही।[१]

वे मानव-मंगल की कामना करते हुए, श्रम और शान्ति के गीत गाने की प्रेरणा दे रहे हैं :

अमंगल न पल हो मानस विकल हो
सदा कर्म कल्याण मानव सफल हो
इसी के लिए शांति के गीत गाओ।[२]

नागार्जुन भी मानव मात्र के लिए शान्ति और कल्याण की कामना करते हैं :

शांति चाहिए, त्राण चाहिए
तुमको हमको सबको ही कल्याण चाहिए।[3]

सुमनजी जीवन में आने वाली कठिनाइयों को काँटा कहकर उसे भी सँवारने और जीवन की टेढ़ी-मेढ़ी पगडंडी से विचलित न होने की प्रेरणा दे रहे हैं। उन्होंने हिंसकों को खूँखार भेड़िया और स्यार की उपाधि देकर अपना शान्ति-संदेश निम्नलिखित पंक्तियों में व्यक्त किया है :

भूलों का प्रायश्चित्त करो मेरे मन
शूलों में फूलों का सौन्दर्य सँवारो
जीवन की पगडंडी टेढ़ी-मेढ़ी
ऊबड़-खाबड़ फिसलन गिरने का डर है
खूँखार भेड़िये रथ की राहें रोके
कान्तारों में फुफकार रहे गहवर हैं।[४]

१. युग की गंगा।
२. शांति लोक : केदारनाथ अग्रवाल, पृ० ६४।
३. हिन्दी साहित्य, कुछ विचार : डॉ० त्रिलोकीनारायण दीक्षित, पृ० ३४।
४. —वही— —वही— पृ० २२।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

युद्ध का आतंक समाप्त कर सभी कवि मानव-कल्याण के लिए प्रयत्नशील दिखाई देते हैं। नागार्जुन ने लिखा है :

नई सृष्टि के लिए नये विधाता कोटि-कोटि जन शांति चाहते[1]

उन्होंने साम्राज्यवादी शक्तियों से आक्रान्त देशों का समर्थन अपनी कविताओं में किया है। विएतनाम, कोरिया, चेकोस्लाविया आदि की जनता के समर्थन में लिखी गयी कवि की कविताएँ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं।

प्रणय-सम्बन्धी कविताएँ :

जीवन में आये मधुर-मदिर भावावेगों की अभिव्यक्ति ही प्रणय काव्य है। यहाँ विवेचित किये जा रहे प्रायः सभी प्रगतिवादी कवियों ने इस प्रकार की रचनाएँ की हैं। केदार की 'नींद के बादल', सुमनजी की 'पर आँखें नहीं भरीं' इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण काव्य-संग्रह हैं।

त्रिलोचन का कवि भी अकेले रहने में एक अभाव-सा महसूस कर रहा है :

सुख-दुख एक भी अकेला सहा नहीं जाता।[2]

उनका जग के प्रति दृष्टिकोण ही प्रेयसी के प्रणय ने बदल दिया है :

तेरा मेरा प्यार हुआ क्या सारे जग से प्यार हो गया।

डॉ० उमेश मिश्र के अनुसार, "प्रेम उसके (त्रिलोचन) जीवन का सर्वस्व नहीं, उसके जीवन का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष मात्र है। त्रिलोचन की दृष्टि में प्रणय की वास्तविक सार्थकता यही प्रतीत होती है कि वह व्यक्ति के जीवन में राग-रस का संचार करता हुआ उसे सामाजिक पथ की ओर क्रियाशील बनावे।"[3] त्रिलोचन लिखते हैं :

मुझे जगत जीवन का प्रेमी बना रहा है प्यार तुम्हारा
मेरी दुर्बलता हर कर
नयी शक्ति नव साहस भरकर
तुमने फिर उत्साह दिलाया
कर्मक्षेत्र में ढूँ सम्हल कर
तब से मैं अविरल बढ़ता हूँ
बल देता है प्यार तुम्हारा।[4]

१. 'जयति जयति जय सर्वमंगला' कविता से, हंस (शांति अंक), पृ० १३६।

२. प्रगतिवादी हिन्दी कविता : मूलचंद सेठिया : नई कविता, पृ० २३, सं० वासुदेवनंदन प्रसाद सिंह।

३. प्रगतिवादी काव्य : डॉ० उमेश मिश्र, पृ० २५०।

४. धरती, पृ० १।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कवि ने दाम्पत्य जीवन में साथ-साथ काम करने सम्बन्धी कुछ कविताएँ भी लिखी हैं। गार्हस्थिक प्रेम का यह रूप नागार्जुन के इसी प्रकार के प्रणय से साम्य रखता है।

सुमन को अपनी प्रेयसी कहीं 'शरद सी श्रृंगार करती हुई' लग रही है। उनका प्रिय स्मृति से युक्त एक भावपूर्ण प्रणय चित्र है—प्रिय-मिलन की सम्भावना में विरहिणी के हृदय की दशा व्यक्त हो रही है, उससे मन की बात कहते नहीं बनती। कैसी मधुर विवशता है। बात यह है कि आज उसके प्रियतम आनेवाले हैं :

आज की साँझ सलोनी बड़ी मन भावनी री
भीजि गयो देहरी पै खड़ी बौछार की मार न जाय सही
पीपर पात की घात लगी, कछु बात उठै पै न जाय कही
साज री साज सिंगार को दीपक आज पिया की आवनी री।[1]

केदारनाथ अग्रवाल के हृदय में भी प्रेयसी की याद तड़पती रही है। इसी तड़प के कारण कविता अपने-आप बन जाती है। वस्तुतः प्रणय-विह्वल भावनाओं की सहज अभिव्यक्ति ही कविता है। लगता है, केदार हमसे सहमत , तभी वे कहते हैं :

कविता यों ही बन जाती है, बिना बनाए
क्योंकि हृदय में तड़प रही है याद तुम्हारी।[2]

सुमन की प्रणय कविताओं में रोमांटिक प्रेम की तीव्रता अधिक है। नागार्जुन का प्रेम इन कवियों से इस रूप में भिन्न है कि उनका प्रेम गार्हस्थिक भावना की क्रोड़ में पल्लवित हुआ है। निश्चय ही कवि का यह प्रेम अपनी पत्नी के प्रति व्यक्त हुआ है। नागार्जुन का मानवेतर प्रेम प्रकृति के सजीव-अजीव प्राणियों के प्रति उतनी ही रसमयता से व्यक्त हुआ है जितनी मनुष्य के प्रति। निम्न पंक्तियाँ इस संदर्भ में पठनीय हैं :

धन्य स्वाती के जलद तुम धन्य हो
विकल थी चिर प्यास से वह चातकी
आ गए तुम अब कमी किस बात की।[3]

नागार्जुन में प्रणय का बड़ा सजीव और स्वस्थ रूप हमें दिखाई देता है। 'सिन्दूर तिलकित भाल', 'बहुत दिनों के बाद' 'तुम जगीं संसार जाए जाग',

१. पर आँखें नहीं भरीं : डॉ० शिवमंगल सिंह 'सुमन', पृ० २८।
२. नींद के बादल।
३. सतरंगे पंखोंवाली, पृ० ४१।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'भिक्षुणी' आदि कई कविताएँ हैं जिनमें प्रणय को, जीवन के अन्य कर्मों के साथ रखकर उसका एक उपयोगी एवं प्रेरणादायी अंग माना गया है। प्रणय-चित्रों की दृष्टि से रामविलास शर्मा में गम्भीरता कुछ अधिक है। प्रणयाभिव्यक्ति से युक्त कविताओं में जिस भावुक हृदय एवं कोमल अनुभूतियों की आवश्यकता होती है—वह नहीं है। आरम्भिक छोटी कविताओं में अवश्य ही उन्होंने प्रेम को स्थान दिया है।

सुमन प्रेयसी के प्रणय में कर्त्तव्य को नहीं भूले हैं, पर जहाँ भावावेग की तीव्रता है वहाँ सुमन का कवि प्रणय में डूब भी गया है। केदार के प्रणय-चित्रों और नारी-विषयक कविताओं में कहीं-कहीं स्थूलता भी उभरी है। हमारा विचार है कि इन सबकी अपेक्षा नागार्जुन का प्रणय जीवन को सुगम बनाने के लिए व्यक्त हुआ है। वे जीवन की महत्त्वपूर्ण समस्याओं को प्रणय में भी भूले नहीं हैं। वस्तुतः नागार्जुन का प्रणय हमें जीवन की जटिल समस्याओं के समाधान की एक महत्त्वपूर्ण इकाई के रूप में प्रकट होने लगता है। अपनी प्रेयसी को वह चाँदनी रात में फूलों से सजाते ही नहीं रह जाते, वरन् उनके प्रेम का रूप जीवन को सुन्दर बनाने के लिए प्रयुक्त हुआ है।

गाँधीवाद का प्रभाव :

नागार्जुन और उनके समशील कवियों ने बापू के प्रति असीम श्रद्धा प्रकट की है। उनका प्रगतिवाद इसीलिए गाँधीवाद से बड़ी दूर तक प्रभावित दिखाई देता है। महात्मा गाँधी के प्रति अपनी भावपूर्ण श्रद्धांजलि सभी कवियों ने अर्पित की है। सुमन ने 'पर आँखें नहीं भरीं' काव्य-संग्रह की 'बापू के प्रति' कुछ कविताओं में अपना प्रेम प्रकट करते हुए, उनके महान कार्यों का स्मरण कर, गाँधी-निर्वाण को विश्व की महान क्षति बताते हुए, इस महामानव के आदर्शों को मूर्त्त रूप देने की प्रतिज्ञा ली है। उनका कहना है कि गाँधी का इस धरती पर अवतरण कई सदियों के पुण्य और तपस्या का परिणाम था, उस दिन पृथ्वी का सौभाग्य जाग पड़ा :

> कितनी सदियों के पुण्य फले
> तब तुम आए
> धरती के जागे भाग
> मुक्ति के घन छाए।[1]

१. आधुनिक हिन्दी कविता में शान्तिकामी स्वर : प्रकाशचन्द्र गुप्त, पृ० १२२।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किन्तु बापू-बलिदान से कवि का हृदय वेदना से भर उठा है। वह इसे मानव संस्कृति के स्वर्ण कमल पर छींटी गयी रक्त की बूँदों के रूप में देखकर बापू से ही पूछता है :

हे क्षमा मूर्ति
क्या हम जैसे अकृतज्ञों को अपनाओगे
ओ मानवता के सिन्धु-मंथन के सुधा कलश
अब कितनी सदियों बाद धरा पर आओगे।[1]

नागार्जुन ने भी बापू के प्रति ऐसी ही अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित की है। उनकी 'शपथ', 'तर्पण' इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण रचनाएँ हैं। बापू के महाप्रयाण की वेदना से विह्वल हो वे लिखते हैं :

इसे न कोई कविता समझे
यह तो पितृ वियोग व्यथा है

लगता है, नागार्जुन ने ये दोनों कविताएँ अश्रुपूरित नेत्रों से शोकाकुल हो कर लिखी हैं :

रोता हूँ लिखता जाता हूँ
कवि को बेकाबू पाता हूँ।[2]

सुमन ने बापू की हत्या का उतरदायी एक व्यक्ति को न मानकर सम्पूर्ण दूषित सम्प्रदायवादी प्रवृत्ति और परम्परा को माना और इसी के विरुद्ध लड़ने की शपथ ली, इस दृष्टि से नागार्जुन से उनका साम्य है :

वह मानवता का पाप-पुंज
कल्मष अंगी
वह नहीं व्यक्ति जिसने तुम पर गोली दागी
वह उस परम्परा का जिसमें
रावण, नीरो औ कंस हुए
जिसमें दुर्योधन हिरण्यकशिपु
और जारों के वंश हुए।[3]

नागार्जुन की तर्पण कविता इन्हीं भावों की समता सूचित कर रही है। गाँधी के हत्यारे का चरित्रांकन करते हुए कवि ने देश को मानवता के

१. नई कविता : संपादक, वासुदेवनन्दन प्रसाद सिंह।
२. युगधारा ('शपथ' कविता), पृ० ५४।
३. नया हिन्दी काव्य : शम्भूनाथ सिंह, पृ० ७४।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस महाशत्रु से सावधान किया है :

जिस बर्बर ने
कल किया तुम्हारा खून पिता
वह नहीं मराठा, हिन्दू है
वह नहीं मूर्ख या पागल है
वह प्रहरी है स्थिर स्वार्थों का
वह जागरूक वह सावधान
वह मानवता का महाशत्रु
वह हिरणकशिपु
वह अहिरावण
वह दशकन्धर
वह सहस्र बाहु
वह मनुष्यत्व के पूर्ण चन्द्र का सर्वग्रासी महाराहु ।[1]

नागार्जुन की भाँति सुमन जैसे कवियों ने अनुभव किया है कि बापू के आदर्शों को जीवित रखने और साम्प्रदायिकता को समूल नष्ट करने की आवश्यकता है :

बापू हम लेते शपथ
नव जीवन ज्योति जलाएँगे ।[2]

नागार्जुन ने इधर की लिखी कविताओं में भी बापू के प्रति अपार श्रद्धा प्रकट की है। गाँधी की शिक्षाओं का उन्हीं के चेलों द्वारा किया जा रहा दुरुपयोग देख कवि व्यथित है। व्यथा-मिश्रित यह क्षुब्धता कहीं-कहीं आक्रोश और व्यंग्य का रूप ले लेती है। आज काँग्रेसियों के सब काम गाँधी-विरोधी हैं, ऊपर से यह वर्ग अपने-आपको गाँधी का पक्का समर्थक, आराधक और अनुयायी सिद्ध करने में कोई कसर नहीं उठा रखता। चर्खा कातेंगे, प्रार्थना-सभाएँ करेंगे, श्रद्धांजलि देंगे, भूदान-जिलादान सब होगा, पर दैनिक जीवन के आचरण में गाँधी के एक भी गुण को नही उतारेंगे। वस्तुतः भारत में गाँधीवाद खान-पान और वेशभूषा का ऊपरी आडम्बर मात्र बन कर रह गया है। कथनी और करनी के इस भेद को नागार्जुन ने 'बापू के प्रति 'अहमदाबाद' आदि कविताओं में व्यक्त किया है। 'बापू के तीन बन्दर' भी ऐसी ही कविता है। गाँधी के सपनों को चूर-चूर होता देख

१. युगधारा ('तर्पण' कविता), पृ० ५१।
२. नया हिन्दी काव्य, पृ० ७४।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कवि वेदना से भर कर कहता है :

दलितों के सपने सपने हैं मैं देख रहा
टाटा बिड़ला ही अपने हैं मैं देख रहा।[1]

दलित वर्ग के कल्याण में जिस गाँधी ने सारा जीवन अर्पित कर दिया उसी के शिष्य आज उससे विमुख ही नहीं, त्याग और सेवा के रीते आडम्बरों में लगे हैं। इसीलिए इनके 'गोरस-मधु, सेवन, फलाहार' पर कवि ने व्यंग्य किया है। वस्तुतः काँग्रेसियों ने गाँधी को 'पूजा का प्रतीक' बना डाला है। 'रजत रूप में' गाँधी की प्रतिमा कैद करके ही हमारे यहाँ गाँधीवादी होने का डंका बजाया जा रहा है। इन सब स्थितियों पर नागार्जुन ने अपने समशील कवियों की अपेक्षा अधिक लिखा है।

व्यंग्यपूर्ण काव्य :

नागार्जुन के अन्य समशील कवियों ने भी व्यंग्य कविताएँ लिखी हैं, पर अन्य कवियों की अपेक्षा नागार्जुन के व्यंग्य में बड़ी प्रखरता है। उनका व्यंग्य सम्बन्धित व्यक्ति को तिलमिला देने में सक्षम है। वे निशाने पर सीधी चोट करते हैं। कवि के व्यंग्य बाण के निशाने बने हैं—धार्मिक रूढ़ियाँ, अस्वस्थ सामाजिक परम्पराएँ, पूँजीपति, साम्राज्यवादी विचारधारा वाले राज्याध्यक्ष, स्वदेशी स्वार्थी नेता, देश की आन्तरिक शान्ति भंग करनेवाले उपद्रवी तत्त्व, आधुनिकाएँ आदि। अन्य कवियों के व्यंग्य में नागार्जुन के समान जोश और वेग का अभाव है। यह अवश्य है कि अपनी कुछ व्यंग्य रचनाओं में नागार्जुन का कवि कहीं-कहीं बड़ा उथला रूप भी लेकर उपस्थित हुआ है, जहाँ उन्होंने नेहरू आदि नेताओं के व्यक्तिगत नाम ले-लेकर अपशब्द कहना आरम्भ कर दिया है। व्यंग्य रचनाओं में सम्बन्धित का नाम न आना उसकी श्रेष्ठता की प्रमुख कसौटी है जिसे नागार्जुन कहीं-कहीं भूल चले हैं। फिर भी व्यंग्य में अन्य कवि नागार्जुन से पीछे हैं, इसमें दो मत नहीं।

सुमन मूलतः प्रेम, शृंगार, आवेश एवं ओज के कवि हैं। स्पष्टतः उनमें व्यंग्य का अत्यन्त सामान्य रूप है, जैसे 'अपने कवि से' कविता में 'सुमन' का व्यंग्य उभरा है। केदार जन-जीवन के प्रति असीम ममता से भरे हुए कवि हैं। उनमें भी व्यंग्य है, पर व्यवस्थाओं को बदलने के लिए जो आक्रोश नागार्जुन में है, जिसने तीखे व्यंग्य का रूप धारण कर लिया है, उसका केदार में अभाव है। केदार ने ग्राम एवं देश की समस्याओं तथा नेताओं के आडम्बरों को व्यक्त

१. ३० जनवरी १९६९, गाँधी पुण्यतिथि पर लिखी कविता—पाण्डुलिपि से।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किया है, पर उनमें हल्के व्यंग्य के साथ जनता की पीड़ाओं के विषादयुक्त चित्र ही अधिक उभरे हैं। इसकी अपेक्षा नागार्जुन इस स्थिति से आगे बढ़कर, खुलकर गिन-गिन कर भ्रष्टाचारियों पर व्यंग्य-बाण चलाते हैं। नागार्जुन के व्यंग्य से कोई नहीं बच सका है। त्रिलोचन के काव्य में चिन्तनात्मक प्रवृत्ति की अधिकता ने व्यंग्याभाव के कारण है। डॉ० रामविलास शर्मा की व्यंग्य कविताओं में नारेबाजी की अधिकता और छद्मता के कारण फीकापन दिखाई देता है। स्वयं अभावों और असुविधाओं का जीवन व्यतीत करते हुए, उनके लिए उत्तरदायी व्यवस्थाओं के विरुद्ध, क्रोध से भरकर जैसे स्पष्ट और तीक्ष्ण व्यंग्य नागार्जुन ने किये हैं उनका डॉ० शर्मा में अभाव है। इस सम्बन्ध में डॉ० हरिनारायण मिश्र का मत द्रष्टव्य है :

"तार सप्तक में' सत्यं शिवं सुन्दरं तथा अन्यत्र प्रकाशित कुछ व्यंग्य कविताओं में हम डॉ० रामविलास शर्मा का वास्तविक नाम पाते हैं किन्तु आगे चलकर वह ऐसी कविताओं के लिए अपने छद्म नाम 'अगिया बैताल' का सहारा लेने लगे। एक अजीब अटपटी जबान में बिल्कुल उघड़ा हुआ व्यंग्य 'अगिया बैताल' ने हमें दिया है।"[1]

डॉ० रामविलास शर्मा का व्यंग्य अपने आप में स्पष्ट नहीं है। व्यंग्य जितना सधा हुआ होगा, उतना ही उसमें पैनापन होगा। डॉ० शर्मा की व्यंग्य कविताओं के सम्बन्ध में डॉ० शिवकुमार मिश्र का मत है : "कहीं कवि पर राजनीति हावी हो गयी है, वहाँ नारेबाजी और प्रचार का जोर है, व्यंग्य का अपना स्तर होता है, जिसका अतिक्रमण ऐसी कविताओं में हो गया है।"[2] डॉ० उमेश मिश्र के अनुसार, "शर्माजी का व्यंग्य सीमाओं का अतिक्रमण कर हल्का बन गया है।"[3]

राँगेय राघव ने सामाजिक वैषम्य को चित्रित अवश्य किया है, पर उनमें व्यंग्य का अभाव है। कवि यदि और जीवित रहता तो सम्भव है काफी अच्छा व्यंग्य-काव्य हमें देता।

त्रिलोचन के काव्य में भी व्यंग्य है। 'गुलाब और बुलबुल' की कुछ कविताएँ व्यंग्यपूर्ण हैं—कहीं कवि ने पद्मविभूषणों पर तो कहीं अवसरवादी नेताओं पर व्यंग्य किया है, किन्तु नागार्जुन के व्यंग्य-सी प्रखरता का इनमें अभाव है।

केदार मीठी चिकोटी काटते हैं, पर नागार्जुन का व्यंग्य तो बिल्कुल तिलमिला देनेवाला है। वातावरण के चित्रण में जहाँ इस व्यंग्यशीलता का आश्रय

१. समकालीन कविता में व्यंग्य विद्रूप : डॉ० हरिनारायण मिश्र, पृ० १०४।
२. नया हिन्दी काव्य : डॉ० शिवकुमार मिश्र, पृ० १८४।
३. प्रगतिवादी काव्य : डॉ उमेश मिश्र, पृ० १८१।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लिया गया है, वहाँ उसका संवेदनात्मक प्रभाव बहुत तीखा हो गया है :

कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास।[१]

नागार्जुन और केदार की तुलना करते हुए श्री अंकिमचन्द्र ने लिखा है :

"नागार्जुन की कविताओं में जहाँ उदग्र आक्रोश और आधुनिक जीवन की तिक्तता व्यंजित है, वहाँ केदार में यथार्थ का मर्म बोध तथा उन्मेष की शालीन अभिव्यक्ति। नागार्जुन समाज और व्यवस्था के प्रवंचकों की बखिया उधेड़नेवाले तथा चिकोटी काट कर छिलमिला देनेवाले कवि हैं तो केदार ग्राम-जीवन के विषाद का अंकन करनेवाले एक मर्मी कवि। नागार्जुन में तल्खी अधिक है तो केदार में स्निग्ध तलस्पर्शिता। फटकार, ललकार, युगबोध, मानवीयता, सर्वहारा की पक्षधरता, भावी पीढ़ी के प्रति वात्सल्य भाव, आस्था आदि दोनों कवियों में साम्य हैं। सामाजिक घात-प्रतिघातों के सूक्ष्म संवेगों को दोनों कवियों ने अपनी-अपनी भाषा के तेवर में प्रकट किया है।"[२]

इस प्रकार जहाँ तक व्यंग्य का सम्बन्ध है, नागार्जुन अपने समशील कवियों से आगे हैं। उनके व्यंग्य में एक गर्मी है, फटकार है और अपने प्रतिद्वन्द्वी की बुराइयों का इजहार है। उनका चुटीलापन विशेष आकर्षक है।

७. ग्राम-सौन्दर्य एवं प्रकृति-चित्रण :

ग्राम-जीवन के वर्णन सभी कवियों ने किये हैं। आंचलिक सौन्दर्य के चित्रण में कवियों ने ग्राम्य प्रकृति के रम्य दृश्य उपस्थित किये हैं। प्रगतिवादी कवियों में त्रिलोचन शास्त्री का प्रकृति वर्णन काफी व्यंजक है। निम्न पक्तियों में त्रिलोचन का हृदय धरती के प्रति उमड़ता दीख रहा है :

हरा-भरा संसार है आँखों के आगे
ताल भरे हैं, खेत भरे हैं,
नई नई बालें लहराये
झूम रहे ये धान हरे हैं
झरती हैं झीनी मंजरियाँ
खेल रही हैं खेल लहरियाँ

१. सतरंगे पंखोंवाली, पृ० ३०।

२. मेल-जोल (केदारनाथ अग्रवाल : षष्ठि-पूर्ति विशेषांक), लेख—आस्था और सौन्दर्य के कवि, ६ जुलाई, १९७०, पृ० ९५।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जीवन का विस्तार है
आँखों के आँगे ।[१]

केदार के प्रकृति-चित्र भी बड़े सफल और सशक्त हैं। प्रकृति दृश्यों के प्रति बड़ी कोमल अनुभूतियाँ उनके हृदय में हैं। 'वासंती हवा' में उन्होंने वसन्त की हवा के शरारती झोंकों में पाठक को ले जाकर छोड़ दिया है :

बसन्ती हवा हूँ
चढ़ी पेड़ महुआ
थपाथप मचाया
गिरी धम से
फिर चढ़ी आम ऊपर
उसे भी झकोरा
किया कान में कूँ
उतर कर भगी मैं
हरे खेत पहुँची
वहाँ गेहुँआ में
लहर खूब मारी ।[२]

केदार ने बाँदा के आसपास की रम्य प्रकृति—केन नदी आदि—का सुन्दर वर्णन किया है; साथ ही जन-जीवन के दारुण चित्र खींचे हैं।

नागार्जुन के काव्य में भी प्रकृति सौन्दर्य के कई भव्य दृश्य हैं—जैसे, 'बादल को घिरते देखा है' में। कहीं ग्रामीण विशेषताओं के प्रति कवि की मुग्धता बिखर रही है। कवि परदेस में रहकर भी अपनी प्रिय भूमि को याद कर रहा है :

याद आता मुझे अपना तरउनी ग्राम
याद आती लीचियाँ वे आम।

'वसन्त की अगवानी, नीम की दो टहनियाँ, शरद पूर्णिमा, भारतवर्ष, हिम कुसुमों के चंचरीक, बहुत दिनों के बाद' आदि प्रकृति-सम्बन्धी कई कविताएँ हैं जिनमें कवि का प्रकृति-प्रेम उफनता-सा लगता है। केदार और नागार्जुन के द्वारा वर्णित प्रकृति दृश्यों में इनके प्रति ममता सहज ही प्रतिबिम्बित हो, अपना

१. धरती।
२. मेल-जोल (केदारनाथ अग्रवाल : षष्ठिपूर्ति विशेषांक), पृ० १२, ६ जुलाई १९७०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्थायी प्रभाव पाठक के हृदय पर छोड़ जाती है। निस्सन्देह, ये दोनों कवि जनता और धरती के कवि के रूप में हमारे सामने आते हैं।

डॉ० रामविलास शर्मा ने भी ग्रामीण रम्य चित्रों को अपने काव्य में स्थान दिया है। श्री तावसे ने इनमें ग्राम्य-श्री के अभिनव सौन्दर्य तथा सुरम्य एवं मर्मस्पर्शी सूझ के दर्शन करते हुए डॉ० शर्मा के सम्बन्ध में लिखा है : "उन्होंने एक भावुक कवि-हृदय भी पाया है जिसमें जवानी की हुँकार के साथ भारतीय ग्राम-सौन्दर्य तथा सर्वहारा वर्ग की वेदनाएँ भी संश्लिष्ट हैं।"[१]

कवि ने ग्रामीण प्रकृति के अनुभूत दृश्यों को ज्यों-का-त्यों उपस्थित कर दिया है :

सीत सीत करती बयार है बह रही
बरस रहा खेतों पर हिम वसन्त है।[२]

डॉ० रामविलास शर्मा के सम्बन्ध में डॉ० शिवकुमार मिश्र का मत है : "कवि प्रकृति, सामान्य व आंचलिक दोनों के ही सौन्दर्य से अभिभूत उसे उसकी सारी रेखाओं में आँक देनेवाले चित्रकार के रूप में अपने दर्शन देता है।"[३]

शर्माजी ने कहीं खेतों पर नीले आसमान को छाया हुआ तो कहीं किसानों को सांध्य वेला में अपने घर लौटते देखा है। किसानों के जीवन का पूरा वर्णन ही कवि ने कर दिया है। कवि की 'बैसवाड़ा' कविता में उस क्षेत्र का प्राकृतिक, आंचलिक सौन्दर्य तरंगे लेता लगता है। ग्रामीण प्रकृति-सौन्दर्य के साथ ही लोकजीवन के चित्रों से रामविलास की कविता सजी है, साथ ही हिन्दी कविता में समुद्र तटों का सुन्दर वर्णन अभी तक केवल श्री रामविलास शर्मा ने ही किया है।

सुमन ने भी प्रकृति के भाव-भरे गीत गाये हैं। 'कैसा मधुर सुप्रभात था' कविता में कवि के भाव-विभोर हृदय को देखा जा सकता है। प्रकृति के रम्य उपादानों का मानवीकरण करते हुए, उषा को पलकें मसलते और सुमनदलों को मुख धोते उन्होंने चित्रित किया है :

अति स्पष्ट पड़ती थी सुनाई
निर्झरों की ध्वनि विकल
थी मल रही पलकें उषा
मुख धो रहे थे सुमन दल

१. रूप-तरंग, परिचय—श्री रघुनाथ तावसे, पृ० १।
२. रूप-तरंग, पृ० ५।
३. नया हिंदी काव्य : डॉ० शिवकुमार मिश्र, पृ० १८२।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तृण, तरु, कुसुम-कलि पल्लवों का गान सद्यस्नात था
कैसा मधुर सुप्रभात था।[1]

'सूरज ढल रहा है' में सूर्यास्त के समय की मूक प्रकृति से कवि ने हमें मिलाया है। 'आँखें नहीं भरीं' संग्रह में भी प्रकृति के कुछ सुन्दर वर्णन हैं।

निष्कर्ष :

विवेचित कवियों के काव्य की इन विविध भावभूमियों को देखकर यह कहा जा सकता है कि कुछ विशेषताओं में नागार्जुन का अपने समशील कवियों से साम्य स्पष्ट है। कहीं वे इन कवियों से आगे बढ़े हुए भी लगते हैं। जन-जीवन का चित्रण करते हुएं उसकी पीड़ाओं को इन कवियों ने साकार रूप देने की चेष्टा की है, किन्तु नागार्जुन के द्वारा प्रस्तुत दलितवर्ग की कष्ट-गाथाओं, शोषण आदि के चित्र अधिक सजीव बन पड़े हैं। इसका कारण रहा है, नागार्जुन का स्वयं इस वर्ग की पीड़ाओं में सह-भोक्ता होना। ग्रामीण लोकजीवन और प्रकृति-सौन्दर्य का वर्णन रामविलास शर्मा, केदार, त्रिलोचन, नागार्जुन—सबने समान रूप से किया है। राँगेय राघव और सुमन के काव्य में भी प्रकृति की कमनीयता के दर्शन होते हैं। प्रणय भावनाओं को व्यक्त करनेवाली कविताओं में भी साम्य परिलक्षित होता है किन्तु नागार्जुन का प्रणय सम्बन्ध-भावना की आत्मीयता से युक्त सहज बन जीवन के अन्य व्यापारों को साथ ले चला है। इस दृष्टि से त्रिलोचन उनके निकट पहुँचते दिखाई देते हैं।

राष्ट्रप्रेम का स्वर सभी कवियों में गूँजता सुनाई देता है। किन्तु नागार्जुन का राष्ट्रप्रेम देश की सामयिक समस्याओं के स्वस्थ समाधान देने की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है। देश के शत्रुओं को दण्ड देना, देश के प्रकृति-सौन्दर्य पर मुग्ध होना, भावनात्मक एकता की चर्चा करना देशप्रेम ही है। पर देश के तरुण वर्ग का ह्रास रुके—इन हरे-भरे पौधों की हरियाली 'शम्बूक' न चाट जाएँ, महँगाई न बढ़े, 'फिरकापरस्ती और जातिवाद' का सफाया हो, 'आर्थिक हित के छोरों' की भी सतर्क रक्षा होती रहे—आदि विषयों को भी कवि ने उठाया है, जिसे हम देशप्रेम के अन्तर्गत ही मानते हैं, और इस प्रकार कवि का देश-प्रेम रचनात्मक और आस्थावादी रूप लिये हुए दिखाई देता है। वह देश में खुशहाली और तरक्की देखने के लिए आतुर है। ऐसी महत् भावना मात्र नागार्जुन की अपनी ही विशेषता है।

१. जीवन के गान, पृ० २०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

व्यंग्य कविताओं में नागार्जुन बेजोड़ हैं। वह अपने व्यंग्य की तीक्ष्णता के कारण प्रमुख रूप से एक व्यंग्यकार ही माने जाते रहे हैं। अन्य कवियों में कम और केदार में कुछ अधिक व्यंग्य सामाजिक वैषम्य की उत्तरदायी व्यवस्थाओं एवं सरकार की अक्षमताओं पर किया गया है, पर नागार्जुन ने इन पर जमकर व्यंग्य प्रहार किया है। "ये कविताएँ दिल पर चोट करनेवाली हैं, कर्त्तव्य की याद दिलानेवाली हैं तथा राह दिखानेवाली भी हैं। वे इस बात की पेशगी हैं कि दलित और अपमानित जनता अपनी बेड़ियाँ तोड़ कर रहेगी।"[१] इन व्यंग्य कविताओं के मूल में कहीं-कहीं सामाजिक पीड़ाओं से उत्पन्न आक्रोश दिखाई देता है। अन्तर्वेदना की तीव्रता से उत्पन्न ये व्यंग्य विरोधियों को तिलमिला देने में सक्षम हैं। अन्य कवियों के हल्के-फुल्के व्यंग्य कहीं-कहीं बेअसर हो जाते हैं। जबकि नागार्जुन के व्यंग्य-प्रहार अपने विरोधियों का मर्म बेध देते हैं। उनकी कमजोरी कहीं-कहीं व्यक्तिगत आक्षेपों पर उतर आने की रही है। पर इधर के वर्षों में लिखे उनके व्यंग्य—चीन-रूस की साम्राज्यवादी नीतियों पर, गाँधीजी के शिष्यों पर, आदि बड़े ही उत्कृष्ट कोटि के हैं। 'मंत्र' कविता के रूप में उन्होंने व्यंग्यविधा को एक नया और उच्च स्तर दिया है, इससे वे अपने समशील कवियों की अपेक्षा सहज ही ऊपर उठे हुए दिखाई देते हैं। नागार्जुन के व्यंग्य की उत्कृष्टता और पैनेपन का कारण रहा है, कवि की निर्भीकता और देश-विदेश की राजनीति पर सतर्क दृष्टि। खरी-खोटी बात सुनाना नागार्जुन का स्वभाव ही है और इसीलिए उनका यह गुण व्यंग्य-काव्य के लिए वरदान सिद्ध हुआ है।

इसके अतिरिक्त इन कवियों की अपेक्षा नागार्जुन की एक प्रमुख विशेषता रही है—सम-सामयिक बोध को अपनी कविताओं में महत्त्वपूर्ण स्थान देना। युग-बोध की चेतना इन कवियों में भी है, पर नागार्जुन में उसका प्रसार विशेष रूप से दिखाई देता है। देश के जीवन में आयी ऐसी कोई घटना शायद ही बची हो जिसे नागार्जुन की लेखनी का स्पर्श न मिला हो। देश-विदेश की समकालीन राजनीतिक घटनाओं पर निर्भीक होकर उन्होंने मत-प्रकाशन किया है, जिसका अभाव उनके अन्य समशील कवियों में दिखाई देता है। नागार्जुन किसी लाभ के पद से बँधे न होने के कारण, व्यंग्यीय तिक्तता के परिणाम से बेफिक्र हो, लिखते हैं। नक्सलवाद, शिवसेना, सिण्डीकेट, अमेरिकी कूटनीति आदि सब पर उन्होंने करारा व्यंग्य किया है। इस दृष्टि से उन्होंने व्यावहारिक राजनीति का सूक्ष्म पर्यवेक्षण करने का सफल प्रयास किया है। सामयिक राजनीति में व्याप्त अनीतियों से उत्पन्न प्रतिक्रिया को व्यक्त करते हुए सम्मुख आये

१. डॉ० रामविलास शर्मा, युगधारा—अन्तिम पृष्ठ : सम्मति।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भ्रष्टाचारियों पर कवि ने भरपूर और बेझिझक व्यंग्य वार किये हैं। इन समस्त विद्रोही स्वरों के होते हुए भी नागार्जुन की क्रान्ति सृजनात्मक है। अशिव शक्तियों के ध्वंस के तीव्र घोष के बाद मानवता की सुन्दर प्रतिमा का निर्माण होते उनके काव्य में देखा जा सकता है।

नागार्जुन अपने समशील कवियों की अपेक्षा सामयिक राजनीतिक कविताओं का प्रणयन कर एक प्रमुख एवं प्रखर व्यंग्यकार के रूप में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पञ्चम अध्याय

नागार्जुन के कथा-साहित्य का वर्गीकरण और तत्त्वपरक अनुशीलन

नागार्जुन ने अपने समृद्ध कथा-साहित्य से हिन्दी उपन्यास-प्रेमियों को उपकृत किया है। इनके उपन्यासों में एक ओर मिथिला की शस्य श्यामला धरती देखी जाती है और उसकी सोंधी-सोंधी महक उठती है, तो दूसरी ओर समाज-सुधार के भी प्रचुर संकेत इनमें विद्यमान हैं। बिहार के जन-जीवन का सम्यक् चित्रण नागार्जुन के उपन्यासों की विशेषता रही है।

हम कुछ विद्वानों के वर्गीकरण को आधार मानकर नागार्जुन के उपन्यासों का वर्गीकरण कर रहे हैं :

डॉ० ओझा का वर्गीकरण : उपन्यास के नाना भेद और प्रकार हो गये हैं, यदि यह कहा जाय कि जितने लेखक हैं उतने ही प्रकार के उपन्यास हैं तो अधिक अत्युक्ति न होगी। फिर भी उनको विशेष वर्गों में विभक्त किया जा सकता है। सामान्य दृष्टि से सम्पूर्ण हिन्दी उपन्यास साहित्य को तीन भागों में बाँटा जा सकता है :

(१) बहिर्मुखी उपन्यास, (२) अन्तर्मुखी उपन्यास, (३) समन्वित उपन्यास। डॉ० दशरथ ओझा ने उपन्यासों के तीन वर्गीकरण किये हैं। उनके अनुसार बहिर्मुखी उपन्यास की श्रेणी में वे समग्र उपन्यास समाहित हैं जो मानव-जीवन के बाह्य अंग का अध्ययन करते हैं, अन्तर्मुखी उपन्यास मनुष्य के अन्तर्जगत का निरीक्षण करते हैं। समन्वित उपन्यास उपर्युक्त दोनों प्रकारों का अद्भुत मिश्रण है। बाह्य जगत और अन्तर्जगत का द्वन्द्व तथा उनमें सामंजस्य का चित्रण इसका लक्ष्य है।

अन्तर्मुखी उपन्यास के दो उपभेद हैं : (१) मनोविश्लेषण प्रधान (२) सिद्धान्त प्रधान।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समन्वित उपन्यास के भी दो भेद है : (१) चरित्र प्रधान और (२) समस्या प्रधान ।

हम डॉ० ओझा के वर्गीकरण के प्रकाश में नागार्जुन को देखते हैं तो ज्ञात होता है 'बाबा बटेसरनाथ' और 'वरुण के बेटे' में लेखक की विचारधारा का प्रसारण अधिक है । साम्यवादी सिद्धान्तों पर आधारित होने के कारण इन दोनों को अन्तर्मुखी उपन्यास के विभेद सिद्धान्त प्रधान माना जाना चाहिए ।

उनके अन्य उपन्यासों 'बलचनमा, रतिनाथ की चाची, दुखमोचन, इमरतिया' में चरित्रों का उभार है। 'बलचनमा' एक चरित्रकथा है जिसमें बलचनमा की कष्टपीड़ित गाथा कहते हुए उसके चरित्र का विकास लेखक को अभिप्रेत है। 'रतिनाथ की चाची' उपन्यास में चाची के चरित्र पर लगे दाग को हटाकर उसका वात्सल्यमयी भारतीय नारी के रूप में चित्रण करना लेखक का लक्ष्य रहा है। 'दुखमोचन' में समाज-सेवाओं को चित्रित करते हुए एक आदर्श चरित्र को हमारे सामने लाया गया है । 'इमरतिया' में साधुओं के बीच फँसी एक नारी को लेखक ने चित्रित करना चाहा है। इसलिए इन उपन्यासों में चरित्र-प्रकाशन की प्रधानता पाकर इन्हें समन्वित उपन्यास के विभेद चरित्र प्रधान में रखा जाना उचित होगा ।

'नई पौध,' 'कुम्भीपाक,' 'उग्रतारा' और 'हीरक जयन्ती' उपन्यासों को हम समस्या प्रधान मानते हैं । 'नई पौध' में अनमेल विवाह, 'कुम्भीपाक' में वेश्या-समस्या, 'उग्रतारा' में व्यभिचार और बलात्कार से पीड़ित नारियों की समस्या एवं 'हीरक जयन्ती' में भ्रष्ट नेतृत्व की समस्या उठायी गयी है । इसलिए इन्हें हम समन्वित उपन्यास के दूसरे विभेद समस्या प्रधान में रखते हैं । इनमें पात्रों के बाह्य जगत और अन्तर्जगत का द्वन्द्व और उनमें सामंजस्य का चित्रण हुआ है ।

इस आधार पर उपन्यासों का वर्गीकरण उनमें निहित मूल प्रवृत्ति को परख कर किया गया है। यों किसी एक प्रकार के उपन्यास में दूसरे प्रकार के भेद-विभेद के भी लक्षण पाये जा सकते हैं; जैसे 'रतिनाथ की चाची' और 'बलचनमा' में वर्ग-संघर्ष की बात भी उठी है, पर मुख्य बात जो हमें उपन्यास में दिखाई दी उसे ही वर्गीकरण का आधार हमने बनाया है । "वस्तुतः औपन्यासिक क्षेत्र में वर्गीकरण पूर्ण तथा वैज्ञानिक नहीं हो सकते, फिर भी विश्लेषण ध्येय की सिद्धि के लिए वर्गीकरण की जोखिम को स्वीकार करना पड़ता है ।" वैसे विभाजन की कोई स्पष्ट रेखा उपन्यासों के मध्य खींची भी नहीं जा सकती ।

१. डॉ० सत्यपाल चुघ : प्रेमचन्दोत्तर उपन्यासों की शिल्प-विधि, पृ० १२१।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाश्चात्य विद्वानों का वर्गीकरण : वर्गीकरण की इसी कठिनाई को देखते हुए हेनरी जैम्स दो ही प्रकार के उपन्यास मान सके हैं : उत्कृष्ट और निकृष्ट। लिडेल ने भी उपन्यासों के दो ही भेद माना है : (१) वे उपन्यास जो गम्भीर आलोचना के योग्य हैं और (२) वे जो इस दृष्टि से अयोग्य हैं। नागार्जुन के उपन्यास उत्कृष्ट और गम्भीर आलोचना के योग्य माने जाने चाहिए।

डॉ० चुघ का वर्गीकरण : डॉ० चुघ के अनुसार, "उपन्यास की शिल्पविधि को दृष्टि में रखकर अभी तक अधूरे वर्गीकरण ही हुए हैं।" उनका दावा है कि उपन्यास के तत्त्वों के सामान्य आधार पर अपेक्षतया अधिक पूर्ण वर्गीकरण इस प्रकार हो सकता है :

१. कथानक प्रधान, २. अन्तरंग चरित्र प्रधान, ३. वहिरंग चरित्र प्रधान, ४. देश प्रधान, ५. देश-काल प्रधान, ६. उद्देश्य प्रधान और शिल्प प्रधान।

देश प्रधान उपन्यासों के विभेद में उन्होंने आंचलिक उपन्यासों को रखा है। इस दृष्टि से 'रतिनाथ की चाची, वलचनमा, वावा बटेसरनाथ, वरुण के वेटे, नई पौध' देश-प्रधान उपन्यास की कोटि में रखे जाने चाहिए। किन्तु दूसरी ओर इन्हीं में से कुछ उपन्यासों में समस्या या लेखक की विचारधारा का प्रसारण भी स्पष्ट होने से वलचनमा, वटेसरनाथ, बरुण के वेटे, नई पौध, दुखमोचन, कुम्भीपाक, उग्रतारा, हीरक जयन्ती और इमरतिया उद्देश्य प्रधान वर्ग में सम्मिलित किये जाने चाहिए, क्योंकि उनका कथन है कि "समस्यामूलक, अभिप्राय प्रधान, विचार प्रधान और मतवादी जोश से लिखे गये प्रचार प्रधान उपन्यास उद्देश्य प्रधान वर्ग में आते हैं।"

डॉ० श्यामसुन्दर दास का वर्गीकरण : डॉ० श्यामसुन्दर दास ने अपने **साहित्यालोचन** ग्रन्थ में उपन्यासों का वर्गीकरण इस प्रकार किया है : (१) घटना-प्रधान उपन्यास, (२) सामाजिक अथवा व्यवहार सम्वन्धी उपन्यास, (३) अन्तरंग जीवन के उपन्यास, (४) देश-काल सापेक्ष और निरपेक्ष उपन्यास।

सामाजिक अथवा व्यवहार सम्वन्धी वर्ग के लिए वे लिखते हैं : "इन उपन्यासों में आकर्षण कथानक से हटकर पात्रों, उनके पारस्परिक व्यवहारों तथा उस समाज की रीति-नीति में केन्द्रित हो जाता है जिसके वे पात्र हैं। इन उपन्यासों का कथानक समाज के नर-नारियों के क्रियाकलाप और पारस्परिक व्यवहार के ही अधिक काम आता है।" इस दृष्टि से नागार्जुन के उपन्यास 'नई पौध, कुम्भीपाक, दुखमोचन, उग्रतारा, हीरक जयन्ती, इमरतिया' सामाजिक अथवा व्यवहार सम्वन्धी उपन्यासों के वर्ग में रखे जाने चाहिए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'बलचनमा, बाबा बटेसरनाथ, वरुण के बेटे, रतिनाथ की चाची' देश-काल सापेक्ष उपन्यास माने जाने चाहिए। किन्तु हम इस बात को फिर दोहरा दें कि साहित्य में विज्ञान के सिद्धान्त नहीं चलते। विज्ञान में निश्चित सिद्धान्तों के अनुसार परिभाषाएँ निर्धारित होती हैं पर साहित्य में ऐसा नहीं होता है।

डॉ० मख्खनलाल शर्मा का वर्गीकरण : डॉ० मख्खनलाल शर्मा ने उद्देश्य आधार पर उपन्यासों का जो वर्गीकरण किया है उसमें नागार्जुन के उपन्यास 'रतिनाथ की चाची' 'बलचनमा' 'बाबा बटेसरनाथ' और 'वरुण के बेटे' आंचलिक उपन्यास हैं। आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी के अनुसार, "आंचलिक उपन्यास हम उसे कहते है जिसमें अपरिचित भूमियों और अज्ञात जातियों के जीवन का वैविध्यपूर्ण चित्रण हो।"

'दुखमोचन' 'नयी पौध' 'कुम्भीपाक' और 'उग्रतारा' समाज-सुधारक उपन्यास की कोटि में आते हैं। यों आंचलिकता 'दुखमोचन' और 'नयी पौध' में भी मिलती है, पर मूल भावना उनमें समाज-सुधार की ही है।

मनोरंजन प्रधान उपन्यासों में घटना प्रधान तथा हास्य-व्यंग्य से युक्त दोनों प्रकार के उपन्यास आते हैं। 'हीरक जयन्ती' और 'इमरतिया' व्यंग्यपूर्ण मनोरंजन प्रधान उपन्यास माने जाने चाहिए।

इन सारे वर्गीकरणों से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि नागार्जुन के पहले छः उपन्यास 'रतिनाथ की चाची,' 'बलचनमा', 'बाबा बटेसरनाथ,' 'वरुण के बेटे', 'नई पौध' और 'दुखमोचन' आंचलिक उपन्यास हैं। 'बलचनमा,' 'बटेसरनाथ' और 'वरुण के बेटे' में अपनी साम्यवादी विचारधारा का प्रसार भी लेखक को अभिप्रेत है। इसी विचारधारा का स्पर्श देते हुए 'रतिनाथ की चाची' में चाची के चरित्र को विकसित एवं परिष्कृत करने का लक्ष्य लेखक का रहा है।

'नई पौध' में अनमेल विवाह की सामाजिक समस्या को भी आंचलिकता के साथ उभारा गया है। 'दुखमोचन' समाज-सुधार की भावना से प्रेरित है। 'कुम्भीपाक' 'उग्रतारा,' 'हीरक जयन्ती' और 'इमरतिया' सामाजिक उपन्यास हैं। प्रथम छः आंचलिक उपन्यासों के बाद आंचलिकता की यह धारा क्षीण हुई है और आगे लुप्तप्राय हो गयी है। इन उपन्यासों में क्रमशः वेश्या समस्या, व्यभिचार, बलात्कार के बाद नारी को उचित स्तर दिलाने की समस्या, भ्रष्ट नेताओं और अंत में पाखंडी साधुओं के अनाचारों का चित्रण है। 'हीरक जयन्ती' और 'इमरतिया' में लेखक ने यथार्थवादी चित्रण कर दिया है। समस्या के रूप में इसे प्रस्तुत नहीं किया गया है। पर पाठकों को इस प्रकार देश में व्याप्त नेताओं और साधुओं के पाखंडों से उत्पन्न समस्या से परिचित तो कराया ही गया है और इनसे सतर्क रहने की सीख भी अप्रत्यक्ष रूप से दी गयी है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संक्षेप में इतना ही कहा जा सकता है कि लेखक ने अपने उपन्यासों में सामाजिक समस्याओं—वर्ग-वैषम्य से लेकर विधवा और वेश्या समस्या तक—को अपने उपन्यासों का आधार बनाया है। पहले छः उपन्यासों में आंचलिक वैभव के हृदयस्पर्शी चित्रों को प्रस्तुत किया गया है। एक ही वाक्य में यदि हम कहें तो वह होगा—नागार्जुन ने समाज के निम्नवर्ग का चित्रण, उनकी अपनी समस्याओं, परिवेश और जन-जीवन के साथ किया है।

उपन्यासों का तात्त्विक विश्लेषण :

उपन्यास-तत्वों के विवेचन का आधार पाश्चात्य कथा-साहित्य की कसौटी ही स्वीकार की गयी है। उपन्यास के छह तत्त्व माने गये हैं : (१) कथानक, (२) चरित्र-चित्रण, (३) कथोपकथन, (४) देशकाल, (५) शैली, (६) उद्देश्य।

कथानक, चरित्र-चित्रण और उद्देश्य की दृष्टि से उपन्यासों में एक-दूसरे से भेद होता है। लेखक की शैली और भाषा प्रायः एक सी ही सम्पूर्ण उपन्यासों में पायी जाती है। यह अलग बात है कि उसका विकास या ह्रास कहीं दिखाई देता है। इसी प्रकार देशकाल की योजना की दृष्टि से यदि हम देखें तो नागार्जुन ने मिथिला अंचल या समग्र रूप से विहार को चुना है। इसलिए सारे उपन्यासों की भाषा, शैली और देशकाल योजना पर हम क्रमशः एक साथ ही विचार करेंगे। पहले रचना-क्रम की दृष्टि से हम उपन्यासों में कथावस्तु, पात्र, चरित्र-चित्रण और उद्देश्य को लें।

अभी तक नागार्जुन के दस उपन्यास प्रकाशित हुए हैं। यथा—रतिनाथ की चाची, बलचनमा, बाबा बटेसरनाथ, दुखमोचन, वरुण के बेटे, नई पौध, कुम्भीपाक, हीरक जयन्ती, उग्रतारा और इमरतिया।

१. रतिनाथ की चाची :

इसका प्रकाशन १९४९ ई० में हुआ। इस नाम से नागार्जुन का यह प्रथम उपन्यास है। विधवा गौरी देवी को कस प्रकार समाज के अपमान, अत्याचार और संघर्ष का सामना करना पड़ता है इसका बड़ा करुण और सजीव चित्रण नागार्जुन ने इस उपन्यास में किया है।

कथानक : मुख्य कथा गौरी देवी को केन्द्र बनाकर अन्य छोटी-छोटी घटनाओं को, जैसे किसानों का संघर्ष, निष्क्रिय जयनाथ के इधर-उधर घूमने, रतिनाथ का छात्र जीवन, बागो से उसका प्रणय, उसके ननिहाल जाने, चाची

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की ग्रामसेवा, उमानाथ का कलकत्ता का जीवन आदि पर प्रकाश डालती हुई आगे बढ़ी है।

कथानक में जिज्ञासा उसका प्रमुख गुण होता है, किन्तु इस उपन्यास को पढ़ते हुए ऐसी प्रतीक्षा नहीं रहती कि आगे क्या होनेवाला है। चरम सीमा-विहीन कथानक भ्रूण हत्या के बाद अन्त तक ठेला गया लगता है। निरर्थक विस्तृत ब्योरे; जैसे सुपारी कतरने का ढंग, ट्राम वर्णन, आदि के द्वारा पाठक को पकड़ रखने का प्रयास किया गया है। कथानक से 'मैथिल विधवा निवास की विधवा सुशीला कथा' को जो परिच्छेद १४ में वर्णित है, यदि हटा भी दिया जाय तो कथानक पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। 'बागो और रतिनाथ' के प्रणय प्रसंग को पढ़कर ऐसा लगने लगता है कि इनका स्नेह परिपक्व होकर दाम्पत्य सूत्र में बँधेगा। 'दोनों एक-दूसरे को जी-जान से प्यार करते थे' पर बागो का विवाह अन्यत्र कराना और रतिनाथ का प्रसन्न होना—पूर्व वर्णित प्रणय प्रसंगों की व्यर्थता जहाँ सिद्ध करता है वहीं अस्वाभाविक भी लगता है। इससे पाठकों की मधुर आकांक्षा को ठेस पहुँचती है। "कथानक का संगठन करने में नागार्जुन प्रायः विशेष सफल नहीं रहे हैं। उनके कथानक नीरस, शिथिल और मंद गति से अग्रसर होनेवाले होते हैं।" डॉ० सुरेश सिन्हा के इस कथन की सच्चाई हमें यहाँ दिखाई देती है। वस्तुतः उपन्यास के कथानक का आधार लेखक के जीवन की सत्य घटना है। 'आईने के सामने' पुस्तक में दिये गये इण्टरव्यू को पढ़कर सहज ही इस बात का ज्ञान हो जाता है। नागार्जुन के पिता बड़े उग्र स्वभाव के थे। बच्चों के शिक्षण आदि के प्रति उन्होंने बड़ी उपेक्षा बरती थी। जयनाथ भी पुत्र की पढ़ाई की ओर से लापरवाह दिखाया गया है। अपनी भाभी को उनसे और उपन्यास में गौरी को जयनाथ से गर्भ रह जाता है। फिर चमाइन द्वारा भ्रूण हत्या उसी प्रकार की जाती है जिस प्रकार उपन्यास में। बालक नागार्जुन ने अपने पिता को माँ की छाती पर चढ़ गर्दन रेतता हुआ देखा था, इधर रतिनाथ ने जयनाथ को ऐसा ही करते देखा। "पिता के रुद्र स्वभाव के प्रति इस बालक के हृदय में प्रतिहिंसा की आग कभी-कभी सुलग उठती।" (रतिनाथ की चाची) दूसरी ओर 'आईने के सामने' में नागार्जुन लिखते हैं : "मगर मैं पिता को अन्त तक खुली क्षमा कहाँ दे पाया।"

स्पष्ट है कि लेखक ने बचपन की स्मृति को उपन्यास के कथानक का आधार बनाया है। रतिनाथ के जीवन में घटित घटनाएँ नागार्जुन की अपनी हैं जिसमें उन्होंने कुछ कल्पना का मिश्रण अपनी ओर से कर दिया है। उपन्यास का आरम्भ और अन्त तथा रतिनाथ के शिक्षण आदि की बातें वास्तविक और शेष काल्पनिक हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पात्र और चरित्र-चित्रण : इसमें मुख्य पात्र है गौरी देवी और अन्य सहायक पात्रों में जयनाथ, रतिनाथ, उमानाथ, जयकिशोर और उसकी माँ आदि हैं।

गौरी : नागार्जुन ने गौरी का चरित्र बड़ी कोमलता और संजीदगी से गढ़ा है। ग्राम में इतना विरोध होने के बाद भी वह शान्त और गम्भीर बनी रहती है। रतिनाथ से उसे बहुत प्यार है। वह उसकी छोटी-छोटी आवश्यकताओं का भी ध्यान रखती है। मरते समय अपना दाह-संस्कार करने का आदेश उसे ही दे जाती है।

उमानाथ की मार खाकर भी वह रिरियाती ही देखी जाती है। गर्भपात के बाद उसने अपनी दिनचर्या बदल ली। यह रतिनाथ के शब्दों में पता चलता है : "तुम देवता होती जा रही हो।" और सचमुच जब ग्राम में मलेरिया फैलता है तब चाची अपने विरोधियों की भी सेवा करती है।

अखिल भारतीय सूत प्रतियोगिता में वह प्रथम आती है। "वह मृत्यु की छाया से घिरकर भी महायुद्ध में रूस की विजय की कामना करती है जिससे उसकी सामाजिक चेतना का परिचय मिलता है।" वस्तुतः वह रूढ़िवादी समाज की नारी होने पर भी सामाजिक विचारों में प्रगतिशील है तथा राष्ट्रीय चेतना से प्रभावित। धार्मिक कार्यों में वह विशेष रुचि लेती है। कोई भी उसके द्वार से भूखा नहीं लौटता है। अपनी कठिनाइयों का हल मृत्यु में पाते हुए देख हमें उसपर बड़ा रहम आता है। उसका सारा जीवन विवशता अपमान और दर्द ही दर्द की कभी न भुलाये जा सकने वाली अनूठी दास्तान बन गया है। उसने अपने जीवन के अन्त से स्वयं के द्वारा जयनाथ को कहे गये इस कथन को सत्य करके दिखला दिया : "किसी भी युग में स्त्री को अमृत पीने का सुयोग नहीं मिला, पुरुष को अमृत पिलाकर स्वयं वहविषपान ही करती आयी है।"

रतिनाथ : रतिनाथ गौरी देवी को अत्यन्त प्रिय है। चाची की व्यथा पर वही तो आँसू बहानेवाला है। जयनाथ उसे बाल-सुलभ हरकतों पर ही मार बैठता है। रतिनाथ पढ़ने में तेज, सुशील और आज्ञाकारी बालक है। किन्तु जिस प्रकार कठोर अनुशासन के परिणामस्वरूप एक प्रकार का विद्रोही रूप उभरकर बालक के स्वभाव को गलत मार्ग पर अग्रसर कर देता है वही रतिनाथ के चरित्र में भी हुआ। मोतिहारी जाकर वह भी कुसंगति में फँस जाता है। पुस्तकें चोरी की घटना भी इसी रूप में देखी जा सकती है। वैसे वह बड़ी भावुक प्रकृति का बालक है। मोतिहारी जाते समय एक-एक वस्तु उसे अपनत्व प्रकट करती हुई प्रतीत होती है। वह जब गंगा में चाची की अस्थियाँ प्रवाहित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करता है तब वह सोचता है कि "शालीनता की प्रति में तुमने उस धूर्त का नाम क्यों नहीं बता दिया जो तुम्हारे मस्तक पर कलंक का टीका लग गया।"

जयनाथ : इस उपन्यास का जयनाथ सामन्तयुगीन परम्परा एवं रूढ़िवादी मैथिल ब्राह्मण समाज का प्रतिनिधि पात्र है जो निठल्ला तथा ब्राह्मणवृत्ति पर निर्भर रहता है। "वह सामाजिक चेतना से विहीन पौरुषहीन व्यक्ति है।"

जयनाथ में मानव स्वभाव की अधिकांश दुर्बलताएँ दिखाई देती हैं। वह गौरी देवी को चरित्रभ्रष्ट करता है, मैथिली विधवा आश्रम की सुशीला के प्रति आकर्षित हो जाता है। बड़हड़वा में दिवंगत बहनोई की छोटी भ्रातृ वधू से 'नर्म आलाप' करता है। मछली-मांस युक्त भोजन और भंग उसे बड़े प्रिय हैं। ४०००) रुपये के लिए वह कम उम्र रति का विवाह करना चाहता है। वह चाची के प्रति अपने कुकृत्य को अपनी कृतघ्नता मानता है और कभी क्षमा न करने की मन-ही-मन प्रार्थना करता है। जयनाथ कहीं-कहीं भावुक हृदय भी दिखाया गया है। तीन-चार बार उपन्यास में उसके आँसू भी छलक पड़ते हैं।

उपन्यास के मुख्य पात्र ये ही हैं। इसके अतिरिक्त गौरी की माँ समझदार और सहृदय वृद्धा है। जयकिशोर मिथिला प्रेम में विभोर सज्जन पुरुष है। दम्मो फूफी बड़ी चालाक और वाक्-पटु स्त्री है।

चरित्र-चित्रण में लेखक ने विश्लेषणात्मक—जिसमें पात्रों का चरित्र लेखक द्वारा ही और अभिनयात्मक—जिसमें कथोपकथन से चरित्र स्पष्ट होता है—दोनों विधियों का प्रयोग किया है। उपन्यास में चरित्र-चित्रण ही उसका लक्ष्य रहा है। गौरी से इतना अनर्थ हो जाने के बाद भी उसके प्रति पाठकों की सहानुभूति जाग्रत करा देना नागार्जुन की मामूली सफलता नहीं है। उपन्यास के अन्त तक उन्होंने चाची के सारे दोषों और कलंक का परिहार कर दिया है। रतिनाथ का सुशील स्वभाव, जयनाथ का जाहिल व्यक्तित्व, जयकिशोर का गंभीर और शान्त स्वभाव, उमानाथ की उग्रता, कमलमुखी की कृपणता हमारे सामने स्पष्ट हो जाती है। बागो का सुन्दर परिचय लेखक ने कम ही शब्दों में दिया है: "कम बोलना, स्निग्ध और स्थिर आँखों से देखते रहना, मुस्कान और सौन्दर्य—यही बागो का परिचय है।"

किन्तु नागार्जुन के पात्र जहाँ-कहीं अपनी स्थिति से उच्च स्तर की बातें करते हैं वहाँ उनके चरित्र में अस्वाभाविकता देखी जा सकती है। ग्राम शुभंकरपुर की गौरी राजनीति की बातें और रूस की प्रशंसा करती है। नारी जाति के युगों से चले आते त्याग के प्रति उसका दार्शनिक विवेचन उसे ग्रामीण नारी की स्थिति से ऊँचा उठा हुआ सिद्ध करता है। ऐसे स्थानों पर नागार्जुन के ये पात्र आरोपित प्रतीत होते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उद्देश्य : 'उपन्यास लिखते समय हर उपन्यासकार का एक निश्चित उद्देश्य रहता है। उसी के अनुसार वह वह कथानक की योजना बनाता है।

इस उपन्यास में उपान्यासकार ने समाज द्वारा सतायी गयी एक कुलीन विधवा के जीवन की करुण कथा का अंकन करना ही अपना उद्देश्य बनाया है। चाची की करुण कथा कहते हुए लेखक का उद्देश्य उसके प्रति पाठकों की सहानुभूति जाग्रत करना रहा है।

प्रगतिशील होते हुए भी नागार्जुन इस कष्ट गाथा का कोई हल नहीं दे सके, और उपन्यास दुखान्त बनकर रह गया। उपन्यास पढ़कर पाठक के मन में एक ही विचार आता है कि क्या एक विधवा और असहाय नारी समाज के भेड़ियों से त्रस्त होकर इसी प्रकार दण्ड भोगा करे ? तिरस्कृत ही हुआ करे ? आँसू की लड़ियों से ही उसका शेष जीवन गुँथा रहे ? और पाठक के इस प्रश्न को लेखक ने यों ही छोड़ दिया है। नागार्जुन प्रगतिशील उपन्यासकार हैं, इसलिए उन्हें जयनाथ और गौरी का विवाह कराना था पर उन्होंने ऐसा नहीं किया।

वस्तुतः जैसा कि पूर्व में कहा गया है कि नागार्जुन ने बचपन में देखी गयी अपनी पारिवारिक कहानी को ही उपन्यास का रूप दिया है। बालक नागार्जुन को उनकी विधवा चाची भी इसी प्रकार प्यार करती रही होंगी जैसा रतिनाथ को गौरी देवी करती थीं। यही प्यार की स्मृतियाँ और चाची की करुण मृत्यु नागार्जुन के हृदय को वयस्क होने के बाद सालती रही होगी। चाची के प्यार भरे हाथ की गर्मी का अहसास, पिता की क्रोधी मुखाकृति और उनका व्यवहार लेखक को कुछ लिखने के लिए विवश करते रहे होंगे। लगता है, नागार्जुन ने चाची के प्रति अपनी भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करने और उनकी कृपा से उऋण होने के प्रयासस्वरूप इस उपन्यास की रचना की है। मात्र चाची के चरित्र का सहानुभूतिपूर्ण चित्रण करना ही लेखक को अभिप्रेत रहा है अन्यथा जयनाथ और गौरी का विवाह होना तो वे भी आवश्यक मानते हैं। नागार्जुन ने लिखा है : "मेरा वश चलता तो उस अधेड़ उम्र में भी आप दोनों की नई शादी वैदिक विधि से करवा देता। पर मैं तो उन दिनों दस-ग्यारह साल का बालक था—मातृहीन, रोगी और डरपोक।"

दूसरे, इस उपन्यास में नागार्जुन ने समाजवादी यथार्थवाद को चित्रित करने का प्रयत्न किया है जिसमें उन्हें सफलता प्राप्त हुई है। इस प्रकार लेखक ने शुभंकरपुर और आसपास के कृषकों में पनपती हुई वर्गसंघर्ष की भावना का चित्रण करते हुए जमींदारों द्वारा उनका शोषण, काँग्रेसियों का कुचक्र, कृषकों की जागरूकता का प्रतीक उनका नारा 'कमाने वाला खाएगा'—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इसके चलते जो कुछ हो' आदि को व्यक्त करना भी अपना उद्देश्य बनाया है।

क्षेत्र की संस्कृति, बोली-बानी, परिवेश, परम्पराएँ आदि से परिचित कराना भी नागार्जुन का गौण उद्देश्य रहा है। अपने उद्देश्य को व्यक्त करने में लेखक को सफलता मिली है।

२. बलचनमा :

'बलचनमा' का प्रकाशन १९५२ ई० में हुआ। 'बलचनमा' नागार्जुनकी उपन्यास-कला का कीर्तिस्तम्भ है। यह एक आंचलिक उपन्यास है जिसकी सारी कथा प्रमुख पात्र बलचनमा के मुख से कहलायी गयी है।

कथानक : कथानक को नागार्जुन ने बलचनमा की कई स्मृतियों से सजाया है; जैसे, मालिक-मालिकाइन की अत्यन्त निम्नस्तरीय कृपणता और अत्याचार, बलचनमा द्वारा राधे बाबू के ससुराल जाने, सबूरी मंडल का भैंस-पालन, सुखिया का भूत भगाना, उसका धान रोपना, बीमार बैल के प्रति सहानुभूति, उसकी प्रथम रेल-यात्रा, आश्रम की दिनचर्या. आदि।

इसमें बलचनमा के जीवन का खण्डचित्र है। उपन्यास का आरम्भ आत्म-वृत्तात्मक विधि से हुआ है। यहाँ प्रमुख पात्र बलचनमा प्रथम पुरुष में अत्यन्त सरल सीधी विधि से कहानी का आरम्भ करता है।

"प्रायः सवा दो सौ पृष्ठों तक के विस्तार के बावजूद न कथा, न नायक का ही कुछ विकास हो पाता है, इसलिए हताश होकर कहानी समाप्त कर दी जाती है।" हमें डॉ० लक्ष्मीकांत सिन्हा का यह कथन कुछ अतिवादिता एवं लेखक के सम्बन्ध में किन्हीं पूर्वाग्रहों से ग्रस्त मालूम पड़ता है। 'बलचनमा' को पढ़कर उसका सम्पूर्ण व्यक्तित्व, चरित्र उसकी दृढ़ता हमारे सामने स्पष्ट हो जाते हैं – शोषण के खिलाफ उसका फरसा उठा लेना, जमींदार द्वारा बहन के प्रति किये गये व्यवहार के आगे सिर न झुकाना, आदि उसके चरित्र के निर्णायक तत्त्व हैं जिनसे नायक का चरित्र-विकास स्पष्ट होता है। इसलिए हताश होने जैसी कोई बात हम नहीं देखते। कथानक का पूर्ण विकास चाहे न हुआ हो पर उसमें रोचकता तो पर्याप्त है। वैसे यह उपन्यास अभी पूरा नहीं हुआ है। नायक के बेहोश होकर गिर जाने तक इसका प्रथम भाग है। दूसरा भाग नागार्जुन लिखनेवाले थे पर अभीतक न लिख सके।

लेखक अपने पात्रों से इतना परिचय और आत्मीयता स्थापित कर लेता है कि पात्र स्वयं अपने प्रति लेखक के अन्याय को उसके सम्मुख रखते प्रतीत होते हैं। दूसरे शब्दों में यों कह लीजिए कि पात्रों का प्रतिबिम्ब लेखक के मानस में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमेशा घूमा करता है। 'बलचनमा' की अपूर्णता स्वयं लेखक को भी कचोटती रही है। 'आइने के सामने' में दिये गये 'इन्टरव्यू' में लेखक का इस सम्बन्धी दर्द व्यक्त हुआ है।

श्री हीरा प्रसाद त्रिपाठी का मत भी इस प्रसंग में पठनीय है : "श्री नागार्जुन के आंचलिक उपन्यासों को पढ़ते समय हमारे सामने यथार्थवाद से सम्बन्धित एक और समस्या उठ खड़ी होती है। वर्ण-वस्तु के स्तर पर भी नागार्जुन के उपन्यासों में यथार्थवादी चित्रण तो हमें प्राप्त होता है, किन्तु जहाँ कहीं सम-सामयिक वास्तविकताओं के तटस्थ निरूपण का अवसर आता है वहाँ वे अपना सन्तुलन खो बैठते हैं, छोटी-छोटी अत्यन्त साधारण घटनाओं के प्रवाह को अपने तथाकथित मार्क्सवादी सैद्धान्तिक आग्रह के कारण लेखक ने स्थान-स्थान पर इतने अस्वाभाविक ढंग से चित्रित किया है कि वह पाठक पर विपरीत प्रभाव छोड़ता है। उपन्यास के भीतर किसी सैद्धान्तिक, राजनीतिक या आर्थिक मान्यता को स्थान देना कदापि अनुचित नहीं है। शर्त केवल एक है कि वह मान्यता अथवा सिद्धान्त के सरल, स्वाभाविक प्रवाह का अंग बन जाय, नीर-क्षीर न्याय से उसमें मिल जाय, न कि पैबन्दी की तरह अपने अस्तित्व की अलग घोषणा करता रहे।" (समालोचक, अंक १)

हमारा विचार है, नागार्जुन द्वारा साम्यवादी सिद्धान्तों की स्थापना, पात्रों के निम्नस्तरीय जीवन के प्रकाश में स्थापित हुई है, इसलिए वह ऐसा नहीं खटकता कि कथानक की रोचकता को आघात पहुँचे। पाठक, पात्रों के जीवन की घटनाओं के बराबर सहमत होता चलता है। बलचनमा की पीड़ाएँ उसकी स्वयं की भोगी हुई हैं।

बलचनमा द्वारा फूल बाबू के साथ पटना जाने तक की घटना को कथानक की प्रस्तावना समझना चाहिए। अपने अभावों और पीड़ाओं को बताते हुए इसमें पात्रों का परिचय उसने दिया है। उसके लौटकर आने और गौना करा लाने तक की घटनाएँ उपन्यास का मध्य है। परिच्छेद सात से उपन्यास का कथानक अन्त की ओर अग्रसर होने लगता है। बलचनमा पर जाल डालने और मारने की घट-नाएँ उपन्यास की चरम सीमा कही जानी चाहिए, जिसे पढ़ते-पढ़ते पाठक बड़ी बेचैनी महसूस करता है। बलचनमा की विवशता, उसका जाल से फँस जाना, उसे अपनी विवशता लगने लगती है। 'गोदान' में प्रेमचंदजी ने जिस प्रकार ग्रामीण कथा का सम्बन्ध शहर से जोड़ा है, उसी प्रकार बलचनमा की कथा फूल बाबू, मोहन बाबू और पटना शहर से जोड़ी हुई है। बलचनमा के ये जोड़ स्वाभाविक बन पड़े हैं, खटकते नहीं। इसका कारण है बलचनमा का स्वयं वक्ता होना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० चुघ का मत है: 'नागार्जुन का लक्ष्य किसी सुगठित कथावस्तु के निर्माण का नहीं था। वस्तुतः यह बलचनमा के जीवन के खण्डचित्र के साथ-साथ उसकी अनुभवगाथा भी है। यदि इस उपन्यास के कुछ अनुभव-प्रसग निकाल दिये जायँ तो बलचनमा की व्यक्तिगत जीवनकहानी में कोई अन्तर नहीं आएगा जैसे सुखिया का भूत भगाने का प्रसग आदि।"

अपने कथानक में "नागार्जुन ने दैनिक जीवन के एक-एक क्रिया-व्यापार—सोना, उठना, शौच. स्नान आदि—का भी वर्णन किया है। उपर्युक्त विस्तृत वर्णन ब्योरे कहीं-कहीं कथा में गतिरोधक तथा कहीं अशिष्ट होते हुए भी बलचनमा जैसे ग्रामीण बर्बर के मुख से अधिक नहीं खटकते।"

बलचनमा की भोली-भाली बातें सुनने से जी नहीं उबता, कथानक में प्रवाह बने रहने से सरसता बनी रही है। "इसमें एक भी वाक्य निरुद्देश्य और व्यर्थ का प्रयुक्त नहीं किया है।"

पात्र और चरित्र-चित्रण : उपन्यास का प्रमुख पात्र बलचनमा है। आंचलिक उपन्यासों का उद्देश्य होता है— समग्र अचल की कहानी कहना। इसीलिए इसमें बहुसंख्यक पात्रों की क्षणिक झाँकियाँ मिलती हैं। बलचनमा में लेखक ने अपनी इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए अनेक पात्रों की सृष्टि की है। इसलिए यहाँ गौण पात्रों की भरमार हो गयी है; यथा—मालकिन गुनमन्ती, सुखिया नौकरानी, सबूरी मडल, माँ, दादी, रेबनी, छोटे मालिक, दामो ठाकुर, धनवन्ती चाची, मनियार चाचा मित्र चुन्नी, विधवा जानकी, महेन्द्र बाबू, फूल बाबू, अनीता, लवंगलता, शुभंकर ठाकुर, सुगनी, डा० रहमान, लतीफ, कामेन्द्र प्रसाद नारायण सिंह, स्वामीजी, रामखेलावन, पचकोड़ी, कपिलेसर, विपिन बिहारी, हमीदा, ब्रजबिहारी, बल्ली बाबू, जमींदार सादुल्ला खाँ, बभोला झा आदि।

बलचनमा अपनी स्मृतियों को बड़ी संजीदगी से व्यक्त करता है, इसमें जिन-जिन व्यक्तियों के सम्पर्क में वह आया सबसे सम्बंधित घटना देना आवश्यक था, इसलिए पात्र बढ़ गये हैं।

नायक : बलचनमा उपन्यास का नायक है। उपन्यास के नाम से भी स्पष्ट है कि लेखक भी उसे नायक मानता है। बलचनमा के रूप में नागार्जुन ने एक वामपंथी चरित्र का उद्घाटन किया है।

वह अत्यन्त सरल प्रकृति का, परिश्रमी और दृढ़चरित्र बालक है। भैंस को सम्हालने में वह अपनी ओर से कोई कसर नहीं रखता। वह सबूरी मंडल के पशु-पालन की अच्छी विधि सीखता है। कम उम्र में ही वह अढ़ाई कोस दूर रेलवे स्टेशन तक मालिक का वजनदार बेडिंग और सूटकेस उठाकर ले जाता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हैं। श्रम ही उसका जीवन है, चरित्र का वह इतना दृढ़ है कि जब मुखिया उसके शरीर का अनुचित लाभ उठाना चाहता है तब वह उसे फटकार देता है।

काम करते समय उसे खेत में बस फसल दिखाई देती है, और हाथ में हँसिया। गजब का फुर्तीला वह है। जिस लगन से अपने खेत में वह काम करता है, उसी मेहनत और ईमानदारी से मजदूरी पर बुलानेवालों के खेत में भी। उसकी ईमानदारी सबको ज्ञात है। उसका उत्साह खेती की उन्नति करने और गन्ने बोने में दिखाई देता है।

बलचनमा के बचपन की उन घटनाओं पर, जब वह जमींदार के यहाँ भैंस चराता है, विचार करते हैं तो उसकी कल्पना से ही हम सिहर उठते हैं। उसका जूठन खाना, ठंढ के दिनों में ठिठुरना, बकरी की भींगणियाँ जलाकर आग तापना या गुड़ बनाने की भट्ठी के सामने रात बिताना, माँ और दादी के द्वारा आम की गुठलियों को चूर-चूर कर फाँकना आदि बड़े करुणोत्पादक दृश्य हैं। उसका यह कथन सत्य है : "हमारा बचपन मालूम नहीं कै घड़े आँसुओं से सींचा गया है।"

फूल बाबू के साथ पटना आने में उसे जीवन के नये अनुभव होते हैं। बलचनमा उन सबके प्रति जो उसके साथ जरा भी प्रेमपूर्ण व्यवहार करते हैं, कृतज्ञ दिखाया गया है। यह एक सच्चे भारतीय का गुण है जो उसमें है। इसीलिए वह सबूरी मण्डल, फूल बाबू, राधे बाबू की सेवा हृदय से करता है।

फूल बाबू के पास आकर वह रहन-सहन का शहरी ढंग सीख जाता है।

उसे अपनी माँ पर बड़ा अभिमान है, वह कहता है—'बड़े भगमत को ही ऐसी माँ मिलती है भैय्या।"

उसमें बचपन से ही उच्च वर्ग की नीचता के प्रति आक्रोश है। रेबनी प्रकरण में वह जमींदार के प्रति कहता है : "चाहे फाँसी चढ़ूँ मगर कभी जालिम के सामने सिर नहीं झुकाऊँगा।" बलचनमा को पढ़ते हुए प्रेमचदजी के गोबर की याद आ जाना स्वाभाविक है।

गोबर ने भी जमींदारों की खोखली भक्ति-भावना पर इसी प्रकार आक्रोश व्यक्त करते हुए कहा था : "काम करना पड़े तो सब भक्ति-भाव भूल जाए।" बलचनमा में भी वैसा ही, बल्कि उससे बढ़कर गर्मी और कुछ कर डालने का जोश है।

बलचनमा को हास्य-विनोद भी पसन्द है। वह चुन्नी से कहता है : "तुझे तो न अपने भैंस से फुरसत है न मेहरिया से, भैंस खोलता है तो मेहरिया बँधी रहती है। मेहरिया को चराता है तो भैंस बँधी रहती हैं।" और भी देखिए—वह कहता है, "भाभी ने दुलती झाड़ी है? चोट लगी हो तो चलो मालिश कर दूँ, पटने से सीख आया हूँ।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उसे पशुओं के प्रति भी हमदर्दी है, आरम्भ में ही वह भैंस सम्हालते समय उसे अपने परिवार में सम्मिलित चौथा सदस्य बतलाता है।

मिसराइन के दुर्बल बैल के प्रति भी उसे ऐसी ही सहानुभूति है। अपनी सेवा से वह बैल को दौड़ने लायक कर देता है। वस्तुतः लेखक ने उसे भावुक प्रकृति का चित्रित किया है। पटना जाते समय माँ से लिपट कर उसका रोना, शहर में रहते हुए ग्राम की एक-एक स्मृति उसके मन में उभरना, पटना में फूल बाबू की गिरफ्तारी की बात सुनकर उसका सुबक-सुबक कर रोना, उसकी आँखें डबडबा जाना, लतीफ का हरा-भरा खेत काटना देख उसकी आँखें छलछला उठना, धान रोपने का शब्दचित्र व्यक्त करते हुए हृदय भर-भर आना, उसकी सोने-सी बच्ची मुंगिया के प्रति उसका उमड़ना—ये सब उसे भावुक हृदय का सिद्ध करने के लिए पर्याप्त उदाहरण हैं। डॉ० चुघ के इस कथन से हम सहमत हैं कि "ऐसा ही व्यक्ति तो वर्ग-विषमता को देखकर तड़प सकता है और क्रान्ति तक का आह्वान कर सकता है।"

हुआ भी यही। कृषक संघर्ष में उसका सक्रिय सहयोग रहा। सोशलिज्म की मूल बात 'जो काम करेगा वह खाएगा' से वह बड़ा प्रभावित हुआ। चन्दा इकट्ठा करवाने में उसने मदद की। उसे यदि छल से काबू में न किया गया होता तो वह दो-चार को अवश्य ही सुला देता।

"बलचनमा के चरित्र के अन्तिम भाग में विकास की त्वरा अधिक है। वह जैसे पहले से सोशलिस्ट बना बैठा था। बलचनमा के चरित्र के विकास के अन्य कारण क्योंकि स्वाभाविकता से व्यक्त हुए हैं, अतएव यह कमी कुछ खटक कर रह जाती है।" डॉ० चुघ के इस कथन में कुछ औचित्य अवश्य है। लेखक बलचनमा के भविष्य के सम्बन्ध में पहले से ही सोच कर चला है और इसीलिए उसने बलचनमा को घुमाते-घुमाते डॉ० रहमान की सभा का श्रोता बना दिया है।

लेकिन बलचनमा का सारा चरित्र जान लेने पर तो वह हमारा चिर सहचर प्रतीत होने लगता है। "भैय्या, क्यों ठीक है न—कहोगे तो नहीं किसी से, बाजी तो नहीं बदोगे" आदि शब्दों से युक्त उसकी बातचीत हमारे हृदय में उसके प्रति बड़ा कोमल स्थान बना लेती है। वह बड़ी जल्दी पाठकों से घनिष्टता स्थापित कर लेता है।

फूल बाबू का जो चरित्र 'रेबनी प्रकरण' के बाद वर्णित हुआ है, पूर्व में उसके जरा भी संकेत नहीं हैं। अचानक ऐसा शानदार युवक भ्रष्टाचारी कैसे बन गया? क्या लेखक अप्रत्यक्ष रूप से यही कहना चाहता है कि खादी पहनते

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ही उसमें भी परिधान का प्रभाव इस रूप में प्रकट हुआ ? लेखक द्वारा यह चरित्र-परिवर्तन आकस्मिक लगता है। इसी प्रकार राधे बाबू ने भी दल-बदल कर लिया है।

बलचनमा की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए डॉ० महेन्द्र चतुर्वेदी ने ठीक कहा है : "उसमें विद्रोह की चिनगारी है। भाग्य और ईश्वरेच्छा को वह अन्तिम सत्य मानने को तैयार नहीं। इसमें नागार्जुन ने नये विद्रोही किसान के दर्शन किये हैं।" (हिन्दी उपन्यास) डॉ० चुघ के अनुसार, "इस उपन्यास का नायक हिन्दी के श्रेष्ठ यथार्थवादी नायकों की परम्परा में अपना प्रमुख स्थान रखता है। उसकी तुलना प्रेमचंद के होरी और अश्क के चेतन जैसे नायकों से की जा सकती है। उसका चरित्र बड़ी प्रगतिशील विचारधारा एवं नवोन्मेष का प्रतीक है। उसका चरित्र-चित्रण नागार्जुन ने इतनी कलात्मक एवं यथार्थवादी शैली के माध्यम से किया है कि वह उनका गढ़ा हुआ नायक न प्रतीत होकर परिवर्तनशील यथार्थ का उत्पन्न नायक प्रतीत होता है।"

'गोदान' के होरी को हम परिस्थितियों के सामने झुकते, उनसे हारते और टूटते हुए देखते हैं। वह परिस्थितियों के आगे हताश है, उसमें जीवन का अन्त हमें दृष्टिगोचर होता है, बलचनमा में आरम्भ में, आशा की रश्मियाँ हमें दिखाई देती है। होरी प्राचीन परम्पराओं और धार्मिक अँधविश्वासों से ग्रस्त पात्र है। बलचनमा इन्हें नहीं मानता, वह बाहुबल पर भरोसा करता है। वह लड़कर, संघर्ष करके अपने अधिकार ले लेना चाहता है, वह फरसा भी उठा लेता है। निःसंदेह बलचनमा होरी से आगे बढ़ा हुआ दिखाई देता है।

पात्रों के चरित्र-चित्रण पर प्रकाश डालते हुए डॉ० लक्ष्मीकान्त सिन्हा लिखते हैं : "न मालिकाइन न मालिक न फूल बाबू न बलचनमा की माँ न रेवनी किसी के भी शील में कोई चारित्रिक विरलता या विशेषता नहीं है।" जबकि बलचनमा की माँ गरीब और विधवा होते हुए भी दृढ़ चरित्र की परिश्रमी और भावुक ग्रामीण नारी है। इस परिवार के पास खाने को पेट भर भोजन भी नहीं है। उसने बलचनमा और रेवनी का पालन बड़ी कठिनाई से किया पर वह बलचनमा को हमेशा सिखाती आयी है कि 'बबुआ बलचनमा, मर जाना लाख गुना अच्छा है, मगर इज्जत का सौदा करना अच्छा नहीं।" वह मार खाती रहती है किन्तु जमींदार को रेवनी का शील भंग नहीं करने देती। स्वयं रेवनी भी माँ के समान दृढ़ चरित्रवाली परिश्रमी बालिका है। इसलिए डॉ० सिन्हा का यह कथन भी एकपक्षीय और अति को स्पर्श करता हुआ है।

पात्रों का चरित्र लेखक ने इस कुशलता से गढ़ा है कि हम जमींदारों की कुटिलता, मालिकाइन की नीचता क्षुद्रता सबसे परिचित हो जाते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उद्देश्य : नागार्जुन ने वलचनमा में भारत की पीड़ित, गरीव और शोषित जनता की भावनाओं को वाणी प्रदान करने का उद्देश्य वनाया है। नागार्जुन समाजवादी यथार्थवाद के प्रवल समर्थक हैं, उनके मन में निम्न समझे जाने वाले समाज के लिए, जो उच्च वर्ग द्वारा शोषित किया जाता रहा है, वड़ा दर्द है। लेखक ने इस उपन्यास के माध्यम से उन्हें संगठित किया है, और अपने अधिकारों के प्रति सजग होने के लिए क्रांति का विगुल वजाया है।

लेखक श्रम में आस्था रखने वाले समाज का निर्माण करना चाहता है। उसका नारा है, 'कमाने वाला खाएगा—इसके चलते जो कुछ हो' 'इन्क्लाव जिन्दावाद।' उसका उद्देश्य किसानों-मजदूरों को संगठित करने और संघर्ष के लिए आह्वान करने का रहा है। जमींदारों से लोहा लेने के लिए वह उन्हें निडर वने रहने का संदेश देना चाहता है। यही प्रेरणा उसने शर्माजी के ओजस्वी भाषण से भी दिलवाई है। इस संघर्ष के लिए लेखक ने आरम्भ से ही समुचित पृष्ठभूमि तैयार की है। यथार्थवादी ढंग से नायक को अभावों एवं अत्याचारों से ग्रस्त दिखलाकर वर्ग-संघर्ष के लिए प्रेरित किया गया है।

वलचनमा एक यथार्थवादी उपन्यास है। "यथार्थवादी साहित्य की सवसे वड़ी विशेषता यही है कि वह समाज के मूल में सक्रिय क्रांतिकारी शक्तियों को पहचान कर और उनके द्वारा वढ़ते हुए आन्दोलन का उल्लेख कर पूँजीवाद के नाश और निम्न वर्ग की विजय में पूरी आस्था व्यक्त करे, जिससे निराशा तथा जीवन के दाँव हारे हुए निम्न स्तर के लोगों में आशा का संचार हो, और वे अपने को इस योग्य वना सकें, कि समाज की विषम परिस्थितियों से वीरता के साथ संघर्ष कर सकें।"[1]

नागार्जुन ने अपने उपन्यास 'वलचनमा' में कृषकों को क्रांति के लिए तैयार किया है। लेखक को उनकी गरीवी और शोषण से हार्दिक सहानुभूति रही है। इसका उसने यथार्थवादी चित्रण प्रस्तुत किया है। कृषकों में आशा का संचार करना और उन्हें अपनी संगठित शक्ति से परिचित कराना लेखक का ध्येय रहा है। वह सामाजिक असमानता अर्थात् वर्ग-वैषम्य समाप्त कर वर्ग-विहीन समाज की स्थापना करना चाहता है। 'श्रम करो और खाओ' यही उसका ध्येय है। रूस की समाजवादी व्यवस्था का प्रभाव लेखक पर है, और उसी के अनुसार वह "सबकी जिम्मेदारी सरकार उठाएगी, मुफ्त खाना किसी को नहीं मिलेगा" की वात कहता है।

बलचनमा को सामने रखकर लेखक भारत के कृषकों को वैसा ही प्रगतिशील, परिश्रमी, साहसी, अन्याय के आगे सिर न झुकाने वाला, चरित्रवान

१. हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद : डॉ० त्रिभुवन सिंह, पृ० ३३।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और सरल हृदय कृषक बनने की प्रेरणा देना चाहता है।

लेखक का दूसरा उद्देश्य अपने अंचल की बोली-बानी, रीति-रिवाज, खान-पान, परिवेश, संस्कृति, लोकगीत आदि का परिचय देना भी रहा है। इस दृष्टि से यदि 'बलचनमा' को हिन्दी साहित्य का सर्वश्रेष्ठ आंचलिक उपन्यास कहा जाय तो अनुचित न होगा। वैसे भी यह हिन्दी संसार में आंचलिक उपन्यासों के पदार्पण की दृष्टि से सर्वप्रथम रहा है। मिथिला का जन-जीवन इस उपन्यास में उभरता हुआ लगता है। वस्तुतः बलचनमा जन-जीवन के निम्न वर्ग का प्रतिनिधि नायक है।

कृषकों की दुखती रग को बारीकी से पहचान कर जमींदारों के शोषण, अत्याचार, अमानवीयता, दुराचार आदि का सफल चित्रण करना लेखक का लक्ष्य है। उसने मात्र शोषण ही नहीं चित्रित किया है, संदेश भी दिया है। उसके उद्देश्य को यदि एक पंक्ति में कहा जाय तो कहना होगा—"उठो, अपने को पहचानो और विरोधी परिस्थितियों को परिवर्तित कर नया समाज बनाओ।"

३. बाबा बटेसरनाथ :

'बाबा बटेसरनाथ' का रचना-काल १९५४ ई० है। 'बाबा बटेसरनाथ' नागार्जुन का तृतीय उपन्यास है। 'रतिनाथ की चाची' और 'बलचनमा' की अपेक्षा लेखक के राजनैतिक विचार-प्रकाशन की तीव्रता इसमें अधिक है। यह एक आंचलिक उपन्यास है।

कथानक : कथानक के आरम्भ में ही लेखक ने भावी वर्ग-संघर्ष के संकेत दे दिये हैं। आगे बरगद बाबा की सुनायी गयी कथा का सूत्र लेखक द्वारा वर्णित कथावस्तु से जोड़ दिया गया है किन्तु इस जोड़-तोड़ के बाद भी पाठक का मन लगा रहे, ऐसा कोई आकर्षण उपन्यास में नहीं है। लेखकीय विचारधारा के आरोपण की तीव्रता तो इसके लिए उत्तरदायी है ही, साथ ही कथानक अपूर्णता का शिकार भी दिखाई देता है। यदि नागार्जुन संघर्षरत जनता के भावी जीवन की भी झलक प्रस्तुत करते तो कथानक में जान आ जाती। पाठक समस्याओं के अन्त पर अपनी दृष्टि स्थिर करने का प्रयास करता ही है कि अचानक लेखक पटाक्षेप कर देता है। घटनाएँ, पात्र आदि लेखक की जकड़ से प्रभावित दिखाई देते हैं। कथानक के द्वारा ग्रामीण समाज के संघर्षरत जीवन का परिचय अवश्य मिलता है पर वह भी अधूरा है। दूसरी बात कि विरोधी पात्रों की कोई सक्रिय गतिविधि रख कर कौतूहल और रोचकता का समावेश लेखक नहीं कर सका है। लेखक की अपनी विचारधारा का वेग इतना तीव्र है कि विरोधियों की हरकतें हास्यास्पद बन जाती हैं। फन्नी का सार्वजनिक भूमि पर हल चलाना और दयानाथ का वहाँ पहुँचना—इस घटना में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विरोध तो है, पर दयानाथ का अत्यधिक पक्ष ग्रहण करने के प्रयास में नागार्जुन ने हल चलाने वालों से ही फन्नी को डँटवा दिया है। सारे लोग उसके विरोधी बना दिये गये हैं। कथानक का आकर्षण वहीं स्थिर रह पाता है जब सत्-असत् दोनों प्रकार के पात्रों में जमकर सैद्धांतिक संघर्ष प्रस्तुत किया जाय, पाठक दोनों की दलीलें सुनकर या गतिविधि देखकर प्रसन्न हों, और अन्त में परिस्थितियाँ जिसके गले में जयमाला डाल दें, जीत उसीकी हो। पर नागार्जुन सब कुछ पूर्व नियोजित करके चले हैं। यह उनके कथानक का एक दोष है।

पात्र और चरित्र-चित्रण : नागार्जुन चरित्र-चित्रण की कला में दक्ष हैं। उनके द्वारा मानव-मन की अभिव्यक्ति बड़ी सशक्त है। इसी कारण पाठकों को अपने पात्रों का पूरा-पूरा परिचय देने में लेखक सफल रहा है।

बरगद बाबा उपन्यास का प्रमुख पात्र है। अन्य पात्र हैं—जैकिसुन, जीवनाथ, दयानाथ, उग्रमोहनदास एम० एल० ए०, जैनारायण, टुनाई पाठक, श्यामसुन्दरदास एडवोकेट, दारोगा रामफल सिंह आदि।

जैनारायण, टुनाई पाठक, नीलाम्बर, जमींदार दासजी आदि शोषक और ग्राम-विरोधी पात्र के रूप में चित्रित किये गये हैं। टुनाई और जैनारायण लालची किसान हैं।

लेखक ने जिस पात्र को हमारे सामने उपस्थित किया है, उसके संक्षिप्त परिचय से ही हम उसे जान गये हैं। उग्रमोहनदास थोड़ी देर के ही लिए हमारे सामने आते हैं, पर लेखक ने क्षेत्र की ग्रामीण समस्याओं के प्रति उनकी स्वार्थलिप्त बेरुखी स्पष्ट कर दी है। इन नेताओं के पास झूठे आश्वासनों का टॉनिक पैटेन्ट औषधि है, जिसे दयानाथ को वे देना चाहते हैं।

एडवोकेट श्यामसुन्दरदास का व्यक्तित्व, उनका जन-सहयोग, प्रकरण की निःशुल्क पैरवी करना, ग्रामीणों से सहानुभूति रखना, संगठन के काम के प्रति चिन्ता, आदि ऐसी बातें हैं जिनके कारण वे सहज ही पाठकों के सम्मान के पात्र बन जाते हैं।

और बटेसरनाथ ? वह तो रेडार है। सारी बातें उसे ज्ञात है। वह क्या नहीं जानता। डॉ० चुघ ने लिखा है : "वह अंचल विशेष के पूर्वेतिहास और उसी के सन्दर्भ में भारतीय इतिहास को बताने वाला ही नहीं, लेखक के राजनीतिक दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति का माध्यम भी है।"

बाबा उच्च विचारों वाला है। वह 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय, लोकानुकम्पाय' के आदर्श को रचनात्मक रूप देने में आस्था रखता है। वह भावुक हृदय है। कविता और संगीत से उसे प्रेम है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वह खल पात्रों की भर्त्सना करता है। पहले उसने जैकिशुन के परदादा द्वारा अपने गोड़े जाने का जिक्र किया, फिर अपने शिशु रूप और आगे की अवस्था को बतलाया। उसने राजाओं के अत्याचार जिसमें शत्रुमर्दनराय के सिर पर चींटे की हंडी उलट देना, आदि कई घटनाएँ सुनायीं। उसकी अभिव्यक्ति बड़ी सशक्त है। उसे जमींदारों से बड़ी नफरत है। वह मजदूरों का समर्थक है। बाबा बड़ा आशावादी है। तरुण शक्ति पर उसे पूरी आस्था है। वह जैकिशुन से कहता है : "भविष्य तेरे जैसे तरुणों के हाथों में है।"

पीड़ित जनों के प्रति बाबा बटेसरनाथ को सच्ची सहानुभूति है। अकाल के समय वह उन सुविधाओं को नहीं लेना चाहता जो साधारण जनों को सुलभ नहीं हैं। बाबा बटेसरनाथ को साम्राज्यवादी शक्तियों और पूँजीपतियों से नफरत है। महारानी विक्टोरिया का उपहास करते हुए वह कहता है : "बनियों की रानी द्रवित हुई तो क्या हुआ।"

बरगद बाबा बकरों की बलि देने की घटना से बड़ा क्षुब्ध होता है। उसकी प्राणी मात्र के प्रति हित-चिन्तन की इसी भावना के कारण गाँव के बच्चे उसे प्यार करते हैं, स्त्रियाँ सूर्य से उसके स्वास्थ्य की कामना करती हैं।

वह प्रमुख राजनीतिक घटनाओं की जानकारी रखता है। गाँधीजी के असहयोग आंदोलन की चर्चा करते हुए वह कहता है : "असहयोगियों और सत्याग्रहियों की शान्तिमय, निहत्थी भीड़ पर लाठी चार्ज की खबरें सुनता तो पत्ते खड़े हो जाते, टूसों से गरम-गरम भाफ निकलने लगती और इन टहनियों में कुछ तनाव-सा महसूस करता।" इससे आन्दोलनकारियों के प्रति उसकी सहानुभूति एवं उसका स्वस्थ दृष्टिकोण व्यक्त होता है। विदेशी माल आने से नष्ट होते हुए ग्रामोद्योगी माल के प्रति भी उसे चिन्ता है। मानव-समाज की सामूहिक प्रगति के लिए चिन्तित होते हुए वह कहता है : "मगर ऊँची जाति वालों का आपसी पक्षपात और 'शुभ-लाभ' के लिए उनकी आपाधापी जब तक मौजूद रहेंगे तब तक मानव-समाज की सामूहिक प्रगति नहीं होगी।" अर्थात् बाबा बटेसरनाथ वर्गविहीन समाज की स्थापना का पोषक है।

बीसवें परिच्छेद में जब बाबा जैकिशुन को फिर से दर्शन देता है तब सारी स्थितियाँ अनुकूल हो गयी होती हैं। सत्पात्रों की विरोधियों पर विजय हो चुकी है। फिर भी वह जैकिसुन को सचेत करता है। उसे व्यक्तिगत स्वार्थ-सिद्धि से दूर रह कर सुखी जीवन के लिए प्रयत्नशील रहने की प्रेरणा देता है। बाबा का आत्मोत्सर्ग हमें महर्षि दधीचि की याद दिलाये बिना नहीं रहता। वह कहता है : "मेरे पेड़ की सूखी लकड़ियों से ईंटें पका लेना। ईंटों से ग्राम कमेटी का मकान तैयार होगा।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस प्रकार बाबा बटेसरनाथ नागार्जुन की विचारधारा का उद्घोषक बन उपस्थित होता है। उसके चरित्र पर लेखकीय प्रभाव की तीव्रता अवश्य है। बाबा की चारित्रिक विशेषताएँ ऐसी अवश्य हैं कि वे पाठक का मर्म छू लेती हैं, जैसे उसका अपने को जलाकर ग्राम-कमिटी के लिए ईंटें पकाने की बात करना, आदि।

पात्रों का परिचय देने में तो लेखक सफल अवश्य रहा है पर लगता है उन्हें कुछ देर के लिए भी वह स्वतन्त्र छोड़ना नहीं चाहता। उपन्यास में चरित्र-चित्रण वहीं सफल माना जाता है या पाठकों को स्वाभाविक लगता है, जहाँ उसमें लेखकीय दखल कम हो। नागार्जुन इस दोष से बच नहीं सके हैं।

उद्देश्य : प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने अपने राजनैतिक मत-प्रकाशन के उद्देश्य की खुल कर व्यंजना की है। लगता है उसके द्वारा कथानक-संगठन का आधार ही अपने मत की पुष्टि रहा है। वटवृक्ष का एक चरित्र उपस्थित कर, उसके मुख से मजदूरों के शोषण का उल्लेख कराकर, वर्त्तमान वर्ग-वैषम्य से उसे जोड़ दिया गया है। लेखक का उद्देश्य सम्पूर्ण उपन्यास में अन्तर्निहित है। लेखक ने इसमें जमींदार-कृषक संघर्ष उपस्थित किया है और मजदूर-संगठन का मंत्र दिया है।

लेखक का उद्देश्य पीड़ित, गरीब और शोषित जनता का समर्थन करना, उसे जाग्रत करना एवं संघर्ष के लिए प्रेरित करना रहा है। उसके अनुसार वर्गविहीन समाज की स्थापना श्रमिक वर्ग की संगठित शक्ति के बिना नहीं होगी। अभी आजादी नेताओं और उच्चवर्गीय लोगों तक ही आकर रुक गयी है, उसे जन-जन तक पहुँचाने के लिए सारे मजदूर-किसान और गरीब जनता को संघर्ष के लिए कटिबद्ध होना होगा।

इस प्रकार इसमें नागार्जुन का अपने राजनीतिक विचारों के प्रसारण का उद्देश्य स्पष्ट प्रतीत होता है। दूसरा उद्देश्य लेखक का अपने अंचल की शोषित जनता को प्रकट करना तथा वहाँ की उपज, प्राकृतिक सौन्दर्य, परिवेश, पक्षिगण, धार्मिक अँधविश्वास. अंचल के बदलते राजनीतिक दृष्टिकोण आदि का परिचय देना भी रहा है। अपने इस उद्देश्य की अभिव्यक्ति में लेखक सफल रहा है।

४. दुखमोचन :

ग्रामसेवा की भावनाओं से युक्त नागार्जुन का यह १७० पृष्ठीय उपन्यास है। दुखमोचन इस उपन्यास का प्रधान नायक है। दुखमोचन का चरित्र सर्वथा यथार्थवादी, आदर्शवादी और काफी हद तक गाँधीवादी है। यह नागार्जुन की उपन्यास-परम्परा से भिन्न उपन्यास है। इसमें साम्यवादी विचारधारा का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रसारण कम है। टमकाकोइलि ग्राम के पुनर्निर्माण और उसमें दुखमोचन जैसे कर्मठ कार्यकर्त्ता के सफल एवं निस्वार्थ नेतृत्व की गाथा ही इसमें यथार्थवादी ढंग से चित्रित है।

कथानक : कथानक सीधा-सादा है। घटनाओं के जटिल मोड़ इसमें नहीं हैं। खल पात्रों के द्वारा भी कोई जोरदार विरोध प्रस्तुत नहीं किया गया है। कथानक अपने लक्ष्य पर पहुँचने के लिए सहज समर्थ हो गया है। कथानक में जहाँ संघर्षपूर्ण कौतूहल के मोड़ आते हैं, वहीं जिज्ञासा बनी रहती है। 'दुखमोचन' में ऐसा कुछ नहीं है। सारी बातें अपने आप सुलझती जाती हैं। सब कुछ पूर्व नियोजित है, पूर्व निर्धारित घटनाचक्र है। परिच्छेद ६ में "माया विधवा थी और कपिल विधुर, दोनों की उम्र में चार-पाँच वर्ष का अन्तर था" पढ़कर ही अनुमान हो जाता है कि नागार्जुन इनका विवाह करवाएँगे।

उपन्यास का कथानक सर्वथा वाद-निरपेक्ष होकर गढ़ा गया है, किन्तु चरम सीमा जैसी स्थिति कहीं नहीं आती। विरोधी पात्रों को यदि लेखक थोड़ा और सशक्त दिखाता तो उपन्यास का कथानक प्राणवान बन सकता था।

सारा उपन्यास दुखमोचन के आदर्श ही आदर्शों की रामकहानी है। नित्या बाबू और टेकनाथ के द्वारा प्रस्तुत विरोध थोथा और हास्यास्पद है। मास्टर द्वारा गेहूँ वितरण में किये गये विरोध से वह स्वयं ही बड़ी आसानी से मूर्ख बन जाता है। मुंशी पुलकितदास पोस्टमास्टर के द्वारा कोई जटिल परेशानी उपस्थित करवा कर कथानक को आकर्षक बनाया जा सकता था; क्योंकि सीमेंट न मिलने के कारण वे असन्तुष्ट थे ही, पर ऐसा कुछ नहीं किया गया। वस्तुतः लेखक का ध्यान दुखमोचन की आदर्श समाज-सेवा के प्रचार में लगा रहा है।

पात्र और चरित्र-चित्रण : उपन्यास में मुख्य पात्र दुखमोचन है। उसके अन्य पात्र हैं—वेणी माधव, जयमाधव, कपिल, रामसागर, मधु कान्त, सुखदेव, लीलाधर, टेकनाथ, नित्या बाबू, मुंशी पुलकितदास आदि। नारी पात्र हैं—शशिकला, छोटी बहू, चमकी, माया, अर्पणा आदि।

नागार्जुन ने चरित्र-चित्रण, पात्रों के कार्य-कलाप, वार्त्तालाप आदि द्वारा 'दुखमोचन' को सफल बनाने की भरपूर चेष्टा की है। दुखमोचन उपन्यास का प्रधान नायक है। उसका चरित्र मनवीय गुणों की खान है। उसकी चारित्रिक विशेषताओं को हम निम्न प्रकार विभाजित करेंगे :

(ख) समाज-सेवक : दुखमोचन का सारा जीवन समाज-सेवा की बेजोड़ मिसाल है। इसका परिचय रामसागर की माँ के दाह-संस्कार में आने और अपनी कीमती सूखी लकड़ी दाह के लिए दे देने में मिलता है। उसका गेहूँ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वितरण करवाना, श्रमदान द्वारा पथ निर्माण—सब उसकी समाज-सेवा के प्रतीक हैं। कुदाल चलाने से उनके हाथों में छाले पड़ जाते हैं। उसकी समाज-सेवा में व्यस्तता और अपने शरीर के प्रति उदासीन रहने के कारण मामी के मीठे उपालम्भ उसे यदाकदा सुनने पड़ते हैं।

ग्राम में आग लग जाने पर दुखमोचन की समाज-सेवा का अभूतपूर्व चित्र हमारे सामने उपस्थित हो जाता है। इस अवसर पर वह सबकी सेवा समान रूप से करता है। वह अपने विरोधी नित्या बाबू के भी आँसू पोछता है। पानी भरने वाली मजदूरनियों को भी पूरी मजदूरी वह दिलवाता है। समाज से प्रायश्चित आदि की रूढ़ियाँ वह मिटा देना चाहता है। गाँजा अभियोग में पकड़े रामसागर को छुड़ाने में वह मदद करता है।

(ख) **निस्वार्थ सेवक** : वह निःस्वार्थ भावना से समाज-सेवा के लिए काम करता है। फोड़े-फुन्सी की दवा का, ग्राम के निवासी होने के नाते, उसे और अग्रज सुखदेव को भी उपयोग करने का अधिकार है पर वह घर में ये चीजें नहीं रहने देता। आग की क्षतिपूर्ति के लिए आयी आर्थिक सहायता की वितरण-सूची में से वह अपने भाई सुखदेव का नाम हटा देता है। इससे उसके निस्वार्थी होने का प्रमाण मिलता है।

(ग) **प्रगतिशील विचारों का पोषक** : कपिल और माया का विवाह करवाने में उसका चरित्र जातपात तोड़कर समाज में स्वस्थ और आदर्श परम्पराओं के प्रसारण में सहायक लगता है। वह रूढ़िवादिता का हर जगह खण्डन करता है। बैल जल जाने पर वह टेकनाथ को प्रायश्चित में फँसने से बचाता है। दुखमोचन गाँव के एक अत्यन्त साधारण व्यक्ति बोधू चाचा से ध्वजोत्तोलन कराता है। इसमें उसकी निम्न वर्ग के प्रति सम्मान और सहानुभूति की भावना दृष्टिगोचर होती है।

(घ) **सहृदय** : अपनी स्वर्गस्थ गुंजन की मधुर स्मृति जब तब स्वप्न बन उसकी आँखों में तैरा करती है। सरसों के पीले फूलों को देख उसे अपनी पत्नी के गौने का रूप नजर आता है। उसे अपनी बच्चियों से भी बेहद प्रेम है। टुनु की बाल-सुलभ चेष्टाओं में वह दिलचस्पी लेता है। भाभी द्वारा टुनु के लिए कहे गये कथन "पीठ पर सास के झाड़ बरसेंगे इसके तो—?" पर दुखमोचन कहता है—"खाल न उधेड़ लूँगा उस सास की।"

सांस्कृतिक कार्यक्रम के लिए गाँव के युवक मिहिर को आर्थिक सहायता देने की बात करना, तरुण शक्ति के प्रति उसका प्रेम और विश्वास व्यंजित करता है। इसके साथ ही विनोदप्रियता भी उसमें हमें दिखाई देती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(ङ) **विशाल हृदयता :** दुखमोचन के हृदय में अपने विरोधियों के लिए भी अच्छा स्थान है। वेणीमाधव द्वारा नित्या बाबू को गाँव में लगी आग में फेंक देने के कथन पर दुखमोचन की भौंहें तन गयीं। मुख का भाव कठोर हो गया। वह बोल पड़ा, "विपत्ति के क्षणों में इस तरह की बातें करना बर्बर प्रति-हिंसा का सूचक है—वेणीमाधव।" आगे वह कहता है : "मैं महसूस करता हूँ कि अपने गाँव के एक-एक व्यक्ति की सुरक्षा का दायित्व हम पर है—अभी एक-एक व्यक्ति हमारा अपना आदमी है।" अपने साथ भला करने वालों के प्रति सभी अच्छे रहते हैं,पर दुखमोचन अपना बुरा चाहने वालों के प्रति भी सहयोगी रहता है और सेवा-भाव रखता है।

हरखू की घरवाली से बातचीत के समय, उसके हृदय से वह आग लगाने की असावधानी का दर्द मिटाने का प्रयास करता है।

(च) **सहज मानवीय चरित्र :** आदर्श पात्र होते हुए भी कहीं-कहीं उसका चरित्र मानवीय कमजोरियों से ग्रस्त दिखाई देता है। अंचलाधिकारी द्वारा, उसे पथ-निर्माण कार्य के सम्बन्ध में गाँव वालों का यह आरोप सूचित करने पर कि "दुखमोचन ने रास्ते बनवाने में, किसानों के खेत की जमीन का कुछ भाग ले लिया है", वह सड़क नपवा कर इस निराधार आरोप की असत्यता तो अवश्य ही सिद्ध कर देता है, किन्तु इससे क्षुब्ध दिखाई देता है, पर कर्त्तव्य-भावना की तीव्रता से वह यहाँ भी विचलित नहीं हो पाता।

डॉ० बेचन ने 'नया पथ' (अप्रैल, '६९) में 'दुखमोचन' के सम्बन्ध में लिखा है : ' इस पात्र में लेखक ने जितने सद्गुणों का आरोप किया है, उसका बोझ वह सम्भाल नहीं पाता है। वह एक व्यक्ति न होकर टाइप बन गया है।" नागार्जुन ने 'आइने के सामने' के सम्पादक मोहन राकेश को दिये गये इन्टरव्यू में दुखमोचन के सम्बन्ध में जो लिखा है उससे स्पष्ट हो जाता है कि लेखक स्वयं इसे यथार्थवादी पात्र नहीं अर्थात् आदर्शवादी पात्र मानता है। दूसरे लाभ-लोभ के लिए इसकी रचना वह स्वीकार करता है, तभी आकाशवाणी के लखनऊ, प्रयाग केन्द्रों से इसका प्रसारण जुलाई, अगस्त और सितम्बर '५६ में हुआ था। इसीलिए ऐसा भी "लगता है कि इस उपन्यास की रचना सम्भवतः आज सरकार की ओर से हो रहे निर्माण सम्बन्धी प्रचार कार्यों के लिए की गयी है।"

इस प्रकार दुखमोचन का चरित्र सर्वथा आदर्शवादी हो उठा है। आज के इस भौतिकवादी युग में ऐसा पात्र मिलेगा इसमें बिलकुल संदेह है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शशिकला मामी : उपन्यास में मामी का चरित्र मातृत्व के गुणों और स्नेहिल उपालम्भों से ओतप्रोत है। उसकी सेवा-भावना और त्याग सचमुच में हर भारतीय नारी के लिए अनुकरणीय गुण सिद्ध होंगे। उसका चरित्र लेखक ने वड़ी सहानुभूति से गढ़ा है। वड़े प्रेम से वह सवको भोजन कराती है। उसका आतिथ्य-सत्कार हमें भारतीय संस्कृति की गौरवशाली परम्परा की याद दिलाता है। परिवार के सदस्यों की छोटी-छोटी-सी आवश्यकताओं का ध्यान वह रखती है।

लीलाधर : लीलाधर शशिकला मामी के देवर हैं। वे नर्मदा किनारे रहते हैं पर ग्राम में आग लगने के समाचार पढ़कर आते हैं और सव के आग्रह से यहीं रह जाते हैं। उन्हें कन्याशाला का संचालन सौंपा जाता है। वे प्रकाण्ड पंडित हैं।

अन्य पात्रों की चारित्रिक रेखाएँ स्पष्ट करने में भी लेखक सफल रहा है। जैसे, मास्टर और नित्या वावू की कुटिलता, टुनु और अर्पणा की वाल-सुलभ चेष्टाएँ, हरखू की माँ द्वारा धान लौटाने में व्यक्त ईमानदारी, रामसागर का गाँजा-प्रेम और त्याग आदि। लेकिन इस उपन्यास में आये विरोधी पात्रों की अशक्तता देख उन पर रहम ही आता है। विरोध नाम मात्र का ही है। उनके विरोध की पंगुता उनकी व्यर्थता सिद्ध करती है। उपन्यास का अन्त होते-होते सारे विरोधी पात्र दुखमोचन के सामने आत्मसमर्पण करते दिखाये जाते हैं। नित्या वावू फूट-फूट कर रोते हैं, टेकनाथ भी अपने कष्ट-मोचन के लिए दुखमोचन की गुहार मचाता है, और दुखन को मारने वाले ललित पंडित तो उसे आम काट-काट कर खिलाने लगते हैं। किन्तु इनका हृदय-परिवर्त्तन आग लगने की घटना के माध्यम से दिखाया गया है। इसलिए आस्वाभाविक नहीं लगता।

दुखमोचन का चरित्र शुद्ध आदर्शवादी है। कुल मिलाकर पात्र और चरित्र-चित्रण की दृष्टि से लेखक सफल रहा है। यदि वह चरित्र-चित्रण में तटस्थ वन उपस्थित रहता तो उपन्यास अधिक प्रभावशाली वन पाता।

उद्देश्य : हर कृतिकार का अपनी कृति के सृजन में कोई न कोई उद्देश्य निहित रहता ही है। वह किसी खास वात की ओर अपने पाठकों का ध्यान आकर्षित करना चाहता है।

आज हमारे देश की ऐसी स्थिति हो रही है कि न यहाँ सच्चे और निःस्वार्थी नेता दिखाई दे रहे हैं न कार्यकर्त्ता। गुटबन्दी और स्वार्थ-लिप्तता एक आम वीमारी हो गई है। आज सवका सवसे विश्वास उठ सा गया है। न ईमानदारी रही न नैतिकता, न चरित्र और न श्रम से प्रेम। हमारा सारा व्यवहार छल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और आडम्बर से पूर्ण हो गया है। आज भोली जनता को गुमराह कर अपने उल्लू सीधे करने का अर्थ है, देश को योग्य नेतृत्व प्रदान करना।

प्रस्तुत कृति में दुखमोचन के माध्यम से एक आदर्शवादी नेता होने की ओर संकेत करना लेखक का लक्ष्य रहा है। दुखमोचन ने जनसेवा का ऐसा उदाहरण प्रस्तुत किया है जो चिरकाल तक हमारे नेताओं को प्रेरणा देता रहेगा, उनका मार्ग आलोकित करता रहेगा, स्वार्थान्धता से उन्हें बचाता रहेगा।

दुखमोचन द्वारा तन-मन-धन से अपनी ग्रामसेवा को लेखक देशसेवा के लिए उदाहरणस्वरूप प्रस्तुत करना चाहता है। लेखक ने उससे प्रायश्चित का विरोध एवं विधवा विवाह का समर्थन कराकर रूढ़ियों को तोड़ने और प्रगतिशील चेतना को अपनाने का संदेश दिया है।

अन्य उपन्यासों की तरह इसमें भी लेखक की सहानुभूति निम्न वर्ग के प्रति रही है। उसका लक्ष्य इन्हें ईमानदार और परिश्रमी सिद्ध करना रहा है। वृद्ध बोधू चाचा से ध्वजोत्तोलन कराकर लेखक का ध्येय यह स्पष्ट करना रहा है कि झण्डावन्दन, उद्घाटन आदि पर विधायकों, मंत्रियों या अन्य उच्चवर्गीय नेताओं का ही एकाधिकार नहीं है। अधिकारी वर्ग की अक्षमता की ओर संकेत करना और उनकी सहायता के भरोसे न बैठे रहने की शिक्षा भी लेखक देना चाहता है।

डॉ० सुरेश सिन्हा को 'दुखमोचन' उपन्यास में साम्यवादी विचारों का प्रसारण दिखाई देता है जबकि डॉ० बेचन के अनुसार "इस उपन्यास की रचना सम्भवतः आज सरकार की ओर से हो रहे निर्माण सम्बंधी प्रचार कार्यों के लिए की गयी है।" (नयापथ, अप्रैल ५८, पृष्ठ १६९) डॉ० व्रजमोहन गुप्त ने नागार्जुन के उद्देश्य को सही पकड़ा है : "प्रस्तुत उपन्यास में एक ग्राम के नव-निर्माण की कहानी कही गई है, केवल भौतिक नव-निर्माण की ही नहीं, वहाँ के निवासियों के मन, भावना और विश्वास के नव-निर्माण की कहानी कहना लेखक का लक्ष्य रहा है।" (आलोचना, त्रैमासिक)

५. वरुण के बेटे :

'वरुण के बेटे' नागार्जुन का एक लघु उपन्यास है। नाम के अनुसार ही इसमें मछुओं के संघर्षपूर्ण जीवन की कहानी है। समाजवादी यथार्थवादी विचारधारा का स्पष्ट संकेत इसमें लेखक ने दिया है।

कथानक : कथानक के साथ लेखक ने बाढ़-पीड़ितों द्वारा मालगाड़ी के डिब्बे खाली न करने से उत्पन्न रेलवे अधिकारियों से संघर्ष, मंगल-मधुरी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रणय दृश्य, मधुरी का ससुराल जाना, खुरखुन का शराब पीना, दरभगा जाकर मछली बेचना, मगर का शिकार करना, मोहन मांझी और मधुरी द्वारा बाढ़-पीड़ितों के लिए सहायता शिविर चलाना आदि छोटी-छोटी घटनाएँ संजोयी हैं।

कथनाक की घटनाओं को यथार्थवादी ढंग से प्रस्तुत किया गया है। किन्तु कथानक और पात्रों के चरित्र-विकास में तालमेल नहीं बैठ पाया है। मछुओं के निम्नस्तरीय जीवन और उनमें उभरती हुई चेतना को ही कथानक का रूप दिया गया है।

जमींदार घर बैठे-बैठे ही विरोध करते हैं। उनमें विरोध और संघर्ष का संकेत दारोगा, अंचलाधिकारी और मजिस्ट्रेट के आने से ज्ञात होता है। वस्तुतः जमींदारों के संघर्ष को इन्हीं अधिकारियों ने चलाया है। यह भी कथानक के असंगठित होने का एक कारण है। 'वरुण के बेटे' में उपन्यासकार ने विरोधी तो रखे हैं, पर उनका सक्रिय विरोध कहीं नहीं दिखाई देता है। जन-शक्ति को अधिक शक्तिशाली चित्रित करने के आग्रह से लेखक ने ऐसा किया है। साम्यवाद के प्रति प्रबल आग्रह, विरोधियों को कमजोर बताने और गरीब वर्ग में एकदम राजनीतिक चेतना का सूत्रपात कर देने से कथानक विश्रृंखलित हो गया है।

घटनाएँ और पात्र आरोपित प्रतीत होते हैं। काँग्रेसियों पर छींटाकशी करते हुए उन्हें भ्रष्टाचारी बताने का प्रयास किया गया है। कथानक के गठन में लेखक द्वारा यह मानकर चलना कि काँग्रेसी अन्याय और भ्रष्टाचार के पुतले हैं, और गरीब मजदूरों की भलाई हँसिया-हथौड़ा वाले ही कर सकते हैं—कुछ अतिवादी और राजनैतिक मताग्रह की गिरफ्त से ग्रस्त और इसलिए उखड़ा-उखड़ा-सा लगता है। पूर्व नियोजित मार्ग पर पात्रों को अपनी इच्छानुसार चलाना, कथानक की शिथिलता के लिए उत्तरदायी है।

किन्तु यथार्थवादी व्यौरों से उपन्यास में स्वाभाविकता की वृद्धि भी होती रही है। उनके चित्रण का ढंग रोचक और हृदयस्पर्शी है, जिससे पाठकों को पकड़ रखने में नागार्जुन सफल रहे हैं।

पात्र और चरित्र-चित्रण : हिन्दी में मछुओं के जीवन से सम्बंधित उपन्यास बहुत ही कम हैं। नागार्जुन ने 'वरुण के बेटे' में मछुओं के यथार्थ जीवन का चित्रण उपन्यास में किया है। उपन्यास में आये पात्र हैं—भोला, गंगा सहनी, नकछेदी, खुरखुन, गोनड़ बाबा, टुन्नी, मंगल, मोहन मांझी, दारोगा, अंचलाधिकारी, मजिस्ट्रेट आदि। नारी पात्रों में मधुरी, उसकी माँ, जलेबिया सिलेबिया, मंइगा, कुसुम कवक्ड़, मंगल की माँ आदि हैं। इनमें मधुरी नारी समाज में विकसित होती हुई प्रगतिशीलता की प्रतीक पात्री है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(अ) खुरखुन : खुरखुन निम्नवर्गीय मछुआ परिवार का मुखिया है। वह कठोर परिश्रमी और साहसी है। उपन्यास के प्रथम परिच्छेद में ही हम उसके साहस और धैर्य की प्रशंसा किये बिना नहीं रहते जब वह लकड़ी के ढोंके में फँसे हुए जाल को गोता लगा-लगा कर निकाल लेने में सफल हो ही जाता है। मालगाड़ी के डिब्बों से पाइन्ट्समैन को भगाकर असहायों को जगह दिलवा देना उसकी सहानुभूति का परिचायक है। उसके साहस, धैर्य एवं शीघ्र निर्णय की क्षमता से पाठक चमत्कृत तब होते हैं जब वह पानी में घुसकर एक खतरनाक मगर को जीवित काबू में करके बाहर ले आता है। उसे गरीबों और अपने जैसे निम्नवर्गीय लोगों से बड़ी हमदर्दी है। वह भावुक हृदय भी है। अपनी बेटी मधुरी के ससुराल जाने पर अनेक स्मृतियाँ उसके मन में उठती रहती हैं। पुत्री विछोह के दुःख को वह ताड़ी पीकर भुलाने का प्रयास करता है। मोहन माँझी पर उसे अपार श्रद्धा है। जनहित और वर्ग-संघर्ष के कार्यों में वह भाग लेता है। किन्तु खुरखुन का वाह्य परिचय देने में लेखक से भूल हो गयी है। आरम्भ में उसने खुरखुन का परिचय देते हुए लिखा है : "अधेड़ और नाटा खुरखुन" लेकिन दूसरी बार मगर मारने के बाद खुरखुन के सम्बंध में लिखा है : "पाँच हाथ लम्बा मजबूत काठी का अधेड़। बालों का पानी समूचे शरीर की लम्बाई का फासला तय करके पैरों के रास्ते जमीन को भिगो रहा था।" दूसरे कथन से खुरखुन एक लम्बा आदमी प्रतीत होता है और पहले से ठिगना। पात्रों के सम्बंध में यह असंगति अच्छी नहीं।

(ब) मोहन माँझी : मोहन माँझी एक जागरूक कार्यकर्त्ता है। उसका सादा लिबास उसके सच्चे जनसेवक का बाना है। सब उसे नेताजी कहते हैं। उसका आशावादी चिन्तन देखिये : "गढ़पोखर का जीर्णोद्धार होगा····तब मलाही गोंढियारी के ये ग्रामांचल मछली-पालन व्यवसाय के आधुनिकतम केन्द्र हो जाएँगे। पक्की ऊँची भिंडों पर इकतल्ला सेनोटोरियम बनेगा।"

उसके बारे में लेखक ने बताया है : "खरखरी सुनाने और सर्वसाधारण जनता का पक्ष लेकर चाहे जो कुछ कर गुजरने की तल पड़ गयी थी। अब वह 'हँसिया हथौड़ा' मार्का लाल झंडे वाली किसान सभा का थाना सभापति था।"

बाढ़-पीड़ितों को मालगाड़ी के डिब्बे में सात दिन आश्रय मिले इसके लिए उसकी योजना धरना देना, पिकेटिंग करना, फिर सामान की व्यवस्था करने में उसकी तत्परता और सूझबूझ तथा रामदहिन और खुरखुन को मोर्चे पर डटे रखने में उसकी कार्य-विभाजन की कुशलता का परिचय मिलता है। इसी सब का परिणाम था कि जीत जनता की हुई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अंचलाधिकारी को वंदोवस्त का कागज दिखाकर वह अपने गाँव के मछुओं का संकट दूर करता है।

वह अच्छा वक्ता भी है। उसका प्रवचन वड़ा सधा हुआ, सारगर्भित और सरल शब्दावली से युक्त होता है। वह अलग-अलग साम्प्रदायिक संगठनों की निंदा करता है और उन्हें एकता के लिए हानिकारक बताता है। ग्रामीणों की समस्या के लिए वह किसान सभा को ही समाधान दे सकने में सक्षम मानता है। वह सवको एक झंडे के नीचे लाकर संगठित शक्ति से विरोध का मुकाबला करने की सलाह देता है। वह ग्राम में खोले गये सहायता शिविर का सफल संचालन करता है।

वह अपने ग्राम का सच्चा हितैषी और निःस्वार्थ सेवक है। नागार्जुन ने उसका चित्रण अपनी प्रगतिशील विचारधारा, ग्रामोन्नति की योजना और मजदूर वर्ग के प्रति अपनी तीव्र संवेदना को व्यक्त करने के लिए किया है।

(स) मधुरी—मधुरी नागार्जुन कृत 'वरुण के बेटे' उपन्यास की अत्यन्त उत्साही नारी पात्र है। नारी जागरण का संदेश, अपने अधिकारों के प्रति सजग चेतना और जनसेवा उसके चरित्र की खास विशेषताएँ हैं। वह मंगल से प्रेम करती है, पर मंगल के गौने के बाद स्वयं ही उसके मार्ग से हट जाती है। मजिस्ट्रेट द्वारा स्त्रियों के राजनीति में भाग लेने पर व्यंग्य करते ही वह कहती है : "जिनगी और जहान औरतों के लिए नहीं है क्या ?" वह मजिस्ट्रेट की धमकियों का उत्तर खिलखिला कर और स्वयं गिरफ्तार होने के लिए पुलिस वान में बैठकर देती है। वह पुलिस वान से दाहिना हाथ घुमा-घुमाकर नारे लगाती है और ग्रामीणों में संघर्ष के लिए तैयार रहने की भावना भर देती है।

नागार्जुन ने इस उपन्यास में पात्रों की संक्षिप्त झाँकी प्रस्तुत की है, और पात्रों का चयन यथार्थ जीवन से किया है; पर उनके सभी पात्र यथार्थवादी नहीं हैं, कुछ को वर्ग-संघर्ष में जबरदस्ती घसीटा गया है और उनपर प्रगतिशीलता का जो जामा पहना दिया गया है, वह स्वाभाविक नहीं, आरोपित प्रतीत होता है। 'वरुण के बेटे' के पात्र जितने विकसित, संघर्ष में दृढ़, राजनीति में सक्रिय एवं जागरूक दिखाये गये हैं उतने न तब थे और न आज। मधुरी का वर्ग-संघर्ष में भाग लेना, अतिशीघ्र ही राजनीति में पारंगत होकर स्वयं पुलिस-वान में खिलखिलाते बैठ जाना ऐसी ही घटनाएँ हैं। यह सही है कि उन दिनों मछुआरों में चेतना की लहर आ रही थी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मधुरी द्वारा बड़ी सरलता से अपने प्रेमी का त्याग करना पूर्ण स्वाभाविक घटना है, क्योंकि ऐसी जातियों में ऐसा आये दिन होता रहता है।

मोहन मांझी का चरित्र भी बड़ा सधा हुआ, पक्का राजनीतिक निशानेबाज और लेखक की ओर से थोपा हुआ प्रतीत होता है। खुरखुन जैसे निपट ग्रामीण का मालगाड़ी के डिब्बे में अचानक चढ़ जाना और वृद्धा को जगह दिलवाना, रामदहिन के साथ मोर्चे पर डट जाना आदि आरोपित प्रतीत होते हैं।

थेकरे कहता है : "मैं पात्रों का निर्माण तो स्वयं कर देता हूँ, किन्तु निर्माण करके फिर उन्हें छोड़ देता हूँ। स्वतन्त्र कर देता हूँ, और फिर वे जहाँ चाहते हैं मुझे ले जाते हैं।" पर नागार्जुन ने वरुण के बेटे को निम्न समाज से लिया है और उन्हें चालित करने की डोरी अपने हाथों में ले ली है। इसका कारण है, उपन्यास को अपनी राजनीतिक विचारधारा के आरोपण प्रसारण का माध्यम बनाने का दुराग्रह।

नागार्जुन अपने पात्रों के प्रति किये गये अन्याय को स्वीकार भी करते हैं। 'आइने के सामने' में उन्होंने कहा है : "मैं वरुण के बेटे से डरता हूँ, मोहन मांझी से डरता हूँ।" इससे ज्ञात होता है कि लेखक उनके प्रति पूरा न्याय नहीं कर पाया है। अपने मानसपुत्रों के प्रति वह ईमानदार नहीं रह पाया है।

पात्रों के सम्बन्ध में कुछ अस्वाभाविक भूलें भी इसमें हैं; जैसे नकछेदी पृष्ठ १२० पर मछुआ संघ का प्रधान चुना जाता है, पृष्ठ १२६ तक आते-आते वह सेक्रेटरी हो जाता है।

लेकिन ये खामियाँ इतनी बड़ी नहीं हैं कि पूरे उपन्यास को असफल कृति कहा जाय। इस उपन्यास में जातीय पेशा एवं वर्गीय जीवन के सूक्ष्म से सूक्ष्म चित्रों का अंकन किया गया है, मछुओं के जीवन और कार्यकलाप का वास्तविक चित्रण हुआ है। कथा का स्वाभाविक ठाठ खड़ा किया गया है तथा पात्र प्रकृत रूप में प्रकट हुए हैं। मछुआ जाति अपने पेशे को लेकर कितनी परेशान, संघर्षरत और पीड़ित है, यह 'वरुण के बेटे' पढ़ने से साफ पता चल जाता है।

उद्देश्य : नागार्जुन भावुक साहित्यकार हैं। शोषित समुदाय के प्रति उनके मन में गहरी संवेदना है। उन्हें इस समाज के अभावग्रस्त जीवन का प्रत्यक्ष परिचय है। इसीलिए इनके जीवन को उभारने, इस निर्धन मछुआ समाज को अपने अधिकारों के प्रति सतर्क रहने और संघर्ष से न घबराने के उद्देश्य की अभिव्यक्ति 'वरुण के बेटे' में होती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उपन्यास में समाजवादी यथार्थवाद के माध्यम से निम्नवर्गीय जनता के संघर्ष को उभारा गया है। देश का कल्याण वर्गविहीन समाज की रचना करने से ही होगा। इसके लिए गरीब वर्ग को विभाजित होकर नहीं, झंडे के नीचे संगठित होकर उच्च वर्ग से लोहा लेना होगा। यह सच है कि उच्चवर्ग शक्तिशाली है, धन और शासकीय अधिकारियों का समर्थन उसे प्राप्त है। पर किसान सभा जैसी शक्तिशाली संस्था के साथ संगठित होकर यदि संघर्ष किया जाय तो जीत जनता की होगी।

उपन्यास में वर्णित इस कथन "यह पानी सदा से हमारा है, किसी भी हालत में हम इसे छोड़ नहीं सकते, पानी और माटी न कभी बिके हैं न बिकेंगे।" से लेखक के उद्देश्य का प्रकटीकरण हो रहा है।

निम्नवर्ग अब अपने शोषण का प्रतिकार करेगा, दबाने से दबेगा नहीं। अपने अधिकारों की भीख नहीं माँगेगा, छीन कर ले लेगा। और इसीलिए निम्नवर्ग के पात्र—मधुरी, नकछेदी, मंगल आदि हँसते हुए गिरफ्तार हो जाते हैं तथा नारे लगाते हैं। नारों में नागार्जुन का उद्देश्य बोलता है।

इस प्रकार निम्नवर्गीय जनता की पीड़ा, अपने अधिकारों के प्रति उसकी सतर्कता और उसका ताकतवर शक्तियों के सम्मुख न झुकना आदि चित्रित करना लेखक का मुख्य ध्येय रहा है।

नागार्जुन प्रगतिशीलता, नवनिर्माण एवं ग्रामोन्नति के प्रबल समर्थक हैं। अपनी कल्पना को वे मोहन मांझी के माध्यम से साकार रूप देना चाहते हैं।

ग्रामोन्नति के इस उद्देश्य की ओर इंगित करना भी लेखक का लक्ष्य दिखाई देता है। शासकीय अधिकारियों का लालफीताशाही से परम्परागत परम आंतरिक स्नेह, अक्षमता और भ्रष्टाचार चित्रित करना भी लेखक का गौण उद्देश्य रहा है।

काँग्रेसी नेताजी का मजदूरी देने के समय लुप्त हो जाना, चुनाव जीतने के लिए रुपये बँटवाना और बाद में परेशान करना आदि संकेत, इस संगठन द्वारा "ईमानदारी, जनसेवा और एकता' शब्दों की अपने हित में ढाली नयी परिभाषाओं का परिचय देना भी लेखक का मन्तव्य प्रतीत होता है।

आंचलिक सौंदर्य का परिचय, जिसमें अपने देस-कोस की माटी-पानी, ताल-पोखर, हरे-भरे खेत, छतनार आम, दुधिया चाँदनी, चमकीली मछलियाँ, मड़ुआ की रोटी आदि विशेषताओं को चित्रित करना भी लेखक को अभिप्रेत है।

अतः हम अन्त में विश्वास के साथ कह सकते हैं कि लेखक अपने उद्देश्यों को स्पष्ट करने में सफल रहा है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

६. नई पौध :

'नई पौध' का रचना-काल १९५७ ई० है। यह नागार्जुन का छठा उपन्यास है। लेखक ने इसमें अनमेल विवाह की समस्या को उठाकर उसका समाधान समाज की नई पौध—युवक वर्ग—के माध्यम से दिलाया है। आंचलिक रंगों के चित्रण और कलात्मक शैली ने इस उपन्यास को सजीव बना दिया है। यही उपन्यास हिन्दी में प्रकाशित होने के पूर्व मैथिली में 'नवतुरिया' के नाम से प्रकाशित हो चुका है।

कथानक : कथानक में उपन्यासकार नागार्जुन ने समस्या अवश्य ही पुरानी उठायी है पर तरुण शक्ति के प्रति आश्वस्त रहना उसका एकदम नया विचार है। नये खून को प्रोत्साहन देने की चर्चा आजकल बड़ी सुनाई देती है। वही बात यहाँ रचनात्मक रूप ले रही है।

चतुरा चौधरी के बिन ब्याहे लौट जाने के बाद पृष्ठ ६२ से ११९ तक लेखक ने कहीं 'सहुआइन-अमृत' की कथा, कहीं टुनाई पर खेती का भार आ जाने की चर्चा, कहीं मुंशी दुर्गानन्दन बाबू के अदालती दाँवपेंच का जिक्र किया है। पृष्ठ १०९ से विश्वेश्वरी के विवाह की मूल समस्या से भावी घटनाओं का सूत्र फिर जोड़ दिया गया है। वाचस्पति का परिचय और दिगम्बर की उससे मित्रता बताये जाते समय ही पाठक को पृष्ठ ११५ से वाचस्पति के दूल्हा बनने का अनुमान हो जाता है। लेखक ने सहुआइन अमृत की कथा परिच्छेद ११ में आरम्भ कर यों ही छोड़ दी है। उपन्यास को इसकी कोई जरूरत नहीं लगती।

इसमें प्राचीन जर्जरित रूढ़ियों का खण्डन करते हुए नई पीढ़ी से समस्या का निदान दिलाया गया है।

पात्र और चरित्र-चित्रण : उपन्यास के नाम से लगता है कि 'नई पौध' से समन्वित पूरे वर्ग के सम्बन्ध में लेखक ने कुछ कहा है। किसी एक पात्र के सम्बन्ध में नहीं, अन्यथा 'बलचनमा', 'दुखमोचन' आदि के अनुसार इसका नाम भी 'विश्वेश्वरी' होता। इसमें मुख्य रूप से जो पात्र आये हैं उनका परिचय निम्न प्रकार है :

विश्वेश्वरी : उपन्यास की महत्त्वपूर्ण कड़ी है। उसी के तो विवाह की समस्या है। वह अत्यन्त सुशील और रूपवती बाला है। उसकी उम्र १५ वर्ष की होगी। उसके उभरते यौवन का परिचय बड़े कलात्मक ढंग से उपन्यासकार ने यह कहकर दिया है : "बिसेसरी दोनों हथेलियाँ उलटकर उँगलियों की पीठ पर के सुनहले रोएँ देखती रही।" वयःसंधि की अवस्था से वह गुजर रही है। चतुरा चौधरी के लाये जाने पर वह घबड़ा जाती है। दिगम्बर के पत्र से उसे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धैर्य बँधता है। वह विनोदप्रिय भी है। तभी बूलो के पीछे से चुपचाप आकर वह उसकी आँखें बंद कर देती है। वह अपर प्राइमरी तक पढ़ी हुई है। बातचीत में वह निपुण भी है तभी बूलो की बात काट देती है। आजादी की किरणें दिल्ली और पटना जैसे बड़े शहरों तक आकर रुक गयीं और ग्राम अभी उससे दूर है। यह बात वह समझती है।

इस नव प्रस्फुटित कलिका के यौवन की देहलीज में पैर रखने के दृश्य परिच्छेद २० में लेखक ने रखे हैं। वह अपने पति वाचस्पति के सौन्दर्य पर मुग्ध है।

दिगम्बर मल्लिक : 'बमपार्टी' का नेता है। गणित में कमजोर होने से ९वीं तक ही वह पढ़ सका। वाचस्पति और दिगम्बर सहपाठी रहे हैं। दिगम्बर का वर्णन उपन्यासकार ने इन शब्दों में किया है : "वह काफी चतुर तो था ही। धनी घर का लड़का होने से लोग उसे आदर और गौरव की दृष्टि से देखते थे। नौजवानों पर भी उसकी अच्छी धाक थी। धन या शिक्षा से दिगम्बर के अन्दर घमंड उस मात्रा में नहीं भरा था जिस मात्रा में नम्रता। छोटी-बड़ी आयु के लड़के ध्यान से उसकी बातें सुनते थे।"

वह कहानियाँ भी लिखता है। माहे की जमीन में खोखा पंडित द्वारा गड्ढा खोदे जाने पर वह चुप नहीं बैठता। इससे अन्याय के विरुद्ध प्रतिकार की भावना उसमें दिखाई देती है।

चतुरा चौधरी को समझाने में वह बड़ी शालीनता से काम लेता है, पर उनके न मानने पर वह सीटी बजा अपने साथियों को बुला लेता है। उसकी दृढ़ता देखिये, वह कहता है : "गाँव का एक-एक नौजवान पिटते-पिटते बिछ जायगा पर यह ब्याह नहीं होने देगा।" चतुरा चौधरी का घोड़ा मँगवाकर उन्हें वह रवाना करवा देता है। यह सफलता उसकी सुनियोजित योजना से ही प्राप्त होती है। उसके साथी हैं—महेश्वर झा, गोनउड़ा, हेहुआ, बलभद्र मिश्र आदि।

वह दुर्गानन्दन बाबू से मिलकर पुष्पपुरा जाता है और अपने सहपाठी कामरेड वाचस्पति से तर्कपूर्ण बातचीत करके विवाह के लिए उसे मना ही लेता है। लौटकर वह दुर्गानन्दन को समाचार देता है। यहाँ वाचस्पति के वंश, गोत्र आदि अनुकूल पा उसकी प्रसन्नता का पारावार नहीं रहता। वह दुर्गानन्दन से गले लिपट जाता है, क्योंकि यह बम-पार्टी की जीत थी।

खोखा पंडित : अपनी पुत्रियों और नतिनी के यौवन का मूल्य लेने में भी नहीं चूकने वाला धार्मिक पंडित है। "उनकी कृपा से कोई बौड़म के पल्ले पड़ी किसी को उसके आदमखोर पति ने किरासन तेल की मदद से जलाकर खाक कर दिया।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खोखा पंडित यों संस्कृत और व्याकरण के विद्वान हैं, पर उनकी अनैतिकता चरम सीमा का स्पर्श करती रहती है। माहे की जमीन को वे अनधिकृत रूप से हड़प लेते हैं।

वूलो द्वारा उनके इन्हीं 'सत्कर्मों' के सम्बन्ध में जो तुकबन्दी की गई है, उससे उनके दिव्य कर्म एक-एक कर प्रकट हो रहे हैं।

वे अपनी १४ वर्षीय कोमलांगी नतिनी का विवाह एक बूढ़े से तय कर डालते हैं। किन्तु यहाँ उन्हें मुँह की खानी पड़ती है।

क्रोधी वे इतने हैं कि माहे को खड़ाऊ फेंक कर मारते हैं। खोखा पंडित का सारा ज्ञान और विद्वत्ता धूल तब लगने लगती है जब नाराज होते समय वे अश्लील चेष्टाएँ करते हुए निम्नस्तरीय गाली-गलौज पर उतर आते हैं।

कमरे में बन्द करने के बाद वे वहीं से चिल्लाते रहते हैं। दूसरे दिन प्रातः तारसराय स्टेशन के प्लेटफार्म पर बैठे हुए चतुरा चौधरी से जाकर वे मिलते हैं और अगहन में अन्यत्र ले जाकर बिसेसरी का विवाह उनसे पूर्ण करा देने का आश्वासन देते हैं।

इस प्रकार खोखा पंडित, घटकराज आदि के रूप में नागार्जुन ने मिथिला की रूढ़िवादी प्राचीन परम्पराओं के जड़-समर्थक, लोभी ब्राह्मणों का यथार्थ परिचय हमें दे दिया है। इनका धर्म क्या है—ऊपर से ओढ़ी हुई आडम्बरों की चादर जिसका खुलकर इस्तेमाल वे अपने उल्लू सीधा करने में करते हैं। अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए ये सगे पुत्र-पुत्रियों के गले पर भी छुरी फेरने में नहीं हिचकिचाते।

वाचस्पति सोशलिस्ट है। समाजवाद में उसकी गहरी आस्था है। वह कहता है : "व्यक्ति का संकट ही समाज संकट है—और समाज का संकट ही समूचे देश का संकट है।" वह प्रगतिशील विचारधारा से युक्त है। विवाह, पूर्ण सादगी से, करने के लिए वह दुर्गानन्दन से कहता है।

दुर्गानन्दन अपने मुंशीपने में चतुर दिखाये जाते हैं। पात्रों का थोड़ा-थोड़ा परिचय लेखक ने दिया है पर उतने से ही उनकी चारित्रिक रेखाएँ स्पष्ट हो रही हैं।

कहीं-कहीं पात्रों को अन्तर्द्वन्द्व से भी ग्रस्त दिखाया गया है। घटकराज और खोखा पंडित तारसराय स्टेशन आते समय बमपार्टी द्वारा उनके इरादे मिटा देने से उत्पन्न स्थिति पर चिन्तित हैं। मुखिया का अन्तर्द्वन्द्व लेखक ने बड़ी सफलता से चित्रित किया है। बिसेसरी के विवाह के सम्बंध में सोचते-सोचते उसके सामने अपनी बेटी कान्ता का चेहरा उभर जाता है, और मुखिया भावों के भँवर में फँसा हुआ दिखाई देता है।

पात्र और चरित्र-चित्रण की दृष्टि से लेखक सफल रहा है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उद्देश्य : 'नई पौध' में अनमेल विवाह की समस्या उठाकर नई पीढ़ी से उसका समाधान दिलाना लेखक का लक्ष्य रहा है।

नागार्जुन उन प्रगतिशील विचारकों में से हैं जो नवयुवकों के सहज युवकोचित व्यवहार को बड़े आदर और सहानुभूति की दृष्टि से देखते हैं। उन्होंने युवक वर्ग के हृदय में उठत हुए उफान को समझा है तथा क्रांति और विद्रोह की इस भावना को सही दिशा दी है। कितना अच्छा हो यदि आज हमारे देश के कर्णधार भी युवकों की इस विद्रोही वृत्ति को रचनात्मक कार्यों में लगाएँ जो कि आज विध्वंसात्मक हो रही है।

नई पौध का अर्थ है—'नये पौधे'—देश की नई फसल। नागार्जुन ने इस उपन्यास में युवकों की इसी शक्ति को पहचाना और उसका उपयोग किया है। उन्हें प्रारम्भ से ही अन्याय का प्रतिकार करते हुए दिखाया गया है। इसीलिए बमपार्टी के युवक बूढ़े दूल्हे को भगाकर नवयुवक वाचस्पति को वर बनाते हैं। 'नई पौध' उपन्यास से स्पष्ट होता है कि गाँवों के तरुणों में भी नवीन चेतना प्रस्फुटित हो रही है।

अपनी जन्मभूमि मिथिला अंचल की विशेषताओं को पाठकों के समक्ष रखना, वहाँ की व्याप्त रूढ़ियों और परम्पराओं की मखौल उड़ाकर उन्हें बेअसर करना भी लेखक अपना उद्देश्य बना कर चला है।

७. कुम्भीपाक :

'कुम्भीपाक' १९६० में प्रकाशित हुआ था। हिन्दुओं के माने हुए नर्कों में से एक कुम्भीपाक भी है, जहाँ पापी मृत्यु के बाद जाता है। समाज के भ्रष्ट भेड़ियों ने अपने मनोरंजन के लिए जिन युवतियों को जीते-जी कुम्भीपाक में डाल रखा है उसी की यहाँ चर्चा है। यही उपन्यास पाकेट बुक्स में 'चम्पा' नाम से प्रकाशित भी हुआ है।

कथानक : 'कुम्भीपाक' में भी चम्पा के जीवन-परिवर्तन की घटना, महिम मामी की घटना, प्रकाशकों के शोषण आदि की कई घटनाओं के सगुम्फन में लेखक ने बड़ी कुशलता का परिचय दिया है। घटनाओं की जानकारी क्रमशः दी गयी है। चम्पा का रहस्य, उसके मन में उभरते विचारों से, कथायात्रा के मध्य में व्यक्त हुआ है। रोचकता अन्त तक बनी रहती है। महिम मामी की घटना, दिवाकर शास्त्री से सम्बन्धित बातें मुख्य घटना से सम्बन्ध नहीं रखतीं, किन्तु समाज का यथार्थ रूप हमारे सामने रखने के लिए उन्हें लाया गया है।

समाज का वास्तविक चित्र 'कुम्भीपाक' में विशाल झलक लेता दिखाई पड़ता है। 'कुम्भीपाक' में मानव-जीवन की ऐसी ही समस्या को उठाया गया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है। यदि विधवा या निराश्रित महिलाओं का विवाह हो जाय तो वे कुम्भीपाक में न घसीटी जा सकेंगी। विधवा चम्पा से भी उसके विधुर जीजा यदि विवाह कर लेते तो उसे क्यों भटकना पड़ता।

भुवन का फिर क्या हुआ? क्या वह सदानन्द के यहाँ ही अकर्मण्य बनी बैठी रही? कुछ भी लेखक ने स्पष्ट नहीं किया है। नीरू ने अपने परिवार की बात करते हुए, 'अच्छी लिखावट वाले नागेसर' का जिक्र किया था; कहा था : "पढ़ा-लिखा है, लेकिन गाँव नहीं छूटता है उससे, पार्टी का काम करता है, घर में एक पैसा भी नहीं दिया है आज तक, आदमी लेकिन हीरा है इन्दिरा। मैं तुझे उससे जरूर मिलाऊँगी—जरूर।" लेकिन नागार्जुन ने निर्मला द्वारा भुवन-नागेसर भेंट कहीं नहीं करवाई है। वह यह प्रसंग लाकर उनका विवाह करा सकते थे, यह आकस्मिक भी नहीं लगता; क्योंकि इसकी चर्चा पहले ही की जा चुकी थी, लेकिन नागार्जुन नीरू के वादे को भूल गए।

पात्र और चरित्र-चित्रण : "जब हम किसी उपन्यास के पात्रों के विषय में विचार करते हैं, तब पहला प्रश्न जो स्वभावतः उपस्थित होता है वह यह है कि क्या उपन्यासकार अपने पात्रों को हमारे सम्मुख वास्तविकता के परिधान से वेष्टित करने में सफल रहा है? क्या हम उन्हें वैसा ही समझते और मानते हैं, क्या हमारी सहानुभूति उनके साथ वैसी ही है? क्या हम उनसे वैसा ही स्नेह या घृणा करते हैं? यदि ये मनोवेग हमारे मन के अन्दर उदित हो सकें तो समझना चाहिए कि ग्रन्थकार अपने उद्योग में सफल हुआ।"[१]

'कुम्भीपाक' में नागार्जुन ने जो पात्र लिये हैं उनका चयन उन्होंने अपने जाने-बूझे समाज से किया है, पाठक उनसे बड़ी जल्दी परिचित हो जाते हैं। तिलकधारीदास जैसे भ्रष्ट और स्वार्थी प्रकाशक, जानकी बाबू जैसे मंत्री महोदय, जो साहित्यकारों के निबन्धों को अपने नाम से प्रकाशित कराते हैं, महिम जैसा शराबी, नीरू जैसी चुलबुली नारी, चम्पा और शर्मा जैसे स्त्रियों के यौवन के सौदागर, राय साहब जैसे समाज-सुधारक—सब 'कुम्भीपाक' में देखे जा सकते हैं। पात्रों को समाज के वास्तविक धरातल से लेखक ने उठाया है।

'कुम्भीपाक' में नायक और नायिका का दर्जा किसी को नहीं दिया जा सकता। नायिका की प्रतियोगिता में यदि भुवन और चम्पा दोनों खड़ी होंगी तो दोनों को बराबर मत मिलेंगे। दोनों का जीवन इस उपन्यास में सुधरा है। दोनों कुम्भीपाक से निकल गयीं। 'वरुण के बेटे' एवं 'नई पौध' के समान सम्पूर्ण 'कुम्भीपाक' के यथार्थ का परिचय देना लेखक को अभिप्रेत है।

१. साहित्यालोचन : श्यामसुन्दर दास, पृ० १६३।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भुवन : भवन का वास्तविक नाम इन्दिरा है। सम्पन्न परिवार में जनमी इस बालिका का विवाह पन्द्रह वर्ष की आयु में हो गया था। पति की अगले ही वर्ष मृत्यु ने उसे कुम्भीपाक में धकेल दिया। शर्माजी और चम्पा के साथ वह मुंशी मनबोधन लाल के मकान में रहने लगी।

वह बड़ी सरलहृदया है। निर्मला का प्यार पाकर बुआ के द्वारा अपने अनुचित उपयोग की बात, वह बता देती है। नीरू पर वह पूरा भरोसा रखती है, तभी बाथरूम में नहाते समय वह अपना गला कटने का संकेत नीरू को देती है।

नीरू के द्वारा कुम्भीपाक से मुक्ति पा वह काशी चली जाती है। नीरू के भाई सदानन्द और भाभी रंजना के परिवार में वह घुलमिल जाती है। बेडमिन्टन खेलना और तैरना भी अब उसने सीख लिया है। समाज में सम्मान प्राप्त होने वाली राह पर अब वह चल निकली है। उसके चरित्र का और विकास किया जा सकता था। उसका चरित्र अधूरा लगता है।

निर्मला : कम्पाउण्डर मुंगेरीलाल की पत्नी निर्मला बड़ी चुलबुली, होशियार, अल्हड़ और तेज नजर की युवती है। भुवन के झूठ बोलने को वह भाँप जाती है, पर अपने को अनजान और मूर्ख बताती है। वह बड़ी चतुर है, इसलिए भुवन के हृदय पर धीरे-धीरे अधिकार कर सारी बातें उससे जान लेती है और उसे इस नर्क से बचाती है। वह चम्पा को भी इस कुम्भीपाक से बचाना चाहती है।

उसके गुण और सद्व्यवहार का परिचय मनबोधन लाल द्वारा कम्पाउन्डर को कहे इन शब्दों से मिलता है : "आपकी घरवाली बड़ी गुनमन्त है, ज़बान से इमरित टपकता है।' वह बुआ से मिलकर भुवन की जानकारी उसे देती है और उसके विकल मन को शांत करती है।

वह बाल-बच्चा होने के लिए साधुओं द्वारा किये जाने वाले मंत्र-तन्त्रों के खोखलेपन से परिचित है। किन्तु बहादुर और दूसरों की कुम्भीपाक से रक्षा करने वाली नीरू के प्रति भुवन का मन ही मन यह सोचना, 'और तेरे पास नित नये छैले आते हैं, ठिठोली और खिलखिलाहट, कमीज के कालर में सेन्दुर का दाग, इत्र की खुशबू और रेशमी रूमाल, गटर में चमकती हुई चूड़ियों के टुकड़े' कुछ आश्चर्यजनक लगता है। उसका यह चारित्रिक विरोधाभास और पंकिल आचरण, लेखक द्वारा उसके प्रति पूर्ण न्याय न कर सकने का संकेत देता है। नागार्जुन ने 'आइने के सामने' में इसे स्वीकार भी किया है : "कम्पाउण्डर की उस बहादुर बीवी का ख्याल आते ही माथा दर्द करने लगता है कि बेचारी के प्रति मुझसे भारी अन्याय हो गया।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चम्पा : बुआ का नाम चम्पा है। वह आरम्भ में बीमार बतायी जाती है, लेकिन डाक्टर के परहेज को नहीं पालती।

परिस्थितियाँ उसे बी० एन० शर्मा के पास ले आती हैं। वह निराश्रित लड़कियों का इधर-उधर सम्बन्ध जमाकर अच्छी-खासी रकम ऐंठती है। भुवन के कपड़े आदि न बनवाने की भूल को बड़ी चालाकी से वह टाल जाती है।

चम्पा संजीवन आश्रम में जाया करती है, जहाँ पल रहे अनाचार से वह परिचित है। यहीं उसे अपने पूर्व जीवन की स्मृति हो आती है, पति की मृत्यु के बाद कायर और विधुर जीजा का उसकी ओर आकर्षित होने के बाद भी भयवश उसकी माँग में सिन्दूर न भरना, चम्पा का खटिक के साथ भाग जाना, उसके बाद सफदर के साथ पूर्वी पाकिस्तान में रहना, दो बच्चों को जन्म देना, सफदर की मारपीट से त्रस्त होना, हिन्दुस्तान आते वक्त कटिहार जंक्शन से बच्चों और सफदर मियाँ को छोड़ भाग जाना, सरदारों के साथ रहना, अनैतिक कृत्यों में सजा, कैद के बाद शर्माजी के साथ रहना, सारी बातें उसे याद आती हैं। इस नारकीय जीवन से उसे नफरत हो जाती है। वह पत्र लिख कर भुवन के चले जाने को ठीक बताती है और उससे क्षमा माँगती है। उसके चरित्र में परिवर्तन आने लगता है। उसके विचार बदल जाते हैं। वह दानापुर जाकर राय साहब को आश्रम के भ्रष्टाचार से परिचित कराती है। इसके बाद टाइपिंग सीख कर एक टाइपराइटर राय साहब की मदद से लेती है। 'गृहशिल्प कुटीर' के नाम से अचार, पापड़, बड़ी आदि की दुकान डालकर श्रम और सम्मान से कमाई की रोटी खाती है।

चम्पा का चरित्र पूर्ण गतिशील और परिवर्तन लिये हुए है। मानव-मन में पूर्व जीवन की स्मृतियाँ यदा-कदा उभरती रहती हैं, पर क्या उनसे वह अपना जीवन बदल देता है ? लगता है, परिस्थितियों की गम्भीरता ने चम्पा को मार्ग बदलने के लिए विवश कर दिया। इसीलिए उसका यह परिवर्तन स्वाभाविक लगता है।

वह निर्मला के समक्ष भी भुवन को कुम्भीपाक से उबारने के लिए कृतज्ञता ज्ञापित करती है।

आरम्भ में उसका परिचय देते हुए उपन्यासकार ने लिखा है : "बीमारी के चलते बुआ का बदन ढाँचा भर रह गया था।" लेखक ने उसकी बाह्य आकृति का चित्रण इस प्रकार किया है : "नाटे कद की सुडौल देह, गेहुँआ सूरत और चाँद-सा मुखड़ा—कमलपत्री आँखें, नुकीली नाक, पतले होंठ, साँचे में ढले हुए गाल…।" इन दोनों वर्णनों से उसकी आकृति का अलग-अलग प्रतिबिम्ब पाठक के मन में बनता है। शुरू से एक रुग्ण, दुबली, निस्तेज महिला हम उसे देखते हैं, आगे चलकर उसे लावण्यमयी चित्रित पाते हैं। इस तरह की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

असंगति ठीक नहीं। पात्रों के सही परिचय में यह घातक हो जाती है, 'वरुण के बेटे' के पात्र खुरखुन के सम्बन्ध में भी नागार्जुन ने ऐसा ही किया है।

इन पात्रों के अतिरिक्त दिवाकर शास्त्री सम्पादक और साहित्यकार हैं। वे मंत्री महोदय को साहित्यिक सिद्ध करने के लिए लेख लिख-लिखकर देते हैं। आज साहित्यकारों का एक वर्ग आर्थिक अभाव के शिकार होकर अपने स्तर से गिरने के लिए किस प्रकार विवश है, इसका चित्रण इस पात्र के द्वारा लेखक ने किया है। प्रकाशक भी लेखक की विवशता का अनुचित लाभ उठाते हैं।

तिलकधारी दास बड़ा छँटा हुआ व्यक्ति है। तिकड़मों से वह हर काम करवा लेता है। मंत्रियों और अधिकारियों सब तरफ उसकी पहुँच है। पुस्तकें चलवाना, ग्रामोद्योगी माल के आर्डर ले लेना और घटिया माल सप्लाई कर देना उसके बायें हाथ के खेल हैं। अनैतिकता की पराकाष्ठा पर पहुँचा हुआ यह धूर्त लड़कियों की सप्लाई, अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए, भी करता है।

महिम शराबी और क्रोधी चित्रकार है। उम्मी की माँ विवश नारी है। मुंशी मनबोधन लाल पैसे को प्रभु समझने वाला धनप्रेमी है। समय पर किराया देने वाला उसकी नजरों में शरीफ और एडवांस देनेवाला मसीहा है। उसका नागार्जुन ने परिचय दिया है: "मकान मालिक किराया दोहन कला का आचार्य तो था ही, अपने को एक्जीक्यूटिव इंजीनियरों का नाना समझता था।"

पात्रों के चरित्र-चित्रण में लेखक ने पर्याप्त कुशलता का परिचय दिया है। पात्रों के चरित्र परिवर्तनशील हैं। उम्मी, माँ द्वारा अपने सुहाग-अपहरण के अपराध को भूल कर उसे ले जाती है। महिम स्वास्थ्य लाभ हेतु गाँव चला जाता है। चम्पा बदल जाती है। भुवन बचा ली जाती है। इस प्रकार पात्रों का चरित्र प्रगतिशील है। भ्रष्ट लोगों का चरित्र लेखक ने यथार्थता से चित्रित किया है। ऐसे पात्रों की चपलता को नागार्जुन के उपन्यासकार ने पूरी तरह पकड़ा है। "ऐसे लोगों का भोंडा चित्रण तो होना ही चाहिए था, पर साथ ही नागार्जुन ने काँग्रेसी मंत्रियों को भी बहुत काले रंग में चित्रित किया है, मंत्री के नाम से जो लेख अखबारों में छपते हैं, उन्हें 'अधभूखा' लेखक लिखता है, और मंत्रीजी उन्हें पढ़कर शीर्षक के नीचे अपना नाम बैठा देते हैं।"[१]

पात्रों का अन्तर्द्वन्द्व भी नागार्जुन ने चित्रित किया है। उम्मी की माँ एवं चम्पा के पूर्व जीवन की घटनाएँ उसके मन में उभरी स्मृतियों से ही हमें ज्ञात होती हैं। रंजना स्वप्न में एक प्यासी हरिणी को शिकारियों से घबराया हुआ देखती है। भाग कर वह हरिणी उसके पास आती है। इस हरिण का चेहरा

१. सन् १९६० का हिन्दी साहित्य; मन्मथनाथ गुप्त, सरिता, जनवरी १९६१।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भुवन का हो जाता है। इस प्रकार अंतर्द्वन्द्व का सूक्ष्म चित्रण किया गया है। मन की गहरी घाटियों में लेखक की पहुँच का ज्ञान इनसे होता है।

पात्र और चरित्र-चित्रण की दृष्टि से, कुछ असंगतियों को छोड़कर, यह उपन्यास सफल है।

उद्देश्य : प्रेमचन्दजी के अनुसार उपन्यास का उद्देश्य 'अपने विचारों का प्रचार कर मानव हृदय के रहस्यों से अवगत कर व्यक्ति का परिष्करण करना है।"[1]

'कुम्भीपाक' में भी मानव-वृत्तियों के यथार्थ रूप का परिचय देते हुए लेखक ने एक आदर्श जीवन की कल्पना को अपना उद्देश्य बनाया है। आज विधवा या निराश्रित स्त्रियाँ किस प्रकार अधेड़ और घुटी हुई तबियत के लोगों की वासना का शिकार बनकर जीते-जी कुम्भीपाक-सा नारकीय जीवन व्यतीत कर रही हैं। अपना सम्मान, अपना शरीर, अपना स्तर क्या नहीं बेचना पड़ता है उन्हें। ऐसी नारियों की दयनीय स्थिति से परिचित कराते हुए उन्हें कुम्भीपाक से बाहर लाकर उनके लिए श्रमजीवी जीवन व्यतीत करने का मार्ग लेखक ने प्रशस्त किया है। चम्पा और भुवन जैसी महिलाएँ समाज में सम्मानपूर्वक जी सकें, ऐसे साधन सुझाना लेखक का लक्ष्य रहा है।

अपने लक्ष्य उसने में चम्पा से व्यक्त कराया है : "घबड़ा कर शादी न कर लेना भुवन; न किसी आश्रम में भर्ती होना। मुझे लगता है तुम समाज की इस सड़ांध से, इस कुम्भीपाक से निकल कर नयी दुनिया के समझदार लोगों के बीच पहुँच गयी हो, वहाँ जहाँ नर-नारी मिल-जुल कर आगे बढ़ते हैं, जहाँ कोई किसी की बेबसी का फायदा नहीं उठाता, कोई किसी को चकमा नहीं देता। जहाँ पुरुष बल होगा तो स्त्री बुद्धि होगी, स्त्री शक्ति होगी तो पुरुष ज्ञान, भुवन तुम निश्चय उसी संसार में पहुँच गई हो।"

नागार्जुन का ध्येय नारियों में आत्मविश्वास जाग्रत करना रहा है। राय साहब के कथन से यही बात स्पष्ट हो रही है : "हम बड़ी जात वालों ने महिलाओं को पंगु बना रखा है। जीवन का सारा रस निचोड़ कर सीठी बनाकर छोड़ दिया है। श्रम, प्रज्ञा, सहयोग, विवेक और सुरुचि सभी आवश्यक हैं—चम्पा ! जीवन में इन पाँचों का समन्वय करना होगा। पुरुषों की ही बपौती नहीं है स्त्रियों का भी साझा है इनमें।"

नारी चेतना का प्रमुख उद्घोषक बनकर कुम्भीपाक हमारे सामने आया है।

इसके अलावा मंत्र-तंत्र एवं अंधविश्वासों का खण्डन, भ्रष्टाचार का चित्रण, अनैतिकता का पर्दाफाश, देश के नेताओं का विदेशों में हाथ फैलाना, अवसरवादी

१. प्रेमचन्द के साहित्य सिद्धान्त, नरेन्द्र कोहली, पृ० १२५।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राजनीति की स्वार्थपरता आदि विभिन्न विषयों पर चुटकी लेते हुए उनका यथार्थ चित्रण करना लेखक का लक्ष्य रहा है।

८. हीरक जयन्ती :

'हीरक जयन्ती' का प्रकाशन-काल १९६२ ई० है। प्रस्तुत उपन्यास नागार्जुन की सशक्त व्यंग्य कथाकृति है। इसमें भ्रष्ट नेतृत्व पर चुटीले व्यंग्य और हास्य का छिड़काव किया गया है।

कथानक : 'हीरक जयन्ती' ऐसा ही उपन्यास है, जिसमें एक भ्रष्ट काँग्रेसी मंत्री नरपतनारायण सिंह 'बाबूजी' की हीरक जयन्ती का आयोजन उनके द्वारा लाभान्वित भक्तों द्वारा किया जाता है। इस समारोह की योजना चाटुकार कवि मृगांक के मस्तिष्क की उपज है क्योंकि समर्पित किये जाने वाले अभिनन्दन ग्रन्थ की तैयारी में उनके लिए ६००० रुपये) कूट लेने का सुअवसर था। यह योजना बाबूजी के सभी प्रशसकों द्वारा अनुमोदित तो की ही जाती है, पर बाबूजी की अनन्य हित-चिन्तिका "मंजुमुखी देवी तो इसे सुन खुशी के मारे दुहरी हो जाती है।"

पन्द्रह सदस्यों की 'श्री नरपत हीरक जयन्ती समारोह समिति' गठित की जाती है। अर्थ उपसमिति डेढ़ लाख रुपया कलकत्ता और आसपास के खान क्षेत्रों से वसूल करती है।

समारोह की तारीख तय कर ली जाती है, अध्यक्षता के लिए केन्द्रीय मंत्री घासीरामजी पधारते हैं। बाबूजी को अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पित करने के बाद वे उनकी जन-सेवा और त्याग का उल्लेख अपने भाषण में करते हैं। बाबूजी कृतज्ञता ज्ञापन करते हैं, और राजा रेवतीरंजन प्रसाद सिंह अपना 'फुलझड़ी' भाषण देते हैं। कार्यक्रम के अन्त में कवि-गोष्ठी के अतिरिक्त दो तरुणियों का नृत्य भी रखा जाता है। नृत्य की भाव-भंगिमा और षोडशियों के अंग-प्रत्यंगों का उठाव-कसाव देख केन्द्रीय मंत्री घासीरामजी के नेत्र न्योछावर हो जाते हैं।

डुमरिया के कुमार प्रद्युम्न नारायण सिंह द्वारा आयोजित प्रीतिभोज के बाद ही फोन से ज्ञात होता है कि बाबूजी के सुपुत्र नगेन्द्र को अवैध रूप से ट्रक में गाँजा भरकर लाने के अभियोग में पुलिस कस्टडी में रखा गया है, किन्तु एम० पी० श्री राय अपनी पूर्व अर्जित राजनीतिक कुशलता से नगेन्द्र को उसी समय छुड़वा लेते हैं। दूसरे ही दिन बाबूजी की पुत्री मृदुला अपनी स्वर्गीया माँ के गहने और ५००० रुपये लेकर अपने युवक प्रेमी के साथ बम्बई भाग जाती है। इस समाचार को दो पैसे वाला अखबार 'बिगुल' पिता की 'हीरक जयन्ती' और पुत्री की 'ताम्र जयन्ती' शीर्षक से छापता है। यही इसका कथानक है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'हीरक जयन्ती' में औपन्यासिक दृष्टि से कथानक-संगठन की अत्यल्पता दिखाई देती है।

नरपत बाबू और समिति के सदस्यों की करतूतें चित्रित करने का ढंग औपन्यासिक कम और नाटकीय अधिक है। 'परिचय पत्रिका' खण्ड में अलग-अलग एक-एक पात्र की करतूतों का परिचय दिया गया है। 'पिछला दिन : पिछली रात' शीर्षक में इसी प्रकार सब पात्रों के अन्तर्द्वन्द्व, अभिनयात्मक विधि से, व्यक्त हुए हैं। आठ बजे दिन वाला अध्याय तो बिल्कुल एकांकी नाटक बनकर रह गया है। इसलिए हम कह सकते हैं कि कथानक के संगठन और विकास पर लेखक का ध्यान कम रहा है। उपन्यास में समारोह का आयोजन तो लेखक प्रस्तावना के बाद ही करा सकता था पर आरम्भ से १२२ पृष्ठों तक लेखक ने काँग्रेसी नेताओं एवं साहित्यकारों की यथार्थ स्थिति पाठकों के सम्मुख रखी है। पात्रों द्वारा प्रतिद्वन्द्वी पात्र से चेतनाहीन स्थिति में किये गये वार्तालाप में और कहीं-कहीं स्पष्ट कथोपकथनों में अभिनयात्मकता सहज ही देखी जा सकती है। अन्तर्द्वन्द्वों के इस बाहुल्य को देख यदि इसे अन्तर्द्वन्द्व-प्रधान उपन्यास भी कहा जाय तो अनुचित नहीं होगा। इसमें मुख्य रूप से भ्रष्ट नेतृत्व की समस्या है, जिसे लेखक ने चित्रित किया।

हास्य और व्यंग्य के द्वारा उपन्यास में रोचकता का अन्त तक निर्वाह किया गया है। नगेन्द्र के गाँजे के व्यापार में पकड़े जाने और मृदुला के भाग जाने की घटना ने कौतूहल को अचानक बढ़ा दिया है।

कुल मिलाकर 'हीरक जयन्ती' का संक्षिप्त कथानक, रोचकता एवं कौतूहल का सफल सामंजस्य लिए हुए, जन-सेवा की आड़ में किये जा रहे अवसरवादी नेताओं के भ्रष्ट साधनों का लेखा-जोखा है।

पात्र और चरित्र-चित्रण : 'हीरक जयन्ती' उपन्यास में नायक और नायिका का अभाव है, इसके पात्रों के दो ही वर्ग किये जा सकते हैं—पुरुष पात्र और स्त्री पात्र। पुरुष पात्रों में कवि मृगांक, प्रचण्ड, विशाख, ललनजी, राजा रेवती रजन प्रसाद सिंह, गोपीवल्लभ ठाकुर, महन्त सीताशरण दास, बाबू रामसागर राय एम० पी०, पं० शिवदयाल पाठक, रामप्यारे प्रसाद, धर्मराज सिंह, लच्छोमल, सेठ रामनिरंजन अग्रवाल, माल मंत्री नरपत नारायण सिंह, घासीरामजी आदि हैं। स्त्री पात्रो में मंजुमुखी देवी, वन्दना, माधवी आदि हैं। अधिकांश पात्रों का परिचय लेखक ने 'परिचय पत्रिका' में दे दिया है। परिचय की एक-एक पंक्ति व्यंग्य और कहीं-कहीं हास्य से युक्त है।

समिति के सब पात्र अनैतिक कार्यों में लिप्त हैं। ऊपर से वे अवश्य खादी पहनते हैं, पर मन के अन्दर पैतरेबाजी के दाँव उन्हें सूझा करते हैं। अवसरवादी राजनीति में उनकी गहरी आस्था है और इसी के कारण समय-समय पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इन सदस्यों को आर्थिक लाभ हुआ है। सब के कई-कई मकान, कारखाने और मोटरें हैं। विधायक बुझावनराम कूप-निर्माण के लिए प्राप्त धनराशि डकार जाते हैं। राजा साहब को राजनीति में कूट-कौशल अधिक भाता है, पानी में डूबी जमीन वे विनोबा को दान करते हैं, वे रंगीन तबियत के व्यक्ति हैं। महन्त सीताशरण दास गुरु भाई को मिठाई खिलाकर वैकुण्ठ लोक पहुँचाने के बाद गद्दी पर रोते हुए बैठते हैं। किसानों और खेतिहरों के पक्ष में जो भी दो बात बोला कि महन्तजी ने उसकी मरम्मत करवायी। वे गाँजा नहीं पीते लेकिन उसकी गंध अप्रिय नहीं है। शिवदयाल पाठक पुराने नेता हैं, अपने निर्वाचन क्षेत्र को एक बार अकालग्रस्त घोषित करवाने में सफल रहे थे, उनकी पुत्री योगमाया को शासकीय गुट के सभी एम० एल० ए०, एम० एल० सी०, एम० पी० आदि का स्नेह मिलता था। रामप्यारे प्रसाद साधना-सदन के महामंत्री हैं। कलकत्ता के एक कृपावंत धन कुबेर की विधवा बहन गोमती देवी पर आपकी विशेष कृपा है। बाबू धर्मराज सिंह ने दो नामों से एक ही प्रेस चला रखा है। रामनिरंजन अग्रवाल बाबूजी के प्रमुख विश्वासपात्र हैं। बाबूजी के दो भीतरी शत्रुओं को विधानसभा में न आने देने के लिए उन्होंने कुछ उठा नहीं रखा। गोपीवल्लभ ठाकुर माधवी का सत निचोड़ चुके हैं।

कवि मृगांकजी बड़े चाटुकार, धूर्त और चरित्रहीन हैं। गुमनाम तौर पर स्कूली रीडरें निकालते हैं। मंजुमुखी, बाबूजी आदि के नाम से प्रकाशित लेख आपके द्वारा ही लिखे जाया करते हैं।

मंजुमुखी देवी बाबूजी की परम आराधिका और उनकी स्नेह-भाजन है, उनके कारण ही देवीजी का विकास सत्तारूढ़ दल की अभिनेत्री के रूप में हुआ है। फैशन से आप युवती लगती हैं पर उम्र से परम प्रौढ़ा। समारोह के समय उनके भाषण के इस अंश पर "आज मैं जो कुछ भी हूँ बाबूजी की कृपा का फल है" हॉल में व्यंग्य और हास्य की आभा बिखर जाती है। नाटकीयता से युक्त चुलबुलापन उनकी विशेषता है।

नरपत नारायण सिंह माल-मंत्री हैं—अव्वल दर्जे के भ्रष्ट, भ्रष्टाचार और मातहतों की रिश्वतखोरी को शह देनेवाले बाबूजी तबियत के बड़े ही तरल भी हैं। अलबम देखते हुए उनके कृत्यों का हमें परिचय मिलता है। रानी भुवन मोहनी की मानसिक व्यथा आपने ऐसी दूर की उसने कई बँगलें आपके लिए बनवा दिये। बाढ़-पीड़ितों के लिए आयी आर्थिक सहायता में से यदि कुछ ले लिया जाय तो उसे आप अनुचित नहीं मानते। मंजुमुखी पर आपकी विशेष कृपा है। माधवी को तृतीय श्रेणी होते हुए भी आप उन्हें विभागाध्यक्ष बनवा ही देते हैं। अब उसे प्रिन्सिपल बनवाएँगे।

'हीरक-जयन्ती' समारोह में आप भाषण देते हैं। भाषण में आप गाँधीजी के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साथ अपने सम्पर्क का जिक्र करना नहीं भूलते। अपने सुपुत्र नगेन्द्र को नेपाल से गाँजा लाने के अभियोग में पकड़े जाने पर पुलिस के वरिष्ठ अधिकारियों पर दबाव डलवा कर छुड़वाने में बाबजी का चरित्र पूरी तरह उजागर होता है। मृदुला आपकी ही सुपुत्री हैं। आपके लिए जिसका कथन है : "दसियों युवतियों ने आपकी छत्रछाया में वैधव्य के अभिशाप से छुटकारा पाया है।" बाबूजी का सारा जीवन जन-धन का शोषण करते और ऊपर से 'मिठास युक्त मुस्कान' बिखेरते हुए बीता है। लेकिन भाषण में वे कहते हैं : "शासन और सत्ता की जरा भी लालसा हमारे अन्दर नहीं, हाँ, इस बात की लालसा जरूर है कि जनता-जनार्दन की सेवा के लिए अन्तिम क्षण तक हम अपने तन-मन का उपयोग कर सकें।" चित्र में योरोपीयनों के बीच खादी के लिबास में अपने को देख वे कहते हैं : "ऐसे ही अवसरों पर राष्ट्रीय संस्कृति खराद पर चढ़ती है।" कथनी और करनी का अन्तर उनके चरित्र में देखा जा सकता है।

इस प्रकार उपन्यासकार ने सभी पात्रों का चरित्र-चित्रण यथार्थता से किया है। सारे पात्र अत्यन्त भ्रष्ट, आडम्बरप्रिय, अनैतिक और चरित्रहीन हैं। अवसरवाद ही इनकी राजनीति का मूल मंत्र है, स्वार्थ-साधन ही इनकी देश-सेवा है। ऊपरी दिखावा कर जनता में पवित्र बने रहना ही इनका ध्येय है। ये अवसरवादी राजनीतिज्ञ और साहित्यकार अपने समय का अधिक भाग मंसूबे बाँधने और 'कब कैसी चाल फेंकने में कितना लाभ है' सोचने में ही बिता देते हैं। तन्द्रा में डूबा हुआ इनका मस्तिष्क मानसिक असंतोष को उभार कर बाहर ला देता है। बेचारों को नींद में भी तिकड़मबाजी के पैतरें ही सूझा करते हैं। वस्तुतः वासना पूर्ति ही इनका चिन्तन है, गरीबों का शोषण ही इनका व्यसन है और खद्दर ही इनका वसन है।

'साहित्यालोचन' में डॉ० श्यामसुन्दर दासजी ने चरित्र-चित्रण के सम्बन्ध में लिखा है : "चरित्र-चित्रण में प्रायः दो उपायों का अवलम्बन लिया जाता है, एक को विश्लेषणात्मक या साक्षात् और दूसरे को अभिनयात्मक या परोक्ष कहते हैं। पहले प्रकार में उपन्यास लेखक अपने पात्रों का चरित्र-चित्रण स्वयं अपने शब्दों में करता है। दूसरे प्रकार में लेखक आप मानों अलग खड़ा रहता है, और स्वयं पात्रों को अपने कथन और व्यापार से तथा उसके सम्बन्ध में दूसरे पात्रों की टीका-टिप्पणी तथा सम्मति से अपना चरित्र-चित्रण करने देता है। उपन्यासों में लेखक का वर्णन तो विश्लेषणात्मक विधि के अनुसार ही होता है और पात्रों का परस्पर कथोपकथन अभिनयात्मक प्रणाली के अनुसार, इसलिए प्रायः दोनों प्रणालियों का सम्मिश्रण देख पड़ता है।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'हीरक जयन्ती' के चरित्र-चित्रण में भी नागार्जुन ने दोनों विधियाँ अपनायी हैं, और दोनों का साथ-साथ ही प्रयोग किया है।

विश्लेषणात्मक पद्धति के अनुसार 'परिचय-पत्रिका' खण्ड में लेखक ने अपनी ओर से सभी का परिचय दिया है : "बाबूजी की दयादृष्टि से देवीजी का विकास अभिनेत्री के रूप में होने लगा। अभिनेत्री ? जी हाँ, अभिनेत्री ! लेकिन फिल्म लोक की नहीं सत्तारूढ़ राजनीतिक दल की अभिनेत्री। उसके भी गुट विशेष की, जिसके अन्यतम हीरो थे बाबूजी।" इस कथन में लेखक ने अपनी ओर से मंजुमुखी और बाबूजी का चरित्र-चित्रण किया है।

पात्रों के अन्तर्द्वन्द्व-प्रकाशन में तथा 'आठ बजे' दिन वाले अध्याय में अभिनयात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। उदाहरणार्थ, "पूनम चंद (निगाहें अंगूठियों के नगों पर टिकी हैं) छोटे फंक्शन हाल में ही जमते हैं, कहीं शामियाना रद्दी हुआ तो सारा गुड़ गोबर हो जाता है।"

गोपी बाबू (ऊँची आवाज में), "माफ कीजिए सेठजी, अभी आपने शामियाना देखा कहाँ है।" (व्यंग्यपूर्ण हँसी)।

लेखक ने इसमें आत्मविश्लेषण की नई टेकनीक अपनायी है। पात्रों के अचेतन मन में सोये भावों को उसने पकड़ा है और व्यक्त किया है।

'हीरक जयन्ती' में यथार्थवादी ढंग से पात्रों और घटनाओं का चित्रण होने से स्वाभाविकता और सजीवता सहज ही देखी जा सकती है, पात्रों का सृजन कथा और परिस्थितियों के अनुकूल है। 'हीरक जयन्ती' के ये वाक्य द्रष्टव्य हैं : "हवाई अड्डे पर माननीय घासीरामजी की अगवानी के समय भी क्या यही लिबास उपयुक्त जँचेगा ?"

नहीं, "हवाई अड्डे पर बन्द गले का कोट और पैंट अच्छे जँचेंगे। वहाँ सेक्रेट्रिएट के बड़े साहबों की भीड़ में चुस्त पायजामा विश्व-मानव की गरिमा में दरार डाल सकता है।"[१]

इसके पात्र काँग्रेसी शासकों के माहौल को उजागर करते हैं। मंत्रियों का एक वर्ग कितना विलासी और अर्थलोलुप है, इसका खुला चित्र 'हीरक जयन्ती' प्रस्तुत करता है। मंजुमुखी के जरिये उपन्यासकार ने काँग्रेसी मंत्रीजी की वासना का अद्भुत चित्र खींचा है : "हँसी आ गई तो शीशे में होठों की शरारत देखने लगीं और अपने आप ही खुशी के मारे दुहरी हो उठीं। बाबूजी तुम्हारी इसी अदा पर तो मरते हैं। हाँ, कुर्बान हैं बाबूजी तुम पर। इस तरह पेटीकोट और ब्रेसरी में अभी उस दिन बाबूजी ने देख लिया—तो कैसा मुस्कराए। मुस्कराए ही नहीं, कुछ कहा भी था न ? क्या कहा था ? उँह..."

१. हीरक जयन्ती, पृ० ६३।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मंजुमुखी के इन अन्तर्द्वन्द्वों से नागार्जुन ने विना कुछ छिपाये-बढ़ाये बाबूजी और मंजुमुखी के आपसी सम्बन्धों को हमारे सामने ज्यों-का-त्यों स्पष्ट कर दिया है। आत्म विश्लेषण का यह ढंग बड़ा मनोवैज्ञानिक है। मनुष्य के असंतोष, उसकी कुंठाएँ, अतृप्त वासनाएँ उसके अन्तर्मन में प्रायः उभरती रहती हैं, उनका चित्रण करना लेखक का मनोविज्ञान में समुचित पैठ का आभास देता है।

सारे पात्रों का लेखक ने इसी प्रकार परिचय दिया है। उपन्यास पढ़कर उनके बारे में कुछ भी जानना शेष नहीं रह जाता; क्योंकि उनकी बाहरी ही नहीं, भीतरी बातों को भी व्यक्त करने में लेखक सफल हुआ है।

संक्षेप में पात्र और चरित्र-चित्रण की दृष्टि से प्रस्तुत उपन्यास सफल है।

उद्देश्य : आज हमारा राष्ट्र भ्रष्ट नेतृत्व की समस्या से त्रस्त है। नेताओं का लक्ष्य है—किसी भी साधन से चुनाव जीतो और जन-सेवा की आड़ में अपनी तिजोरी भरो। उसका कहना है, "चरैवेति चरैवेति" अर्थात् खूब चरो, खूब चरो। ऊपर से खादी का शुभ्र परिधान धारण करनेवाले ये नेतागण अपने वैयक्तिक जीवन में कितने छँटे हुए अनैतिक कृत्यों में लीन, अन्याय और रिश्वतखोरी को प्रश्रय देनेवाले, शासकीय कार्यों में स्वार्थवश रुकावट डालनेवाले और रसिया हैं। चापलूसों और प्रशंसकों पर उनकी कृपादृष्टि बराबर रही है। वस्तुतः इनकी यह गुटबन्दी और अवसरवादिता प्रजातन्त्र के पौधे को पनपा रही है, या झुलसा रही है? और 'जन-हित' तथा 'जन-कल्याण' जैसे मीठे शब्दों का क्या होगा? क्या वे नेताओं के धाराप्रवाह भाषण में कई बार प्रयुक्त होंगे, शोभा बढ़ाएँगे? जनता सुनकर ही धन्य हो उठेगी। यही न उनकी देशसेवा और जनसेवा है। इसी के लिए तो वे राजनीति में आकर मंत्री, विधायक आदि बने हैं अन्यथा सत्ता और कुर्सी का मोह भला इन्हें क्यों होता?

इन्हीं सारी यथार्थवादी परिस्थितियों का चित्रण करना लेखक का लक्ष्य रहा है। इस प्रकार शायद वह जनता को इनसे सतर्क करना चाहता है। उपन्यास के द्वारा मात्र इनका यथार्थ रूप हमारे सामने रख देना ही उसका लक्ष्य प्रतीत होता है। इस भ्रष्ट नेतृत्व से जनता की रक्षा कैसे होगी? जनता यह सब देखकर क्या करे? इसका कोई स्पष्ट समाधान लेखक के पास नहीं है। समाधान देना लेखक का उद्देश्य भी न रहा है। काँग्रेसी माहौल की सही जानकारी कराना ही उपन्यास का अभीष्ट है।

९. उग्रतारा :

'उग्रतारा' का प्रकाशन १९६३ ई० में हुआ। यह नागार्जुन का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आठवां उपन्यास है। विवश उगनी की करुणा गाथा इसमें चित्रित है। लेखक ने कामेश्वर के द्वारा सामाजिक क्रांति की प्रेरणा दी है।

कथानक : कथानक में एक सामाजिक समस्या को उठाया गया है और उसका स्वस्थ एवं सात्त्विक समाधान प्रस्तुत किया गया है।

वस्तुतः नागार्जुन ने उगनी के जीवन के दिशा-परिवर्तन को ही चित्रित करने का प्रयास किया है। उपन्यास पढ़कर ऐसा नहीं लगता कि पात्र किसी अन्तर्द्वन्द्व से ग्रस्त नहीं हैं। संघर्ष उनके मन में चला ही करता है। कामेश्वर होने-वाले पुत्र या पुत्री का नाम चयन करता है, उगनी को भी उसने पूरी तरह सींथ में सिन्दूर भर कर अपना लिया है।

प्रथम परिच्छेद से उगनी और फेरीवाले कामेश्वर को देखकर पाठक का कौतूहल जाग्रत हो जाता है। ये कौन हैं, इनका क्या सम्बन्ध है—आदि प्रश्न मन में उठने लगते हैं।

लेखक ने घटनाओं के पर्दे क्रम से उठाये हैं, उसने एक-एक जिज्ञासा की तृप्ति धीरे-धीरे की है। कामेश्वर और उगनी के पकड़े जाने, उन पर पाकिस्तान पहुँचने का आरोप लगाने, और उगनी को भंग की वर्फी खिलाकर भभीखन सिंह का बलात्कार करने, आदि विवरण पृ० १०२ पर जाकर विदित हुए हैं।

इसके साथ ही तिवारीजी, उनकी पत्नी गीता आदि की जानकारी भी लेखक ने दी है।

प्रेमचन्द के अनुसार, "उपन्यासों के लिए पुस्तकों से मसाला न लेकर जीवन ही से लेना चाहिए।" 'उग्रतारा' का कथानक नागार्जुन ने जीवन से ही चुना है। समाज में बलात्कार और व्यभिचार की चर्चा आये दिनों सुनी जाती है। इसी प्रकार की घटना को लेखक ने मौलिक और आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया है। उपन्यास में प्रवाह सतत बना रहा है।

जेल की घटनाएँ, मठिया में कामेश्वर-उगनी-पुनर्मिलन और अन्य घटनाएँ सजीव बन पड़ी हैं।

पात्र-परिचय और चरित्र-चित्रण : उपन्यास की नायिका उग्रतारा है। उपन्यास के नाम से भी यही बात स्पष्ट हो रही है। सारा कथानक उसी के आसपास घूमता रहा है। कामेश्वर उपन्यास का नायक है, वह भी आरम्भ से अन्त तक उपन्यास में छाया रहा है और फल का भोक्ता है। इसके अलावा भभीखन सिंह, नर्मदेश्वर, भाभी, तिवारी, उनकी पत्नी, गीता, उगनी की माँ, गीता की नौ वर्षीया बहन आदि सहायक पात्र हैं।

उगनी : उगनी उपन्यास की मुख्य पात्र है। वह कामेश्वर से बहुत प्यार करती है, और इसीलिए उसके साथ भाग जाती है। गिरफ्तारी और जेल से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छूटने के बाद निराश्रित हो अधेड़ भभीखन सिंह से विवाह कर लेती है, पर हृदय समर्पण नहीं कर पाती।

प्रारम्भ से ही वह बड़ी विवश और अन्तर्द्वन्द्वों से घिरी हुई देखी जाती है। वह बडी भावुक है—कामेश्वर को एक गिलास पानी तक न दे सकने और कमीज के टूटे बटन न लगा सकने की विवशता पर रो पड़ती है।

उगनी पढ़ाई के महत्त्व को समझती है। वह गीता से कहती है : "तीसरी आँख होती है विद्या, समझी।" कामेश्वर के साथ दूसरी बार भी चले जाने पर उसे अनेक अन्तर्द्वन्द्वों से ग्रस्त दिखाया जाता है। वह भभीखन सिंह को पत्र लिखती है, जिसमें बच्चा बड़ा करके उन्हें सौंप देने का आश्वासन देती है। इसमें उसका सही ढंग से काम करने और निष्कपट रहने का गुण दिखाई देता है। वह बोलती कम है। उसके हृदय में उठते विचारों के द्वारा ही उसका परिचय हमें मिलता है। भावुकता और दृढ़ता का मिश्रण ही उसका स्वभाव है।

कामेश्वर : विशालहृदयी कामेश्वर एक जमींदार का पुत्र है जो विधुर है। प्रेम का ऐसा अभूतपूर्व आदर्श उसने हमारे सामने रखा है कि प्राचीन परम्पराओं के समर्थक तो उसे सर्वथा काल्पनिक पात्र ही मानने लगेंगे। उगनी से उसे सच्चा प्रेम है, तभी वह भभीखन सिंह द्वारा गर्भवती उगनी को फिर से अपना लेता है, सोचता है :"मैं उगनी को इस नरक से बाहर निकाल ले जाऊँगा।" कामेश्वर का चरित्र समाज के लिए महान आदर्श, शिक्षाप्रद और अनुकरणीय है। "वह नये भारत का नया युवक है, पुराने ढंग का छिछोरा नौजवान नहीं है वह।" उगनी के साथ पाठक भी उसके बारे में ऐसा ही सोचता है।

वह सुलझे हुए विचारोंवाला है। उगनी जब सिपाहीजी को पत्र लिखती है तो वह प्रसन्न होता है, और कोई दूसरा पति होता तो नाराज हो जाता। आरम्भ में भी वह उगनी के लिए सोचता है : "उस मुछन्दर अधेड़ से शादी करके यहाँ बैठ गई, ठीक ही तो किया।"

उसका सारा चरित्र विशालहृदयता और आशावादी सूत्रों से गठित है।

भभीखन सिंह : पचास वर्ष के मुच्छड़, नियमित दिनचर्या वाले सीधे-सपाट व्यक्ति हैं सिपाही भभीखन सिंह, पर भाँग मिला पेड़ा खिलाकर उन्होंने उगनी के साथ बलात्कार किया। उसके सौंदर्य, भोलेपन और विवशता का उन्होंने अनुचित लाभ उठाया। बाद में वे उगनी से प्यार भी करने लगते हैं। स्थान-स्थान पर उसकी तारीफ करते हुए भी हम उन्हें देखते हैं। नित्य प्रातः स्नान और रामायण-पाठ उनकी दिनचर्या की महत्त्वपूर्ण कड़ी है। कैदियों से बातचीत और मनोविनोद करते भी उन्हें देखा जाता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इन पात्रों के अलावा गीता, जो उगनी का सहज विश्वास जीत लेती है, उससे सहानुभूति रखती है। भामी, जो अपनी बातचीत के कारण विधायिकाजी कहलाती हैं, अपने सुधरे विचारों से कामेश्वर-उगनी के विवाह में सहयोग देती हैं। समाज में व्याप्त व्यभिचार को मिटाने के लिए बड़ा रचनात्मक सुझाव उनके पास है।

गीता की माँ चिड़चिड़े स्वभाव की स्त्री है। हनुमान मठ के बाबा अलमस्त प्राणी हैं। पात्रों के चरित्र की अधिकांश रेखाएँ लेखक ने उनके मन में उठने वाले विचारों से ही स्पष्ट की हैं। इसे आत्मविश्लेषण विधि कहना चाहिए। पात्र अपने मन की एक-एक पर्त खोलकर रखते हैं, जिसमें उनके विरोधी भी आ जाते हैं। यह अन्तर्द्वन्द्व सभी पात्रों के हृदय में चलता रहा है। सारे पात्र अपने स्थान पर सफल हैं।

आत्मविश्लेषण की यह नई टेकनीक नागार्जुन ने अपनायी है। आंतरिकी रहस्य व्यक्त करने में यह प्रणाली महत्त्वपूर्ण है। साथ ही इसमें कथोपकथन का आनंद भी मिल जाता है।

उगनी की भावुकता, कामेश्वर की दृढ़ता, भभीखन सिंह की सिधाई, भाभी की बुद्धिमत्ता—सब हमारे सामने दर्पण की तरह स्पष्ट हैं। सारे पात्र यथार्थवादी हैं। पर उपन्यास का अन्त महान आदर्श की ओर प्रेरित करता है।

पात्र और चरित्र-चित्रण की दृष्टि से उपन्यास सफल है।

उद्देश्य : इस उपन्यास में नायिका उगनी के माध्यम से समाज की विधवा या समाज के भेड़ियों द्वारा भ्रष्ट की गयी नारियों पर आने वाले संकटों से परिचित कराते हुए युवकों को उनके प्रति, छिछली नहीं, सक्रिय सहानुभूति रखने की प्रेरणा देना लेखक का लक्ष्य रहा है।

समाज में बढ़ते हुए व्यभिचार को कैसे रोका जाय ? क्या पिस्तौल से ? नहीं। इसे रोकने का रचनात्मक सुझाव नागार्जुन ने पृष्ठ ३६ पर इस प्रकार दिया है : "छिछोर मन का इलाज कारतूस की पेटियों से नहीं होगा, स्त्री-पुरुषों में समान रूप से समझदारी पैदा होगी और मनोरंजन के कई और साधन निकल आएँगे, तभी व्यभिचार घटेगा, देहात में खाते-पीते परिवारों के अधेड़ भारी मुसीबत पैदा करते हैं। उगनी जैसी लड़कियों के लिए ज्यादा संकट उन्हीं की ओर से आता है। दूसरा संकट है, डरपोक नौजवानों की छिछली सहानुभूति। इन संकटों का मुकाबला हम पिस्तौल से नहीं कर सकते।"

कामेश्वर को प्रस्तुत करते हुए लेखक ने युवकों को विकसित मस्तिष्क वाला एवं प्रगतिशीलता का पोषक बनने की प्रेरणा दी है। उसके समान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विस्तृत दृष्टिकोण एवं विशाल हृदय लेकर ही हम समाज की जर्जरित परम्पराओं से टकरा सकते हैं।

नागार्जुन ने समाज में व्याप्त व्यभिचार का यथार्थवादी चित्रण करते हुए ऐसी अबला नारी का हाथ पुरुष के सबल हाथों में थमवा कर एक श्रेष्ठ समाज की स्थापना की है।

देश में आज विधवा समस्या, वेश्या समस्या आदि के विरुद्ध आंदोलन करने वाले, भीषण भाषण देने वाले अनेक नेतागण मिल जाएँगे, पर इस समस्या का रचनात्मक समाधान क्या होगा ? ऐसी नारियों से विवाह करने के लिए कौन तैयार है ? इस ओर संकेत कर ऐसे युवक तैयार करना लेखक का लक्ष्य रहा है।

महान कलाकार का लक्ष्य हमेशा अपने समाज की गलित एवं हानिकारक रूढ़ियों का खण्डन करते हुए, समाज को उन्हें त्याग कर, आगे बढ़ने के लिए प्रेरणा देना रहा है। प्रस्तुत उपन्यास में नागार्जुन का यही प्रयास यहाँ दिखाई देता है। नागार्जुन द्वारा प्रस्तुत आदर्श को 'सिनेमा या रूमानी भावुकता का आरोपण लिये हुए' कहना इसलिए अनुपयुक्त है कि इस प्रकार के क्रांतिकारी कदम उठाते हुए कितने ही युवकों को अब देखा जा सकता है।

डॉ० लक्ष्मीकांत सिन्हा ने इसमें मात्र विधवा समस्या मानी है, : "यह समस्या साहित्यिक कृतियों के प्रेरक रूप में अपनी शक्ति खो चुकी है।"

वस्तुतः इसमें विधवा विवाह की समस्या है ही नहीं। इसमें दूसरे के द्वारा गर्भिणी अपनी प्रेमिका को पुनः अपनाने का महान देवोचित आदर्श और साहस तथा प्राचीन परम्पराओं को झटके से उखाड़ फेंकने का आवेश है। अपने इस उद्देश्य को व्यक्त करने में लेखक पूरी तरह सफल रहा है।

१०. इमरतिया :

इस नाम से नागार्जुन का यह नवीनतम उपन्यास है। 'इमरतिया' का प्रकाशन १९६८ और 'जमनिया के बाबा' का १९६९ में हुआ है। दोनों की कहानी एक ही है किन्तु प्रकाशक अलग-अलग हैं। इसमें साधुओं और मठों के धार्मिक आडम्बरों का पर्दाफाश किया गया है।

कथानक : इस उपन्यास के कथानक में पूर्व घटित एक-एक घटना को लेखक ने पात्रों के वर्त्तमान में घटित घटनाओं के साथ जोड़कर प्रस्तुत किया है। बाबा और मस्तराम की गिरफ्तारी का कारण, लक्ष्मी के बच्चे की बलि की घटना, स्त्रियों का बेंत लगवा कर आशीर्वाद लेना, भगौती का वकील

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

से मिलना—सब लेखक ने पात्रों के मुख से ही स्पष्ट कराया है। इस उपन्यास में प्रत्येक पात्र अपनी-अपनी बात आकर सुनाता है। हमें इनसे ही ज्ञात होता है कि साधु के भेष में ये लुटेरे जनता को कैसे लूट रहे हैं।

प्रेमचन्द के अनुसार कथावस्तु में तीन बातें आवश्यक हैं—१. कथा की सरसता एवं रोचकता, २. घटनाओं का चयन, ३. कथानक का कसाव एवं तत्सम्बद्ध तर्क-सम्मतता।

इन सिद्धान्तों की कसौटी पर प्रस्तुत उपन्यास खरा उतरा है। प्रत्येक पात्र को सामने लाकर उसके द्वारा कथा कहलाने से प्रयुक्त कथोपकथनों से तथा वातावरण के सजीव चित्रण और जिज्ञासा की क्रमशः संतुष्टि से कथा में सरसता और रोचकता पर्याप्त देखी जा सकती है।

घटनाओं के चयन और प्रस्तुतीकरण में लेखक की प्रतिभा दिखाई देती है। पहले परिच्छेद में बलि की घटना, दूसरे में मस्तराम द्वारा अभयानन्द की पिटाई और गिरफ्तारी, जेल के कर्मचारियों को भी उसी अँधविश्वास में डूबे हुए दिखाये जाने, आगे बाबा की जटाएँ उतारने, हरिजनों की समस्या, पूँजीपतियों का लोभ, बाबा की समाधि का रहस्य, आदि सारी चर्चाएँ होती हैं।

बाबा और भगौती के क्रमशः आने और अपनी बातें कहने से जमनिया मठ की स्थिति, वकील साहब द्वारा मुकदमे की गम्भीरता और भगौती द्वारा अखबारों की कतरनें देखने से सारी बातें समझ में आ जाती हैं। इस प्रकार नागार्जुन ने घटनाओं के चयन में पर्याप्त बुद्धिमत्ता का परिचय दिया है।

हमें श्री विजेन्द्र नारायण सिंह का यह कथन दोषपूर्ण लगता है: 'क्या किसी उपन्यास का कोई परिच्छेद कहीं भी रखा जा सकता है? क्या उसके क्रम-निक्षेप में कथा की कोई अन्विति नहीं रहती?" (धर्मयुग, जुलाई १९६९)। वस्तुतः पात्रों को क्रमशः उपस्थित कर, अलग-अलग परिच्छेदों में उपन्यास की कथा प्रस्तुत करने के बाद भी, कुशलता उनके सफल सगुम्फन में है। प्रथम और द्वितीय परिच्छेदों में वर्णित कथा को आधार बनाकर आगे बाबा और भगौती प्रसाद के परिच्छेदों में नये ढंग से—जैसे समाचार-पत्रों की कतरनें देखते हुए—उसे दोहराया गया है। उक्त विद्वान आलोचक ने अपने लेख में 'इमरतिया' के लिए लिखा है: "या तो यह शिल्प की बहुत बड़ी उपलब्धि है अथवा लेखक के पास शिल्प नाम की कोई चीज नहीं है।"

एक कथा को दो क्या कई शिल्पों में गुम्फित किया जा सकता है। यह उपन्यासकार की क्षमता पर निर्भर करता है। इस मानी में नागार्जुन बहुत ही दक्ष उपन्यासकार हैं। वे अपने युग के अनुपम कथा-शिल्पी हैं। एक ही उपन्यास को दो शिल्पों में, चाहे किसी कारण से, रखकर नागार्जुन के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उपन्यासकार ने अपने कुशल शिल्पन का परिचय दिया है।

वस्तुतः शिल्प की दृष्टि से नागार्जुन का यह नया प्रयोग है। लेखक की असफलता या आलोचक की दूसरी आपत्ति तब मानी जा सकती थी जब नागार्जुन सारे परिच्छेदों को एक सूत्र में बाँधने में असफल दिखाई देते। पर उन्होंने सारी घटनाओं और परिच्छेदों के वर्णित ब्यौरों को अन्त तक ठीक से निर्वाह करने का सफल प्रयास किया है, कहीं कथा में बिखराव नहीं आने दिया है। इसलिए हम कह सकते हैं कि सचमुच ही यह शिल्प की बहुत बड़ी उपलब्धि है।

घटनाओं की विशृंखलता, शिथिलता, अस्वाभाविकता कहीं दिखाई नहीं देती। कोई न कोई कारण या घटना उपस्थित करके पाठक को व्यस्त रखने का पूरा प्रयास नागार्जुन ने किया है।

वस्तुतः इस उपन्यास का कथानक नागार्जुन के जीवन की एक वास्तविक घटना पर आधारित है। उपन्यास में अभयानन्द की जिस प्रकार पिटाई की गयी थी, और वह अपने स्वाभिमान पर दृढ़ रहा, वैसी ही घटना नागार्जुन के वास्तविक जीवन में घटित हुई है।

'आइने के सामने' में नागार्जुन ने लिखा है : "तुमने मुझे पिटवाया था। मैंने तुम्हें दो वर्ष जेल की सजा करवायी थी। तुम्हारी जटा तीस हाथ लम्बी थी। गोरखपुर के पारसी मजिस्ट्रेट ने तुम्हारी गिरफ्तारी के बाद पहला काम यही किया कि जटा मुँडवा दी···इलाके में तुम्हारे ढोंग की तूती बोलती थी—नागा बाबा ने बुलहवा के बाबा की माया को पंक्चर कर दिया। गवाहों ने अदालत में कहा था—वह व्यक्ति मूलतः 'तुमही' का रहने वाला मुसलमान है और भाग कर नेपाल चला गया था। वहाँ से साधु बनकर लौटा···काले चेहरे की लाल आँखें बार-बार मुझे घूर रही हैं।"

इस आपबीती सत्य घटना से प्रेरित हो लेखक ने बाबा के मुसलमान होने, नेपाल भाग जाने, वहाँ से आकर साधु के रूप में मठ चलाने, मठ को व्यभिचार, अबोध जनता के शोषण और राष्ट्रविरोधी कार्यों का अड्डा बना लेने की घटनाओं के रहस्य से परिचित कराने हेतु 'इमरतिया' उपन्यास लिखा है।

बाबू श्यामसुन्दर दास ने उपन्यास की कथा कहने का एक ढंग यह भी बताया है कि उपन्यासकार नायक का आत्मचरित उसके मुँह से अथवा कभी किसी उपपात्र या गौणपात्र के मुँह से कहलवाता है। बाबूजी के अनुसार, "इस ढंग के अनुसरण में उपन्यासकार को कह कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।"

'इमरतिया' भी एकपात्र मुखोद्गीरित उपन्यास है। डॉ० श्यामसुन्दर दास द्वारा वर्णित कठिनाई का सामना करने में नागार्जुन सफल रहे हैं।

पात्र और चरित्र-चित्रण : घटनाएँ पात्रों एवं चरित्रों के माध्यम से ही

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अभिव्यक्त होती हैं। उपन्यास में घटनाओं के माध्यम में ही उपन्यासकार पात्रों को प्रस्तुत करता है।

'इमरतिया' में घटनाओं के माध्यम से जिन पात्रों को हमारे सामने रखा गया है वे हैं—इमरतिया, बाबा, मस्तराम, भगौती, रसोइया महाराज, जेल के कर्मचारी, वकील अष्ठाना एवं पी० के० दास और उनकी बहन, आदि।

इनमें इमरतिया, मस्तराम, बाबा और भगौती मुख्य पात्र हैं, जो क्रमशः उपस्थित होकर अपना पक्ष प्रस्तुत करते हैं।

इमरतिया : उपन्यास की नायिका इमरतिया है। इमरतिया ठगों, अपराधियों और साधु-सन्तों के जाल में फँसी एक बहादुर और भावुक नायिका है। अपराधियों के साथ रहकर उसमें भी अपराध-वृत्ति के अंकुर दिखाई देते हैं। वह जेल काटना चाहती है। उसकी उम्र तीस-बत्तीस की है, पर तन्दुरुस्ती अच्छी होने से वह पच्चीस-छब्बीस की लगती है।

वह विनोदप्रिय है—सब्जी में बिल्कुल नमक न रहने पर वह महाराज से कहती है : "सारा नमक तुमने इसी में डाल दिया।" उसके मन में पुरुषों की प्यास दिखाई देती है। लगता है, उसका यौवन प्यासा है। महाराज की बनी हुई दाढ़ी वाले मुख को वह ध्यान से देखती है। महाराज की खुली जाँघ उसके हृदय के चकले पर बेलन के समान फिरती है। स्वप्न में अपना बदन किसी पुरुष के बदन से दबा हुआ उसे लगता है। इस प्रकार उसके मन में हम यौन अतृप्ति उभरती हुई पाते हैं। मस्तराम के प्रति भी उसके मन में खूब आकर्षण है।

लक्ष्मी के बच्चे की बलि दी जाने की घटना सुनकर वह बाबा के लिए कहती है : "यह बाबा बड़ा राक्षस है—भोले-भाले लोगों पर अपना आतंक जमाने के लिए एक आदमी क्या इतना घिनौना काम करेगा ?" हमें उसके इस कथन के पीछे उसकी संवेदनशीलता और नागार्जुन का स्पष्ट आक्रोश दिखाई देता है। गौरी की कामान्धता से भी वह नाराज होती है। वह बड़ी भावुक प्रकृति की है। मस्तराम से जब वह जेल में मिलने जाती है तो उसकी आँखें छलक पड़ती हैं।

वह हरिद्वार जाने का विचार करती है और कुछ दिन पी० के० दास की विधवा बहन, जो सत्संग में उसके पास आती थीं, के घर रहने चली जाती है। नाटक देखने में उसकी रुचि है। वह बंगला भी समझ लेती है।

मस्तराम : मस्तराम बाबा सचमुच ही मस्तराम है। जाड़ा उसे नहीं सताता। उसे सताया है—चरस और गाँजे की तलब ने।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हरिजन और निम्नवर्गीय लोगों के प्रति उसके मन में सहानुभूति है। वह कहता है : "जिस तरह मेहतर भी सफाई का काम कर चुकने पर नहा धो ले, कपड़े बदल ले, तो फिर हमारे साथ बैठकर वह पूजा-पाठ में क्यों नहीं शामिल होगा ? आत्मा तो एक ही है। शरीर का चोला अलग-अलग हो सकता है।"

मस्तराम धुनी आदमी है। स्वामी अभयानन्द द्वारा 'सच्चे दरबार की जय' न कहने पर उसने उसे जो पीटना शुरू किया तो अधमरा कर दिया। स्वयं के द्वारा इस निरपराध साधु को मारने और बाबा के हस्तक्षेप न करने की स्मृति में उसे बाबा के साधुत्व पर संदेह होने लगता है। जेल में भी उसने बेंत द्वारा आशीर्वाद देने की परिपाटी प्रारम्भ कर दी है।

उसे देश की भोली जनता के हृदय पर तरस आता है : "पढ़-लिख जाने पर भी देश के नागरिक जब तक आशीर्वादी बेंत से मार नहीं खाएँ उन्हें चैन नहीं पड़ेगा।" वह नहीं चाहता कि बाबा के लिए उपलब्ध सुविधा को वह भी भोगे। बाबा के लिए आयी शाल वह नहीं ओढ़ता। "वह शौकीन है—बस गाँजा, भंग, चरस और एक दो और चीजों का।"

मानव-सुलभ कमजोरियाँ हम उसमें पाते हैं। कहीं-कहीं बड़ा यथार्थ और स्वाभाविक पात्र वह दिखाई देता है। अभयानन्द को मारने की बात याद आते ही वह सोचता है कि इस प्रकार तो एक जानवर ही किसी पर हमला करता है।

हरिजनों, गरीबों और शोषितों के प्रतिउस के मन में सहानुभूति और पूँजीपतियों की निर्दयता के प्रति आक्रोश है। जाति-पाँति के भेद-भाव उसे नहीं भाते। वह सोचता है, "एक हरिजन ईसाई बनकर समाज में सम्मान पा सकता है फिर वह क्यों नहीं ईसाई बन जाय।"

वह बड़ा ही फक्कड़ और मस्त साधु है, और इस रूप में भारतीय संस्कृति, प्राचीन इतिहास, जातीय व्यवस्था, पूँजी का एक स्थान पर एकत्रीकरण, निम्नवर्गीय समाज की उपेक्षा, आदि गंभीर विषयों पर उसका आलोचनात्मक दृष्टिकोण हमारी समझ से उसे कुछ असामान्य, अस्वाभाविक और लेखक द्वारा आरोपित पात्र बना देता हैं।

उसका स्वभाव भी परिवर्तनीय है। उपन्यास का अन्त आते-आते वह भी बाबा के विरुद्ध हो जाता है।

बाबा : बाबा भी उपन्यास का प्रमुख पात्र है। सारी घटनाओं के केन्द्र में वही है। उसकी लम्बी जटाओं को पारसी हाकिम ने जेल में आते ही कटवा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डाला। वह बड़ा आडम्बरी और प्रपंची है। जेल में भी उसने बड़े जमादार की पतोहू के सीने की झाड़-फूँक शुरू कर दी।

वह अपने फन का बड़ा माहिर है। हिन्दू जाति की अँधश्रद्धा को उसने खूब परखा है, जमनिया में उसने मठ इसीलिए बनाया कि नेपाल की सीमा के निकट होने से जब चाहे पुलिस की 'टेढ़ी आँख' से बचने में सुविधा रहे। वस्तुतः वह एक मुसलमान था। एक लड़की के पीछे जवानी की दीवानगी ने उसे नेपाल भागने को विवश कर दिया। वह साधु बन गया और जमनिया का मठाधीश बनकर रहने लगा।

वह समाधि भी लेता है, जिसमें उसको फलाहार, मिष्ठान्न आदि सब चलते हैं। उसके द्वारा विकसित जमनिया का मठ तस्कर व्यापार, अबोध शिशु की बलि जैसे जघन्य कृत्य एवं व्यभिचार, देशद्रोह आदि कारनामों का अड्डा बना हुआ था। इसीलिए वह भी पुलिस की गिरफ्त में फँस गया।

उसकी कुछ चारित्रिक बातें, उसका विचारक होना और उसके इस कथन "सिकन्दर, औरंगजेब, नादिरशाह, हिटलर और स्तालिन औरतों से घबराते थे" से लगता है नागार्जुन ने उसके चरित्र में आवश्यकता से अधिक आरोपण कर दिया है। क्या उसने विश्व-इतिहास पढ़ रखा था? क्या वह विचारक या दार्शनिक था? उसका चरित्र भी हमें कुछ अस्वाभाविक लगता है।

भगौती : भगौती जमनिया मठ का अधिष्ठाता है। वह बाबा और मस्तराम को जमानत पर छुड़ाने की खूब कोशिश करता है। वकीलों से मिलता है। चन्दा इकट्ठा करते समय बाबा के सम्बन्ध की फबतियाँ सुनता है।

भगौती के विचार भी बाबा की ओर से परिवर्तित हो जाते हैं। वह घर पर लगा गेरुआ झंडा भी महाराज से उतरवा लेता है।

खाना बनानेवाला महाराज बड़ा सेवाभावी, वफादार और भावुक हृदय नौकर है।

इस प्रकार पात्रों का जो चरित्र हम 'इमरतिया' में देख पाये हैं उसके अनुसार सारे पात्र परिवर्तनीय स्वभाव लिये हुए हैं। इमरतिया, भगौती, मस्तराम, सुकुलजी, जमादार सब पहले-पहले बाबा पर श्रद्धा रखते हैं पर आगे चलकर उसे कपटी. चीन और पाकिस्तान का एजेन्ट, राक्षस आदि समझने लगते हैं; और तो और शिवपुर की रानी, जो कभी मठ पर बड़ी मेहरबान थी, किसी को भी सिफारिशी पत्र लिखने और इस सम्बन्ध में मिलने से इन्कार कर देती है। मजदूर बाबा के विरुद्ध नारे लगाते हैं।

हमें कहीं-कहीं पात्रों के विचार उनके सम्भावित ज्ञान से, उच्च दृष्टिकोण-सम्पन्न लगते हैं। ऐसे भ्रष्टाचारी और पाखंडी साधु, ज्ञान की दृष्टि से, वास्तव

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में पोंगा पंडित हुआ करते हैं। ऐसे भ्रष्टाचारी ढोंगी साधुओं के द्वारा हम देश और समाज के प्राचीन जातीय इतिहास, वर्त्तमान व्यवस्था, हिटलर और स्तालिन के नारी विषयक विचार, पूँजीपतियों के दुर्गुण आदि बातों में इतना अधिक दखल रखना स्वाभाविक नहीं मानते। वस्तुतः ऐसे स्थलों पर नागार्जुन अपने को पात्रों के पीछे छिपा नहीं सके हैं। उनकी स्पष्ट विचारधारा हमें वहाँ व्यक्त होती दिखाई देती है।

प्रत्येक पात्र के स्वकथन के अंतिम भाग में उसे बाबा के विरुद्ध कर दिया गया है। उनकी भी तो स्वार्थ-सिद्धि बाबा के साथ होती थी। इसलिए यह परिवर्तन भी आकस्मिक लगता है। मस्तराम सरीखा वफादार, सुकुलजी जैसा 'रोंआ का गुलाम' रहने की बात करनेवाला, भगौती और इमरतिया तथा रानी सब बाबा के विरुद्ध हो जाते हैं। लगता है, नागार्जुन ने अपनी मार का बदला लेने के लिए ही उसे अकेला छोड़ना चाहा है।

चरित्र-चित्रण के लिए लेखक को मनोवैज्ञानिक होना चाहिए। उसमें सहृदयता आदि गुणों का होना आवश्यक है। इमरतिया का चरित्र नागार्जुन ने बड़ी सहृदयता से गढ़ा है। मस्तराम, भगौती और बाबा के चरित्र-चित्रण में लेखक ने मौलिकता, स्वाभाविकता और सजीवता का मिश्रण किया है। किन्तु जहाँ नागार्जुन को हिन्दुओं की अँधश्रद्धा, जाति-पाति-भेद, पूँजीपतियों की धृष्टता और धूर्तता का स्मरण हुआ है, वहाँ वे अपने पात्रों को सम्हालने में असमर्थ रहे हैं। पात्र बहक गये हैं और नागार्जुन के विचारों को व्यक्त करना उन्होंने शुरू कर दिया है। इसलिए इन कतिपय स्थलों को छोड़कर पात्रों का परिचय पूर्ण स्वाभाविक है। सारे पात्र अपने मुँह से अपनी बात कहते हैं। इसमें भी स्वाभाविकता बढ़ गयी है। इस प्रकार चरित्र-चित्रण की विश्लेषणात्मक विधि की अपेक्षा उपन्यासकार ने अभिनयात्मक विधि का प्रयोग किया है, जिसके अनुसार सारे पात्र कथावस्तु को अपने कथन से गति देते हैं और अन्य पात्रों का तथा अपना परिचय भी देते चलते हैं।

पात्र और चरित्र-चित्रण में कुछ असंगतियों को छोड़कर नागार्जुन सफल रहे हैं।

उद्देश्य : इस उपन्यास में 'इमरतिया' की चारित्रिक विशेषताओं के उद्घाटन के साथ ही साधुओं द्वारा दुराचरण, स्मगलिंग, जनता की अँधश्रद्धा से अनुचित लाभ उठाने की उनकी तिकड़मों आदि का यथार्थ रूप प्रस्तुत करना लेखक का ध्येय प्रतीत होता है।

आज देश में निम्न जाति समझे जाने वाले हिन्दुओं के प्रति भेद-भाव के परिणामस्वरूप एकता समाप्त होती जा रही है। उच्चवर्ग के द्वारा हरिजनों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

को निम्न समझना उनमें एक प्रकार के असंतोष को जन्म देने के लिए उत्तर-दायी है। वे धर्म-परिवर्तन करके क्यों न ईसाई या मुसलमान बनें और समाज में अपना खोया सम्मान प्राप्त करें? यह एक ऐसा गम्भीर प्रश्न है जिसे नागार्जुन ने इस उपन्यास में उठाया है। प्रश्न का समाधान उसने इस रूप में दिया है कि अछूत कोई नहीं है। स्नानादि से स्वच्छ होने के बाद सब अच्छे हैं। अतः इस भेद-भाव को समाप्त किया जाय।

समाज में व्याप्त अँधश्रद्धा जैसी बुराइयों का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करते हुए इन दुष्ट और भ्रष्ट साधुओं की निरर्थकता और व्यर्थता नागार्जुन ने सिद्ध कर दी है। उसने दिखाया है कि आज हमें समाज पर भार बननेवाले साधु नहीं चाहिए, हमें चाहिए जनता में देशप्रेम, एकता और राष्ट्रीयता की भावना का प्रसार करनेवाला ऐसा व्यक्ति जो सैनिक प्रशिक्षण देकर हमें राष्ट्रविरोधी खतरे का सामना करने के लिए तैयार कर दे। भगौती की निम्न कल्पना को साकार रूप धारण करना चाहिए।

"जमनिया मठ के प्रवेश द्वार पर दूर से ही चमक रहा है—चन्द्रशेखर आजाद सैनिक प्रक्षिशिण शिविर। नजदीक से देखने पर छोटे अक्षरों में दीख रहा है—मुख्य अधिष्ठाता स्वामी श्री अभयानन्द।"

आज हमें इसी प्रकार के समाजसेवियों, राष्ट्रहित में लगे देशसेवकों और समाज से कुछ नहीं लेनेवाला बल्कि अधिक-से-अधिक देनेवाला साधु चाहिए। यही घोषणा भ्रष्ट और पाखंडी साधुओं की पोल खोलने और लेखक द्वारा अभयानन्द के लिए व्यक्त उपर्युक्त विचारों में ध्वनित होती है—जो कि इस उपन्यास का उद्देश्य है।

नागार्जुन के उपन्यासों में देश-काल योजना :

देश-काल : उपन्यास में देश-काल की वास्तविक पृष्ठभूमि से ही पात्रों के व्यक्तित्व में पूर्णता आती है। नागार्जुन एक प्रमुख आंचलिक उपन्यासकार हैं, इसलिए उनके उपन्यासों में मिथिला का जीवन्त प्रतिबिम्ब देखा जा सकता है। वहाँ के रीति-रिवाज, परम्पराएँ, परिवेश, बोली-बानी, खान-पान, उपज एवं प्राकृतिक सौन्दर्य के रम्य दृश्यों से उनके उपन्यास सजीव बन पड़े हैं।

नागार्जुन के कथा-साहित्य में देश-काल की दृष्टि से मिथिला का जो परिचय मिलता है, उसे निम्न भागों में रखा जा सकता है :

खान-पान एवं उपज-सम्बन्धी विवरण : मिथिला में उत्पन्न होनेवाले अनाजों—मड़ुआ तथा चावल की विभिन्न किस्मों के नाम लेखक ने 'रतिनाथ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की चाची' में गिनाया है; जैसे आउंस, गम्हड्डी, तिरहुतिया, कनकजीर, असिनी, सूआपंखी और अगनी आदि। क्षेत्र में उत्पन्न होनेवाली सब्जियों के वर्णन से ज्ञात होता है कि वहाँ अनेक प्रकार की सब्जियाँ उगायी जाती हैं। 'रतिनाथ की चाची' उपन्यास में आमों की अनेक किस्मों का परिचय जैसे—वम्बइया, सिपिया, किसुनभोग, कलकतिया तथा उनके रंग और स्वाद का भी जिक्र करना लेखक भूला नहीं है। 'बलचनमा' में उसने फलों के नाम गिनाये हैं। अन्य फलों में लताम (अमरूद), जामुन, कटहर, खीरा, कुसियार (गन्ना), ककड़ी, खरबूजा, तरबूजा आदि वहाँ उत्पन्न होते हैं। गरीब जनता के उदर-भरण का मुख्य भोजन ये सब हैं।

मिथिला क्षेत्र में मछली भी मुख्य खाद्य पदार्थों में से है। 'वरुण के बेटे', 'बलचनमा', 'रतिनाथ की चाची', 'नई पौध' आदि उपन्यासों में विभिन्न प्रकार की मछलियों—पोठी, इचना, ललमुहा, रेहू, मंगुरी, कबई, मोदनी, गरचुन्नी, बुआरी, भाकुर आदि के नाम गिनाये गये हैं।

नाश्ते में भींगा चूड़ा और दही, घी में भुने ताल-मखाने और गुड़ का शर्बत अभी भी वहाँ ग्रामीण क्षेत्र में मेहमानों की आवभगत के साधन हैं।

मिथिला प्रदेश में सिंघाड़ा, तालमखाना, कमल और कुंई के फूल, कमल गट्टे, कमल नाल, कड्हड़, केसौर, सारूख आदि पानी फल पैदा किये जाते हैं। इन सबका परिचय उपन्यासों को पढ़ने से मिलता है।

इसे देखकर हम कह सकते हैं कि मिथिला की उपज एवं प्रकृति का पूरा-पूरा ज्ञान नागार्जुन को है, जिसका यथासाध्य बोध उन्होंने हमें उपन्यासों के माध्यम से कराया है।

रीति-रिवाज, परम्पराएँ तथा धार्मिक अँधविश्वास : मिथिला के ग्रामीण-जन अपने पारम्परिक संस्कारों, रीति-रिवाजों और चले आते धार्मिक क्रिया-कलापों में बड़ी आस्था रखते हैं। अभी भी मैथिल ब्राह्मणों का विवाह 'सौराठ की सभा' में ही तय होता है। विवाहेच्छुक वर वहाँ इकट्ठे होते हैं जिनका चयन कन्या-पक्ष वाले करते हैं। राजा हरिसिंहजी द्वारा बनवाई गई मैथिल ब्राह्मणों के गोत्र-वंश की पंजीयन सूची अभी भी वहाँ प्रचलित है। अभी भी पैदा हुए बच्चे का नाम, वंश आदि पंजीकारों द्वारा उसमें अंकित कर लिया जाता है। यह जानकारी उसके बड़े होने पर विवाह के समय काम आती है। पंजीकार अब भ्रष्टाचार भी करने लगे हैं। 'रतिनाथ की चाची' पढ़ने से ये बातें ज्ञात होती हैं।

वर-वधू को विवाह के बाद तीन दिन कड़े ब्रह्मचर्य में बिताने पड़ते हैं, चौथी रात उनकी मिलन रात्रि होती है। 'नई पौध' से यह जानकारी मिलती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'रतिनाथ की चाची' से यह ज्ञात होता है कि 'विकौआ' की प्रथा भी वहाँ प्रचलित है जिसके अनुसार एक पुरुष की, जो बिका हुआ होता है, पच्चीसों पत्नियाँ होती हैं जो कि स्वयं अपने मायके में ही रहती हैं, पतिदेव कभी-कभी आकर अपने पतिधर्म का पालन करते हैं।

मिथिला में श्रावण-शुक्ला तृतीया नवविवाहित वर-वधू के लिए त्यौहार की तिथि होती है, जिसे मधु-श्रावणी कहते हैं। इस दिन वर घृतमिश्रित बाती की हल्की लौ से वधू के पैरों को छू देता है—वह 'ईस' कर उठती है। सखी शीतोपचार करती है।[१]

विवाह के बाद जमाई कुछ दिन ससुराल में ही रहता है। लौटते समय अनेक खाद्य पदार्थ उसके साथ दे दिये जाते हैं, जो आसपास के घरों में 'बयने' के तौर पर बँटवाये जाते हैं। घरों में कलात्मक चित्र बनाये जाते हैं, जिन्हें अइपन (आलिंपन) कहते हैं। वधू की माँग में सिन्दूर भरकर विवाह-विधि पूर्ण मानी जाती है। बड़े लोग दूब-अच्छत छींटकर उन्हें आशीर्वाद देते हैं।[२] वर-वधू एक ही डोली में बैठकर घर के आँगन में प्रवेश करते हैं।[३] विवाह के समय नाई हवन की लकड़ियाँ लाता है। मिट्टी का पक्का हाथी विवाह के अवसर पर सामने रखा जाता है। दीप और मंगल कलश भी सामने रखने की रस्म है।[४] कुलदेवता की पिंडी पर मातृका पूजन और गणेश स्मरण किया जाता है।[५] कोई शुभ कार्य करने के पहले यज्ञ आदि किये जाते हैं। पंडितों को दान-दक्षिणा दी जाती है। पशुबलि की प्रथा भी वहाँ उचित समझी जाती है।[६] लोग मनौतियाँ भी मानते हैं।

तीज के त्योहार पर स्त्रियाँ गीत गाती हैं। वहाँ चौपड़ के समान ही एक प्रकार का खेल खेला जाता है, जिसे 'पचीसी' कहते हैं।[७] भाद्र शुक्ल की चौथ के दिन नैवेद्य निवेदनपूर्वक, उगते चाँद को देखने का त्योहार मनाया जाता है, जिसे 'चउड़-चन' कहते हैं।[८] वधू को प्रथम मिलन के अवसर पर वर 'मुँह बजावन' की रस्म के मुताबिक भेंट देता है।[९]

इसके अतिरिक्त लोग भूत-प्रेत में बड़ा विश्वास रखते हैं। पानी न बरसने पर ग्यारह लाख शिवलिंग बनाकर पूजना, स्त्रियों द्वारा मेढ़कों को

१. रतिनाथ की चाची, पृ० १५४।
२. नई पौध, पृ० १७,५०,५६, ६२।
३. बलचनमा. पृ० १५४।
४. नई पौध, पृ० ३७।
५. दुखमोचन, पृ० ९८।
६. नई पौध, पृ० ९२, बटेसरनाथ, पृ० ६५।
७. नई पौध, पृ० १०४।
८. —वही—पृ० १०८।
९. —वही—पृ० १४३।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओखली में कुचलना आदि वर्णनों से 'बाबा बटेसरनाथ' में क्षेत्र के धार्मिक अंध-विश्वासों की झलक मिलती है।

इसमें दो मत नहीं कि नागार्जुन ने मिथिला अंचल के जन-जीवन को बड़ी पैनी दृष्टि से देखा है और वहाँ की क्षेत्रीय संस्कृति को समझने में उनकी पैठ बड़ी गहरी है। इसीलिए उनके उपन्यास बड़े जीवन्त बन पड़े हैं।

प्राकृतिक सौन्दर्य : नागार्जुन द्वारा की गयी देशकाल-योजना से उनके उपन्यासों में मिथिला अंचल की रम्य प्रकृति का सजीव प्रतिबिम्ब पाठकों के सामने पूरी तरह उपस्थित हो जाता है। मिथिला प्रदेश अपनी प्राकृतिक सुषमा से सहज ही हमारा मन मोह लेने की क्षमता रखता है। यही प्राकृतिक सौन्दर्य नागार्जुन की कुछ कविताओं में भी व्यक्त हुआ है। उनके उपन्यासों में मिथिला के ताल-पोखर की मचलती नील लहरियाँ, खेतों की इठलाती-बलखाती हरीतिमा, चन्द्र-ज्योत्स्ना का झीना आँचल, आम और बरगद की छतनार छाया—सभी कुछ देखा जा सकता है। वस्तुतः प्रकृति-चित्रण के ये स्थल लेखक के भाव-विभोर हृदय के पूर्ण उद्घाटक बनकर उपस्थित हुए हैं। इनमें गद्य-गीतों सा आनन्द आता है। 'रतिनाथ की चाची' में मिथिला की प्रकृति का एक रम्य चित्र है :

"आगे के खेतों में धान के हरे-भरे पौधे लहरा रहे थे, उनसे परे आमों के नील निविड़ कुंज थे, उनसे भी परे सुदूर उत्तरी आकाश में हिमालय की धवल-धूमिल चोटियाँ थीं, जो उगते सूरज की पीली किरणों से उद्भासित होकर स्वर्ण-शृंग सी लग रही थीं।"

ऐसा ही दूसरा चित्र 'बाबा बटेसरनाथ' में है :

"स्निग्ध शीतल और धवल पाण्डुर आलोक धरती को दिग्-दिगन्त तक उद्भासित कर रहा था। नीचे पृथ्वी ऊपर आकाश—दीप्त प्रकृति का उदार परिवेश वह क्या था—ग्रीष्मान्त की रजनी का सौंदर्य शृंगार था मानो।"

'दुखमोचन' में प्रस्तुत प्रकृति वर्णन से नागार्जुन का मिथिला प्रेम व्यक्त हो रहा है :

"यह देस-कोस, यह माटी-पानी, पहली वर्षा के बाद धानों के ये अंकुर, आमों से लदी ये अमराइयाँ, घौदों में लटके पकने को आतुर जामुन, गुलाबी फल-भार से विनम्र लीची की तुनक टहनियाँ, श्याम सलिल पोखर, ग्रीष्म की संजीदा और बरसात की बेहूदी नदियाँ।"

'वरुण के बेटे' के रमणीय प्रकृति-सौंदर्य को देखकर लगता है, प्रकृति की क्रोड़ में बैठकर नागार्जुन ने इसकी रचना की है : "गढ़ पोखर का प्रशान्त नील कृष्ण विशाल वक्ष हौले-हौले लहरा था। हेमन्ती दिनान्त के प्रियदर्शी रवि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की पीताभ किरणें उसकी लोल लहरियों पर बिछकर अपने को नाहक ही पैना बना रही थीं।"

सूर्य की क्षीण किरणों का एक गत्वर चित्र 'कुम्भीपक' में देखिये : "लगता था सूर्य की किरणों के लिए कोई आकर लक्ष्मण-रेखा खींच गया है। दुपहर के बाद वे सहम-सहम कर अन्दर झाँकतीं। घड़ी आध घड़ी के लिए दरस दिखाकर लापरवाही से सिर के आँचल की तरह खिसकती जातीं, पीछे हटती जातीं—क्वांर की कछार में नदी की लहरों की तरह।"

किन्तु नागार्जुन का यह प्रकृति-प्रेम क्रमशः उपन्यासों में क्षीण होता गया है। आगे के उपन्यासों में इसकी अत्यल्पता देखी जा सकती है। इसका कारण रहा है, 'नई पौध' उपन्यास के बाद आंचलिकता का अभाव। आगे के इन उपन्यासों में नागार्जुन सामाजिक समस्याओं के निराकरण में लग गये हैं। 'कुम्भीपाक', 'उग्रतारा', 'इमरतिया' और 'हीरक जयंती' में लेखक का कैमरा ग्राम से शहर की ओर घूमा है। इसीलिए इनमें प्रकृति के दृश्यों के दर्शन नहीं के बराबर होते हैं।

सामाजिक एवं राजनैतिक स्थिति : बिहार प्रदेश के मिथिला अंचल की सामाजिक स्थिति, जो उपन्यासों में चित्रित है, से स्पष्ट है कि कृषकों की दशा वहाँ अच्छी नहीं है। नागार्जुन के इन आंचलिक उपन्यासों में स्वतंत्रता के पूर्व का कृषक-जीवन चित्रित हुआ है। जमींदारों से ये खेतिहर जनता त्रस्त दिखाई गयी है। यों भी स्वतंत्रता के पूर्व बिहार के कृषकों ने, मजदूर जनता ने अपने अधिकारों के लिए बहुत संघर्ष किया है। 'बलचनमा, रतिनाथ की चाची, नई पौध, वरुण के बेटे, बाबा बटेसरनाथ, उग्रतारा' उपन्यासों में कृषक संघर्ष का वर्णन किया गया है। जमींदार उनसे वे जमीन छीनना चाहते हैं, जिन्हें कृषक वर्षों से जोत-बो रहे हैं। फलस्वरूप किसान, आन्दोलन का मार्ग अपनाते हैं। सभाएँ होती हैं, नारे लगते हैं—'जमीन किसकी—जोते-बोए उसकी।...'मजदूर-किसान एकता—जिन्दाबाद।' वरुण के बेटे नारे लगाते हैं : 'गढ़ पोखर—हमारा है'।

'बलचनमा' का सारा जीवन निम्नवर्गीय मजदूर के सामाजिक जीवन और उसकी राजनैतिक जागरूकता का प्रतीक है।

इन उपन्यासों में अँग्रेजों के विरुद्ध गाँधीजी द्वारा चलाया गया आंदोलन, सविनय अवज्ञा, असहयोग तथा जनता में उभरती चेतना, विद्यार्थियों का राजनीति में कूद पड़ना, गाँधी-इरविन पैक्ट, खादी पहन कर उसके आदर्शों की पूर्ति न करने वाले कार्यकर्ताओं की करतूतें सब कुछ वर्णित हैं। १९३७ ई० में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काँग्रेस की जीत, स्वदेशी मंत्रिमंडल का गठन और उसके द्वारा भी शोषित जनता का नहीं, शोषक जमींदारों का पक्ष-समर्थन करना तथा मंत्रियों की उच्चवर्ग से की गई साठगांठ को नेहरूजी द्वारा स्वीकार करना—इन सब घटनाओं का बोध होता है।

'दुखमोचन' उपन्यास में स्वातंत्र्योत्तर भारत की ग्रामीण जनता द्वारा की गई प्रगति की जानकारी दी गई है।

उपन्यासकार द्वारा की गई देश-काल योजना को देख हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि नागार्जुन के उपन्यासों में १९३० से लेकर १९६५ तक का इतिहास बोलता है। स्वतंत्रता के पूर्व निम्नवर्ग की जनता का जमींदारों, नील की खेती एवं रेलवे लाइन के अँग्रेज ठेकेदारों द्वारा शोषण चित्रित है। गरीब जन फटेहाल घूमते हैं, अधभूखे रहते हैं और जमींदार बढ़िया खाना खाते और अच्छे वस्त्र पहनते हैं। स्वतंत्रता के बाद वही हुआ जिसकी बलचनमा को शंका थी : "स्वराजी बाबू भैया आपस में ही दही, मछली बाँट कर खाने लगे।" देश में स्वतंत्रता के उपरान्त जो भ्रष्टाचार और नैतिक पतन की पराकाष्ठ दिखाई देती है उसका रूप 'हीरक जयंती' और 'कुम्भीपाक' में देखा जा सकता है। मर्ज यहाँ तक बढ़ गया है कि क्या नेता, क्या साहित्यकार, क्या प्रकाशक—सब ही भ्रष्टाचार एवं अनैतिक कार्यों में लिप्त हो गाँधी के नाम पर जनता को गुमराह कर अपने उल्लू सीधे कर खादी की सफेदी में अपना कालापन छिपाते हुए दिखाई दे रहे हैं। देश का राष्ट्रीय चरित्र ही आज गिर गया है। राजनैतिक नेताओं का आदर्श यह है कि 'येन केन प्रकारेण' हाइ कमांड को खुश करके टिकट ले लो,[1] और उचित-अनुचित साधनों से चुनाव जीत कर कुर्सी हथिया लो, फिर लो अभिनंदन और मनवाओ अपनी 'हीरक जयंती'। सामान्य जनता को कितनी तकलीफें हैं. इसका सही-सही अंदाज तभी लग सकता है जब सुदूर ग्रामों की निम्नस्तरीय जनता के सम्पर्क में आने का ये नेतागण प्रयास करें, पर इन्हें अपनी राजनीतिक तिकड़मों से अवकाश मिले तब न। "वास्तविक बात यह है कि आजादी की किरणें अभी पटना और दिल्ली जैसे बड़े शहरों तक आकर रुक गई हैं।"[2] "एम० एल० ए० एवं एम० पी० सब ग्रामीण समस्याओं से उदासीन हैं।"[3] "पाँच साल बाद ही वे अपने चुनाव क्षेत्र में वोट कबाड़ने जाते हैं।"[4]

इस प्रकार देश की सामाजिक और राजनीतिक स्थिति का नंगा रूप इन

१. कुम्भीपाक, पृ० ८५-८६। २. नई पौध, पृ० १२७। ३. बाबा बटेसरनाथ, पृ० १२२। ४. इमरतिया, पृ० ६५।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उपन्यासों में देखा जा सकता है। इस अवधि की सामाजिक और राजनीतिक घटनाओं की जानकारी के लिए नागार्जुन के उपन्यासों को पढ़ना लाजिमी है।

सामाजिक दशाओं का जो चित्रण नागार्जुन के कथा-साहित्य में किया गया है, उसके अनुसार आज का समाज रूढ़ियों और अँधविश्वासों तथा जात-पांति के ढकोसलों से ग्रस्त है। 'इमरतिया' में लुटेरे साधुओं के पाखंडों में अबोध जनता फँसी हुई है। हिन्दू जाति की रूढ़िवादिता और हठधर्मिता ने हरिजनों को अपने से हेय समझा है। परिणामस्वरूप वे अन्य उदारवादी धर्मों की ओर आकर्षित हो समाज में अपना खोया सम्मान प्राप्त करने के लिए विवश हैं। साधारण जनता अधभूखी, अधनंगी है जबकि उच्च वर्ग समृद्ध है। सामाजिक और आर्थिक विषमताओं के पिशाच अट्टहास करते लग रहे हैं।

वस्तुतः निम्नवर्गीय समाज की पीड़ाओं का लेखा-जोखा ही नागार्जुन के उपन्यास हैं। 'बाबा बटेसरनाथ' में अकाल के समय लोगों द्वारा उठाये गये कष्ट तथा जमींदारों द्वारा ली गयी बेगार का वर्णन किया गया है।

विधवा नारी की सामाजिक स्थिति, उसके बलात्कार या अनमेल विवाह, भ्रूण-हत्या या वेश्या-समस्या आदि हमारे समाज की ऐसी गम्भीर समस्याएँ हैं, जिनसे भारतीय जनता प्रभावित है। इनका चित्रण करते हुए लेखक ने इन बुराइयों को दूर कर श्रमजीवी नारी-समाज की स्थापना का प्रयास किया है। इससे भी वर्तमान भारतीय महिलाओं की बदलती हुई मनोवृत्ति का बोध होता है।

संक्षेप में लेखक द्वारा प्रस्तुत सामाजिक और राजनीतिक स्थिति, देश-काल योजना की सफलता के लिए महत्त्वपूर्ण है और उसका सही-सही ज्ञान लेखक ने दिया है। इस दृष्टि से कहीं कोई असंगति न दिखाई देने के कारण नागार्जुन के उपन्यास बड़े प्रभावोत्पादक बन पड़े हैं।

लोक-गीत एवं आंचलिक शब्द : इनके द्वारा भी नागार्जुन ने अपने मिथिला अंचल की विशेषताओं को हमारे सम्मुख उपस्थित किया है। उपन्यासों में प्रयुक्त लोकगीत मिथिला की संस्कृति और जन-भावनाओं के प्रतिबिम्ब हैं।

'बलचनमा' में "सखि हे मजरल आमक बाग, कुहु कुहु चिकरए कोइलिया, झींगुर गावै फाग" के द्वारा चीखती हुई कोयल, आम के मौर से लदे वृक्ष, झींगुर का संगीत हमें शहरों से कोसों दूर ग्राम की किसी अमराई में ले जाकर खड़ा कर देता है। इनसे जहाँ स्थान विशेष को ठीक से समझने में पाठकों को सहायता मिलती है वहीं उनका माधुर्य उसके हृदय पर स्थायी प्रभाव अंकित करने की क्षमता रखता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इसी प्रकार 'जिनगी भेल पहाड़—उमिर भेल काल' गीत (वरुण के वेटे) में मधुरी के कसकते यौवन का उफान तड़प रहा है। कहीं मछुए श्रमिक गाते हैं—'ऊपर तान हुइयो—पीछे हट के हुइयो।'

आंचलिक शब्दों और गालियों का विशेष प्रयोग नागार्जुन ने क्षेत्र के जन-जीवन को ठीक से स्पष्ट करने के लिए किया है। अपने क्षेत्र की वोली-वानी, संस्कृति, रहन-सहन आदि का वास्तविक प्रतिविम्व नागार्जुन के उपन्यासों की विशेषता है। इसका कारण रहा है, लेखक का उसी क्षेत्र में जन्म और कई वर्ष व्यतीत होना जिसके परिणामस्वरूप नागार्जुन को उस क्षेत्र की सूक्ष्मातिसूक्ष्म वातों की पूर्ण जानकारी है। डॉ० इन्द्रनाथ मदान ने लिखा है: "देहाती जीवन की साधारण घटनाओं को सूचित करने में तथा उसके सजीव चित्रण में, जमींदारों के निरंकुश व्यवहार में, नये जीवन के स्पंदन में, अंचल विशेष के मुहावरे को पकड़ने में, तद्भव शब्दों के प्रयोग में, पग-पग पर परिवेश की गंध से उपन्यास का ताना-वाना वुना गया है।" ('आज का हिन्दी उपन्यास')

प्रवृत्ति की दृष्टि से आंचलिक उपन्यासों में भी 'रतिनाथ की चाची' और 'नई पौध' में क्षेत्र के सामाजिक रीति-रिवाजों के चित्रण का प्राधान्य है। 'वावा वटेसरनाथ' में मिथिला प्रदेश के धार्मिक अँधविश्वासों का निकटता से परिचय दिया गया है। उपन्यास में व्यक्त वलि की प्रथा, पानी न वरसने पर किये गये टोटकों का वर्णन आदि हैं। 'वरुण के वेटे' में रखे गये लोकगीतों के मीठे वोल एवं प्राकृतिक सुषमा का विस्तार सहज ही आकर्षण वढ़ाने में सहायक है। 'वलचनमा' में तो इन वातों के साथ ही आंचलिक शब्दों और वोलचाल का 'टोन' भी व्यक्त हुआ है। वस्तुत: 'वलचनमा' मिथिला के ग्राम-जीवन का जीवन्त प्रतिविम्व है, पाठकों को ले जाकर लेखक उसी वातावरण में छोड़ देता है। पढ़ते समय पाठक अपने आपको भी वलचनमा का अनन्य साथी समझने लगता है। 'दुखमोचन' में सामान्य रूप से आंचलिक विशेषताओं का चित्रण किया गया है। यों इन सारे उपन्यासों में उपज, खान-पान, जनता का जीवन-स्तर, प्राकृतिक सौंदर्य, रीति-रिवाज, परिवेश, धार्मिक मान्यताएँ उभर कर सामने आयी हैं, यहाँ तक कि 'वरुण के वेटे' में पक्षियों की चहचहाहट भी सुनाई देती है। देश और काल से सम्वन्धित वातें इसी कारण जीवन्त हो उठी हैं, क्योंकि वे लेखक की नित्य देखी-समझी, सुनी एवं अनुभव की हुई हैं।

नागार्जुन के आंचलिक उपन्यासों को पढ़कर उसमें व्यक्त देश-काल के चित्रण से ही मिथिलांचल की सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त की जा सकती है। किन्तु खेद है कि लेखक ने अपने कथा-साहित्य में अव आंचलिकता के प्रसारण को छोड़ दिया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हम कह सकते हैं कि देशकाल-चित्रण की दृष्टि से नागार्जुन अपने उपन्यासों में पूर्ण सफल रहे हैं, तत्सम्बन्धी कोई भी असंगति कहीं दिखाई नहीं देती है।

नागार्जुन के कथा-साहित्य में प्रयुक्त भाषा-शैली एवं कथोपकथन : उपन्यास के कथा-विन्यास में भाषा और शैली का विशेष महत्त्व होता है। कथा में प्रवाह, तारतम्यता एवं रोचकता के लिए अच्छी भाषा और उत्तम शैली का होना आवश्यक है। मंद भाषा-शैली होने से कथा को कुंठित होने का खतरा रहता है। उपन्यास में कथा का रचाव भाषा-शैली पर ही निर्भर करता है। शैली के द्वारा ही कथाकार उपन्यास में भिन्न-भिन्न प्रयोग करता है।

नागार्जुन ने भी अपने उपन्यासों में नई टेकनीक का प्रयोग किया है। इसलिए भाषा-शैली का जो विकास इनके उपन्यासों में दिखाई देता है, उससे पाठक चमत्कृत हो उठते हैं। भाषा-शैली की दृष्टि से नागार्जुन के उपन्यासों में निम्नलिखित विशेषताएँ पायी जाती हैं :

पात्रानुकूल एवं विषयानुकूल भाषा : नागार्जुन ने अपने कथा-साहित्य में जिन पात्रों को उपस्थित किया है, उनमें से कुछ पंजाबी, बंगाली और नेपाली हैं। उपन्यासकार ने इनके द्वारा इनकी भाषा का ही उपयोग करवाया है, या कहीं ये टूटी-फूटी हिन्दी बोलते हैं। इसी प्रकार अशिक्षित, शिक्षित और ग्रामीण पात्रों की भाषा भी उनकी योग्यतानुसार ही रखी गयी है। इस विशेषता से नागार्जुन के उपन्यासों में स्वाभाविकता और रोचकता की वृद्धि हुई है।

'दुखमोचन' उपन्यास में कपड़े के फेरीवाले पंजाबी की बात सुनिये : "ऐसा माल पटणे में भी नहीं मिलणा भैणजी, ले लो जो मर्जी तुसी दे देणा···आ वलाउज देखो···चीन की लाजवाब सिल्क मँगवाई थी हमारे मालिक ने···वो पेटीकोट छूकर देखणा···कैसा सोहणा है···जरा उसकी लैस तो देखो भैणजी··· ।"

'वरुण के बेटे' के बंगाली स्टेशन मास्टर की भाषा देखिये : "हाँ, ठांडा माफिक सोचने से शोब काम (सब काम) शुभिश्ता (सुभीता) से हो जायगी। बाबूजी आप आ गिया शो (सो) अच्छा हुआ। न्यू ब्लड है न ? हूँ···" आगे है : "छेड़े दाओ (छोड़ दो) हिंआ आ जाओ—हम डी० टी० एस० को फोन करता है। बिहान मिलिटरी आएगा तब माब को लेसन देगा। हुआं (वहाँ) जास्ती देर मत ठरा (खड़ा) रहो रे बुड़भक (भौंदू) मिलिटरी शैल रीच··· हीयर अर्ली इन द मार्निंग।"

नेपाली पात्र के मुख से हिन्दी व्याकरण की भूलें बड़ी स्वाभाविक लगती हैं, पुल्लिंग-स्त्रीलिंग के ज्ञान का अभाव इनकी भाषा में है।

'दुखमोचन' उपन्यास के शिक्षित पात्र पंडित लीलाधर कहते हैं : "चेतन की चाँदनी पर संशय का कुहरा छा गया था।" आगे वे कहते हैं : "सृष्टि के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फल हैं, खिलाकर आत्मा को परितोष होगा।" इस कथन में वृद्ध सज्जन की संतोष-प्रियता एवं सात्त्विक वृत्ति के दर्शन होते हैं।

बलचनमा की भाषा-शैली में लोक-प्रचलित तद्भव शब्दों—अच्छत, टीसन, जिनगी आदि का प्राधान्य है। शब्दों में ग्रामीण लोकोच्चारणों का बाहुल्य है; जैसे, सैतान, सिनेह, अपसर, परफेसर, लाटफारम आदि।

'बलचनमा' पृष्ठ २०३ पर कहता है: "गिलेसन घूमते हुए टीसन पर आए।" श्री बेचन के अनुसार, "आज दरभंगा की पढ़ी-लिखी जनता भी गियर्सन बाजार को गिलेसन ही कहती है।"

'हीरक जयन्ती' के बाल पात्र से तोतली बोली का प्रयोग लेखक ने करवाया है। जेल के सिपाही भमीखन सिंह (उग्रतारा) और रामसुभग सुकुल (इमरतिया) भोजपुरी का प्रयोग करते हुए प्रस्तुत किये गये हैं: "बाबा जिनगी भर रोंआ के गुलाम होके रहब, कवनों तरकीब भिड़ावल जाय, गरीब के उद्धार हो जाई।"

'मस्तराम' बाबा की भाषा में मस्ती और बाबा बटेसरनाथ के कथन उनके हृदय की सात्त्विक वृत्तियों को व्यक्त कर रहे हैं। अँग्रेज सुपरिंटेण्डेण्ट टूटी-फूटी हिन्दी बोलता है।

विस्तार में न जाते हुए हम यही कहना चाहते हैं कि नागार्जुन को विभिन्न पात्रों की भाषा का गहरा अध्ययन है। निम्नस्तरीय ग्रामीण से लेकर उच्च-वर्गीय शिक्षित पात्रों की या यों कहिये कि खेत-खलिहान से लेकर संसद भवन तक में प्रयुक्त होने वाली भाषा वे जानते हैं। कौन पात्र कब क्या कह सकता है, इसकी पकड़ उपन्यासकार नागार्जुन की बड़ी मजबूत है—यह उनके जीवन में प्राप्त गहरे अनुभव की देन है। इस सफलता के पीछे नागार्जुन की यायावरी भी है।

विषयानुकूल और पात्रानुकूल कथोपकथन इसी कारण बड़े सफल और प्रभावोत्पादक बन पड़े हैं।

हास्य और व्यंग्यपूर्ण भाषा : नागार्जुन एक सफल व्यंग्यकार हैं। व्यंग्यपूर्ण भाषा का प्रयोग उनकी प्रमुख विशेषता रही है। उनकी कविताओं का प्रमुख रंग भी व्यंग्य को ही माना गया है। उपन्यासों की भाषा और पात्रों के कथोपकथनों में व्यंग्य की यही छटा देखी जा सकती है। कथोपकथनों का पैनापन 'रतिनाथ की चाची' में देखिये: "थोड़ा रुक कर वह बोली—"ऊपर चलिए हमारी कोठरी को अपनी चरणधूलि से....। जयनाथ ने टोका, "प्रतिदिन भोरे भोरे जहाँ की गलियाँ झाड़-बुहार कर साफ कर ली जाती हैं वहाँ भला चरण धूलि ?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पंडितजी सन्ध्या पूजन करते समय भी अपने मतलब की बात 'ड़ूड़ा' की भाषा में करते हैं। सिर्फ शब्द-विशेष द्वारा व्यंग्य करना भी नागार्जुन की व्यंग्यशैली की विशेषता है: "नये आगन्तुकों की पहली कमाई में से इसी तरह कुछ न कुछ ले लेना अच्युतानंदजी की अच्युत नीति थी।" (रतिनाथ की चाची)

'बलचनमा' में भी मालिकाइन की कृपणता एवं पंडितजी द्वारा मालिक की हाँ में हाँ मिलाने की निपुण-तत्परता पर बड़े भोलेपन से व्यंग्य किया गया है। 'बाबा बटेसरनाथ' में शत्रुमर्दन राय पर चींटों से भरी हंडी उलटना और उसी समय महल में भजन होते रहने, कहीं थानेदार रामफलसिंह के बैठने की अश्लील मुद्रा और एम० एल० ए० उग्रमोहन दास पर व्यंग्य किया गया है। 'दुखमोचन' में भी व्यंग्य के कुछ स्थल हैं; जैसे, सुखदेव द्वारा रामसागर की माँ के दाहसंस्कार में न जाने का कारण भगवान की पूजा-आराधना बताना; 'दुखमोचन' के सेकण्ड क्लास में सफर करने पर चुटकी लेना। 'वरुण के बेटे' में भी जमींदार के भगिना बाबू का परिचय लेते हुए अंचलाधिकारी का उनके प्रति यह कथन "और शिकार की हॉबी" जमींदारों की ऐय्याश-मिजाजी पर किया गया बड़ा पैना व्यंग्य है। 'नई पौध' में मैथिल पंडितों और उनके द्वारा अनमेल विवाह कराये जाने पर लेखक ने व्यंग्य किया है।

हास्य और व्यंग्य का एक सम्मिलित उदाहरण 'नई पौध' के पृष्ठ १६ पर इस प्रकार है: "बाप रे बाप, किसकी मजाल है जो फलाँ बाबू के बारे में इतनी बातों का पता लगावे। लेकिन नहीं, हैं एक बहादुर। घटकराज मटुकधारी पाठक! अह हा हा हाहा।"

व्यंग्य की चुटकी लेना लेखक का स्वभाव-सिद्ध गुण ही प्रतीत होता है। बहुत-से स्थलों पर वार करने से वह चूका नहीं है। 'कुम्भीपाक' में तिलकधारी दास की करतूतें चित्रित करने के बाद नागार्जुन उसके कारनामों के विषय में व्यंग्य करते हुए लिखते हैं: "नेपाल से गाँजा कभी ला सके थे कि नहीं, पता नहीं।"

'कुम्भीपाक' में व्यंग्य के और भी स्थल हैं—मुन्शीजी और सुमंगल के वार्तालाप में। गाँधीजी के चेलों पर एक जगह बड़ा ही सुन्दर व्यंग्य नागार्जुन ने किया है: "मंत्रीजी के बंगले में गाँधीजी के तीन बन्दरों वाली प्रतिमा रखी थी। उन्होंने पं० दिवाकर को शायद वहाँ और बैठने के लिए मना किया और वे उठकर चले आये।" स्पष्ट है कि बन्दरों की प्रतिमा रखकर उनके द्वारा दी गयी शिक्षा—'बुरा मत देखो, बुरा मत कहो, बुरा मत सुनो' का काँग्रेसी मंत्रियों द्वारा पालन न करने पर लेखक ने बारीक व्यंग्य किया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नागार्जुन के व्यंग्य का विस्तृत रूप उनके उपन्यास 'हीरक जयन्ती' में प्राप्त होता है। सारा उपन्यास नेताओं, साहित्यकारों, प्रकाशकों के हथकंडों पर किये गये व्यंग्य से भरा हुआ है। ऐसे ही एक पात्र के लिए लेखक ने लिखा है : "गाँजा नहीं पीते लेकिन उसकी गन्ध अप्रिय नहीं।" प्रस्तुत व्यंग्य के द्वारा राजा साहब के चरित्र का उद्घाटन इस प्रकार किया गया है : "राजनीति में राजा साहब की दिलचस्पी कूट-कौशल की तरफ ही ज्यादा रही, चुनाव से अधिकार हासिल करने का यह तरीका आपको पसन्द नहीं।" महन्तजी का परिचय देते हुए नागार्जुन ने लिखा है : "किसानों और खेतिहरों के पक्ष में जो भी दो बात बोला महन्तजी ने उसकी मरम्मत करवा दी।" फिर काँग्रेसी विधायकों पर व्यंग्य करते हुए नागार्जुन ने पोल उनकी खोली है : "शासकीय गुट के जितने भी एम० एल० ए० आदि हैं, योगमाया देवी को सबका स्नेह मिलता है।"

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने प्रत्येक पात्र को अपने व्यंग्य का निशाना बनाया है। नागार्जुन का व्यंग्य बड़ा तीखा, मीठा और निशाने पर सीधा प्रहार करने-वाला बनकर सामने आया है। व्यंग्य के कतिपय स्थल 'इमरतिया' में भी हैं।

इस प्रकार हास्य और व्यंग्य से युक्त भाषा-शैली ने नागार्जुन के कथा-साहित्य में जान डाल दी है। भाषा की प्रभावोत्पादकता, स्वाभाविकता और रोचकता में इससे वृद्धि हुई है। कथोपकथन इससे खिल उठे हैं, वे स्वाभाविक, संक्षिप्त और विषयानुकूल बने हैं—कथा-विकास में जहाँ वे उपयोगी हैं वहीं नाटकीयता का गुण भी इनमें हैं। नागार्जुन द्वारा प्रयुक्त कथोपकथन पात्रों के चारित्रिक गुणों-अवगुणों के उद्घाटक बन कर सामने आये हैं।

मुहावरे-कहावतें-लोकोक्तियों एवं लाक्षणिकता से युक्त भाषा : नागार्जुन का भाषा पर पूरा अधिकार है। उन्होंने हर प्रकार के भाव बड़ी सरलता-पूर्वक व्यक्त कर दिये हैं। इसके लिए उन्होंने मुहावरों, कहावतों आदि का सहारा लिया है। परिणामस्वरूप भाषा में एक प्रकार की चमक और स्पष्टता आ गयी है। नागार्जुन ने इनका बड़ा स्वाभाविक और उचित प्रयोग किया है। लेखक द्वारा प्रयुक्त कुछ कहावतें और मुहावरे इस प्रकार हैं : 'खग ही जाने खग की भाषा' (बलचनमा), 'आग लगन्ते झोपड़ी जो चाहे सो लाभ' (वरुण के बेटे), 'माले मुफ्त दिले बेरहम' (दुखमोचन), 'बड़े मियाँ तो बड़े मियाँ छोटे मियाँ सुभान अल्लाह' (वरुण के बेटे), 'दूर के ढोल सुहावने।'

लोकोक्तियों और कहावतों के प्रयोग से भी भाषा का सौंदर्य और कथोपकथन का वजन लेखक ने बढ़ा दिया है। कहीं मैथिल कहावतें भी प्रयुक्त की गयी हैं जिनमें लोकरंग स्पष्ट है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"सावन जनमा गीदड़ और भादों आई बाढ़ और गिदड़वा चिल्लाया बाप रे ऐसी बाढ़ कभी नहीं देखी।"[१] चतुरा चौधरी द्वारा बमपार्टी के तरुण सदस्यों के प्रति कहे गये उक्त कथन से यह स्पष्ट हो रहा है कि तुम लोग कल के छोकरे हो।

मैथिली लोकोक्ति : आपन गामक पोखरि आन गामक गाछी।[२] शेर शेर हैं—गीदड़ गीदड़ है।[3] ठूंठ ठूंठ है बिरवा बिरवा है।[४] उड़ती चिड़िया की पूंछ में हल्दी लगाना।[५]

मुहावरे : कान पाथकर (नई पौध), आँखें तरेरकर (इमरतिया), गुस्सा घोंट के पी गई (उग्रतारा), नजाकत की सोन छड़ी (हीरक जयन्ती)।

इस प्रकार मुहावरों और कहावतों के प्रयोग से भाषा को सशक्त बनाया गया है। कहीं लाक्षणिक भाषा का भी प्रयोग किया गया है; जैसे 'उग्रतारा' में यह वाक्य : "अधिक धुआँ भर गया तो अंगीठियों को हँसी आ गई और उनके चेहरे लाल उठे हो।" अंगारे जल कर लाल हो जाने के लिए नागार्जुन का यह प्रयोग कितना सुन्दर है।

अश्लील गालियों और वर्जित ब्यौरों का प्रयोग : नागार्जुन द्वारा अपने कथा-साहित्य में कहीं-कहीं अश्लील गालियों और वर्जित ब्यौरों का भी प्रयोग किया गया है। कहा जाता है कि ऐसा उन्होंने आंचलिक भाषा के प्रयोग हेतु या पात्र विशेष के कथन में स्वाभाविकता लाने के लिए किया है। यह अश्लीलता उनके प्रायः सभी उपन्यासों में पायी गयी है। 'रतिनाथ की चाची' में रतिनाथ द्वारा भाँग पी लेने पर जयनाथ का उसे गाली देना, कहीं लेखक द्वारा अप्राकृतिक व्यभिचार का वर्णन और भोला पंडित द्वारा कच्छा उतार कर अश्लील संकेत ऐसे ही उदाहरण हैं। इसी प्रकार 'बलचनमा' में पृष्ठ ३६ पर नौकरानी द्वारा नायक को गाली देना, कहीं पानी छूने की ध्वनि को ज्यों का त्यों प्रयुक्त करना, बाबा बटेसरनाथ में थानेदार रामफलसिंह के बैठने की अश्लील मुद्रा, करपात्रियों के आबदस्त लेने की ध्वनि आदि अप्रिय और निरर्थक वर्णन हैं। 'नई पौध' उपन्यास में क्रोधाभिभूत खोखा पंडित को मुट्ठी बँधे हुए हाथ का हत्थड़ पकड़ कर हिलाते हुए प्रस्तुत करना तो अश्लील संकेतों की पराकाष्ठा है। कुछ मित्रों द्वारा लेखक का बचाव भी यह कहकर किया जाता है कि क्रोध से भरे फलां पात्र को यदि गाली देते हुए प्रस्तुत न किया गया होता तो स्वाभाविकता और यथार्थता को ठेस पहुँचती। पर इस

१. नई पौध, पृ० ५८। २. बलचनमा पृ० १०६। ३. नई पौध, पृ० ५६। ४. नई पौध, पृ० १३५। ५. कुम्भीपाक, पृ० १८।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकार साहित्यिक मर्यादा और शिष्टता को जो आघात पहुँचा है, उससे बहुजन का हित करने का साहित्यिक लक्ष्य और गौरव-गरिमा फीकी पड़ गयी है। कहीं-कहीं तो नागार्जुन ने अश्लीलता की पराकाष्ठा ही कर दी है। 'इमरतिया' की गौरी द्वारा 'गर्माये घोड़े' को ठण्डा कर देने की अपनी क्षमता बतलाना और इस विशेषता का औचित्य पिता के पास बचपन में सोने के सन्दर्भ से सिद्ध करना—गौरी के हीन चरित्र को तो हमारे सम्मुख स्पष्ट करने में सफल है, पर इससे जिस सौंदर्य का ह्रास होकर एक वीभत्सता पाठकों के मन में उभरती है, वह उपन्यास को प्रभाव-शून्य बनाती है। इसे देख उपन्यास के शीर्षक के नीचे यह लिखने की इच्छा होती है—'केवल विवाहित ही पढ़ें'। क्योंकि अविवाहित, अविकसित और अवयस्क छात्र-छात्राओं के मन पर इसका क्या प्रभाव होगा, अनुमान लगाया जा सकता है। डॉ० त्रिभुवन सिंह का कथन है कि "यदि लेखक का ध्येय समाजवादी यथार्थवाद का चित्रण करना है तो उसे अपनी शैली में प्रकृतवादी होने की क्या आवश्यकता है?" डॉ० मख्खनलाल शर्मा ने भी अपने शोध-प्रबन्ध 'हिन्दी उपन्यास : सिद्धान्त और समीक्षा' में इसे लेखक का प्रकृतवादियों की सीमा में पहुँचना निरूपित किया है। इसमें दो मत नहीं है कि लेखक की यह अश्लील-प्रियता, जिसे वे भले ही स्वाभाविकता-वृद्धि का प्रयास मानते हों, उपन्यास के साहित्यिक सौंदर्य पर कलंक के समान है जिनसे उन्हें बचना चाहिए या वे अंश अगले संस्करणों में निकाल देना चाहिए।

संस्कृतनिष्ठ शब्दों से युक्त भाषा : नागार्जुन हिन्दी, मैथिली और संस्कृत के विद्वान हैं। उनके उपन्यासों में संस्कृतनिष्ठ शब्दों से युक्त उच्च स्तर की भाषा के भी दर्शन हमें होते हैं। उनके कुछ पात्र संस्कृत के श्लोकों का उच्चारण भी करते हैं, जैसे 'रतिनाथ की चाची' में गौरी देवी की माँ।

यह संस्कृतनिष्ठता उनके प्राय: सभी उपन्यासों के प्रकृति-चित्रण के वर्णन में देखी जा सकती है। ऐसे स्थलों पर भाषा कवित्वमयी हो उठी है। 'रतिनाथ की चाची' में प्रस्तुत प्रकृति वर्णन हमें कालिदास द्वारा वर्णित हिमालय पर रवि-रश्मियों के गिरने से झलकते सौंदर्य की याद दिलाता है। 'बाबा बटेसरनाथ' (पृ० १६) के इस वाक्य "स्निग्ध शीतल और धवल पाण्डुर आलोक धरती को दिग्-दिगन्त तक उद्भासित कर रहा था" में भी संस्कृत-निष्ठता है।

"धुएँ के छल्ले ऊपर उठकर धीर ललित भंगिमा में मँडराने लगे तो बुआ को पहाड़ी शरद के कुन्तल मेघ याद आ गए।" (कुम्भीपाक,) "सहस शीर्षापुरुष : सहस्राक्ष सहस्रपाद : हे कोटि शीर्ष हे कोटि बाहु हे कोटि चरण।" (हीरक जयन्ती)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"दिनान्त की प्रलम्बित छाया अपने छोर भला दिगन्त तक क्यों न पसारतीं।" (हीरक जयन्ती)। "भुवन मोहिनी—पावस की कौंधती बिजली भला महामेघ के नेपथ्य को बेदाग क्यों छोड़ती।" (हीरक जयन्ती)

इस प्रकार यत्र-तत्र संस्कृत साहित्य में वर्णित प्रकृति वर्णनों की साम्यता से प्रभावित, प्राकृतिक सुषमा के दृश्यों को संस्कृत शब्दों से युक्त आलंकारिक भाषा में रखा गया है। किन्तु उपन्यासकार नागार्जुन की भाषा कहीं भी ऐसी जटिल नहीं है कि पाठक समझ न सके।

अन्य भाषा के शब्दों का प्रयोग : नागार्जुन हिन्दी शब्दकोश को बढ़ाने वाले साहित्यकारों में से हैं। उन्होंने अँग्रेजी, उर्दू और मैथिली के रंग-बिरंगे शब्दों से अपनी भाषा को सजाया है। यहाँ इस प्रकार के सब शब्दों को प्रस्तुत करना सम्भव नहीं, किन्तु लेखक द्वारा अन्य भाषाओं के कुछ प्रयुक्त शब्द यहाँ उदाहरणस्वरूप दिये जा रहे हैं।

उर्दू : हसरत, कामयाबी, दरअसल, बगावत, फजीहत, हाकिम, जहन्नुम, बदतमीज, गिरफ्त, हुकूमत, सलाम, तालीम, फिदा आदि।

अँग्रेजी : क्वार्टर, ओवरसीयर, क्रीम, क्राकरी, स्टाम्प, रेपुटेशन, डाग इज डेंजरस—बी काशस, क्रेक, ड्यूटी, पब्लिक, काटेज, एक्सटेंशन, मर्डर आदि। कहीं पूरा वाक्य ही अँग्रेजी का दे दिया गया है—"मिलिटरी शैल रीच हीयर अर्ली इन द मार्निंग।" आदि

मैथिली : ठिकिया कर, कै ठो, आँठो, आहि बा रे, मउगी, गे मइयो, ए गो, बथान, घिरावा, मइया री, सींथ, जुगाड़ आदि।

बलचनमा में मैथिली के शब्दों का बाहुल्य देखकर 'हिन्दी उपन्यास : उद्भव और विकास' के लेखक डॉ० लक्ष्मीकान्त सिन्हा लिखते हैं : "इसमें गँवारू भाषा के उद्धार करने का हठ है।"

ग्रामीण पात्र के मुख से सरल, सहज और स्वाभाविक मैथिली को, जिसमें विद्यापति के लिखे गीत आज भी मिथिला के जन-जन का कंठहार बने हुए हैं, गँवारू भाषा कहना अनुचित है। वस्तुतः अब क्षेत्रीय लोक भाषाओं के विकास पर बड़ा जोर दिया जा रहा है। सूर, तुलसी, मीरा, कबीर ने भी तो अपने अंचल की भाषा में ही अपने भावविह्वल हृदय को उँडेला है। आंचलिक उपन्यास के निरक्षर पात्र से क्या डॉ० सिन्हा शेली, कीट्स, टैनिसन या टैगौर की भाषा प्रयुक्त करवाना चाहते हैं? मैथिली शब्द जहाँ-जहाँ प्रयुक्त हुए हैं, प्रकृत रूप में। स्वाभाविकता लाने की खातिर ही नागार्जुन ने मैथिली शब्दों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का प्रयोग किया है। मैथिली के ही कुछ लोक-गीतों से लेखक ने उपन्यासों की भाषा में माधुर्य बिखेर दिया है। 'वरुण के बेटे' में प्रस्तुत किये गये छह लोकगीत इस रूप में प्रमाणस्वरूप देखे जा सकते हैं। मैथिल टोन के अनुरूप ही नकारात्मक आशय जहाँ-तहाँ व्यक्त हुआ है।

आत्म-विश्लेषणामक विधि से युक्त नवीन शैली : नागार्जुन ने अपनी शैली सम्बंधी कुछ-न-कुछ विशेषताएँ प्रायः प्रत्येक उपन्यास में व्यक्त की हैं। 'बलचनमा' एक पात्र मुखोद्गीरित उपन्यास है। 'इमरतिया' आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया है, किन्तु प्रत्येक पात्र अलग-अलग उपस्थित होकर अपनी बात और अन्य पात्रों से सम्बंधित घटनाएँ सूचित करता है। 'बाबा बटेसरनाथ' में भी नई टेकनीक है। एक वृक्ष को प्रमुख पात्र के रूप में चित्रित करते हुए उसके द्वारा अतीत का इतिहास, वर्तमान की स्थिति और भविष्य के संकेत दिये गये हैं। इसी प्रकार 'उग्रतारा', 'हीरक जयंती' और 'इमरतिया' उपन्यासों में आत्म-विश्लेषणात्मक विधि को अपनाया गया है। इस प्रकार पात्रों के अचेतन मन में व्याप्त असंतोष और कुंठाओं को लेखक द्वारा पकड़ पाने की उसकी विशेषता घोषित हो रही है। पात्रों की कुंठाओं का यथातथ्य चित्रण नागार्जुन ने किया है। उपन्यास के पात्र अपने विरोधी के प्रति जो विचार रखते हैं उसका उत्तर स्वयं विरोधी ही उनके मन की तह में से उभर कर उन्हें दे देता है। इस प्रकार नागार्जुन ने मनोवैज्ञानिक विधि से चरित्र-विश्लेषण करने का प्रयास किया है जिसमें वे पूर्णतया सफल रहे हैं। पात्रों के अन्तर्द्वन्द्व, तन्द्रायुक्त मानसिक असंतोष से सम्बंधित कथन लेखक ने कोष्टक में रखे हैं। कहीं-कहीं इनसे कथोप-कथन-सा भी रस मिलता है। 'हीरक जयन्ती' के सारे पात्र पीड़ाग्रस्त दिखाये गये हैं। 'उग्रतारा' उपन्यास से एक-दो उद्धरण देखिये : "गीता तू बहुत रोई न··· हाँ, चाची।···नहीं चाची मैं तुमसे नहीं बोलूँगी, कितनी निष्ठुर हो तुम···। हाँ गीता। बड़ी निष्ठुर हूँ मैं, बड़ी बेरहम, मैं तुझे अभी और रुलाऊँगी।···जी नहीं भरा है।··· जी भरेगा··मेरा ? आँसुओं से ? इतनी जल्दी ? अच्छा भई गीता एक बात पूछूँ ?··" ये विचार उग्रतारा के ही मन में उठ रहे हैं, और भी कई विचार उसके मन में उठते हैं। कहीं वह सिपाहीजी से क्षमा माँगती दिखाई गयी है।

'हीरक जयन्ती' से एक उदाहरण और देखिये :

"प्रणाम सरकार····पहचाना नहीं आपने ?····उंहूं···नहीं पहचाना ? लीजिए हैट और काला चश्मा हटा लूँ····। अरे तुम ? जटाशंकर। कहाँ रहे ?···बम्बई रहता हूँ, सरकार, जर्नलिज्म का धँधा अपना लिया है।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लगता है, ये अंश वास्तविक कथोपकथन होंगे, पर नहीं, ये पात्रों के अन्तर्द्वन्द्व हैं। इनमें पात्र अपना आत्मविश्लेषण स्वयं कर रहे हैं, इनमें व्यक्त सहज अभिनयात्मकता बड़ी आकर्षक और रोचक है। इससे पात्रों के चरित्र पर भी प्रकाश पड़ता है। इसके अतिरिक्त वर्णनात्मक, आत्मकथात्मक, पत्रात्मक मिश्रित एवं डायरी शैली में हैं। 'रतिनाथ की चाची, बटेसरनाथ, नई पौध, दुखमोचन, वरुण के बेटे, कुम्भीपाक, उग्रतारा, हीरक जयन्ती' वर्णनात्मक शैली में लिखे गये हैं। लेखक ने अपनी ओर से इनमें कथा कही है। इन उपन्यासों में कहीं-कहीं आत्मचिन्तनात्मक शैली का प्रयोग किया गया है। 'बलचनमा' और 'इमरतिया' आत्मकथात्मक शैली में लिखे गये हैं, पर 'बलचनमा' एकपात्र मुखोद्गीरित उपन्यास हैं। 'इमरतिया' में एक-एक पात्र अलग-अलग स्वतन्त्र परिच्छेद में उपस्थित होकर अपने विचार रखता है।

इस प्रकार हम नागार्जुन में शैली के कई और सशक्त रूप पाते हैं।

यथार्थवादी चित्रणों से युक्त वर्णनात्मक भाषा-शैली : नागार्जुन के उपन्यासों में स्थान-स्थान पर यथार्थवादी ब्यौरे देखे जा सकते हैं। वस्तुओं या तथ्यों को जिस रूप में लेखक पकड़ पाया है, उसी रूप में उसने उन्हें प्रस्तुत भी किया है।

बाबा बटेसरनाथ के प्रवचन, उनके द्वारा प्राचीन इतिहास सुनाना तथा दुखमोचन में छोटी-से-छोटी बातों के सूक्ष्म ब्यौरे दिये गये हैं। बलचनमा ने भी अपनी भोली बातों से कहीं भैंस चराने, उसको काटनेवाले कीड़ों के नाम, कहीं प्लेटफार्म, पानी का नल आदि बातों का वर्णन किया है। 'रतिनाथ की चाची' में भी मालिश करने का ढंग, आमों का वर्णन, सुपारी कतरने की विधि, आदि ऐसे ही स्थल हैं।

'वरुण के बेटे' से कुछ यथार्थवादी वर्णनात्मक चित्र यहाँ प्रस्तुत हैं : 'बाँस की चचरियों से बनी फट्टक को भीतर ढकेलने लगा तो स्त्री की निद्रालु आवाज आई—कौन ?"···"उठ ढिबरी जला मैं हूँ"···। "उधर ओरियानी में बँधी बकरी मिमियाई तो उसके तीनों पठरू (बच्चे) भी 'में में' कर उठे।"···"आहट पाते ही गोला कूकुर अगवानी के लिए बाहर निकल आया, 'हल्की मीठी गुर्राहट'। स्वागत की सनातन अभिव्यक्ति।"····"माँ से बिछुड़ा हुआ कौए का बच्चा कच्ची आवाज में काँव काँव कर उठा तो मधुरी सचेत हुई।"

इन वर्णनों को अपनी अकृत्रिम यथार्थवादी शैली में रख देना लेखक की भाषा सम्बन्धी सशक्तता और अभिव्यक्ति की कुशलता का परिचायक है। साथ ही इससे कथन की प्रभावोत्पादकता बढ़ जाती है।

छोटी-छोटी बातों पर भी लेखक की दृष्टि बड़ी पैनी रही है। घटनाओं और दृश्यों के सूक्ष्म ब्यौरे देने में लेखक काफी सफल रहा है। 'नई पौध'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की इन पंक्तियों से लेखक के यथार्थवादी वर्णन का परिचय मिलता है : "बूलो की भाभी बीच आँगन में पुराने कम्बल के टुकड़े पर बैठी हुई थीं, सामने पूनियों से भरी डलिया थी, कटोरा था, गोदी का बच्चा सोने वाला था, अभी वह एक थन को बायें हाथ से थामकर हौले हौले पी रहा था, दाएँ हाथ की पहली दूसरी उँगलियाँ दूसरे थन की घुंडी पर यों ही फिर रही थीं।"

इसी प्रकार बलचनमा की गरीबी, उसका अत्यन्त कष्टप्रद जीवन, जिसमें ओढ़ने-बिछाने के समुचित कपड़े न होने पर बकरी की भिंगणियों को जलाकर आग तापना, आदि के भी यथार्थवादी वर्णन देखे जा सकते हैं। समाज के जिस क्षेत्र का लेखक ने वर्णन किया है, उसका यथार्थ एवं सजीव चित्र ही उपस्थित कर दिया है।

भाषा-सम्बन्धी अन्य विशेषताएँ : उपन्यासकार की भाषा-सम्बन्धी कुछ अन्य विशेषताओं को हम निम्न खंडों में रखकर प्रस्तुत कर रहे हैं :

(अ) नाद-युक्तता : नागार्जुन ने 'नई पौध' में कहीं-कहीं शब्दों को इस प्रकार रखा है कि उनसे वैसी ही ध्वनि उत्पन्न हो रही है : तकली की आवाज—कि र्र र्र र्र र्र। हँसने की आवाज—ही ही ही ही हू हू हू। कोल्हू खींचने की आवाज— ढे``` च्यों ों ों ों ों चीीीी। घटकराज के मुँह से निकली आवाज—ठर्र र्र र्र ठों ों ों ों ठर्र र्र र्र र्र। शब्द चयन देखिये : "पायलों की रुन झुन रुन झुन हौले हौले शून्य में समा गयी।"[१] इस प्रकार शब्दों से उठती ध्वनि का ठीक-ठीक बोध कराने का प्रयास लेखक का रहा है।

(ब) शब्दों को तोड़कर रखना : नागार्जुन ने शब्दों को भी कहीं-कहीं तोड़कर शब्द-लाघव के प्रयास में नया और आकर्षक रूप दे दिया है। सावुन लगा रहा था के स्थान पर "सवुना रहा था।"[२] ठीक करके रखेंगे के स्थान पर "ठिकिया कर रखेंगे।"[३] इस प्रकार के प्रयोगों से नागार्जुन ने शब्द-भंडार में वृद्धि का प्रयास किया है।

(स) मानवीकरण : कहीं-कहीं निर्जीव वस्तुओं में मानवीकरण की प्रवृत्ति से कथन में निखार आ गया है। "सीमेंट की पक्की फर्श भभा कर हँस रही थी।"[४] ग्रीष्म की नदियों को संजीदा और बारिश की नदियों को बेहूदा कहा गया है।[५]

(द) उच्च स्तर के श्रेष्ठ भावों वाले प्रयोग : नागार्जुन ने श्रेष्ठतम भावों के प्रयोग यथास्थान पर किये हैं। गौरी देवी 'रतिनाथ की चाची' में कहती है : "किसी भी युग में स्त्री को अमृत पीने का सुयोग नहीं मिला, पुरुष को अमृत पिलाकर वह स्वयं विषपान ही करती आयी है।"[६]

१. दुखमोचन, पृ० १४। २. कुम्भीपाक, पृ० १३। ३. हीरक जयन्ती, पृ० ३५। ४. कुम्भीपाक, पृ० ७६। ५. दुखमोचन, पृ० १५८। ६. रतिनाथ की चाची, पृ० १००।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस कथन में युगों से चले आते पुरुष के प्रति नारी जाति के त्याग की व्यंजना हो रही है। पत्नी, पुत्री, वहन, माँ हर रूप में उसे कष्ट ही कष्ट उठाने पड़े हैं।

ऐसे श्रेष्ठ स्थल लेखक के अन्य उपन्यासों में भी प्रयुक्त हुए हैं। 'हीरक-जयन्ती' से एक उदाहरण प्रस्तुत है : "खंडिता नायिका की शंख सुडौल झुकी हुई गर्दन देख धीर उदात्त नायक के अवचेतन में अनुकम्पा का भाव आ गया।" इस एक पंक्ति में पूरा रूप-भाव प्रकट हो गया है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि नागार्जुन का कथा-साहित्य भाषा के प्रयोग की दृष्टि से बड़ा समृद्ध है। लेखक ने जिस प्रकार के भावों को चाहा है, उपन्यास में उतार कर रख दिया है। यदि हम कहें कि भाषा उनके सामने नतमस्तक दिखाई देती है तो जरा भी अतिशयोक्ति नहीं होगी। एक-दो उदाहरण देने का लोभ हम सँवरण नहीं कर पा रहे हैं : "मगर बातें भी बड़ी नफासत से बुनती थी और सच पूछिए तो इसी एक कारण से दिगम्बर बाइससाला छोटी मामी के चंचल नैनों तो अपना दिल रेहन किए हुए था।" (नई पौध) "बीच-बीच में अशिष्ट इंगितों के सतर्क गोपन उन निगाहों में एक अजीब सी चमक भरते रहते हैं।" (हीरक जयन्ती,)

उपन्यास में इंगितगर्भित भाषा नागार्जुन की भाषिक विशेषता का प्रमाण है। यह विशेषता उन्हें व्यंग्यकार होने के कारण प्राप्त हुई है।

'कुम्भीपाक' उपन्यास में एक स्त्री अपनी गर्भवती सहेली से—कितने महीने का गर्भ है—जानने के लिए पूछती है—"कै महिने ?" इसका उत्तर नागार्जुन ने उस सहेली से इस प्रकार दिलवाया है : "उत्तर में दायें हाथ की तीन उँगुलियाँ उठीं।" यह इंगितगर्भिता लेखक की भाषिक पटुता का उत्कृष्ट उदाहरण है।

कहीं अमरूद खाती बिसेसरी की प्रतिमा ही बना दी है : "आधा खाया हुआ अमरूद, आधी उठी हुई हथेली, बिसेसरी का स्तंभित शरीर किसी वस्तुवादी मूर्तिकार के शिल्प का सुन्दर नमूना बनकर रह गया।" (नई पौध) कम शब्दों से पूरा रूप खड़ा कर दिया गया है।

हास्य और व्यंग्य के रंगारंग से युक्त एक ओर उनकी भाषा तीखी, पैनी और सीधा प्रहार करनेवाली है, दूसरी ओर संस्कृतनिष्ठ शब्दों और प्रकृति-वर्णनों में नागार्जुन के कवि ने उनके उपन्यासकार को पीछे रख दिया है। कहीं गम्भीर चिन्तन-प्रधान भाषा भी प्रयुक्त हुई है। नागार्जुन की भाषा में प्रसाद गुण सर्वत्र ही व्याप्त है। साथ ही मुहावरों, कहावतों, लोकोक्तियों एवं इंगित-गर्भित भाषा ने अभिव्यक्ति को और भी सशक्त बना दिया है। भाषा और कथोपकथन सोद्देश्य प्रयुक्त किये गये हैं। भाषा के इन्हीं आकर्षक गुणों के कारण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हम कह सकते हैं कि भाषा-शैली की दृष्टि से नागार्जुन अपने कथा-साहित्य में पूर्ण सफल हुए हैं। नागार्जुन के कथा-साहित्य का तात्त्विक अनुशीलन करने के बाद यहाँ हम उनके उपन्यासों का निष्कर्ष प्रस्तुत कर रहे हैं :

निष्कर्ष :

कथानक की दृष्टि से नागार्जुन अपने उपन्यासों में विशेष सफल नहीं रहे हैं। उनके उपन्यास चरित्र प्रधान, समस्या और समाधान प्रधान वर्ग में रखे जा सकते हैं। इसलिए कथानक-संगठन पर उपन्यासकार का ध्यान कम रहा है। 'बलचनमा', 'रतिनाथ की चाची', 'वरुण के बेटे', 'नई पौध' सब में यही बात देखी जा सकती है। कथानक-संगठन का कुछ स्तर यदि सुधरा है तो 'कुम्भीपाक' में। बाकी सारे उपन्यास 'हीरक जयन्ती', 'इमरतिया', 'उग्रतारा' कथानकविहीन तो नहीं कहे जा सकते, क्योंकि कुछ-न-कुछ कथा तो उनके माध्यम से प्रस्तुत की ही गयी है, पर लेखक ने उसके गठन पर ध्यान कम ही दिया है। नागार्जुन का ध्यान कथानक के माध्यम से मात्र अपने विचारों के प्रकाशन का ही रहा है।

कथानक-संयोजन की सफलता का प्रमुख गुण होता है—सम्भवनीय घटनाओं का समावेश। किन्तु 'दुखमोचन' और 'उग्रतारा' में आदर्शवाद की छौंक मारकर पाठकों को उनपर विश्वास करने के लिए विवश किया गया है। इन उपन्यासों में सारी घटनाओं को आदर्शवादी सूत्रों से गूँथने का असफल प्रयास लेखक ने किया है। 'उग्रतारा' में गर्भवती उगनी का उसके पूर्व प्रेमी द्वारा पुनः अपनाना सामान्य से उच्च आदर्श है।

पूर्व नियोजित असम्भाव्य घटनाओं के प्रकाशन से, उपन्यास में कथा की चरम सीमा पर पूरा ध्यान न दे सकने के कारण, नागार्जुन कथानक-संगठन की दृष्टि से पूर्ण सफल नहीं रहे हैं। उद्देश्याभिव्यक्ति की आतुरता ने अनुपयुक्त स्थलों पर घटनाओं के मोड़ उपस्थित कर दिये हैं। अचानक इस प्रकार के परिवर्तन से कथा में गतिरोध तो आया ही है, साथ ही पात्रों के चरित्र-प्रकाशन पर भी इसका बुरा प्रभाव पड़ा है।

कहीं लेखक के उपन्यास अपूर्णता के शिकार भी हुए हैं। उनके सारे उपन्यास अपने कलेवर को और अधिक बढ़ाने की सम्भावना से युक्त दिखाई देते हैं। कथा-संयोजन की अपूर्णता इसी से जानी जा सकती है कि 'बलचनमा' को पिटवा कर गिरवा देना, वरुण के बेटों को गिरफ्तार करवाकर पुलिस स्टेशन भिजवा देना, 'हीरक जयन्ती' में पात्र-अनुक्रमणिका की लम्बी फेहरिस्त देना, आदि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लेखक द्वारा तत्सम्बन्धी असंतुलन और पाठकों से शीघ्र पीछा छुड़ाने की मनोवृत्ति के परिचायक हैं। कहीं-कहीं नागार्जुन ने किसी घटना को उठाकर उसे अपूर्ण ही छोड़ दिया है। 'नई पौध' में 'सहुआइन-अमृत' की कथा परिच्छेद–११ में आरम्भ कर यों ही छोड़ दी गयी है, इसकी उपन्यास को कोई आवश्यकता नहीं दिखाई देती। 'रतिनाथ की चाची' उपन्यास में भी कुछ स्थल ऐसे ही आये हैं। इनमें 'वागो' और 'रति' का परस्पर प्रेम-प्रदर्शन करने के वाद वागो का विवाह अन्यत्र करा देना पूर्व प्रसंगों की व्यर्थता सिद्ध करता है। 'कुम्भीपाक' में 'नागेसर' से 'भुवन' की भेंट कराने का वादा करके नागार्जुन की 'नीरू' उसे भूल ही गयी है।

इस प्रकार नागार्जुन के कथानक मंदगति से अग्रसर होते हैं। घटनाओं के जटिल मोड़ों का वहाँ अभाव है। यह अभाव वहीं है जहाँ वह साम्यवादी विचारधारा के अनुसार कथा परिचालित करते हैं।

नागार्जुन ने समाज के निम्नस्तरीय पात्रों को अपने उपन्यासों में प्रमुख स्थान दिया है तथा उनके चरित्र को पूरा उभारा है। इस प्रकार इन्होंने प्रेमचन्द की परम्परा को आगे बढ़ाया है। 'बलचनमा' में एक चरवाहे को 'बाबा बटेसरनाथ' में वट-वृक्ष को, 'दुखमोचन' में सामान्य ग्रामीण को तथा 'वरुण के बेटे' में मछुओं को उपन्यास के मुख्य पात्रों के रूप में चित्रित करना, लेखक की निम्न समाज के प्रति व्यक्त सहानुभूति का द्योतक है। 'बलचनमा' के रूप में कभी न भुलाये जा सकने वाले पात्र का सृजन किया गया है। वह सच्चा भारतीय किसान बनकर हमारे सामने लाया गया है। जमींदारों से वह त्रस्त किन्तु कठोर परिश्रमी और ईमानदार है। उसकी अबोधता का कोई अनुचित लाभ ले ले, सोये हुए बलचनमा पर जाल डाल कर काबू पा ले, यह अलग बात है किन्तु अन्याय का वह जमकर मुकाबला करता है। अन्याय के प्रतिकार के लिए वह फरसा भी उठा लेता है। उसकी यह क्रांति कृषकों की नवचेतना का प्रतीक है। गौरी के रूप में ममतामयी भारतीय नारी और 'दुखमोचन' के रूप में आदर्श समाजसेवी को नागार्जुन ने प्रस्तुत किया है।

नागार्जुन के सारे पात्र सत् और असत् पात्रों के रूपों में बाँटे जा सकते हैं। उपन्यास में सत् पात्रों की विजय दिखाई गयी है। 'वरुण के बेटे', 'दुखमोचन', 'नई पौध' और 'कुम्भीपाक' में यही दिखाया गया है।

नागार्जुन ने अपने नारी पात्रों का चित्रण बड़ी सहानुभूति से किया है। उनके नारी पात्र प्राचीन भारतीय परम्पराओं से ग्रस्त—पुरुष की दासी नहीं वरन् उसके कन्धे से कन्धा लगाकर काम करने वाली परिश्रमी और साहसी बालाएँ हैं। ऐसा लिखते हुए हमारे सम्मुख 'वरुण के बेटे' की मधुरी, 'उग्रतारा'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उपन्यास की भाभी, 'दुखमोचन' की माया और 'कुम्भीपाक' की परिश्रमी चम्पा का चेहरा उभर आया है। नागार्जुन की मधुरी अपनी दबंगता, कार्य-कुशलता, प्रगतिशील चेतना और अल्हड़ता के लिए पाठकों को सदा याद रहेगी। उग्रतारा समाज की जर्जरित रूढ़ियों का भंजन करने वाली आधुनिक विचारों की युवती है।

नागार्जुन के नारी-पात्र सर्वत्र ही अपनी चारित्रिक गरिमा और उच्च आदर्शों से युक्त हैं। 'बलचनमा' की माँ, 'दुखमोचन' की मामी 'नई पौध' के वाचस्पति की माँ—इसी प्रकार की पात्री हैं। 'रतिनाथ की चाची' का चरित्र लेखक ने अपने हृदय की सारी आत्मीयता और स्निग्धता से गढ़ा है।

समाज के प्रायः हर क्षेत्र से उन्होंने पात्रों का चयन किया है। उनके पात्रों में बलचनमा जैसे ग्रामीण किसान, खुरखुन मछुआ, पंडित, समाज-सेवी दुखमोचन, नित्या बाबू जैसे स्वार्थी बनिये, तिलकधारी दास के समान घाघ प्रकाशक, भ्रष्ट नेता नरपत बाबू, वकील पी० के० दास, जमनिया के बाबा जैसा धूर्त साधु, जेल के सिपाही अर्थात् सब वर्ग के लोग चित्रित किये गये हैं। इससे स्पष्ट है कि लेखक को जीवन और समाज में देखे गये पात्रों का गहरा अनुभव है। यही कारण है कि इन पात्रों को पाठकों से परिचित कराने में लेखक पूर्ण सफल रहा है।

किन्तु कहीं-कहीं अवश्य ही लेखक के पात्र आरोपित प्रतीत होते हैं। यह उसके मस्तिष्क में उभरती हुई राजनैतिक विचारधारा के अभिव्यक्तिकरण का परिणाम है। उनकी गौरी अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं, रूस की विजय और नारी जाति द्वारा पुरुषों के प्रति किये जाते रहे त्याग का दार्शनिक विवेचन करती है। उनके सामान्य पात्र कहते हैं : "आजादी दिल्ली और पटना तक आकर रुक गई है।" मधुरी, 'नई पौध' के वाचस्पति की माँ, बाबा बटेसरनाथ आदि साम्यवादी विचारधारा के सजग प्रचारक बन कर सामने आये हैं। ऐसे स्थलों के लिए यदि यह कहा जाय कि नागार्जुन इन पात्रों के सूत्रधार बन गये हैं तो अनुचित न होगा। पात्रों की स्वतंत्र विचारशक्ति का अपहरण उन्होंने कर लिया है।

फिर भी यह स्वीकार करना पड़ेगा कि नागार्जुन द्वारा प्रस्तुत किये गये पात्र अविस्मरणीय और परिवर्तनशील चरित्र लिये हुए हैं। बलचनमा के रूप में उन्होंने होरी के परिवार को बढ़ाया है। पात्रों का चरित्र-चित्रण मौलिक ढंग से प्रस्तुत किया है। 'वरुण के बेटे, बलचनमा, हीरक जयन्ती' उपन्यासों में यथार्थता के आग्रह ने बड़ी सजीवता उपस्थित कर दी है।

अपने उपन्यासों में नागार्जुन ने भाषा की बहुरंगी छटा और शैली की विविधता से पाठकों को चमत्कृत किया है तथा अपनी भाषा पर असाधारण अधिकार का परिचय दिया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नागार्जुन प्रथम आंचलिक उपन्यासकार हैं। कुछ विद्वान 'रेणु' को यह स्थान देने का असफल प्रयास करते हैं। वस्तुतः नागार्जुन का 'वलचनमा' रेणु के 'मैला आँचल' से पूर्व की कृति है। इसलिए यह सम्मान नागार्जुन को ही दिया जाना चाहिए। वे ही आंचलिक उपन्यासों के जनक हैं। श्रीमती स्नेहलता सुन्दरसेन का मत इस दृष्टि से पठनीय है : "नागार्जुन के साहित्य में अवतरित होते ही विशुद्ध आंचलिक उपन्यासों का स्वाभाविक स्वरूप देखने में आया। उनका 'वलचनमा' हिन्दी के प्रथम स्वाभाविक सफल आंचलिक उपन्यास होने का गौरव प्राप्त कर सकता है—नागार्जुन की इस अप्रत्याशित सफलता के उपरान्त हिन्दी साहित्य में आंचलिक उपन्यासों की लहर उमड़ी।"[1]

लेखक ने अपने उपन्यासों में प्रकृति-सौन्दर्य और वातावरण का जो परिचय दिया है उससे औपन्यासिक वातावरण की सजीवता में वृद्धि हुई है। उनके उपन्यासों में ग्रामीण वातावरण जिसमें—भैंस चराना, धान रोपना, आदि से लेकर कारें, वंगले, स्टीमर, हवाई जहाज आदि सभी से सम्वन्धित घटनाओं को रखा गया है, पर कहीं इस विषयक असंगति नहीं दिखाई देती। नागार्जुन के उपन्यासों में अपने समय की राजनीतिक गतिविधि, नेताओं का भ्रष्टाचार और स्वार्थपरता सवकुछ देखा जा सकता है।

हमारा विश्वास है कि नागार्जुन द्वारा देशकाल की प्रयुक्त यह योजना, नये उपन्यासकारों के लिए मार्गदर्शन दे सकती है।

नागार्जुन के उपन्यास अपना महत् आदर्श उपस्थित कर पाठकों के प्रेरणा-स्रोत वन गये हैं। उनके उपन्यासों में कहीं साम्यवादी विचारों के पोषण का उद्देश्य है – तो कहीं ग्राम का आदर्श निर्माण, कहीं पिछड़े वर्ग को अपना अधिकार दिलाना, कहीं नारियों का रूढ़ियों से मुक्ति और कुम्भीपाक से उद्धार कराना, आदि।

'रतिनाथ की चाची' में चाची के प्रति सहानुभूति जाग्रत कराना, 'हीरक जयन्ती' में भ्रष्ट नेताओं से तर्क करना और 'इमरतिया' में स्मगलर साधुओं के पाखण्डों की पोल खोलना लेखक का ध्येय रहा है। नागार्जुन ने यद्यपि पुरानी समस्याओं जैसे—विधवा विवाह या अनमेल विवाह को अपने उपन्यासों में उठाया है, पर समाधान का ढंग उनका अपना, मौलिक और प्रगतिशील चेतना से सम्पन्न है। इसीलिए ये पाठकों को बहुत अधिक अपील करते हैं। उग्रतारा के पुनर्विवाह, 'कुम्भीपाक' की चम्पा का परिवर्तनीय जीवन, बिसेसरी

१. साहित्य संदेश (दिसम्बर १९६८), हिन्दी में आंचलिक उपन्यासों का विश्लेषण : स्नेहलता सुन्दरसेन, पृ० १८०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का 'नई पौध' में तरुण वाचस्पति के विवाह द्वारा इस बात को समझा जा सकता है।

नागार्जुन ने हिन्दी लघु उपन्यासों के उद्देश्य में एक नवीनता और स्पष्टता ला दी है। पुरानी समस्याएँ समाधान के नूतन परिधान से वेष्ठित हो खिल उठी हैं। जर्जरित परम्पराओं का अवसान और नवीन प्रगतिशीलता का नवोन्मेष नागार्जुन के उपन्यासों की विशेषता रही है। प्रो० प्रकाशचन्द्र गुप्त ने लिखा है : "जिस शक्ति और वेग से आज नागार्जुन हिन्दी उपन्यास को समृद्ध बना रहे हैं, वह पाठक और आलोचक का मन भविष्य के प्रति आश्वस्त करता है।"[१] श्री घनश्याम 'मधुप' के अनुसार, "नागार्जुन आज हिन्दी साहित्य में मूलत: लघु उपन्यासकार के रूप में ही स्थापित हैं। हिन्दी साहित्य को उनसे अभी भी काफी अपेक्षा है।"[२]

स्व० आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी का कथन है : "हिन्दी उपन्यास को नई दिशा देने में नागार्जुन उल्लेखनीय व्यक्ति हैं।"[३]

१. प्रो० प्रकाशचन्द्र गुप्त : आज का हिन्दी साहित्य, पृ० १६७।
२. घनश्याम 'मधुप' : हिन्दी लघु उपन्यास, पृ० १६०।
३. आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी, आलोचना (पत्रिका), अक्तूबर १९५७, पृ० ७-८।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

षष्ठ अध्याय

नागार्जुन का कथा-साहित्य : वर्ण्य और प्रतिपाद्य

साहित्य जहाँ समाज का दर्पण होता है, वहीं समाज को प्रभावित भी करता है। साहित्य से समाज में किसी विचारधारा का प्रसार किया जा सकता है। दर्पण देखकर जिस प्रकार हम अपने को व्यवस्थित कर लेते हैं, उसी प्रकार साहित्य भी समाज को व्यवस्थित कर देता है। दूसरी ओर साहित्य के द्वारा उसके रचयिता की विचारधारा को भी परखा जा सकता है। कहा जाता है कि किसी लेखक को समझने के लिए उसके साहित्य का मनन करना चाहिए। वस्तुतः साहित्य लेखक के विचारों का प्रतिबिम्ब ही है। लेखक की आस्था और आत्मा का निचोड़ ही उसका साहित्य है। कोई भी लेखक अपनी रचना में व्यक्त हुए बिना नहीं रह सका।

नागार्जुन ने अपने कथा-साहित्य में जिस समाज का चित्रण किया है वह उनका देखा-भाला है। उन्होंने समाज के विभिन्न वर्गों का चित्रण किया है। गरीब चरवाहे से लेकर थैली भेंट लेने वाले मंत्रिगण और पानी छूने से लेकर 'सहस्र शीर्षा' मंत्र के पाठ तक सबके वर्णन उनके कथा-साहित्य में सुलभ हैं। साथ ही उनकी विचारधारा भी व्यक्त हुई है। उनके द्वारा वर्णित वस्तु और विचारधारा का क्रमशः अध्ययन हम करेंगे।

नागार्जुन के कथा-साहित्य में वर्णित निम्नवर्ग : नागार्जुन को निम्नवर्गीय समाज का पूरा अनुभव है। उन्होंने इस वर्ग को अभावों और अभियोगों से जूझते देखा है। उन्होंने पाया है कि यह वर्ग जमींदारों के शोषण की चक्की में पिस रहा है। इन गरीब और पीड़ित मजदूरों से बेगार ली जाती रही है या अत्यन्त कम मजदूरी पर उनसे कस कर काम लिया जाता रहा है। लेखक द्वारा वर्णित 'बलचनमा' इसी वर्ग का प्रतिनिधि है। उसकी माँ और दादी आम की गुठली का गूदा मसल-मसल कर फाँकतीं, मगर इज्जत का सौदा नहीं करने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की सीख देती है। इनके पास ओढ़ने-बिछाने के पूरे वस्त्र भी नहीं होते। ठण्ड से बचने के लिए, आग तापने की लकड़ियाँ भी न होने पर, बकरी की सूखी भिंगणियाँ जलाकर ये रात काटते हैं। 'रतिनाथ की चाची' का कुल्ली राउत और 'बलचनमा' ऐसे ही गरीब पात्र हैं जिनका जीवन जमींदारों की जूठन खाकर और उनका पहिरन पहन कर व्यतीत होता है। इन गरीबों को बचपन में कभी स्कूल जाने को नहीं मिलता। इनका जीवन बड़ी जाति वालों की मेहरबानी पर ही निर्भर है।

ये सारे पात्र—बलचनमा, 'रतिनाथ की चाची' का कुल्ली राउत, 'बाबा बटेसरनाथ' के बेगार देने वाले श्रमिक, शत्रुमर्दन राय, 'दुखमोचन' उपन्यास में हरखू की माँ, 'वरुण के बेटे' के खुरखुन, गोनड़ आदि मछुए हैं। इन सबका जीवन लेखक ने अभावों की शृंखला से बुना है। खुरखुन के बच्चे मछुली सेंक-सेंक कर ही खाते हैं। सब्जी बनाने के लिए तेल तक नहीं है उनके यहाँ। ये सारे पात्र भारतीय निर्धन वर्ग के प्रतीक बनकर उपस्थित हुए हैं। ये ईमानदार, परिश्रमी, और श्रेष्ठ आदर्शों से युक्त हैं। इनके हृदय में भी पीड़ित और शोषित भाइयों के लिए हमदर्दी है। खुरखुन नरभक्षी मगर को पछाड़ता है, मालगाड़ी के डिब्बे में बाढ़पीड़ितों को स्थान दिलवाता है। बलचनमा को न सिर्फ मजदूरों से किन्तु पशुओं से भी वैसी ही हमदर्दी है। बैल के प्रति उसकी सहानुभूति हृदयस्पर्शी है। इन गरीब और शोषित मजदूरों के जीवन का यथातथ्य वर्णन लेखक ने किया है। नागार्जुन का यह निम्नवर्ग इतने कष्ट उठाते हुए भी अपनी भुजाओं पर विश्वास रखता है। श्रम से कमाई की रोटी खाना चाहता है। बलचनमा के रूप में लेखक ने भारतीय कृषक और मजदूर जनता के शोषण और उत्पीड़न को हमारे सम्मुख ला दिया है।

कथा-साहित्य में वर्णित उच्चवर्ग : उच्चवर्गीय जमींदारों-पूँजीपतियों का जो चित्रण लेखक ने किया है उससे स्पष्ट है कि यह वर्ग हमेशा ऐश-आराम में लिप्त रहा है। मजदूरों के श्रम पर इनका जीवन अवलम्बित है। प्रपंची यह इतना है कि पैसे के बल पर कलक्टर, एस० डी० ओ० आदि का भी सहयोग पा लेता है और काँग्रेसियों ने तो इनकी ओर मुँह ही कर रखा है। इन्हें काँग्रेस का हार्दिक समर्थन और सक्रिय सहयोग रहा है। लेखक ने इनके द्वारा प्रयुक्त अनुचित साधनों का पर्दाफाश किया है। स्वतंत्रता के पूर्व की स्थिति पर प्रकाश डालते हुए लेखक ने बताया है कि जमींदार सार्वजनिक एवं वर्षों से एक ही किसान द्वारा जोती-बोई जा रही जमीन अन्य लोभी किसानों को गुपचुप बन्दोबस्त करते हैं; क्योंकि उन्हें भय है कि स्वतंत्रता बाद उनकी जमीन सरकार ले लेगी। मजदूर और किसान अब सजग होते जा रहे हैं, फलस्वरूप वे संघर्ष के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लिए कटिबद्ध दिखाये गये हैं। धारा १४४ लगा दी गयी। प्रकृति की हरी-भरी फसलें सरकारी लाल साफे के पहरे में फलने-फूलने लगीं।

इस प्रकार उच्चवर्ग ने निम्नवर्ग का सब प्रकार से शोषण किया। अंगूठे के निशान कोरे कागज पर लेकर मनचाही रकम टीप ली। बेगारी लेने का एक ही उदाहरण रोंगटे खड़े करने के लिए काफी है : "एक बार जमींदार के लड़के के विवाह में १६ मजदूर एक तख्त उठाकर ले गये। उसपर एक वेश्या का नाच हो रहा था, साजिंदों सहित जमींदार का लड़का उसपर बैठा था।" (बाबा बटेसरनाथ) यह शोषक वर्ग स्वतंत्रता के पूर्व अँग्रेजों के प्रति वफादार रहा है। अपने ऐश-आराम के लिए इन्हें दूध, दही, घी, मछली, कनकजीर के खुशबूदार भात, नरम बिस्तर, मसहरी और उसके भी आगे की दो-एक चीजें चाहिए। चरित्र से भ्रष्ट ग्राम की युवतियों को आधी-पौनी आँखों से देखनेवाला यह वर्ग कितना जालिम रहा है, इसका वर्णन उपन्यासों में नागार्जुन ने किया है। 'इमरतिया' में क्रूरता इतनी है कि 'गरीब तड़प-तड़प कर मर भी जाय तो इनका दिल नहीं पिघलता।' मलिकाइन बलचनमा से कस कर काम लेती है, मालिक नींद में सोते बलचनमा को लात मारकर भैंस के मच्छर उड़ाने उठाते हैं। खाने को उसे मड़ुआ की सूखी रोटी सरसों के तेल के साथ या कभी खट्टा-सड़ा-बासी दही, बहुत एहसान जताते हुए, दिया जाता है। मलिकाइन गेहूँ तौलने में बेईमानी करती है। छोटे मालिक रेवनी के शील-भंग का असफल प्रयास करते हैं। 'नई पौध' के ६० वर्षीय जमींदार चतुरा चौधरी १३ वर्ष की अधखिली कली विश्वेश्वरी के यौवन का ९००) में सौदा करना चाहते हैं। 'रतिनाथ कीचाची' के जमींदार दुर्गानन्दन सिंह अत्यन्त शोषक और सूदखोर हैं, पर धार्मिक आडम्बरों का जाल फैला कर 'धर्मदिवाकर' की उपाधि पा ही जाते हैं। 'दुखमोचन' के नित्या बाबू को गेहूँ और अन्य बातों में अपना ही स्वार्थ दिखाई देता है। 'बाबा बटेसरनाथ' के जमींदार, शत्रुमर्दनराय पर चीटों से भी भरी हंडी डलवा कर कटवाते हैं। उसी समय महल में भजन-भाव भी होते हैं। 'वरुण के बेटे' के जमींदार, शासन की सहायता ले गरीब मछुओं से उनकी आजीविका का एकमात्र साधन, 'गढ़ पोखर'—से मछली पकड़ना भी छीनना चाहते हैं। 'बलचनमा' में जमींदार खान बहादुर अपने गुण्डों को भेज बलचनमा को पिटवा कर गिरावा देते हैं।

नागार्जुन कथा-साहित्य में वर्णित ये जमींदार प्रपंची, राष्ट्र-विरोधी, शोषक, अन्यायी और अत्याचारी के रूप में चित्रित हुए हैं। बलचनमा का यह कथन न केवल उसका बल्कि समस्त पीड़ित जनता की व्यथा को प्रकट कर रहा है : "हमारा बचपन न जाने कै घड़े आँसुओं से सींचा गया है।" और इस दलित वर्ग के बहते आँसुओं का उत्तरदायी रहा है, उच्च समझा जानेवाला निम्नस्तरीय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आचरणों का कर्ता जमींदार वर्ग। इस वर्ग का जैसा चित्रण लेखक ने किया है, उससे पाठकों को इनसे नफरत हो जाती है।

कथा-साहित्य में वर्णित नेतावर्ग : लेखक ने अपने उपन्यासों में काँग्रेसी नेताओं की अवसरवादिता और राजनैतिक पैंतरेबाजी का भी वास्तविक चित्र उपस्थित किया है। येनेता स्वार्थसिद्धि के लिए झूठे आश्वासन देने के फन में कैसे माहिर हैं, नागार्जुन कथा-साहित्य से जाना जा सकता है। इस नेतावर्ग में 'बाबा बटेसरनाथ' के उग्रमोहन दास, कुलानन्द दास, 'हीरक जयन्ती' के नरपत नारायणसिह, रामसागर राय एम० पी०, घासीरामजी, अन्य उनके छुटभैये और 'कुम्भीपाक' के जानकी बाबू, तथा 'वरुण के बेटे' के काँग्रेसी बाबू, 'बलचनमा' के फूल बाबू, आदि रखे जा सकते हैं।

लेखक ने इनका जो वर्णन किया है, उससे लगता है कि इस वर्ग ने जनसेवा की आड़ में अपने उल्लू ही सीधे किये हैं। चुनावी टिकिट लेने के लिए हाई कमाण्ड के महाप्रभुओं को खुश करना, "चुनाव जीतने के लिए नोट देकर वोट प्राप्त करना" या "जमनिया के मठ जैसे राष्ट्रविरोधी तत्त्वों से भी अपवित्र गठबन्धन करने में नहीं चूकना" किन्तु ऊपर से खद्दर का धवल परिधान धारण किये हुए शुभ्र श्वेत गाँधीवादी बने रहना, यही इनकी देशसेवा है। वस्तुतः ये भेड़ की खाल में भेड़िये ही हैं। फूल बाबू गाँधीजी के आश्रम से आकर कई प्रकार के नखरे करने लगते हैं—उबली सब्जी खाना, चरखा कातना आदि; किन्तु राहत कार्य के लिए आयी धनराशि में से, कम वितरित कर, अधिक पर हस्ताक्षर कराते हैं। 'हीरक जयन्ती' के नरपत बाबू का कहना है कि "जिनके जीवन का दीप हमेशा औरों के लिए जलता रहा है वे यदि निर्लिप्त भाव से सार्वजनिक निधि में से सौ-पचास रुपये लेते चले तो इसमें हर्ज ही क्या है।" अपने मातहतों की रिश्वतखोरी को ये प्रोत्साहन देते हैं। पुलिस अधिकारी इनकी अनुचित दखल के कारण अपने कर्त्तव्य का पालन नहीं कर पाते; क्योंकि इन नेताओं के पुत्र स्वयं ही गाँजे का अवैध व्यापार करते हैं। अवसरवादी राजनीति में इन लोगों की गहरी आस्था है। 'हीरक जयन्ती' के ठाकुर साहब चुनाव के द्वारा अधिकार प्राप्त करने को पसंद नहीं करते। नेतावर्ग की पद-लिप्सा, स्वार्थ-साधन और भ्रष्टाचार सबको नागार्जुन ने अपने सही परिवेश में प्रतिपादित किया है। देश में इनके द्वारा फैलाया गया भाई-भतीजावाद, अपने अयोग्य व्यक्तियों को उच्च पद दे देना, आदि का चित्रण उसने किया है। जन-समस्याओं के प्रति इन नेताओं की यह निष्क्रियता सचमुच ही चिन्तनीय है। ये केवल जनता के वोटों पर सरकार में पहुँच जाने और अपनी तिजोरी भरने में लगे हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'वरुण के वेटे' में काँग्रेसी नेता मजदूरों से काम ले लेते हैं, पर मजदूरी देते समय गायव हो जाते हैं। 'कुम्भीपाक' के काँग्रेसी मंत्री जानकी वावू जनता में साहित्यिक सिद्ध होने के लिए सम्पादक दिवाकर से निवन्ध लिखवाते और अपने नाम से प्रकाशित कराते हैं। 'हीरक जयन्ती' के नरपत वावू क्या नहीं करते। वे भ्रष्टाचारी, चरित्रहीन, पदलिप्सु और ऊपर से जनसेवक बन मीठी मुस्कान विखरने वाले हैं।

इस प्रकार लेखक ने काँग्रेसियों और उनकी थोथी जनसेवा का वास्तविक लेखा-जोखा उपस्थित कर दिया है। लेखक को राजनीति में वड़ी दिलचस्पी रही है। इस क्षेत्र में प्रयुक्त धूर्तों की पेंतरेवाजी लेखक की पैनी आँखों से नहीं वच सकी और जो वर्णन हुए हैं वे सजीव और स्थिति का यथार्थ चित्र उपस्थित करने में समर्थ वने हैं। उसने दिखाया है कि नेतागण किस प्रकार विदेशों में जाकर हाथ फैलाते हैं। वड़े-वड़े नेता भी नियमों में ढिलाई करते हैं और धूर्तों की विनयपत्रिका के शिकार वन जाते हैं। नेताओं के लिए मलेरियाग्रस्त जनता के दुःख मिटाना उतना जरूरी कार्य नहीं जितना अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं में ध्यान देना।

कथा-साहित्य में वर्णित नारीवर्ग : नागार्जुन को नारी-समाज से वहुत अधिक सहानुभुति रही है। उसने हमेशा इस वर्ग को समाज का सक्रिय अंग वनाने का प्रयास किया है। नारी जाति के प्रति इसी आत्मीयता, शिष्टता एवं ममतापूर्ण व्यवहार के कारण नागार्जुन महान लेखकों की पक्ति में आ जाते हैं। नागार्जुन कथा-साहित्य में चित्रित नारी, समाज के द्वारा त्रस्त होते हुए भी, सदैव कर्त्तव्यरत रही है।

रतिनाथ की चाची विधवा गौरी देवी अपने देवर जयनाथ से गर्भवती होती है, पर कर्त्तव्य से विमुख नहीं होती। वह चरखा कातकर अपना, रति और जयनाथ का पेट भरती है। वह साधु-संतों की सेवा भी करती है। अखिल भारतीय सूत प्रतियोगिता में वह प्रथम आती है। वलचनमा की माँ आदर्श, परिश्रमी और साहसी महिला दिखाई गयी है। दुखमोचन की मामी विधवा है, किन्तु वह आदर्श भारतीय माँ का प्यार देती है। वात्सल्य उसमें हिलोरें लेने लगता है। 'नई पौध' के वाचस्पति की माँ भी इसी सन्दर्भ में स्मरणीय है। 'कुम्भीपाक' की नीरू एक ऐसी साहसी युवती है, जो समाज को वदलने की क्षमता रखती है। कुम्भीपाक से भुवन की रक्षा उसने ही की और चम्पा की रक्षा वह करना चाहती है। रूढ़ियों, अँधविश्वासों और मंत्र-तंत्र, टोटकों को ठोकर मारने वाली यह साहसी नवयुवती नागार्जुन की विचारधारा वाली भारतीय नारी की प्रतीक है। चम्पा कुम्भीपाक से स्वयं ही अपना उद्धार करती है और श्रम से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपनी रोटी कमाती है। उग्रतारा धोखे में किये गये विवाह को छोड़ अपने प्रेमी कामेश्वर के साथ चली जाती है। इसी उपन्यास की 'भाभी' बड़े उज्ज्वल चरित्र, दृढ़ निश्चय और रूढ़ि-भंजक विचारों की रमणी दिखाई गयी है।

नागार्जुन की सबसे आदर्श नारी पात्र है—'वरुण के बेटे' की मधुरी। दुखमोचन की माया भी उसके निकट पहुँचती है। पर मधुरी के जोश ने तो हमारा मन ही मोह लिया है। वह समाज-सेवी है, श्रमिक वाला है और है आन्दोलनकारियों का बल बढ़ानेवाली प्रेरणास्वरूपा चिनगारी। ताड़ी पीकर मारनेवाले ससुर और कायर पति को ठुकराकर चली आनेवाली यह तरुणी अपने प्रेमी मंगल की पत्नी की माँग में कालिख नहीं पोतना चाहती। कैसा सात्त्विक आदर्श है! मजिस्ट्रेट को तो वह निरुत्तर कर देती है। कहती है: "जिनगी और जहान औरतों के लिए नहीं होते क्या?" उसका पुलिस वान में खिलखिलाते बैठ जाना, और हाथ घुमाकर 'इन्किलाब-जिन्दाबाद, गढ़ पोखर हमारा है' नारे लगाना उसकी दृढ़ता का परिचायक है।

इस प्रकार लेखक ने नारी का जो वर्णन किया है, उससे स्पष्ट है कि वह नारी को आगे लाना चाहता है, उसे पर्दे की रानी बनाकर नहीं रखना चाहता, बल्कि समाज का एक सक्रिय अंग बनाना उसका ध्येय रहा है। नागार्जुन की नारी आदर्श गृहिणी है, आदर्श माँ है, आदर्श समाजसेविका है। वात्सल्य और क्रांति का अभूतपूर्व मिश्रण ही उसका चरित्र है। स्वेदकणों की लड़ियाँ ही उसका शृंगार-प्रसाधन है। उसे हम पुरुष के कन्धे से कन्धा लगाकर काम करते देखते हैं।

साधु वर्ग : नागार्जुन ने अपने कथा-साहित्य में निष्क्रिय और पाखंडी साधुओं तथा धार्मिक आडम्बरों का वर्णन भी किया है। उससे स्पष्ट है कि देश की भोली जनता को ये साधु लूट रहे हैं। उसकी निरीहता का अनुचित लाभ उठा रहे हैं। 'जमनिया मठ' के साधुओं के माध्यम से इस प्रकार के मठाधीशों का नकाब लेखक ने उलटा है। ये साधु मन्त्र, तन्त्र, टोटके से जनता को गुमराह कर रहे हैं। ये बेंत लगाकर आशीर्वाद देते हैं, स्त्रियों का सतीत्व हरण करते हैं, विदेशी एजेण्टों के रूप में ये यहाँ अवैध कार्य कर रहे हैं। लेखक ने प्रतिपादित किया है कि बलि, आशीर्वाद आदि धार्मिक आडम्बरों को फैलानेवाले धूर्तों की हमें जरूरत नहीं। 'बलचनमा' के लाल वस्त्र पहनने वाले दामो ठाकुर, अनन्त बाबू, 'इमरतिया' के मस्तराम एवं बाबा यही काम करते हैं। वे उन्मादग्रस्त स्त्रियों के भूतप्रेत उतारने की आड़ में उनका शील-भंग कर रहे हैं। इनकी व्यर्थता पर अप्रत्यक्ष संकेत करते हुए लेखक ने 'इमरतिया' उपन्यास में एक आदर्श साधु अभयानन्द को भी प्रस्तुत किया है, जो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राष्ट्र-रक्षक तैयार करने का कार्य करते हैं।

युवा वर्ग : नागार्जुन ने अपने उपन्यासों में जिन नवयुवकों का चित्रण किया है, वे उनकी विचारधारा के माननेवाले और आशावादी तरुण हैं। नवीन समाज की उपज यह वर्ग वस्तुतः प्रगतिशील चेतना और जागरूकता का पुञ्ज ही है। 'बाबा बटेसरनाथ' के वकील श्यामसुन्दर बाबू एडवोकेट, दयानाथ राय, जैकिसुन, 'दुखमोचन' उपन्यास के कपिल, राम सागर, वेणीमाधव, दुखमोचन, 'नई पौध' के दिगम्बर माहे, बूलो, 'कुम्भीपाक' के सदानन्द, 'वरुण के बेटे' का मोहन माँझी, 'उग्रतारा' का कामेश्वर एवं 'बलचनमा' का बलचनमा आदि ऐसे ही पात्र हैं। लेखक ने इनकी क्रांतिकारी चेतना को विकसित कर सही मोड़ दिया है। लेखक उन दकियानूसी बुड्ढों में से नहीं, जो युवकों के इस सहज उत्साह को उच्छृंखलता का नाम देता है। "आज सत्तर-पछहत्तर साल का चीफ मिनिस्टर अठारह-बीस की उम्र के छोकरों पर गोलियाँ चला चुकने के बाद कहता है, "हुल्लड़बाजों को सबक सिखाया गया, ठीक किया।"

नागार्जुन के उपन्यासों में आजादी के बाद का नौजवान दृढ़ आस्था, संघर्ष की ऊर्जा, समाज-सुधार एवं नारी-उद्धार की चेतना लेकर बढ़ता हुआ दीखता है।

कथा-साहित्य में प्रतिफलित नागार्जुन की विचारधारा :

विचारों से नागार्जुन मार्क्सवादी माने जाते रहे हैं, पर नागार्जुन के विचार मार्क्सवाद के समानान्तर और कहीं-कहीं उसे छोड़ कर अग्रसर हुए हैं। मार्क्सवाद का उन पर प्रभाव अवश्य है पर वे शुद्ध रूप से मार्क्सवादी हैं, हम इसे स्वीकार नहीं कर सकते। उनके कथा-साहित्य में निम्न रूपों में उनकी विचारधारा व्यक्त हुई है :

(१) शोषितों का समर्थन और अन्याय का प्रतिकार करने के लिए आह्वान : सामाजिक असमानताओं के विरुद्ध तीव्र आक्रोश नागार्जुन के उपन्यासों में प्रतिध्वनित हुआ है। नागार्जुन ने निम्न मध्यम वर्ग की उन समस्याओं को बड़ी कुशलता से उभारा है जो अभी तक अनुद्घाटित थीं। पीड़ितों और शोषितों के प्रति संवेदनशीलता उनकी विचारधारा का प्रधान अंग है। वे निम्न वर्ग के शोषण से क्षुब्ध हैं। जमींदारों के अत्याचार और अनाचारों का चित्रण करते समय मजदूरों और किसानों के प्रति हार्दिक सहानुभूति उन्होंने व्यक्त की है। कृषकों को कष्टप्रद जीवन से त्राण दिलाने के लिए लेखक ने संघर्ष का नारा दिया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'बलचनमा' में लेखक नायक को स्पष्ट रूप से संघर्ष के लिए आगे बढ़ाता है। बलचनमा नारे लगाता है—"जमीन किसकी—जोते बोए उसकी—इन्किलाब-जिन्दाबाद, मजदूर एकता-जिन्दाबाद।" इन नारों के द्वारा लेखक ने अपना इस वर्ग के प्रति समर्थन, विचारधारा और शोषण से मुक्ति का मार्ग व्यक्त किया है। वह मजदूरों को समाज का सबसे शक्तिशाली अंग बनाना चाहता है। लगता है, लेखक मजदूरों का राज्य ही कायम करना चाहता है।

नागार्जुन का विचार है कि किसानों, मजदूरों, गरीब मछुओं के अलग-अलग संगठन न हों, सारे शोषित, दलित मजदूर किसान एक हैं, उन्हें वह एक ही झंडे के नीचे लाकर शोषण का अन्त कराना चाहता है। जैसे 'वरुण के बेटे' का मोहन मांझी अलग-अलग संगठनों को विशाल किसानसभा में सम्मिलित हो अपने अधिकारों की माँग के लिए संघर्ष करने का आह्वान करता है। इस संगठन को देख लगता है कि नागार्जुन कम्युनिस्ट मेनिफेस्टो की उस बात से प्रभावित लगते हैं जिसमें कहा गया है—दुनिया के मजदूरो, एक हो जाओ।

नागार्जुन ने अभी कृषकों को आजादी की किरणों से वंचित पाया है। इस आजादी के लिए इन्हें पसीना बहाना होगा। लेखक 'बलचनमा' में लिखता है : "किसानों की आजादी जुती हुई धरती के भुरभुरे ढेलों को फोड़कर आएगी।"

लेखक का विचार है कि सामूहिक सम्पत्ति पर अब व्यक्तिगत अधिकार कभी बर्दाश्त नहीं किया जायगा। वे कृषकों को इतना शक्तिशाली बना देना चाहते हैं कि वे शोषक जमींदारों और उनके गुण्डों से हर तरह से निपट लें। उनका बलचनमा फरसा उठा लेता है। जमींदार अहिंसा से नहीं पिघलेंगे, उन्हें तो खूनी क्रांति से ही सीधा किया जा सकेगा। उनके कृषक इसी विचारधारा के कारण कुछ कर डालने की शक्ति लिये हुए दिखाई देते हैं। कथा-साहित्य में कृषक अपने अधिकारों के लिए अहिंसा का नहीं, हिंसा का प्रयोग करते हैं। इस प्रकार खूनी क्रांति के समर्थन में मार्क्सवादी विचारधारा दिखाई देती है। वैसे कहीं-कहीं उसने सत्याग्रह, अनशन, आदि गाँधीवादी सिद्धान्तों से भी दलितों को अधिकार प्राप्ति का मार्ग बताया है। 'वरुण के बेटे' में मोहन माँझी बाढ़-पीड़ितों को मालगाड़ी के डिब्बे में जगह दिलाने के लिए इसी मार्ग का अनुसरण करने की प्रेरणा देता है। यहाँ उन पर गाँधीवाद का प्रभाव देखा जा सकता है। किन्तु लेखक का झुकाव शक्ति के बल पर शोषितों को उनके अधिकार दिलाने की ओर रहा है।

लेखक भविष्य का नक्शा खींचता है : "जिसका हर फार उसकी धरती, जिसका हुनर और जिसका हाथ उसके कल-कारखाने"। ऐसे ही समाज में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रम की महत्ता स्थापित होगी, मुफ्त खाना किसी को नहीं मिलेगा। सब काम करेंगे, सब मेहनत से कमाई की रोटी खाएँगे। कोई पूँजीपति नहीं रहेगा। वर्गविहीन समाज की स्थापना होगी। सारी सम्पत्ति की मालिक सरकार रहेगी, और वही अपाहिजों की जिम्मेदारी उठाएगी। यहाँ रूस की समाज-रचना से प्रभावित विचारधारा देखी जा सकती है।

(२) काँग्रेसी नेताओं का विरोध एवं अपने राजनैतिक दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति : लेखक काँग्रेसी नेताओं से अत्यन्त नाराज है। इसका उसके पास ठोस कारण है—यह वर्ग अपने आदर्शों से गिर गया है। लेखक का विचार है कि यह संस्था अब बुढ़िया हो गयी है। गाँधीजी की शिक्षाओं को उनके चेले भूल गये हैं। स्वतंत्रता के पूर्व इन काँग्रेसियों का कुछ और ही रूप था। नागार्जुन का विचार है : "१५ अगस्त, १९४७ से पहले का वह राजनैतिक मैदान बहुत बदल गया है। दाँव-पेंच बदल गये हैं, बोली बदल गयी है, इशारा बदल गया है, पहले वाला वह लक्ष्य जाने किधर ओझल हो गया ? ऊसर जमीन की मिट्टी घोलकर नमक बनानेवाले हजारों सत्याग्रही पुलिस की लाठियाँ खाते थे, विदेशी माल की खरीद-फरोख्त के खिलाफ दुकानों के समक्ष धरना देते थे, किसानों, मजदूरों और मध्य वर्ग के दीन-दुःखी लोगों को मुसीबतों से छुटकारा पाने का आश्वासन मिलता था···उन दिनों राजनैतिक मैदान बिल्कुल सपाट था···और···आज ? खाइयाँ हैं, टीले हैं, बालू है, दलदल है, दरारें हैं, जहरीली घास है, कँटीले झाड़-झंखाड़ हैं, वह कौन-सी अड़चन है जो इस मैदान के अंदर नहीं है ? हाँ, इतना तो अवश्य है कि 'हर बुरे-भले काम में' महाप्रभुओं का साथ देते रहोगे तो भौतिक लाभ अवश्य होगा।"

नागार्जुन ने अपने उपन्यासों में दिखलाया है कि आज काँग्रेसमजदूरों की नहीं, धनपतियों की समर्थक बन गयी है। वस्तुतः "राजनीति इनकी रखैल है।" जिसका मन चाहा उपयोग ये करते हैं। यही कारण है कि आजादी अभी मजदूरों और किसानों के लिए नहीं आ पायी है। अभी जनता की गाढ़ी कमाई का पैसा मंत्रियों के अभिनन्दन, हीरक जयन्ती, थैली भेंट देना, स्वागत समारोह, आदि में बरबाद हो रहा है। जनता के पैसे से ये मौज कर रहे हैं।

संक्षेप में काँग्रेस का विरोध करते हुए अपने कथा-साहित्य में नागार्जुन ने साम्यवादी विचारधारा का समर्थन किया है। इसका कारण है कि यह गरीब मजदूरों की पार्टी रही है, और लेखक को केवल इसीलिए इससे अनुराग है। स्थान-स्थान पर उसने 'हँसिया-हथौड़ा' चिह्न और लाल झण्डे वाली पार्टी का जिक्र किया है। उनका प्रिय पात्र मोहन माँझी 'वरुण के बेटे' में इसी पार्टी का कार्यकर्त्ता है। इस पार्टी की दृढ़ता का जो परिचय लेखक ने दिया है,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उससे उसकी साम्यवादी विचारधारा का समर्थन स्पष्ट हो रहा है। नागार्जुन ने 'इमरतिया' में कहा है : "लाल झण्डे वाले जिद्दी होते हैं, झण्डा उठा लेंगे तो परेशान कर देंगे, मिल वालों की नाक का पानी निकाल देंगे।" स्पष्ट है कि विचारों से नागार्जुन साम्यवादी हैं और काँग्रेस के कट्टर विरोधी।

विचारों से नागार्जुन साम्यवादी हैं, पर बलचनमा का कृषक आन्दोलन उन्होंने सोशलिस्टों से लड़वाया है। राधे बाबू, शर्माजी, डॉ० रहमान आदि सोशलिस्ट हैं—और इसका भी कारण है कि यह मजदूरों के हितों की संरक्षिका पार्टी रही है। नागार्जुन उसी पार्टी को अपना समर्थन दे सकते हैं जो मजदूरों और किसानों के लिए कुछ करे। जो भी दल इस ओर पहल करेगा लेखक अपने उद्देश्य की सिद्धि उससे होता देख सकेगा। स्पष्ट है कि नागार्जुन मजदूरों और किसानों के लेखक हैं। उनका बलचनमा भी सोशलिस्टों से प्रभावित दिखाया गया है। किन्तु मजदूरों के प्रति ढुलमुल नीति अख्तियार करनेवाले पार्टी कार्यकर्ता भी नागार्जुन के कोप के शिकार हुए हैं। इसीलिए 'बाबा बटेसरनाथ' में जयप्रकाश नारायण को उन्होंने 'ढुलमुलयकीन नेता' कहा है।

इस प्रकार उनके राजनैतिक विचारों में काँग्रेसियों के प्रति आक्रोश एवं असंतोष तथा साम्यवादियों की सक्षमता और निम्न वर्ग को उसके अधिकार दिलाने की तत्परता से संतोष दिखाई देता है।

(३) **नारी-कल्याण विषयक विचारधारा** : नागार्जुन ने अपने उपन्यासों में नारी पात्रों के द्वारा समस्त नारीं समाज को उत्थान और नवीन प्रगतिशील चेतना से स्फुरित करना चाहा है। 'रतिनाथ की चाची' में उन्होंने नारियों के प्रति सहानुभूति जतायी है : "किसी भी युग में स्त्री को अमृत पीने का सुयोग नहीं मिला। पुरुष को अमृत पिला कर वह सदा विषपान ही करती आयी है।" नारी को लेखक ने बड़े सम्मान और साहित्यिक आत्मीयता से देखा है। विधवा नारियों को समाज के भ्रष्ट भेड़ियों की काम-वासना का शिकार होना पड़ता है। ऐसी त्रस्त महिलाओं को जब समाज वापस नहीं लेता तो दुनिया उनके लिए गेंद का मैदान बन जाती है। इसी स्थिति पर लेखक का विचार है : "जिस समाज में हजारों की तादाद में जवान विधवाएँ रहेंगी वहाँ यही सब तो होगा।" (कुम्भीपाक) और इस कुकृत्य का उत्तरदायी वह 'घुटी हुई तबियत के लोगों और आदर्शहीन अधेड़ों' (कुम्भीपाक) को मानता है। स्पष्ट है कि लेखक विधवा को विवाहित देखना चाहता है। साथ ही लेखक इन पीड़ित नारियों को पूर्ण पवित्र मानता है। वह 'उग्रतारा' में नर्मदेश्वर की भाभी से अपने विचार व्यक्त करवाता है : "लुच्चे लफंगे अपना ही मुँह काला करते हैं। हमारा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुम्हारा मुँह तो शीशे से भी ज्यादा साफ रहेगा।" इसमें लेखक की नारी के प्रति पूरी आत्मीयता, विशालहृदयता और प्रगतिशील विचारधारा व्यक्त हो रही है।

नागार्जुन नारी को पुरुष का गुलाम बना हुआ नहीं देखना चाहते, वे उसमें शिक्षा-प्रसार करना चाहते हैं। उनकी उग्रतारा गीता से कहती है : "विद्या तीसरी आँख है।" उनका विचार है नारी पुरुष की सहयोगिनी बने। उसके कन्धे से कन्धा लगाकर काम करे। नागार्जुन के नारी पात्र मधुरी, माया, नर्मदेश्वर की भाभी, चम्पा, बलचनमा की पत्नी सुगनी, सभी ऐसे ही नारी पात्र हैं। उपन्यासकार ने 'कुम्भीपाक' में नारी-समाज की उन्नति और सुधार के विचार इन नारियों के द्वारा दिये हैं। उसका विचार है : "श्रम, प्रज्ञा, सहयोग, विवेक और सुरुचि सबमें पुरुष के साथ स्त्री का भी साझा रहेगा।" नवयुवतियों में इस योग्यता के प्रति लेखक आश्वस्त है। इस नयी फसल के प्रति लेखक का विचार है : "इस जमाने की लड़कियाँ ईर्ष्या और घृणा का सिर्का नहीं तैय्यार करतीं। उनके अन्दर छिछोरापन और थोथी भावुकता नहीं हुआ करती। भूलों की सम्भावना के आतंक से वे मुर्दा होकर पड़ी नहीं रह जातीं, पिछली भूलों के पछतावे में सुलग-सुलग कर राख भी नहीं होतीं।" लेखक का आशावादी दृष्टिकोण यहाँ भी व्यक्त हुआ है। लेखक का विचार है कि "उद्योग-धन्धे बढ़ेंगे, खेती-बाड़ी बढ़ेगी, जहालत और गरीबी मिटेगी, साधारण जनता का जीवन सुखमय होगा तब स्त्रियाँ भी इस दुर्दशा से छुटकारा पाएँगी।" उसके अनुसार, "सहायक धन्धे के तौर पर परिवार की प्रत्येक महिला के लिए कोई न कोई काम मिलना चाहिए।" दुर्भाग्य से "यदि पति की मृत्यु हो जाए तो उसका पुनर्विवाह कराना समाज के चौधरियों का काम है।" इन सबसे स्पष्ट है कि लेखक नारी के प्रति अभी तक चले आते पुरुषों के अत्याचार को रोक कर उसके उचित स्थान पर विवाह का हिमायती है। उसे वह समाज का उपयोगी अंग बनाना चाहता है।

(४) देशभक्ति एवं अंचल-स्नेह से युक्त विचारधारा : नागार्जुन को अपने तिरहुत अंचल से बेहद प्रेम है। उनके आंचलिक उपन्यासों में इसी अंचल-स्नेह की लहरें तरंगित होती देखी जा सकती हैं। अंचल-परिचय की दृष्टि से प्रायः प्रत्येक ब्यौरे को बड़ी भावपूर्ण लेखनी से उन्होंने उभारा है। हिमालय की धवल-धूमिल चोटियाँ, अपने अंचल की प्राकृतिक सुषमा, जिसमें छतनार आम के बाग-बगीचे, फूल-फलादि, हरे-भरे खेत सबके प्रति उनका स्नेह हिलोरें लेने लगता है। अपनी मातृभूमि की प्राकृतिक छटा के प्रति उनके प्रेम की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तीव्रता हमें 'रतिनाथ की चाची' में जयकिशोर के कथनों से स्पष्ट होती लगती है। यहाँ लेखक का हृदय प्राकृतिक वैभव के प्रति पंतजी के समान ही कौतूहलपूर्ण दिखाई देता है।

संक्षेप में इतना ही कहेंगे कि नागार्जुन अपनी मातृभूमि के विनम्र आराधक हैं। देश की रमणीय सुन्दरता पर जहाँ उनका मन-मयूर थिरकता दिखाई देता है वहीं देश के दुश्मनों का सफाया करने में भी वे कोई रियायत नहीं बरतना चाहते। 'उग्रतारा' में वह लिखते हैं : "देश की दौलत को नुकसान पहुँचानेवाला हमारा वैसा ही दुश्मन है, जैसाकि हमारी सीमाओं के अंदर घुसपैठ करनेवाला, हम न उसको छोड़ेंगे, न इसको छोड़ेंगे।"

(५) **समाज-सुधार सम्बन्धी विचार** : नागार्जुन के कथा-साहित्य में समाज-सुधार सम्बन्धी विचारों का बाहुल्य देख यदि हम यह कहें कि उनके कथा-साहित्य की मूल भावना ही समाज-सुधार है तो अनुचित न होगा। समाज में व्याप्त रूढ़ियों, अँधविश्वासों एवं जाति-पाँति के ढकोसलों के विरुद्ध तीव्र प्रतिक्रिया उनके मन में है जो उपन्यासों में व्यक्त हुई है। हमने उनके समाज सुधार सम्बन्धी विचारों को निम्न अंशों में वर्गीकृत किया है :

(अ) **रूढ़ियों, धार्मिक अँधविश्वासों एवं जातिपाँति के भेद-भावों का खण्डन** : नागार्जुन को धार्मिक अँधविश्वासों से बड़ी नफरत है। इनमें फँसकर अबोध भारतीय जनता किस प्रकार अपना अहित कर रही है, इसका यथार्थ चित्रण उन्होंने किया है। 'बलचनमा' में सुखिया का भूत भगाना, 'इमरतिया' में धार्मिक अँधविश्वासों जिनमें जनता का, मस्तराम साधु के हाथ से बेंत की मार खाकर आशीष लेना, शिशु बलि देना; और 'नई पौध, बटेसरनाथ, बलचनमा' में भी बकरों की बलि देने की चर्चा करके लेखक ने उनके प्रति अपना विरोध सूचित किया है। 'इमरतिया' में उन्होंने लिखा है : "बलि आदि से देवी-देवता खुश नहीं होते, ये तो इन साधुओं द्वारा भोली जनता पर अपना आतंक जमाने की चाल मात्र है।" 'बाबा बटेसरनाथ' में भी उन्होंने पण्डितों की कमजोरी का खुलासा इस प्रकार किया है : "मनुष्यों और पशुओं की बलि चाहनेवाले देव-देवियाँ अब पुराणों में बन्द हैं।"

रूढ़ियों, धार्मिक अँधविश्वासों और ईश्वर पर से विश्वास उठने के साथ ही लेखक जाति-पाँति के भेदभावों को एकता के लिए अत्यन्त हानिकारक मानता है। उसके तत्सम्बन्धी विचार हमें उसके अत्याधुनिक होने का प्रमाण देते हैं। हिन्दू जाति के साथ चिपकी अनावश्यक रूढ़ियों को चमगादड़ बताकर उनकी खिल्ली उड़ा उन्हें बेअसर करने का प्रयास लेखक ने किया है। उसने इन सारी मूर्खताओं को 'समाज में ठौर-ठौर इकट्ठा कूड़ा' बतलाया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(ब) युवकों के प्रति आशावादी दृष्टिकोण एवं समाज-सुधार के लिए प्रेरणा : लेखक अपने आशावादी विचारों से नये समाज की स्थापना करना चाहता है। लेखक के अनुसार इस विकसित समाज में श्रम के साथ ही मनोरंजन के पूरे साधन होंगे। आदर्श समाज की मूल शिराओं को चित्रित करते हुए उन्होंने कहा है कि "हर विवाहित पुरुष के लिए पत्नी को साथ रखना अनिवार्य होना चाहिए। काम-काज के साथ ही फैमिली क्वार्टर की भी व्यवस्था होनी चाहिए।" (कुम्भीपाक) व्यभिचार-निवारण की दिशा में बहुत कुछ उत्तरदायित्व नौजवानों का भी है। "इस समस्या का पिस्तौल से मुकाबला नहीं किया जा सकता।" (उग्रतारा) वस्तुतः युवकों को इस दिशा में अपना दृष्टिकोण बदलना होगा। भय और दकियानूसी को छोड़ना होगा; क्योंकि पीड़ित नारियों के उद्धार के समय "डरपोक नौजवानों की छिछली सहानुभूति नारियों के लिए संकट बन जाती है।" (उग्रतारा)

नागार्जुन नवयुवकों को देश की वर्तमान परिस्थिति से सचेत करना चाहते हैं। अन्याय के आगे सिर न झुकाना उनकी विचारधारा का प्रधान तत्त्व रहा है। पीड़ित नारियों के उद्धार-कल्याण के लिए वह युवकों के सहयोग को आवश्यक मानते हैं। लेखक ने उग्रतारा के कामेश्वर को आदर्श नवयुवक के रूप में पेश किया है जिसमें उसने अपनी गर्भवती प्रेमिका को सहर्ष स्वीकार कर लिया है। नागार्जुन युवक वर्ग का रूढ़िभंजक के रूप में उपयोग करना चाहते हैं। वह युवा विद्रोह को सहज स्वाभाविक मान उसे उचित दिशा देना चाहते हैं।

(स) ग्रामीण नवनिर्माण की प्रगतिशील विचारधारा : नागार्जुन ग्रामों का सुधार करना चाहते हैं। उनका विचार है कि ग्रामवासी स्वयं श्रम करें, अपनी ग्रामीण समस्याओं के प्रति सतर्क रहकर उन्हें सुलझाएँ। 'दुखमोचन' उनकी ग्रामीण नव निर्माण की विचारधारा का कीर्तिस्तम्भ है। इस उपन्यास में जिस प्रकार लोगों ने स्वयं श्रमदान कर ग्राम के मकान एवं रास्ते बनाये, आग बुझायी—यही स्वावलम्बन और आत्मनिर्भरता नागार्जुन के आदर्श रहे हैं।

मछली उत्पन्न करनेवाली सुरम्य झीलों से युक्त ग्रामांचलों के पूर्ण विकास का विचार नागार्जुन का है। उनके मोहन मांझी का कहना है : "ये ग्राम वैज्ञानिक ढंग से मछली उत्पादन के आधुनिकतम आदर्श केन्द्र बन जायँ। तब एक सीजन में पचास हजार रुपयों की आमदनी इनमें होगी। तब पक्की ऊँची भिड़ों पर इकतल्ला सेनेटोरियम बनेगा, फिर दूर पास के विश्रामार्थी यहाँ आकर छुट्टियाँ मनाया करेंगे।" इन शब्दों से नागार्जुन की ग्रामों को आधुनिक रूप में देखने की आकांक्षा व्यक्त हो रही है। गाँधीजी भी ग्रामों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की उन्नति के पक्षपाती थे। अभी सेनेटोरियम बड़े-बड़े शहरों में हैं, नागार्जुन उन्हें ग्रामों में लाकर विकास का विकेन्द्रीकरण करना चाहते हैं। गाँधीजी शक्ति का विकेन्द्रीकरण करना चाहते थे। नागार्जुन ग्रामों का शीघ्र ही विद्युतीकरण चाहते हैं। निष्कर्षतः नागार्जुन एक आदर्श ग्राम की स्थापना करना चाहते हैं जिसमें शोषण और भ्रष्टाचार न हो, समता एवं मानवता हो।

नागार्जुन उस समाज में स्त्रियों और पुरुषों में भी समता देखना चाहते हैं। वह ऐसा समाज देखना चाहते हैं "जहाँ पुरुष बल होगा तो स्त्री बुद्धि होगी, स्त्री शक्ति होगी तो पुरुष ज्ञान।" इस आदर्श ससाज में सब श्रम करेंगे, सब ईमानदारी और सम्मान से कमाएँगे और खाएँगे, समाज के हर वर्ग को अपने विकास का पूरा अवसर मिलेगा। इस समाज के आदर्श होंगे—मोहन माँझी, दुखमोचन और बलचनमा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सप्तम अध्याय

नागार्जुन समशील उपन्यासकारों के बीच : महत्त्व और वैशिष्ट्य

हिन्दी की प्रगतिवादी का काव्यधारा के प्रमुख कवि एवं उपन्यासों में निम्नवर्गीय समाज की वेदनाओं के प्रवल उद्घोषक नागार्जुन सफल एवं प्रथम आंचलिक उपन्यासकार हैं। उनके उपन्यासों में अपने प्रिय मिथिला अंचल की हरी-भरी धरती, अठखेलियाँ करती हुई जलधाराएँ, शान्त, नील जलराशि से युक्त ताल-पोखर, छतनार, आम के बाग-बगीचे, जन-जीवन-परिवेश, वोली-बानी आदि का स्पष्ट प्रतिविम्ब मिलता है, जो अपनी भूमि के प्रति लेखक के ममत्व, प्यार और गहरी अनुभूति का परिचायक है।

इसी प्रकार उनके उपन्यासों में समाजवादी यथार्थवादी विचारधारा के माध्यम से निम्नवर्गीय समाज की आत्मीयता से आलोड़ित होता हुआ जीवन्त चित्र है। इस समाज के अत्यन्त दीन-हीन पात्रों को लेखक ने अपने उपन्यासों में नायक वनाकर जिस ढंग से चित्रित किया है, उससे वे पात्र सदा के लिए पाठकों के मानस पटल पर अपनी गहरी छाप अंकित कर देते हैं। आंचलिक उपन्यासों की दृष्टि से और समाजवादी यथार्थवाद के समर्थक-रूप में उन्होंने प्रेमचंद की परम्परा को आगे बढ़ाया है। उनके समशील आंचलिक उपन्यासकारों में हमने प्रेमचंद के 'गोदान' से आरम्भ कर फणीश्वरनाथ रेणु के 'मैला आंचल', रामदरश मिश्र के 'पनी के प्राचीर', उदयशंकर भट्ट का 'सागर, लहरें और मनुष्य', लक्ष्मीनारायण लाल का 'वया का घोंसला और साँप', शिवप्रसाद 'रुद्र' का 'वहती गंगा', अमृतलाल नागर का 'बूँद और समुद्र' तथा रांगेय राघव के 'कव तक पुकारूँ' उपन्यासों को सम्मिलित किया है। इसी प्रकार समाजवादी यथार्थवाद के अन्य समर्थक उपन्यासकारों में हमने यशपाल, रांगेय राघव और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भैरवप्रसाद गुप्त के प्रतिनिधि उपन्यासों का अध्ययन किया है। हमने पाया है कि नागार्जुन प्रेमचन्दोत्तर युग को प्रेमचंद युग से जोड़ने वाली महत्त्वपूर्ण कड़ी हैं। प्रेमचन्द ने 'गोदान' में जिस निरीह भारतीय कृषक की दीन-हीन स्थिति एवं शोषण का चित्रण किया था, नागार्जुन में हमें उसी का विकास दिखाई देता है।

प्रेमचंद की जो सहानुभूति एवं आत्मीयता 'गोदान' में कृषक वर्ग के प्रति दिखाई देती है, उनके बाद वैसी संवेदनशीलता के दर्शन हमें केवल नागार्जुन के 'बलचनमा' में ही होते हैं। 'गोदान' का होरी—दीन-हीन, धर्मभीरु और जमींदारों के कारिन्दों द्वारा सताया गया कृषक है, अभावों और कठिनाइयों से जीवन भर उसे जूझता हुआ ही हम पाते हैं; फिर भी वह परिश्रमी, ईमानदार और साहसी है। दूसरों की सहायता करने की सात्त्विक भारतीयता से उसका चरित्र गठित है। प्रेमचन्द ने भारतीय कृषक को इतनी निकटता से हमारे सामने ला खड़ा किया है कि 'गोदान' पढ़कर उसके बारे में कुछ भी जानना शेष नहीं रह जाता। निम्नवर्गीय समाज का ऐसा चित्रण नागार्जुन के अतिरिक्त किसी उपन्यासकार ने अभी तक नहीं किया है। नागार्जुन के अन्य समशील आंचलिक उपन्यासकारों—रामदरश मिश्र, लक्ष्मीनारायण लाल, रेणु आदि ने भी ग्रामीण कृषक जीवन से अपने कथानक को उठाया है, पर उसकी सहानुभूति कृषकों के प्रति खंडित दिखाई देती है, कृषक की पीड़ाओं को अपनी स्वयं की पीड़ा मानकर ये लोग नहीं लिख पाये हैं, ऐसा प्रेमचंद के बाद किसी ने किया है तो एकमात्र नागार्जुन ने। यों 'मैला आंचल' में भी कृषकों पर अत्याचार का वर्णन आया है, किन्तु रेणु आंचलिकता प्रदर्शन के अतिमोह में उसे पूरी तरह उभार नहीं पाये हैं, अंचलीय वातावरण के प्रकाशन के तीव्र आग्रह में गरीब कृषकों की आवाज दब गयी है, जबकि बलचनमा को निःसंदेह होरी के वंश का ही एक सदस्य माना जा सकता है। जमींदार के अत्याचारों से पिसता हुआ उसका बाप मर गया, और अब बलचनमा जमींदार की भैंस चरा रहा है। रूखी-सूखी मड़ुआ की रोटी खाकर, निरे बचपन से ही, रात-दिन सतत श्रमरत यह बालक पाठकों की सहानुभूति को सहज ही अपनी ओर आकृष्ट कर लेता है। सरलता और ईमानदारी उसके गुण हैं। अपनी गरीबी और अभावों को होरी ईश्वर-प्रदत्त समझता है। हम परिस्थितियों के आगे उसे घुटने टेकते, समझौता करते, हारते और टूटते देखते हैं जबकि बलचनमा भाग्य के भरोसे नहीं बैठा रहता, वह कोई मार्ग निकालने को उत्सुक है, वह परिवर्तन करने एवं परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाने को आतुर दिखाई देता है। वह अब जमींदारों के आगे अपने अधिकारों के लिए चिरौरी करना नहीं, अपने हकों को छीनकर ले लेने के लिए कटिबद्ध है। वह जहाँ खड़ा है उसे सुन्दरतम बनाने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के लिए प्रयत्नशील है। वस्तुतः 'गोवर' में जो गर्मी शोषकों के प्रति है, अपने अधिकारों के प्रति जो जागरूकता हम उसमें पाते हैं उसका विकसित रूप ही 'बलचनमा' में है। धनिया और गोवर की अपने अधिकारों के प्रति सजगता और अन्याय का प्रतिकार करने की दृढ़ता पूर्ण विकसित रूप से 'बलचनमा' में दिखाई देती है।

'गोदान' का कृषक जीवन जमींदारों के तीव्र शोषण के आगे बेबस है, अपनी विवशता से छुटकारे का कोई मार्ग उसके पास नहीं है, किन्तु बलचनमा इन्हीं अभावों से जूझता हुआ इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि "कमाने वाला खाएगा—इसके चलते जो कुछ हो।" बलचनमा में एक ललकार है, प्रतिकार की ज्वाला है तभी तो वह फरसा उठा लेता है! नागार्जुन का बलचनमा 'गोदान' के होरी जैसा टूटता हुआ अपनी आहुति न दे देता है। इस प्रकार नागार्जुन ने गोवर और होरी के अधूरे काम को पूरा किया है। और इसीलिए नागार्जुन समाजवादी यथार्थवाद के प्रबल समर्थक बनकर हमारे सामने आते हैं। प्रेमचंद की सामाजिक चेतना ने नागार्जुन की रचनाओं में समाजवादी चेतना का रूप धारण कर लिया है।

आंचलिक विशेषताओं की दृष्टि से : आंचलिक दृष्टि से हम 'गोदान' को एक आदर्श पीठिका मानते हैं, क्योंकि उससे प्राप्त आंचलिक दृष्टि का ही आगे के उपन्यासों में विकास हुआ और आंचलिकता को उपन्यासों की एक मुख्य विशेषता के रूप में स्वीकार किया गया। आंचलिकता से तात्पर्य किसी अंचल विशेष की प्रकृति, संस्कृति, बोली-बानी, खान-पान, परम्पराएँ, परिवेश, जनता की बदलती हुई राजनैतिक और सामाजिक चेतना, धार्मिक रीति-रिवाज आदि का उपन्यासों में समावेश करना है। 'गोदान' में बेलारी ग्राम एवं होरी के घर आदि के चित्रण से मुंशीजी ने भारतीय ग्रामों एवं किसानों का, उनकी दरिद्रता एवं धर्म-भीरुता का वास्तविक प्रतिबिम्ब उपस्थित कर दिया है। जमींदार के कारिन्दों की मनमानी, ग्राम की समस्याएँ, होरी का मटर के खेत की रखवाली करते हुए फटे कम्बल में ठिठुरना, क्षेत्रीय प्रकृति-चित्रण आदि के द्वारा भारतीय ग्राम-जीवन को समझा जा सकता है। नागार्जुन के आंचलिक उपन्यासों में भी निम्नवर्गीय समाज के माध्यम से मिथिला जनपद की प्रकृति के अलावा स्वतन्त्रता के पूर्व हमारे किसानों और मजदूरों को जमींदारों के किन-किन अत्याचारों का सामना करना पड़ता था, यह सब दिखाया गया है। इससे स्थानीय प्रकृति, संस्कृति, लोकगीत, बोली, सामाजिक एवं धार्मिक परम्पराएँ आदि का पूरा-पूरा ज्ञान हमें हो जाता है, किन्तु आंचलिकता प्रसारण के मोह में लेखक ने कहीं भी औपन्यासिक रोचकता एवं कथा-सूत्रता को भंग नहीं किया, जैसा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रामदरश मिश्र ने 'पानी के प्राचीर' और रेणु ने 'मैला आंचल' में किया। आंचलिक सौंदर्य के प्रस्तुतीकरण से अवश्य ही क्षेत्रीय भूभाग अपनी सम्पूर्ण विशेषताओं के साथ पाठकों के समक्ष आ उपस्थित होता है, जैसाकि 'मैला आंचल' तथा 'पानी के प्राचीर' में क्रमशः मेरीगंज और पांडेपुरवा ग्रामों के द्वारा अंचल की बातों को हमारे सामने पूरी तरह स्पष्ट कर दिया गया है। पर 'मैला 'आंचल' में अंचल-विशेष का विषादयुक्त जीवन न आ पाया; क्योंकि 'मैला आंचल' के उपन्यासकार का सारा कौशल चित्रकारी और कैरिकेचर करने में ही लगा है। आंचलिकता के अति प्रदर्शन से ये उपन्यास लोकनृत्य प्रस्तुत करते हुए चित्रों के एलबम-से बन गये हैं। डॉ० लक्ष्मीकांत सिन्हा ने अपनी पुस्तक 'हिन्दी उपन्यास साहित्य का उद्भव और विकास' में लिखा है : "मैला आंचल के प्रथम खण्ड में हमें कोई व्यवस्थित एवं सन्तुलित शृंखलाबद्ध कथा नहीं मिलती, नीरस अवांछित खण्डचित्रों को पढ़ते-पढ़ते पाठक का मन ऊबने लगता है। उपन्यास आंचलिक है, रुचिकर है, मनसायन सा है, लेकिन इसका कोई एक सुनिश्चित उद्देश्य नहीं है। चित्र खण्ड के रूप में हैं और उपकरणों की इस महाभीड़ में विभिन्नता है लेकिन विशृंखल।" मानवीय जीवन के प्रति आस्था और संवेदना के स्वरों का वहाँ अभाव है। ऐसा आस्थाहीन लेखक समाज को उठाने में क्या मदद कर सकता है। आंचलिक सौंदर्य की प्रशंसा तभी तक की जा सकती है जब तक वह ऊबाऊ न बन जाय। 'पानी के प्राचीर' और 'मैला आंचल' में ठूँस-ठूँस कर आंचलिक ब्यौरों को भरना, जागरूक पाठकों के लिए धैर्य की परीक्षा लेनेवाला निरुद्देश्य और जटिल प्रश्नपत्र बन जाता है।

नागार्जुन ने अपने पात्रों को स्वतंत्र रूप से प्रकृति-प्रांगण में विचरण नहीं करने दिया। जहाँ नागार्जुन के पात्र लेखकीय चेतना से परिचालित होते लगते हैं वहाँ रेणु के पात्र मुक्त रूप से अपने कार्य-कलाप में संलग्न दिखाई पड़ते हैं। यह स्वतन्त्रता कथा में अराजकता का रूप लेती है। इसीलिए नागार्जुन के पात्र स्वतन्त्र नहीं हैं और कथा-केन्द्र से जुड़े हैं। पात्रों के प्रति सहज मानवीय संवेदना एवं आस्था नागार्जुन को रेणु से आगे कर देती है। अंचल चित्रण में रेणु ने अति कर दी है और नागार्जुन संतुलित रहे हैं। वस्तुतः रेणु पूर्णिया जिले के मेरीगंज क्षेत्र पर सर्चलाइट डालते प्रतीत होते हैं, जिससे एक-एक कोना प्रकाशित होता लग रहा है। जब सर्चलाइट अधिक देर स्थिर रहती दिखाई देती है तो पाठक नीरसता अनुभव करने लगता है। दूसरी बात, रेणु का 'मैला आंचल' १९५४ में प्रकाशित हुआ, जबकि इसके पूर्व नागार्जुन के दो आंचलिक उपन्यास—'रतिनाथ की चाची' १९४९ में और 'बलचनमा' १९५२ में—प्रकाशित हो चुके थे और इसलिए हिन्दी में प्रथम आंचलिक उपन्यासकार होने के गौरव के वास्तविक अधिकारी केवल नागार्जुन ही हैं। वे ही इस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परम्परा के जनक हैं। सबसे महत्त्वपूर्ण बात कि प्रेमचंद की जिस स्वस्थ जातीय परम्परा का विकास हम नागार्जुन में देखते हैं उसका ह्रास रेणु में।

नागार्जुन की आंचलिकता संकीर्ण नहीं, व्यापक है। नागार्जुन का उपन्यासकार दृश्यों में ही नहीं उलझा है, अंचल विशेष के जीवन को कथाकेन्द्र बनाया है। नागार्जुन की इस आंचलिकता को अनेक आलोचकों ने सराहा है। 'बलचनमा' में अनेक आंचलिक शब्दों को रखा गया है और जो सौंदर्य 'बलचनमा' की भाषा में है, उसका अभाव 'मैला आंचल', 'पानी के प्राचीर' और 'सागर, लहरें और मनुष्य' में है। इन उपन्यासों के पात्रों की बोली में उस आत्मीयता का अभाव है, जो नागार्जुन के 'बलचनमा' में सहज ही उपलब्ध है। बात की बात में बलचनमा अपने बचपन की घटनाएँ, आसपास की बातें, धान रोपना, जाति-पाँति के रीति-रिवाज, आदि का परिचय देता है। 'वरुण के बेटे' में मछुआरों के जीवन का वास्तविक प्रतिबिम्ब है। पर 'वरुण के बेटों' की अपेक्षा 'सागर, लहरें और मनुष्य' के बारसोवा के मछुए अधिक समृद्ध है, वे श्रमोपरान्त आनन्दमग्न दिखाई देते हैं। इधर हम 'वरुण के बेटे' के मछुओं को अभावों से जूझता पाते हैं। वे सतत संघर्षरत दीखते हैं। इनके सामने जीवन की प्राथमिक आवश्यकताओं को सुलझाने की समस्याएँ हैं। ऐसी यथार्थता 'सागर, लहरें और मनुष्य' में भट्टजी नहीं ला सके हैं। 'वरुण के बेटे' की सजीवता एवं संवेदना का कारण रहा है—ब्यौरों की सूक्ष्म बातों की वर्णनात्मकता, पात्रों का अभावों से जूझना, संघर्षपूर्ण जीवन और सही भाषा। भट्टजी ने केवल "किधर जाताय, काय बोलताय" आदि प्रयोगों से बम्बई के निकट बसे बारसोवा पर बम्बइया प्रभाव का परिचय दिया है, पर 'वरुण के बेटे' पढ़कर मछुआ-जीवन के अभावों के प्रति और उन्हें बेहतर जीवन के प्रयास में उमंग से लगा देख जिस संवेदना एवं उत्साह का संचार पाठकों में होता है, उसका भट्टजी में अभाव है। इस उपन्यास की नायिका रत्ना, शहरी तड़क-भड़क की ओर आकृष्ट हो, बारसोवा को त्याग कर बम्बई चली आती है। अभिनेत्री के समान उसका विकास दिखाकर, यशवन्त का असफल प्रेमी के रूप में चित्रण करके समाज-सेवा की ओर झुका देना अस्वाभाविक एवं कृत्रिम लगता है। दूसरी बात, नागार्जुन 'वरुण के बेटे' में अपने पात्रों से ग्राम का ही विकास करवा रहे हैं। पर गढ़पोखर का उनका अधिकार नहीं छोड़कर वहीं सेनेटोरियम बनवाना चाहते हैं। भट्टजी की नायिका में अपनी क्षेत्रीय स्थितियों से पलायन की भावना है, जबकि नागार्जुन की 'मधुरी' वहीं मर-खप जाने के लिए दृढ़ प्रयत्नशील है। 'सागर, लहरें और मनुष्य' प्रेरणा, लगन और अध्यवसाय की मूर्त कथा अवश्य है, किन्तु भट्टजी द्वारा शहरी कथा के प्रवेश से उपन्यास की आंचलिकता को आघात पहुँचा है, स्पष्ट

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और स्थिर आंचलिक चित्र हिलते-डुलते नजर आते हैं। डॉ० रामखेलावन पाण्डेय का कहना है : "सागर, लहरें और मनुष्य' को आंचलिक मानने का भ्रम होता रहा है, क्योंकि इसमें बारसोवा के मछुवारों के जीवन का व्यापक चित्रण है। यह आंचलिक उपन्यास नहीं, ग्राम सभ्यता के नागर संक्रमण का इतिहास है।" (हिन्दी साहित्य का नया इतिहास)

लक्ष्मीनारायण लाल कृत 'बया का घोंसला और साँप' भी आंचलिक उपन्यास माना गया है। पर इसमें न क्षेत्रीय भाषा का परिचय है, न अन्य आंचलिक विशेषताओं की ठोस अभिव्यक्ति। कृषक-जीवन का परिचय अवश्य है पर इसमें लेखक की दृष्टि उपन्यास की नायिका सुभागी की विवशता एवं दयनीयता पर ही रही है। उसके जीवन में आनेवाले दुर्भाग्यपूर्ण क्षणों को ही लेखक ने दिखाया है। सुभागी ने 'क्या-क्या और कहाँ-कहाँ' ठोकरें खायीं, इस बात ने आंचलिकता को पूरी तरह उभरने नहीं दिया है। यहाँ आंचलिक स्पर्श माना जा सकता है। इसमें नागार्जुन के आंचलिक उपन्यासों-सी विशेषता नहीं है। 'बूँद और समुद्र' में अमृतलाल नागर द्वारा आंचलिक स्पर्श किया गया है। इसमें लखनऊ के जीवन, वहाँ की भाषा, औरतों के टोने-टोटके और स्थान परिचय में आंचलिकता दिखाई देती है। लेकिन जैसा विस्तृत चित्रण नागार्जुन के उपन्यासों में है, जिनसे दरभंगा के आसपास का सारा भूभाग अपनी समस्त प्राकृतिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं धार्मिक विशेषताओं के साथ मुखरित हुआ है, वैसा 'बूँद और समुद्र' में लखनऊ और उसके आसपास का नहीं। नागरजी का लक्ष्य आंचलिकता का विशेष प्रदर्शन करना रहा भी नहीं है। उनका ध्यान यथार्थ चित्रण के परिप्रेक्ष्य में उपन्यास के महत् उद्देश्य 'आस्थाहीन युग में आस्था उत्पन्न करने' की ओर रहा है। 'बूँद और समुद्र' को निःसंदेह एक महान उपन्यास कहा जा सकता है पर शुद्ध आंचलिक उपन्यास नहीं।

शिवप्रसाद 'रुद्र' ने 'बहती गंगा' में १७५० से १९५० तक के काशी के जीवन का चित्रण किया है। इसमें भी अंचलीय सौंदर्य पाया जाता है। सतरह कहानियों के माध्यम से उपन्यास का कलेवर निर्मित किया गया है। नागरिकों की बातचीत में कहीं-कहीं लोकभाषा का प्रयोग बड़ा आकर्षक भी है। परन्तु २०० वर्षों में काशी में होनेवाली घटनाओं और कहीं पात्रों के अदम्य उत्साह, साहस या अमर प्रेम की अभिव्यक्ति पर लेखक का ध्यान अधिक है। काशी की कुछ अंचलीय प्रकृति को चित्रित करते हुए पात्रों के त्याग, बलिदान और उनके वचन-पालन की बलवती भावना को देखकर मन मुग्ध हो जाता है। पात्रों के जीवन के उच्च आदर्शों को देखकर पाठक चमत्कृत अवश्य हो जाता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है, पर उसे कुछ ध्यान एक कहानी को दूसरी से जोड़नेवाले सूत्र को खोजने में भी लगाना पड़ता है। साथ ही क्षेत्र की प्रकृति, खान-पान, रीति-रिवाज, भूभाग आदि का कोई स्पष्ट उल्लेख यहाँ नहीं, यह तो बहती गंगा है जो पाठक के सामने से एकदम बह जाती है, और इसीलिए आंचलिक ब्यौरों के स्पष्ट चित्रण की दृष्टि से यह नागार्जुन के आंचलिक उपन्यासों से पीछे है। इसकी आंचलिकता भी संदिग्ध है। पं० सीताराम चतुर्वेदी ने इसे ऐतिहासिक उपन्यास माना है; क्योंकि इसमें दो सौ वर्षों के काशी जीवन की घटनाएँ वर्णित हैं।

रांगेय राघव ने 'कब तक पुकारूँ' में करनटों के जातीय जीवन को प्रस्तुत किया है। उनके डेरे, अन्य पुरुषों से स्त्री के शारीरिक सम्बन्धों को उनके द्वारा सामान्य समझना, परिवेश, आदि के वर्णन में जातीय जीवन की गंध आती है, परन्तु जातीयता की प्रवृति केवल नृतत्त्वशास्त्रीय अध्ययन और बोध परिणाम है। इसमें उस जाति के प्रति लेखक के घनिष्ट परिचय और ममता से उत्पन्न जीवन और आत्मीयता के दर्शन नहीं होते। रांगेय राघव उस जाति या डेरों के नहीं हैं इसलिए उस आंचलिक प्रेम का उनमें अभाव है जो नागार्जुन के मिथिला में जन्म लेने के कारण उनके कथा-साहित्य का प्रमुख आकर्षण है। फूटे महल आदि के रहस्यात्मक वर्णन ने 'कब तक पुकारूँ' में तिलस्मी उपन्यास का रूप ग्रहण कर लिया है।

रेणु में अति आंचलिकता के अतिरिक्त कुछ नहीं है। इसका विकास और प्रसार वहाँ सीमातीत है। "कथा कहना रेणु का लक्ष्य ही प्रतीत नहीं होता, वे तो आंचलिक वर्णन को ही लक्ष्य मानकर चले हैं।"[१] दूसरी ओर लक्ष्मीनारायण लाल, भट्ट, रुद्र, नागर, रांगेय राघव आदि हैं जिनमें अचलीय वातावरण की सृष्टि अवश्य हुई है, पर अपने सीमित रूप में। रेणु और मिश्र द्वारा प्रयुक्त अति आंचलिकता से पाठक पीड़ित हो जाता है। भट्टजी अपनी आंचलिकता का रूप अन्त तक स्थिर नहीं रख पाये हैं। इन सबके बीच नागार्जुन आंचलिक उपन्यासों के आदर्श आधारस्तम्भ बनकर हमारे सामने आये हैं। मिथिला के जीवन को पूर्णरूपेण व्यक्त करने का प्रयास उनका रहा है। "यहाँ के खान-पान, रीति-रिवाज, बोल-चाल, सभी में काफी गहरा स्थानीय रंग है। नागार्जुन को इस जीवन का अंतरंग और व्यापक अनुभव है, इसलिए उनके चित्र पाठकों का मर्म निरन्तर छूते हैं।"[२] उनके 'रतिनाथ की चाची'

१. डॉ० प्रेम भटनागर : हिन्दी उपन्यास-शिल्प : बदलते परिप्रेक्ष्य, पृ० १६२।
२. डॉ० प्रकाशचन्द्र गुप्त : आज का हिन्दी साहित्य, पृ० ९८।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बलचनमा, बाबा बटेसरनाथ, वरुण के बेटे, दुखमोचन, नई पौध' शुद्ध आंचलिक उपन्यास हैं जिनमें बिहार के दरभंगा जिले के आसपास की प्रकृति, संस्कृति और जीवन प्रस्फुटित हुआ है। पात्रों की बातचीत, खान-पान, रहन-सहन, धार्मिक मान्यताएँ, जाति-पाँति के ढकोसले, रमणीय प्रकृति, ताल-पोखर, बाग-बगीचे, फसलें सभी कुछ नागार्जुन के उपन्यासों में वर्णित हैं। वस्तुतः उनका कथा-साहित्य एक प्रकाश-स्तम्भ है जो आंचलिक उपन्यास लिखनेवालों के लिए मार्गदर्शक बन सकता है। आंचलिक चित्रण का आवेग उनमें रेणु और मिश्र के समान असंतुलित नहीं है। उच्चवर्गीय शोषण और निम्नवर्गीय समाज की घुटन, बेबसी और कसक के मार्मिक चित्र नागार्जुन के कथा-साहित्य, में मिलते हैं। ग्रामीण समाज के शोषण का जिक्र करते हुए उन्हें लेखक ने बराबर अपनी दयनीय स्थिति से उठ खड़े होने के लिए प्रेरित किया है और क्रान्ति के लिए आह्वान किया है। 'रतिनाथ की चाची, बलचनमा, वरुण के बेटे, बाबा बटेसरनाथ' सबमें किसान आन्दोलन करते हैं, अपनी बेबसी से उठ खड़े होने के लिए बेताब हैं। वे संघर्ष का नारा देते हैं—'जमींदारी प्रथा का नाश हो'। ऐसी प्रेरणा या निम्नवर्गीय समाज का ऐसा सच्चा चित्रण उनके अन्य समशील आंचलिक उपन्यासकारों ने नहीं किया है। रेणु और मिश्र ने भी निम्नवर्गीय समाज से ही अपने कथानक को उठाया है। 'पानी के प्राचीर' में पांडेपुरवा ग्राम के जालिम मुखिया कुबेर पांडे की हीन हरकतों, जमींदार गजेन्द्र सिंह के कारिन्दों द्वारा किसानों को वसूली के समय दिया गया शारीरिक दण्ड, आदि का जिक्र है। मिश्रजी का सत्पात्र 'संध्या' के प्रेम में असफल प्रेमी नीरू भी वहाँ नौकरी करके किसानों पर वैसे ही जुल्म ढाता है, किसान पिसते ही रहते हैं, शोषकों का शोषण जारी ही रहता है। निम्नवर्गीय पीड़ाओं के इतने चित्रण के बाद भी मिश्रजी किसानों के लिए नागार्जुन-सी सहानुभूति नहीं दिखा सके। उनके किसानों ने उत्कृष्ट जीवन के लिए कोई प्रयत्न नहीं किया। समाजवादी यथार्थ-वादी न होते हुए भी रामदरश मिश्र मानवीय सहानुभूति दिखा सकते थे, पर वे आंचलिक ब्यौरों को जुटाने में ही लगे रहे। इसीलिए नागार्जुन का महत्त्व अधिक है कि उन्होंने आंचलिकता के साथ ही कृषक वर्ग में करवट लेती हुई जागरूकता और उनकी सजग चेतना का परिचय दिया है। वस्तुतः इस वर्ग के प्रति जो संवेदनशीलता और व्यापक जनहित की भावना हम नागार्जुन में पाते हैं उसका रेणु और मिश्र में सर्वथा अभाव है। 'पानी के प्राचीर' और 'मैला आंचल' एक ही स्तर की कृतियाँ हैं। 'मैला आंचल' को पढ़कर मेरीगंज के निवासियों के झगड़े, ग्रामीण गुटबन्दी, ग्रामों में पलते हुए अवैध सम्बन्ध, राजनीतिक बातें, मठाचार्यों की पोगा-पंथी, जनता का अँधविश्वास, 'इन्किलाब-जिन्दाबाद' के स्थान पर ग्रामीण उच्चारण 'इनकिलास जिन्दाबाघ' और उसका

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अर्थ, वहाँ की जनता की अकर्मण्यता, डॉ० प्रशान्त का मलेरिया रिसर्च और अपनी प्रेयसी की सर्च आदि सबके द्वारा पूर्णिया जिले के जन-जीवन को पूरा-पूरा ज्यों-का-त्यों चित्रित करने का प्रयास रेणु का रहा है। पर जन-जीवन के प्रति नागार्जुनीय सहृदयता का यहाँ अभाव है। रेणु ने जो भी देखा है उसे पूरी तरह ज्यों-का-त्यों प्रस्तुत कर दिया है। इसीलिए डॉ० लक्ष्मीकान्त सिन्हा ने लिखा है : "पंत की 'ग्रामवासिनी भारतमाता' वाली कविता से रेणु को शीर्षक बुद्धि मिली पर हृदय न मिल पाया, पूरे उपन्यास के कोलाहल के हो जाने के बाद ऐसा लगता है जैसे रेणु को पूर्णिया गाँव में मैथुन ही सबसे प्रधान आकर्षण मिला।" इस प्रकार नागार्जुन एक ओर आंचलिक उपन्यासकार के रूप में अपना अलग ही महत्त्वपूर्ण स्थान निर्धारित कर चुके हैं, वहीं समाज के निम्न वर्ग के प्रति अपनी अटूट संवेदनीयता से युक्त वास्तविक चित्र उपस्थित करते हुए उन्होंने मजदूरों और किसानों को संगठित होने का आह्वान भी किया है। संघर्ष में ही उनकी मुक्ति खोज कर अहिंसा के सिद्धान्तों—"पिटते-पिटते बेदम हो जाने" (बलचनमा)—का विरोध किया है। इन किसानों के फटे वसन, दाने-दाने को उनका मोहताज होना, बलचनमा द्वारा मालिक का वजनी सूटकेस और बेडिंग पाँच मील दूर स्टेशन तक उस कच्ची उम्र में उठाकर ले जाना, पसीने से लथपथ हो जाना और बदले में दो पैसे पाना; 'वरुण के बेटे' में मछुओं का ठिठुरना और श्रम करना, और कुछ न मिलने के कारण भुनी हुई मछलियाँ ही खा जाना, आदि ऐसे दृश्य हैं जो सजीव बन पड़े हैं और इस समाज का यथार्थ एवं अनुभवजन्य प्रतिबिम्ब उपस्थित करने में सक्षम हैं।

समाजवादी यथार्थवादी दृष्टि से : मजदूरों के संघर्ष का चित्रण, यशपाल के दादा कामरेड' और रांगेय राघव के 'सीधा सादा रास्ता' में भी किया गया है. किन्तु यशपाल एक तो फ्रायडीय चिन्तन से ग्रस्त हो जाने के कारण राजनीति और रोमांस को मिलाकर ले चले हैं और फिर संघर्ष में इनके मजदूर नेता हारे हैं, यह उस वर्ग के प्रति लेखक की आस्थाहीनता का संकेत देता है। यशपाल शायद यह समझते हैं कि मजदूरों के संघर्ष की चरम सीमा मात्र हड़ताल कराने में है, और उसे भी उन्होंने असफल होते दिखाया है। इन हड़ताली नेताओं पर डकैती का आरोप लगवाकर उन्हें फाँसी दिलवायी है। डकैती के दिन हरीश आदि को पुलिस ने सभा में भाषण देते देखा था। उस संदेह का लाभ देते हुए उन्हें फाँसी के फंदे से बचाया जा सकता था। 'दादा कामरेड' से स्वयं इस सम्बन्ध में कुछ करवाया जा सकता था। पर यशपाल तो हरीश के द्वारा कोर्ट में दिलाये गये बयानों के माध्यम से अपने स्वयं के तत्सम्बन्धी विचार-प्रकाशन में व्यस्त थे, और इस स्थान पर अवश्य ही साम्यवादी विचार व्यक्त हुए हैं। हरीश की तार्किकता अवश्य ही प्रशंसनीय है। वह कहता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है : "हमारा विश्वास है कि प्रत्येक मनुष्य को अपने परिश्रम के फल पर पूरा अधिकार होना चाहिए। एक मनुष्य दूसरे मनुष्य से, एक श्रेणी दूसरी श्रेणी से, एक देश दूसरे देश से, उसके परिश्रम का फल छीन लेना अनुचित है, अन्याय है, अपराध है, यह समाज में होने वाली भयंकर हिंसा और डकैती है। इस हिंसा और शोषण को समाप्त करना ही हमारे जीवन का उद्देश्य रहा है, उसी के लिए हमने प्रयत्न किया है।" (दादा कामरेड) वैसे, यह मजदूर-आन्दोलन नेताओं में आकर सिमट गया। नेताओं ने तर्क द्वारा ही समाजवादी यथार्थवाद का समर्थन किया। नागार्जुन के पात्रों के समान वे भोगा हुआ दर्द उपस्थित नहीं कर सके हैं। फिर यशपाल के इन नेताओं की कमजोरी है—नारी। उनकी इस कमजोरी को डॉ० मख्खनलाल शर्मा ने इस प्रकार प्रकट किया है : "उनका कोई भी क्रांतिकारी पात्र ऐसा नहीं है, जिसे किसी नारी की आवश्यकता न हो और नारी की यह आवश्यकता शुद्ध शारीरिक है।" उनका हरीश, शैल की ओर आकर्षित हो जाता है, शैल भी उसे चाहती है, क्योंकि वह क्रान्तिकारी है, नैनसी भी उसे चाहती है। क्या क्रान्तिकारियों की ओर नवयुवतियों का आकर्षित हो जाना आवश्यक है ? आकर्षित होते हुए भी उनके पात्र संघर्षरत नहीं रहते हैं। उनका हरीश शैल को एकदम विना वस्त्र के देखने की अभिलाषा व्यक्त करता है। शैल भी उसकी यह इच्छा पूरी करती है। यह सब क्या है ? रावर्ट और हरीश दोनों शैल के चहेते हैं। शैल बड़ी स्वच्छन्द विचारों की नारी है जो विवाह को बुर्जुआ ढंग मानती है। रावर्ट से शादी का इरादा करते हुए भी कुमारी शैल कुरूप हरीश से ही गर्भ धारण करती है। मार्क्सवाद में नारी के नारीत्व का यह यशपालीय सदुपयोग कहीं देखने में नहीं आया। इस फ्रायडीय आवेग ने यशपाल की मार्क्सवादी विचारधारा, समाजवादी यथार्थवाद को फीका और दूषित कर दिया है।

नागार्जुन के उपन्यासों में भी सामान्य से बढ़कर अश्लीलता का प्रयोग है, पर वह यशपाल की नारी-विषयक अश्लीलता और नग्न स्वच्छन्दता से भिन्न है। उनका कोई पात्र यशपाल के हरीश के समान अपनी प्रेयसी को नग्न नहीं देखना चाहता। नागार्जुन की गालियाँ आक्रोशजन्य हैं तो यशपाल की वासना से उत्पन्न। इसलिए हम कह सकते हैं कि नारी के प्रति नागार्जुन का दृष्टिकोण प्रायः संयत, स्वस्थ, शिष्ट और मर्यादित है। जबकि यशपाल नारी को मात्र भोग की अनिवार्य वस्तु मानते हैं। नागार्जुन की नारी समाज के उत्थान के लिए प्रयत्नशील हैं। उनके 'उग्रतारा' की उगनी, कामेश्वर की भाभी, 'कुम्मीपाक' की चम्पा और भुवन, 'वरुण के बेटे' की मधुरी, 'दुखमोचन' की माया, आदि रूढ़ियों को तोड़नेवाली और नयी आशा की किरण बनकर उपस्थित हुई हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यशपाल की नारी पुरुष को अपने आदर्श से गिराने वाली दिखाई देती है। उसमें स्वस्थ दृष्टिकोण का अभाव है। यशोदा देवी के द्वारा अपने पति से हरीश के आने आदि की घटनाएँ व्यर्थ ही छिपाने में यशपाल का कोई ठोस कारण नहीं दिखाई देता। शैल के जिस व्यवहार को यशपाल प्रगतिशीलता मानते हैं, वस्तुतः वह नारी की पतनशीलता है। कुल मिलाकर मनुष्य की दमित काम भावना, कुंठा और उनका परिणाम दिखाकर विकृत मानसिक स्थितियों के पात्रों द्वारा मजदूर आंदोलन चलाकर यशपाल ने समाजवादी यथार्थवाद को प्रस्तुत करना चाहा है। पर उनकी यह सहानुभूति मात्र बौद्धिक, आकाशीय और कुंठाग्रस्त होकर हमारे सामने आयी है। मार्क्स और फ्रायड का सम्मिलित प्रभाव यशपाल को अपनी-अपनी ओर खींच रहा है, ऐसा लगता है, और इसमें जीत फ्रायड की होती है। इसके समक्ष हमें नागार्जुन के उपन्यासों में निम्न वर्ग के प्रति सहानुभूति स्थिर और ठोस दिखाई देती है। उनका नारी-विषयक दृष्टिकोण कहीं भी उथला-छिछला नहीं।

नागार्जुन की नारी पुरुष की प्रेरणा बन उसे अपने आदर्शों के पथ पर अग्रसर करानेवाली है, मात्र भोग की वस्तु नहीं। उनके मधुरी, माया आदि ऐसे ही नारी पात्र हैं। इन श्रम-रत नारी पात्रों की दृष्टि से, नारी के प्रति संयमित शिष्टता रखने की दृष्टि से, अपने समशील उपन्यासकारों में नागार्जुन का स्थान महत्त्वपूर्ण है। नागार्जुन की मजदूरों-किसानों के प्रति आत्मिक सहानुभूति बड़ी आशावादी है। यशपाल ने बुरी तरह मजदूर-आंदोलन का अन्त कर दिया। जबकि नागार्जुन के निम्नवर्गीय मजदूर निम्न से उच्च जीवन की ओर क्रमशः बढ़ते दिखाये गये हैं। मजदूर नेता भी मजदूरों में से ही निकले हुए हैं। जैसे बलचनमा वालिन्टियर बन गया। 'वरुण के बेटे' का मोहन माँझी, आदि इसी कोटि के हैं। पर यशपाल के नेतागण मजदूरों पर ऊपर से थोपे गये हैं। वे कारों में घूमते हैं, मंसूरी में रंगरेलियाँ करते हैं, कॉफी की चुस्कियाँ लेते हैं। इधर नागार्जुन के नेता शुद्ध मजदूर-वर्ग के हैं जो संघर्ष के लिए नारा देते हैं—'मजदूर एकता–जिन्दाबाद'। नागार्जुन के पात्र दाने-दाने को मोहताज हैं। उनकी अपनी निम्न स्थिति से उठ खड़े होने की भावना निश्चय ही अधिक स्वाभाविक और उचित है, जबकि यशपाल की मात्र बौद्धिक एवं फ्रायडीय प्रभाव से विकृत सहानुभूति से सबल है। मजदूर के घर की दयनीय स्थिति का चित्रण यशपाल ने भी किया है, किन्तु केरी की गुठली का गूदा चूर-चूर कर बलचनमा की माँ और दादी का खाना जिस यथार्थता का परिचय देता है, 'वरुण के बेटे' में घर में एक छींटा तेल न होने पर मछली का यों ही बघार देना निम्न वर्ग के जिस अभाव का परिचायक है, वह अभाव यशपाल के अख्तर के घर में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नहीं। यह सच है कि नागार्जुन के समाजवादी यथार्थवाद के पोषक पात्र खुलकर हमारे सामने नहीं आये हैं, उनका चरित्र हमें अपने अन्दर अनूठी अव्यक्त सम्भावनाएँ सहेजे हुए दिखाई देता है। 'बलचनमा, वरुण के बेटे, बाबा बटेसरनाथ' सभी उपन्यासों के अन्त ने पाठकों के चिन्तन को उद्बुद्ध किया है। इस सम्बन्ध में हम आगे अपना दृष्टिकोण रखेंगे, किन्तु यह निश्चित है कि यशपाल और नागार्जुन की मजदूर और शोषक वर्ग के प्रति व्यक्त सहानुभूति में नागार्जुन ही अधिक संवेदनशील हैं। इस वर्ग के प्रति यशपाल का समर्थन हमें बौद्धिक और तार्किक अवश्य लगा, पर हृदय के जो भाव नागार्जुन में छलके पड़ते हैं उनका अभाव यशपाल में है और इसीलिए हम नागार्जुन को यशपाल से आगे का उपन्यासकार मानते हैं।

रांगेय राघव लिखित 'सीधा सादा रास्ता' में भी मार्क्सवादी विचारों का प्रसारण हुआ है। प्रस्तुत उपन्यास भगवतीचरण वर्मा के 'टेढ़े-मेढ़े रास्ते' के जवाब में लिखा गया है। आरम्भ में डॉ० रामविलास शर्मा ने 'टेढ़े-मेढ़े रास्ते' को निकृष्टतम उपन्यास सिद्ध करते हुए लम्बी भूमिका लिखी है।

'सीधे सादे रास्ते' में अँग्रेजों के समय जमींदारों और छोटे राजाओं, नवाबों के अभिमान, झूठी शान, अकड़ तथा फिजूलखर्ची का रोचक वर्णन किया गया है। भाषा-सम्बन्धी आकर्षण ने उपन्यास में सर्वत्र अपना माधुर्य बिखेर रखा है।

इस उपन्यास में 'ब्रह्मदत्त' के माध्यम से अपने मार्क्सवादी विचारों का प्रकाशन लेखक ने किया है। उसका कहना है कि "जन समाज का, मजदूरों का कल्याण ही हमारा कल्याण है, क्योंकि वही मनुष्यता की विजय है।" वह पूंजीपति काँग्रेसियों से सीधा तर्क करता है कि "अहिंसा में आत्मा के बल की बात कही है, आत्मा का बल वहाँ है जहाँ मनुष्य-मनुष्य को बराबर समझे। पाशविकता वह है जो किसी को मिलता हो वह उसे नहीं दिया जाय।" ब्रह्मदत्त का विचार है कि "अहिंसा की बात करके गरीब से कहा जाता है कि तू कुछ न माँग, क्योंकि पूंजीपति का हृदय दुखेगा, फिर आप अँग्रेजों से स्वतंत्रता क्यों माँगते हैं? उनका दिल नहीं दुखेगा? मजदूरों की माँग को आप भौतिकवादी कहते हैं, आपकी माँग को अँग्रेज भौतिकवादी कहेंगे। आध्यात्मिक माँग तो विक्टोरिया ने धार्मिक स्वतंत्रता देकर पूरी कर दी जिसके कारण हिन्दू-मुस्लिम दंगे हो रहे हैं। काँग्रेसी चरित्र की बात करते हैं—एक गरीब मजदूर, जो खाने को मोहताज है, चरित्रहीन होगा या एक पैसे वाला सेठ?"

पूंजीपति के प्रति गाँधीजी की अहिंसा का प्रयोग करने के लिए उसने खुला चैलेंज दिया और कहा कि "आपने पूंजीपति से कभी अहिंसा द्वारा हृदय परिवर्तन करवाया है? उससे नहीं कहा कि तू धन का ट्रस्टी बन जा?" लेखक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ने ब्रह्मदत्त के द्वारा मजदूरों के शोषण के विरुद्ध काफी आग उगलवायी है। उसके विचारानुसार यदि मजदूरों को हिंसा-अहिंसा की बातों में भरमा कर देश से अँग्रेजों को भगाया तो देश में पूँजीपति शोषकों के रूप में दूसरे अँग्रेज पैदा हो जाएँगे। इसलिए आज देश की मूल आवश्यकता है—सम्पत्ति पर से व्यक्तिगत अधिकारों की समाप्ति। इस रूप में वह वर्ग-विहीन समाज की स्थापना की बात करता है। उपन्यास के इन अंशों में, बड़े तार्किक और बौद्धिक ढंग से, रांगेय राघव ने मजदूरों की माँगों को अहिंसा के ही प्रकाश में अहिंसा के ही पुजारी बननेवाले काँग्रेसियों के समक्ष रख कर उन्हें निरुत्तर किया है। इस प्रकरण में गाँधीवादी अहिंसा के खोखलेपन की तस्वीर सामने लाते हुए काँग्रेसियों को दोटूक उत्तर दिये गये हैं। उनके सिद्धांतों से उन्हें ही परास्त करके राघवजी ने सचमुच 'मियाँ की जूती मियाँ के सिर' पर रख दी है। मजदूरों की रोटी-कपड़े की माँग को प्राथमिकता देने के औचित्य को सिद्ध करने में लेखक सफल रहा है। विचारों की अभिव्यक्ति के ये उत्तेजक अंश पढ़ राघवजी की प्रतिभा से बुद्धिजीवी पाठकों का मन पुलकित हुए बिना नहीं रहेगा।

आगे के परिच्छेदों में लेखक ने जमींदार द्वारा कृषकों की भूमि अपहरण की समस्या में किसानों को संगठित हो संघर्षरत दिखाया है। किन्तु शहर का मजदूर-संघर्ष और ग्राम का किसान-संघर्ष लाठी-गोली के बल पर कुचल दिया गया। बड़ी बेरहमी से लेखक ने शोषित कृषकों के आन्दोलन का अन्त करवाया। शायद इसका यह कारण रहा हो कि लेखक को भी उनकी माँगों की इस थोथी सैद्धांतिकता की अर्थहीनता का बोध हो गया हो। हमें रांगेय राघव की यह विचारधारा विध्वंसात्मक दिखाई देती है। हम मानते हैं कि मजदूर भूखा है और उससे अहिंसा की बात कहकर स्वतंत्रता-संग्राम कैसे लड़वाया जा सकता है? पर आजादी की लड़ाई जैसे गंभीर प्रश्न को क्या मात्र तर्क-वितर्क में उलझा दिया जाय? इसी सन्दर्भ में लेखक काँग्रेसियों द्वारा अहिंसात्मक आन्दोलन से प्राप्त सफलताओं को नजरअंदाज कर गया है। स्वतंत्रता संग्राम में जिसे अहिंसात्मक ढंग से चलाकर क्रमशः सफलता प्राप्त की जा रही थी, बिना तर्क-कुतर्क के उसमें सम्मिलित होना ही उचित था। लेखक भी शायद इससे मन ही मन सहमत है तभी अपने स्वयं के द्वारा प्रस्तावित विचारों को संघर्ष में मजदूरों की हार दिखाकर ज्यों-का-त्यों रहने दिया अन्यथा वह मजदूरों की जीत दिखलाता। जो भी हो, हमें इन सारे वाद-विवादों में समाज-विध्वंस की चिनगारी या 'खेलेंगे नहीं तो खेल बिगाड़ेंगे' वाला बालहठ अधिक दिखाई देता है। इसकी अपेक्षा नागार्जुन की सृजनात्मक क्रांतिशिखा बलवती होती लगती है। 'रतिनाथ की चाची, बाबा बटेसरनाथ,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वलचनमा, वरुण के वेटे' में कहीं भी किसान शिथिल नहीं हुए, उनका उत्साह भंग नहीं हुआ। वे संघर्ष के लिए, वेहतर जीवन के लिए, प्रयास करते रहे और जीते। 'वावा वटेसरनाथ' में ध्वजा पर "स्वाधीनता, शान्ति और प्रगति" का लिखा होना जिस सफलता और आशावाद की भावना का द्योतक है उसी में नवनिर्माण के अकुर छिपे हैं। रांगेय राघव में केवल प्रतिगामी उत्साह है। इस उत्साह से नये समाज की वनती और वदलती तस्वीर में रंग भरने का कोई प्रयास उन्होंने नहीं किया जिसे हम नागार्जुन में पाते हैं। रांगेय राघव में गिरती हुई इमारतों का गर्जन है तो नागार्जुन में गिरी हुई ईंटों से नये भवन का शिलान्यास होते हम देखते हैं।

'सती मैय्या के चौरे' में भी सामन्तवाद और पूँजीवाद के विरोध में भैरवप्रसाद गुप्त ने विचार व्यक्त किये हैं, विशेषकर तीसरे अध्याय में मन्ने के चिन्तन और मुन्नी के लम्बे-लम्बे कथोपकथनों में उनका समावेश किया गया है। मन्ने को वोध होता है कि हमारे देश में भी कम्युनिज्म आ जाय तो कितना अच्छा हो। आज अलग-अलग व्यक्ति उद्योग-धन्धों पर व्यक्तिगत रूप से कब्जा कर वैठे हैं, इन पर राष्ट्र का अधिकार होना चाहिए। इस तरह से पूँजीपतियों द्वारा मजदूरों का शोषण समाप्त कर दिया जाय। समाज में गरीव-अमीर का सवाल क्यों पैदा हो? समाज में व्यक्ति की मान-मर्यादा की माप पैसा ही क्यों हो? इन विचारों के द्वारा लेखक ने मन्ने के विचार परिवर्तित कराये हैं। लेखक ने मार्क्सवादी विचारों के अनुसार वर्गचेतना, वर्गसंघर्ष और धर्मविहीनता को लाकर मजदूर-एकता पर वल दिया है। किन्तु उपन्यास में आगे लेखक ग्राम की समस्याओं में उलझ गया है। ग्राम-पचायत में 'चुनाव की वैधता' को चुनौती देने का प्रयास ग्राम का विक्षुब्ध वर्ग करता है। वह मन्ने मुन्नी द्वारा संचालित ग्राम विद्यालय में अड़ंगे डालता है। सत्ती मैय्या के चौरे की घटना उठाकर तथा हिन्दुओं की धार्मिक भावनाओं को भड़का कर विरोध करवाता है। मन्ने मुन्नी की सहायता से सबका मुकावला करता है पर समरनाथ, कैलाश आदि के द्वारा अचानक आक्रमण से वह वेहोश होकर गिर पड़ता है। जव उसे होश आता है तव वह यही कहता है कि 'मैं मरूँगा नहीं"। यह कथन लेखक की महान आस्था का द्योतक है।

उपन्यास में समाजवादी यथार्थवाद के समर्थक ये विचार विभिन्न समस्याओं के साथ सीधे रख दिये गये हैं। कभी पाठक साम्प्रदायिकता की समस्या देखता है, कभी ग्राम-विकास की और कभी कम्युनिज्म की। किसी मजदूर के जीवन की घटनाओं से यदि इन विचारों का वोध पाठकों को होता तो उसका प्रभाव स्थायी पड़ता। साहित्य में सत्य हमेशा लिपटा हुआ आना चाहिए, और उपन्यास के विस्तृत कलेवर में जहाँ अधिक महत्त्व हिन्दू-मुस्लिम संघर्ष की समस्या में,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पीढ़ियों से उनके आपसी सहयोग और एकता की घटनाओं के वर्णन में, ग्रामीण गुटबन्दी और असन्तुष्ट दलों के विरोध क्रम में दिखाया गया है वहाँ ये मार्क्सवादी विचार अपना विशेष प्रभाव दिखाने में असमर्थ रहे हैं। मन्ने मियाँ जो बचपन से बड़े सात्त्विक और भीरु स्वभाव के बालक दिखाये गये हैं, आगे कहीं अपनी साली से इश्क फरमाते हैं, कहीं बसमतिया को गर्भवती कर देते हैं। मन्ने की पत्नी से मित्र मुन्नी सामान्य से कहीं अधिक लगाव रखता दिखाया गया है। खुद महशर इसे पसन्द करती है, और ऐसे पात्रों द्वारा, जिनमें मन्ने करघे का काम आरम्भ कर पच्चीस हजार रुपया इकट्ठा कर चुका है, समाजवादी यथार्थवाद जैसे उच्च सिद्धान्तों की बातें करना, मजदूर वर्ग की पीड़ाओं का जिक्र करना—लेखक का आरोपित लगने से—प्रभावशून्य हो गया है। पता नहीं, मार्क्सवादी विचारधारा की अभिव्यक्ति के लिए आतुर हो उपन्यासकार अपने पात्रों की नारी विषयक कमजोरी दिखाना क्यों आवश्यक समझते हैं? इससे कृति में उनके विचारों का स्वाभाविक प्रभाव क्षीण हो जाता है, पात्रों का चरित्र विश्रृंखल हो जाता है और समाजवादी यथार्थवाद का प्रभाव बेअसर हो जाता है। यहाँ भी लगभग वसा ही हुआ है। इसी से स्वाभाविकता प्रचारात्मकता में बदल जाती है।

नागार्जुन ने भी अपने उपन्यासों में मार्क्सवादी विचारधारा का प्रसार किया है. पर उनके ये विचार पात्रों के जीवन की घटनाओं के माध्यम से ही हमारे सामने आते हैं, जबकि भैरवप्रसाद गुप्त ने इसके स्थान पर सीधे प्रचारात्मकता का आश्रय ले लिया है। बलचनमा का निम्नस्तरीय जीवन आरम्भ से मालिकों की जूठन खाते, फटे कपड़े पहनते और मेहनत करते दिखाया जाता है। दूसरी ओर जमींदारों द्वारा भूमि हड़प लेना, बहन रेवनी के साथ बलात्कार का असफल प्रयास करना; 'रतिनाथ की चाची', 'बलचनमा' आदि में फसल पर पहरा बिठवा देना; 'वरुण के बेटे' में गरोखर में जाल न डालने का आदेश कोर्ट से ले लेना, बाढ़-पीड़ितों को सरकारी कर्मचारियों से परेशान दिखाना, कोसी योजना के अन्तर्गत मजदूरों का परेशान होना, काम करना किन्तु मजदूरी नहीं पाना; 'बाबा बटेसरनाथ' में सार्वजनिक भूमि पर जमींदार का अवैध कब्जा करना, आदि मजदूर-किसानों की ऐसी भोगी हुई समस्याएँ हैं जिनके द्वारा कोई भी व्यक्ति मजदूरों-किसानों का समर्थक हो जायगा। इस प्रकार नागार्जुन ने दलितों के दलित जीवन के प्रस्तुतीकरण के साथ मार्क्सवादी विचारों का प्रसारण किया है। भैरवप्रसाद गुप्त के ऐय्याश मिजाज पात्र जब सीधे मार्क्सवाद पर भाषण शुरू कर देते हैं तो उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता। नागार्जुन का यथार्थ पात्रों का भोगा हुआ है और गुप्तजी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का मात्र वर्णन किया गया। 'सती मैय्या का चौरा' एक अति विस्तृत ७४३ पृष्ठ का उपन्यास है जिसमें लेखक ने अनावश्यक ब्यौरों को असन्तुलित हो विस्तार देने का प्रयास किया है। कहीं वह मुंशीजी को उपस्थित कर ग्राम का इतिहास सुनाने लगता है। वस्तुतः जमींदारी प्रथा की समाप्ति के साथ ग्रामोन्नति के मार्ग में आयी बाधाओं को दूर करने का वर्णन इसमें किया गया है। इसलिए मन्ने के प्रयास में हमें कहीं नागार्जुन द्वारा लिखित 'दुखमोचन' की याद भी आ जाती है। उसे भी ग्राम-निर्माण में दुखमोचन जैसा ही साहस दिखाना पड़ता है। लेकिन दुखमोचन का आचरण उच्च चारित्रिक गुणों और त्याग से भरा हुआ है। मन्ने को पिटवाकर गिरा देना बलचनमा को पिटवाकर गिरा देने से समता रखता है।

इस प्रकार नागार्जुन को हम समाजवादी यथार्थवाद के समर्थक उपन्यास-कारों में रखते हुए मजदूर वर्ग के दर्द की वास्तविक अभिव्यक्ति में समर्थ देखते हैं। उनमें निम्न वर्ग के प्रति सहानुभूति आकाशीय या थोपी गयी नहीं दिखाई देती। वे मजदूर वर्ग का हार्दिक समर्थन और उन्हें संघर्ष के लिए संगठित होने का आह्वान करते हैं। किन्तु यह भी सच है कि नागार्जुन की विचारधारा के ये पात्र, जो समाजवादी संघर्ष में कूद गये हैं, खुलकर हमारे सामने नहीं आ सके हैं। यह अवश्य है कि नागार्जुन ने हिन्दी उपन्यास साहित्य में प्रथम बार एक चरवाहे को नायक बनाकर निम्न वर्ग के प्रति अपनी गहरी संवेदना का परिचय दिया है पर बलचनमा का चरित्र, जो हिन्दी में अकेला है, अपने अन्दर अनूठी सम्भावनाएँ सहेजे हुए है। उसे लेखक पूर्णता तक नहीं पहुँचा सका, मात्र पिटवाकर गिरवा दिया गया है और स्वयं लेखक के हृदय में भी उसकी अपूर्णता एक दर्द बनकर उभरती रही है। नागार्जुन ने 'आइने के सामने' में दिये गये इण्टरव्यू में और मुझे लिखे पत्रों में इस बात को स्वीकार भी किया है मानो आज भी बलचनमा कथाकार को उलाहना देता-सा प्रतीत होता है कि "जाओ, तुमने मेरी तरुणाई के दिनों की ही संघर्ष-कथा चित्रित करके चुप्पी साध ली। मेरे बारे में तुम्हें अभी तो बहुत कुछ बतलाना था न ? हाय ! तुमने मुझे अधूरा ही छोड़ दिया।" अपने पात्रों के चरित्र को पूर्णता तक पहुँचाना था पर ऐसा नागार्जुन नहीं कर पाये। 'बलचनमा' यदि यशपाल के 'झूठा-सच' के समान दो भागों में हमारे सामने होता तो उससे बलचनमा की स्वयं की आत्मा को जहाँ शांति मिलती वहीं उसकी पूर्णता से लेखक भी अपने पात्र के प्रति पूरा न्याय कर पाता और पाठकों को भी सन्तोष होता। जहाँ से बलचनमा को बेहोश करके गिरा दिया गया है, वहीं से लेखक उसे स्वस्थ घोषित कर मजदूर वर्ग की अधूरी कहानी बलचनमा के मुँह से फिर सुना दे तभी वह पूर्ण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहा जा सकता है। यही अरूणता नागार्जुन के 'वरुण के बेटे', 'बाबा बटेसरनाथ' आदि उपन्यासों में है जिनके माध्यम से लेखक ने पिछले सौ-पचास वर्षों की पीड़ित खेतिहर मजदूर जनता की बेबसी और शोषण की गाथा कही है, पर उन्हें भी देखकर लगता है कि ये भी अपने अन्दर और वृद्धि की सम्भावनाएँ सहेजे हुए हाहाकार कर रहे हैं। 'वरुण के बेटे' की संघर्ष-कथा भी अधूरी है।

यहाँ एक बात स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि इसमें लेखक की अनुभूति-अल्पता या औपन्यासिक क्षमता के अभाव का प्रश्न नहीं उठता, क्योंकि नागार्जुन की प्रखर प्रतिभा, उनकी चुस्त और व्यंग्यात्मक भाषा-शैली, किस्से कहने का उनका रोचक ढंग और निम्नवर्गीय पात्रों के प्रति उनकी आन्तरिक एवं निश्छल सहानुभूति ने उनके कथाकार को इतनी सबल अभिव्यक्ति दी है कि निस्सन्देह वे इन पात्रों को पूर्णता तक पहुँचा सकते हैं। फिर प्रश्न उठता है कि नागार्जुन ने ऐसा क्यों किया ? पात्रों और उपन्यासों को विस्तार की सम्भावनाओं से निहित अधूरा क्यों छोड़ दिया ? इसका कारण उन्होंने बताया है—लेखक की हड़बड़ी और पाठकों से जल्दी छुटकारा पाने की चेष्टा।

यही नागार्जुन के समाजवादी यथार्थवादी पात्रों की सीमाएँ हैं, समाज का दयनीय यथार्थ दुख और शोषण की अवस्थाओं और उसकी प्रतिक्रियास्वरूप उत्पन्न संघर्ष का चित्रण समाजवादी यथार्थवाद के अन्तर्गत आता है जिसे नागार्जुन ने बड़ी संजीदगी से उभारा है। उनकी यह राजनैतिक विचारधारा, जो मूल रूप में काँग्रेस-विरोधी भी है, उपन्यासों में सहज ही देखी जा सकती है और कहीं-कहीं पात्रों पर हावी भी होती लगती है। पर उनके ये पात्र अपने अन्दर में विकास की अनूठी सम्भावनाएँ समेटे हुए आज भी लेखकीय अन्याय का उद्घोष कर रहे हैं। फिर भी इतना हम दावे के साथ कह सकते हैं कि अन्य समशील उपन्यासकारों की अपेक्षा नागार्जुन की आत्मीयता निम्न वर्ग के प्रति अधिक सक्रिय और सजग है। लगता है, दलित और पीड़ित वर्ग का ही यह लेखक है जो उनके दर्द को अपना दर्द समझ कर हमारे सामने आया है, और अभिव्यक्ति की इस सचाई और सक्षमता का कारण है—नागार्जुन का ऐसे ही वर्ग से उठकर आना। अन्य उपन्यासकारों की सहानुभूति जहाँ निम्न वर्ग के प्रति उथली दिखाई देती है, जहाँ ये कुण्ठाग्रस्त या फ्रायडीय चिन्तन के शिकार दिखाई देते हैं वहाँ दलितों के प्रति नागार्जुन की पक्षधरता, नारी के प्रति मर्यादा, यथार्थ का सूक्ष्म अंकन, अभिव्यक्ति की सहजता, भाषा का निखरापन, वस्तुपरक दृष्टि तथा कथा का सन्तुलन, आदि सहज ही उन्हें ऊपर उठा देते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निस्सन्देह नागार्जुन ने प्रेमचन्दजी द्वारा चित्रित पात्रों की पंक्ति को आगे बढ़ाया है। 'गोदान' के पात्र ही मानो नागार्जुन के पात्र हैं और मुंशीजी द्वारा प्रदत्त इस साहित्यिक उत्तराधिकार को नागार्जुन ने पूरी तरह ढोया है, निभाया है, आगे बढ़ाया है। उनके उपन्यासों में समाज की जर्जरित परम्पराओं के विध्वंस, उनके अवसान और युग के नव निर्माण की स्पष्ट स्थापना है। उनके नारी पात्र समाज में अपना सम्मानपूर्ण स्थान बनाकर रहते हुए दिखाये गये हैं। वे नारियाँ पुरुष की प्रेरणा बन उसके कन्धे से कन्धा लगाकर काम करने में विश्वास करती हैं—रूढ़ियों एवं अँधविश्वासों का खण्डन करते हुए प्रगतिशील विचारों का प्रसार कर समाज-सुधार करना नागार्जुन का लक्ष्य दिखाई देता है। इसलिए हम कह सकते हैं कि उनका कथा-साहित्य अन्य समशील मार्क्सवादी कथाकारों की अपेक्षा जीवन के अधिक निकट है। जीवन की जटिलताएँ चित्रित करते हुए उसके हल प्रस्तुत करने का प्रयास नागार्जुन का रहा है। यही उनका आशावादी चिन्तन है, जिसमें वे कहीं हताश-निराश होते नहीं देखे गये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अष्टम अध्याय

नागार्जुन का मैथिली साहित्य एवं अन्य स्फुट रचनाएँ

नागार्जुन ने मैथिली और संस्कृत में भी साहित्य-सृजन किया है। इसके साथ ही बालकों के लिए भी उन्होंने कुछ कहानियाँ और प्रेमचन्द की जीवनी लिखी है। निराला पर लिखा लघुप्रबन्ध 'एक व्यक्ति : एक युग' नागार्जुन की अपनी शैली का सुन्दर उदाहरण है। इस कवि ने कालिदास के 'मेघदूत' का अनुवाद भी किया है। 'जनयुग' (हिन्दी साप्ताहिक) में नागार्जुन 'यत्किंचित्' स्तम्भ भी लिखते रहे हैं। इनके कुछ लेख पत्र-पत्रिकाओं में भी देखने को मिलते हैं।

(अ) नागार्जुन का मैथिली साहित्य :

नागार्जुन की मातृभाषा मैथिली है। मैथिली में इन्होंने 'यात्री' के नाम से रचनाएँ की हैं। मैथिली भाषा में उनके तीन उपन्यास और दो काव्य-संग्रह प्रकाशित हैं—'चित्रा' और 'पत्रहीन नग्न गाछ'।

नागार्जुन को अपनी मिथिला भूमि से गहरा लगाव है। वहाँ की ललित कलाओं एवं लोकगीत आदि में इनकी बेहद दिलचस्पी रही है। कवि ने मैथिली उपन्यासों में इन आंचलिक विशेषताओं का अच्छा चित्रण किया है।

(क) मैथिली उपन्यास : यात्री ने 'पारो', 'नवतुरिया' और 'बलचनमा' तीन उपन्यास मैथिली में लिखे हैं। अन्तिम दो क्रमशः 'नई पौध' और 'बलचनमा' के नाम से लेखक द्वारा ही हिन्दी रूपान्तर किया गया है।

(१) पारो : यह उपन्यास प्रथमपुरुष में लिखा गया है। इस लघु उपन्यास में मिथिला की रूढ़ समाज-व्यवस्था से आक्रांत 'पारो' के जीवन की दुखांत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कथा है। यात्री का उद्देश्य इस उपन्यास द्वारा मिथिला में विवाह की गलत परम्पराओं की ओर पाठकों का ध्यान आकृष्ट करना रहा है। मिथिला में पंजीप्रथा प्रचलित है। वहाँ जन्म लिये हर बालक का नाम, वंश, गोत्र आदि पंजीकार पंजीयन कर लेते हैं। विवाह के लिए वहाँ सौराठ की सभा प्रमुख है जिसमें विवाहेच्छुक वर इकट्ठे होते हैं, कन्या के अभिभावक वर का चयन कर पंजीकार से उसके नाम, गोत्र, वंश आदि का लेखा ले लेते हैं। विवाह में कुछ मध्यस्थ भी होते हैं, जो 'घटक' कहलाते हैं। ये मध्यस्थ और पंजीकार जमकर भ्रष्टाचार करते हैं। अधिक उम्र के दूल्हे से रुपये लेकर कम उम्र की कच्ची कली से उसका विवाह करवा देना और लड़की का जीवन बरबाद कर देना उनके लिए सामान्य बात है। इसी अव्यवस्था का शिकार प्रस्तुत उपन्यास की नायिका पारो है। वृद्ध ठूँठ से बँध कर वह जीवन भर घुटती रही और उसकी मृत्यु ने ही उसे इस कष्ट से छुड़ाया।

पारो का परिवार किर्बनिया ग्राम में रहता है। मैथिल ब्राह्मण संस्कृत के प्रकांड पंडित होते हैं। पारो के पिता भी ऐसे ही विद्वान हैं, वे पारो को संस्कृत की विदुषी बनाना चाहते हैं तथा मंडन मिश्र की पत्नी भारती से उसे प्रेरणा लेने के लिए प्रोत्साहित करते रहते हैं। इस संस्कृतप्रेमी परिवार में बालिका पारो (पार्वती) का विकास होता है।

ब्रजनाथ (बिरजू भैया) पारो के मामा के लड़के हैं। उनके द्वारा ही पारो की कहानी पाठकों को सुनाई जाती है। पारो को ब्रजनाथ से बेहद प्रेम है जो भाई-बहन के प्रेम से भिन्न दिखाई देता है। उसका भोला-भाला प्रश्न है : "भाइये बहिन में जँ बिआह दान होइतैक त केहेन दिव होइते। कत कहाँ दनक अनठिया के जे लोक उठाक लऽ अवैये से कोन बुधियारी ?" यह कथन जरा चुभने जैसा है। किन्तु पारो बड़ी प्रखर बुद्धि की बालिका है। वहाँ की नारी की दयनीय स्थिति से युक्त गीत वह लिखती है, 'सखि हम करमक हीन, कौन विधि खेपव दीन !' वह अपने को कर्मों के अधीन बतलाती है। रामायण, गीता आदि वह पढ़ती है। उसके पिता का स्वर्गवास हो जाता है। पारो और उसकी विधवा माँ अकेले रह जाती हैं। बिरजू भैया अपने मामा के यहाँ मोतिहारी पढ़ने चले जाते हैं। पारो उन्हें किर्बनिया आने के लिए पत्र लिखा करती है।

इधर घटक महोदय 'लूच झा' पारो के विवाह के लिए, उसकी माँ को, पैंतालिस वर्षीय 'चुल्हाई चौधरी' के ऐश्वर्य की प्रशंसा करके तैयार कर लेते हैं। उन्हें भी दो मन चावल, कुछ रुपये और वस्त्रादि मिलते हैं। इस प्रकार पन्द्रह वर्ष की कोमलांगी पैंतालिस वर्षीय वर से ब्याह दी जाती है। पारो की माँ को लड़की की विदा के समय दी जानेवाली भेंट की चिन्ता है। ब्रजनाथ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जब लौटते हैं तब उन्हें पारो के विवाह का समाचार ज्ञात होता है। वे सोचते हैं कि पीसा (फूफा) होते तो यह विवाह नहीं होता। पारो उन्हें बड़ी दुबली और चिन्तित दिखाई देती है। वह कहती है, माँ के सिर का बोझ उतर गया पर उनसे (चौधरी से) हमारा "पति-पत्नीक सम्बन्ध कदापि नहिं। ओ देवता नहिं दानव।"

विवाहोपरान्त तीन रात ब्रह्मचर्य के कड़े नियंत्रण में बिता कर चतुर्थ रात को मिथिला में वर-वधू मिलन-रात्रि आती है, किन्तु पारो के लिए यह दुर्भाग्यपूर्ण रात्रि बन गयी। उस रात्रि की घटना पारो को याद आती है। पति ने उसे 'मुँह बजावन' की रस्म के तौर पर दस रुपये के कुछ नोट दिये थे। मात्र शरीर सम्पर्क के लिए लोलुप पति की यह तुच्छ हरकत और उस रात किये गये अमानुषिक व्यवहार का स्मरण कर पारो कहती है—हे भगवान, मिथिला में अब कभी औरत के रूप में जन्म न देना।

अपने शरीर की ओर से पारो बड़ी लापरवाह हो गयी। बिरजू की अविवाहित बहन का जब जिक्र आता है तो वह कहती है—भारी पड़ती हो तो जहर खिला देना। इस मार्मिक कथन के द्वारा 'यात्री' ने मिथिला की सामाजिक परम्पराओं पर प्रहार किया है।

उपन्यास में देश की तत्कालीन घटनाओं के भी चित्र हैं। बिरजू के 'लालभैया' सोशलिस्ट हो गये हैं। स्वतंत्रता के पूर्व सब दल देश की आजादी में लगे थे। ये सोशलिस्ट भाई भी सत्याग्रह करते हैं, स्वराज्य आश्रम की स्थापना करते हैं, पिता उनसे क्षुब्ध हैं, पर मँझले भैया समर्थन करते हैं। लालभैया कहते हैं: "पराधीन भारत माता को स्वतंत्र करने के लिए जिस त्याग की आवश्यकता होती है, उसे ये पुराने लोग नहीं समझते। स्वतंत्रता के लिए बलिदान देना पड़ता है।" वे देश के महिला रत्नों—सरोजिनी नायडू, विजयलक्ष्मी पण्डित और कमला चट्टोपाध्याय का उदाहरण देते हैं। लेखक पाठकों का ध्यान मुख्य कथानक पर केंद्रित करने के लिए कहता है: "आहि रे बा—की कहै छलहुँ आ कोम्हर भसिया गेलहुँ।" मिथिला में लड़कियों का नइहर से घनिष्टतम सम्पर्क रहता है। अब मधुश्रावणी का पर्व आता है। इसमें घृत मिश्रित शहद की हल्की लौ को दूल्हादुल्हन के पैर में छुआ देता है, वह 'ईस' कर उठती है; सखि शीतोपचार करती है। इसके लिए पारो और चौधरी किर्बनिया आते हैं। चौधरी के बुलाने पर बिरजू भी उनसे मिलने जाता है। वह चौधरी की बातों से प्रभावित होता है। 'पारो' से उनकी प्रशंसा कर वह चौधरी पर श्रद्धा रखने के लिए उसे कहता है, किन्तु पारो चौधरी को दानव बतलाती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिरजू बाहर सोते हैं । अर्धरात्रि को वे देखते हैं कि पारो आँगन में गिरी हुई है। चौधरी खड़े हैं। यह दृश्य देख बिरजू कहते हैं कि ऐसा नाटक मैंने कहीं नहीं देखा। बिरजू आँख मूँद कर सोचते हैं कि चौधरी ने राक्षस के समान उत्पात किया होगा। उनके ध्यान में गुलाब की कच्ची कली मसलने वाला धृष्ट बारहसिंगा आता है। बिरजू का ईश्वर और उसकी बनायी सृष्टि पर से विश्वास उठ जाता है। पारो को बिरजू उठा लेते हैं, वह उनके गले में बाँहें डाल कर पड़ी है। साड़ी पर खून के गीले निशान देख वह कहती है : "देखो तुम्हारे देवता ने मेरी क्या दशा की है।"

मधुश्रावणी के बाद पारो ससुराल लौटकर बिरजू को पत्र लिखती है कि "किसी के शरीर पर काबू किया जा सकता है। उसके मन पर नहीं। पन्द्रह वर्ष की लड़की का दूल्हा पचास साल का हो तो वहाँ सौमनस्य कैसे रहे।" पारो के बुलाने पर बिरजू उसके ससुराल जाते हैं, घर सम्पन्न है, पारो माँ बननेवाली है, यह उन्हें ज्ञात होता है। कोसी प्रकोप से मलेरिया का प्रसार, पारो के शरीर की कमजोरी और गर्भवती होना, जान वे सोच में पड़ जाते हैं। आशीर्वचन कहते हैं—'तुम्हारी कोख से हीरा-मोती पैदा हो।' पारो उनके पैर पकड़कर आकुल स्वर में कहती है—"नहि सँ आइ हम कहाँ मानवहु ? तेहेन आसिरबाद ने हमरा तों देने जाह बिरजू भैया जे अगिला जनम में ई साससि नहि उठब पड़ेए—हमरा तोरा बीच में पिसियौत मसियौतक सम्बन्ध नहि, ओहि जन्म में हम आ तों····"कह कर वह रोती है, बिरजू वहाँ से हट जाते हैं। अगहन में जब बिरजू मोतिहारी से आते हैं तो सुनते हैं कि पारो को लड़का हुआ है, पर वह नहीं बचेगी। अन्ततः यही हुआ। पारो की लाश को उसी स्थान पर रख दिया जाता है जहाँ मृत्यु के पश्चात् उसके पिता को सुलाया गया था।

पीसी बच्चे को बिरजू के पैरों पर रख देती है। अन्त में बिरजू पाठकों से पूछते हैं कि क्या आपको यह जानकर प्रसन्नता नहीं होती कि फेंकू (पारो का पुत्र) दो साल का हो गया। अगले वर्ष उसका मुंडन होगा।

इस प्रकार प्रस्तुत उपन्यास में रूढ़िवादी मैथिल समाज पर करारा व्यंग्य करते हुए भ्रष्ट सामाजिक एवं धार्मिक परम्पराओं का यथार्थ चित्र उपस्थित कर दिया गया है। समाज-चित्रण की इसी विशेषता को देख श्री कामेश्वर झा ने 'यात्रीजीक उपन्यास' शीर्षक लेख में लिखा है : "साहित्य समाजक दर्पण होइछ। वस्तुतः ई चरितार्थ सोलह आना बुझना जाइत अछि जखन हमरा लोकनि यात्रीजीक पारो पर विहंगम दृष्टि दैत छी।" 'यात्री' द्वारा पारो के समान नायिका उपस्थित करने के सम्बन्ध में श्री झा लिखते हैं : "ई सत्य छै पारो सदृश कन्या कटिबद्ध अछि समाजक बहु-विवाह तथा अनमेल विवाह के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जड़ि मूल सँ उखाड़ि फेकवा लेल। निस्सन्देह एहिठाम यात्रीजी एक क्रान्तिकारी डेग बढ़ोलन्हि अछि। हिनक ई घाप मैथिली साहित्य में स्तुत्य अछि।"

यात्रीजी के उपन्यास 'पारो' द्वारा इसी क्रांतिकारी कदम से मिथिला का पुरातन ब्राह्मण समाज चौंक गया। उपन्यास की रूढ़िभंजक प्रहारक शक्ति से वहाँ के पंडितवर्ग ने क्षुब्ध हो अपनी विभिन्न प्रतिक्रियाएँ व्यक्त कीं। आचार्य श्री त्रिलोकनाथ मिश्र, रामेश्वरी लता संस्कृत महाविद्यालय दरभंगा के प्रिन्सिपल महोदय ने 'पारो' के सम्बन्ध में लिखा है :

स्वछन्द प्रोफेसर टांग हाथ
दन्तावलि पूर्वहि तोड़ि लेल
दुर्भाग्यसँ सम्प्रति मैथिलिक
पारो कपारो धरि फोड़ि देल।

मिथिला क्षेत्र में पारो द्वारा मचायी गयी धूम का यह एक नमूना है। 'स्वच्छन्द प्रोफेसर' से श्री हरिमोहन झा की ओर संकेत है। रूढ़िभंजन के मोर्चे पर आधुनिक मैथिली साहित्यकारों में से झा का नाम पहला आता है।

नागार्जुन द्वारा उपन्यास में ठेठ बोली के प्रयोग ने मिथिला के लोक रंग को उपस्थित कर दिया है। लोकोक्तियों के प्रयोग से भाषा में सजीवता आ गयी है। क्षेत्रीय लोकपर्व, मधुश्रावणी, द्विरागमन, मिथिला की हस्तकला, संस्कृत पंडितों की परम्परा, आदि का परिचय दिया गया है। गरीब होते हुए भी मैथिल समाज अपनी परम्पराओं का पालन कैसे करता है, इसका बोध इनसे होता है। उपन्यास में यथास्थान—हल्का-फुल्का हास्य, व्यंग्य, करुणा-मिश्रित वार्ता-शैली के कारण पाठक पर सीधा प्रभाव पड़ता है।

'नव तुरिया' और 'बलचनमा' मैथिली से हिन्दी में अनुवाद किये गये हैं। 'नवतुरिया,' जो 'नई पौध' नाम से प्रकाशित हुआ है, में भी रूढ़ परम्पराओं पर कुठाराघात कर समाज को बदलने का प्रयास उपन्यासकार ने किया है। 'पारो' के बाद लेखक इस निष्कर्ष पर पहुँचा लगता है कि इन परम्पराओं को तोड़ना होगा। इसीलिए 'नई पौध' में बमपाटी के द्वारा नागार्जुन ने पुरातन पंडितों को शिकस्त दिलवायी है। श्री झा ने लिखा है : "समस्या आ तकर समाधान यात्रीजी एहि उपन्यास मध्य दूहूक समावेश बड़ विलक्षण रूप से कएने छथि।"

मैथिली कथा-साहित्य में भी नागार्जुन की भाषा एवं शैली पात्रानुकूल तथा समय और परिस्थिति के अनुसार प्रवाहपूर्ण है। यात्री के स्वभाव के अनुरूप ही उनके साहित्य में सरलता स्पष्टतया दृष्टिगोचर होती है। नागार्जुन के स्वभाव की दृढ़ता मानो पूरी-पूरी उनके उपन्यासों में उतर आयी है। 'पारो' और 'नवतुरिया' उस समय लिखे गये थे जब मिथिला का कट्टर ब्राह्मण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समाज अपनी परम्पराओं को त्यागने के लिए बिल्कुल तैयार नहीं था और इस प्रकार नागार्जुन ने बड़े साहस का परिचय दिया।

(ख) **यात्री का मैथिली काव्य** : समय-समय पर प्रकाशित यात्री की कविताओं की संख्या अब काफी है। इनमें कई रंग की कविताएँ हैं। राजनीतिक और सामाजिक व्यंग्य भी नागार्जुन की मैथिली कविताओं के आलम्बन रहे हैं, परन्तु उन रचनाओं का कोई संकलन अब तक प्रकाशित नहीं हो सका। यद्यपि समय-समय पर पत्र-पत्रिकाओं में फुटकर तौर पर उक्त रचनाएँ प्रकाशित होती रही हैं।

डॉ० नामवर सिंह ने कवि नागार्जुन के विषय में यह ठीक ही लिखा है कि "इनकी हिन्दी कविताओं का मूल्यांकन समग्रतापूर्वक तभी किया जा सकता है, जबकि इनकी मैथिली रचनाओं का भी अनुशीलन साथ-साथ हो।" 'युगधारा' के प्रकाशक ने भी इस ओर इंगित किया है: "नागार्जुन की हिन्दी रचनाओं के मूल्यांकन में उनके मैथिली कवि कर्म का परिज्ञान पर्याप्त सहायक सिद्ध होगा, ऐसी हमारी धारणा है।"

यदि एक कवि दो भाषाओं में रचना करता है तो उसका काव्य व्यक्तित्व दो नहीं, एक होता है। दो भाषाओं में रचना करने के कारण अर्थात् भाषान्तर के कारण कवि-प्रकृति में अन्तर नहीं आता। इसीलिए नागार्जुन की हिन्दी और मैथिली कविताओं में भाव-बोध, इन्द्रिय-बोध, भाव-व्यंजना, भाषा-शिल्प, प्रकृति-प्रेम, विषाद-युक्त जीवन, सूक्ष्म संवेगों का चित्रण, व्यंग्य का पुट, आदि एक-से हैं। इसी कारण हमने वैद्यनाथ मिश्र के कवि को ठीक से स्पष्ट करने के लिए उनके हिन्दी और मैथिली काव्य को भी अपने शोध-प्रबन्ध की परिसीमा में समेटने का प्रयास किया है। मैथिली साहित्य के माध्यम से नागार्जुन की प्रतिभा को परखने का प्रयास हमारा है, कवि के मैथिली काव्य का विस्तृत अध्ययन हमारा ध्येय नहीं।

कवि की भाव-सम्पदा का आकलन करके हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि उस पर आरम्भ से ही तीन प्रभाव पड़े हैं—

(क) मिथिला की हरी-भरी भूमि के अभिराम रूप, अपने बदलते हुए ऋतु-क्रमों के अनुसार, कवि की अन्तश्चेतना में खचित होते गये, जिसका परिणाम यह हुआ कि उसने हिन्दी के समान ही मैथिली में भी प्रकृति-सौंदर्य सम्बन्धी कविताएँ लिखी हैं। इन कविताओं से मिथिला की ग्राम छवि अपनी अछूती रमणीयता लिये हमारे सामने आ उपस्थित होती है।

'चित्रा' की कुछ कविताओं में भी प्रकृति वर्णन मिलता है। 'पत्रहीन नग्न गाछ' की कुछ कविताओं में भी यथातथ्य ढंग का प्रकृति-चित्रण है। इसके कुछ गीत भी इसी कोटि के हैं। श्री साँवलिया के अनुसार, "इस संग्रह के गीत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

को छोड़कर सभी रचनाओं को हम प्रकृति और मानव इन दो श्रेणियों में बाँट सकते हैं। पहली कविता 'नान्हि-नान्हि टा फूल' प्राकृतिक सौंदर्य से ही सम्बन्ध रखती है।"[१]

'चित्रा' की प्रकृति 'पत्रहीन नग्न गाछ' की प्रकृति से बिल्कुल भिन्न है। 'चित्रा' में कवि का मिथिला-प्रम उमड़ रहा है। अंचलीय प्रकृति की एक-एक रमणीयता, कमनीयता, परुषता उसे याद आ रही है। 'पत्रहीन नग्न गाछ' में प्रकृति का सहज-सुन्दर रूप चित्रित हुआ है : "नान्हि-नान्हि टा फूल, उज्जर-उज्जर फूल, लाल लाल डंटीवला फूल"।

कवि ने दिखाया है कि आधा फागुन बीत जाने पर 'कोइली' और 'मधुमाछी' भी अपने कामों में लग गयी हैं :

बीतल आधा फागुन।
चिबा चिबा कऽ आमक मज्जर
कोइली सूर पिजावए
भन भन भन मधुमाछी भनकए।

'चैत' की प्रकृति देखिए, सूर्य की प्रखरता क्रमशः बढ़ रही है और पछुआ हवा के थपेड़े भी जोर पकड़ रहे हैं :

पछवा सिहकए
सूरुज दमकए
पावल सुक्खल रब्बिक छीमड़ि बालि
मेही सुरमे बजवए भने सितार
दूरहिं सँ चकत्रक करैत अछि चैतक खेत-पथार

'अखाढ़' कविता से वर्षा का पूरा रूप कवि ने प्रस्तुत कर दिया है। काले-काले मेघ मँडरा रहे हैं। इन्द्र के हाथी गर्जना कर रहे हैं। गृहस्थ लोगों ने 'नचारी' छोड़कर 'मलार' गाना शुरू कर दिया है। पानी का रंग मटमैला हो गया। अब तो बोये गये बीजों में पेंपीं भी फूट गयी है :

उठलइ बेश बिहाड़ि
ताहि पर झपलक मेघ अकाश
साधि लेलक दम पुरबा-पछबा
सृष्टि भेल निस्तब्ध
गड़ गड़ गड़ गुडुम गुडुम गुम...

१. जनशक्ति, १७ अगस्त, (हिं० साप्ता०) १९६९, पत्रहीन नग्न गाछ (लेख) : सांवलिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गरजल इन्द्रक हाथी
छाड़ि नचारी गाबए लगला गिरहथ लोकनि मलार

'साओन' कविता में कवि ने मिथिला के सावन को पाठकों के सामने साकार ही कर दिया है। वर्षा की लीला से नदी-नालों का भरपूर होकर रेलवे लाइनें डुबा देने का वर्णन करने के बाद कवि के हृदय में बड़ी कोमल भावनाएँ उठ रही हैं। तभी उसने "तीसो दिन थिक मधुश्रावणी नवतुरिआक चुमाओनः मास" का वर्णन करने के बाद राधा और कृष्ण के झूले झूलने की बात कही है। अन्त में पावस ऋतु का सबको ऋणी बताकार "लोचन-अंजन, जन मन रंजन, पावस ऋतु कें करिअ प्रणाम" की प्रेरणा दी है।

इस प्रकार मैथिली में हिन्दी के समान ही कवि ने प्रकृति-वर्णन सम्बन्धी कविताएँ की हैं, पर इनमें उसकी कल्पना भिन्न प्रकार की है। नागार्जुन ने हिन्दी कविताओं का मैथिली में अनुवाद नहीं कर दिया है, पूर्ण रूप से मौलिकता इनमें देखी जा सकती है।

कवि के हृदय में जब अंचल प्रेम हिलोरें लेने लगा है तब उसने मिथिला की गौरवपूर्ण संस्कृति में 'माँ मिथिला' के दर्शन किये हैं। कहीं उसने गौतमक न्यायक अर्थ में, याज्ञवल्क्य दर्शित नय पथ में या कहीं विद्यापति के कविता कलाप में मिथिला के दर्शन पाये हैं। इस प्रकार कवि ने इस कविता में अपनी जन्मभूमि के प्रति महान श्रद्धा व्यक्त की है। 'अन्तिम प्रणाम' भी इसी कोटि की कविता है, जो कवि ने लंका जाने का दृढ़ निश्चय कर लेने के बाद काशी में लिखी थी। इसमें सबसे मोह समाप्त करने की घोषणा उसने की है :

हे मातृभूमि, अंतिम प्रणाम
अहिबातक पातिल फोड़ि फाड़ि
पहलुक परिचय कें तोड़ि ताड़ि
पुरजन-परिजन सभकें छोड़ि छाड़ि
हम जाय रहल छी आन ठाम
माँ मिथिले, ई अंतिम प्रणाम।

इस कविता को देख स्पष्ट प्रतीत होता है कि इसकी रचना के समय तरुण नागार्जुन पर बुद्ध सवार थे। नागार्जुन का जीवन-वृत्त सही मानी में यहीं से शुरू होता है। मैथिली भाषा में लिखी होने पर भी यह कविता हिन्दी कवि नागार्जुन की जीवनरेखा को भी निर्धारित कर रही है। निस्संदेह, इस कविता का इतिहास मैथिली के कवि-यात्री के साथ ही नहीं, हिन्दी के कवि नागार्जुन के साथ भी जुड़ा हुआ है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(ख) यात्री की कविताओं में रोमानी रंग भी काफी घुला हुआ है, 'चित्रा' की कविताओं के पढ़ने से पता चलता है। 'चित्रा' की 'प्रेयसी' कविता भी इसी प्रकार की है, जो लंका लौटने के बाद नागार्जुन ने पूर्व में रचित 'अहिवातक पातिल फोड़ि-फाड़ि' में पत्नी के प्रति व्यक्त निर्ममता, निष्ठुरता की भूल के पश्चात्ताप स्वरूप लिखी है। पश्चात्ताप और ग्लानि का मिलाजुला स्वर 'चित्रा' की इन कविताओं में प्रकट है :

चिर वियोगक आगिमे—
तोरा जखन हम ठेलि, बनलहुं
परिव्राजक एसगरे ओहि बेर सखि चुपचाप—
कते सहने रह तों परिताप ?
बहुत दिनपर ज्ञान एतबा भेल जे हम
केहेन निष्ठुर केहेन निर्मम केहेन पाषाण !
हे हृदय हे ! हे प्राण !

इस कविता में कवि का निश्छल प्रेम, पति-पत्नी का सहज व्यापार और कवि की अभिव्यक्ति की ईमानदारी देखी जा सकती है।

(ग) तीसरा प्रभाव कवि पर संस्कृत साहित्य के गंभीर अध्ययन का है। बिम्बों को उभारने और सँवारने में उसकी बहुत बड़ी भूमिका रही है। कवि के आन्तरिक स्फुरण को परम्परागत वाक्य भंगिमा में ढालते जाना इसी से सम्भव हुआ है। इसके उदाहरणस्वरूप हिन्दी में लिखी नागार्जुन की अनेक कविताएँ उद्धृत की जा सकती हैं, जैसे—बादल को घिरते देखा, भारतवर्ष, आदि जिनपर संस्कृत साहित्य और संस्कृतनिष्ठ भाषा का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है। 'पत्रहीन नग्न गाछ' से इस विषयक एक ही उदाहरण देना काफी होगा :

पदम पुहुप दल आयत लोचनि।
दरस दान दारिद दुख मोचनि।
केरल काशमीर धरि पसरलि।
नगाभूमिसँ आगाँ ससरलि।
दिशि-दिशि सागर चुंबित चरणा।
सिक्त शीश, हिमगिरि निर्झरणा।
कौस्तुभमणिसम बिंध्य विराजित।
शत-शत छबि, शत शोभा साजित।"

इन पंक्तियों में भारतभूमि का वर्णन संस्कृतनिष्ठ मैथिली में किया गया है। भारत की प्राकृतिक विशेषताओं—धवल धूमिल हिमालय, चरणों में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सागर और कौस्तुभमणि के समान विंध्यमालाओं का एक विराट बिम्ब उपस्थित करती हैं। यह शास्त्रीय ढंग का प्रकृति वर्णन संस्कृत साहित्य से हमारे कवि को मिली उपलब्धि ही है। 'माँ मिथिले' भी इसी प्रकार की कविता है।

कवि यात्री की कविताओं में भाषा के कई रूप मिलते हैं : (१) मैथिली का संस्कृतनिष्ठ रूप, (२) मैथिली का लोक-संस्कारी रूप, (३) मैथिली का सस्कृतनिष्ठ लोक-समन्वित भाषा-रूप।

(घ) चौथा प्रभाव नागार्जुन पर हमने यह पाया है कि शोषित, पीड़ित और अभावग्रस्त जन-सामान्य से निकट का सम्पर्क ही कवि की चेतना को प्रखर बनाता गया। युग की विषमताएँ ही कवि के विक्षोभ का मूल कारण बनी हैं। परिणामस्वरूप कवि निम्न वर्ग को कहीं नहीं भूला है। उसके संवेदनशील हृदय पर इस वर्ग की विवशताएँ, जटिलताएँ अपना स्थायी प्रभाव स्थापित किये हुई हैं, क्योंकि यह विक्षोभ तटस्थ भावुक का विक्षोभ नहीं था, यह था सहभोक्ता, सहगामी और सहयोद्धा का विक्षोभ। और इसी कारण आरम्भ से कवि श्रमरत जनता का उपासक रहा है। इसी क्रम में कवि का आशावादी चिन्तन भी स्थान-स्थान पर मुखर हुआ है। 'चित्रा' काव्य की 'परम सत्य' कविता इस दृष्टि से विशेष रूप से उल्लेखनीय होगी जिसमें वह जनशक्ति को ही अपना मस्तक झुकाने की बात करता है। श्रमशील मानव ही उसका आराध्य है। मार्क्सवादी प्रभाव के कारण नागार्जुन आरम्भ से ही सर्वहारा के कवि रहे हैं तभी उन्होंने 'चित्रा' में लिखा :

धन्य हे श्रमशील मानव विश्वभरिमेँ व्याप्त
धन्य तोहर जाति।
नरक केँ सुरपुर बनएबाक लेल
सदच्छन तो रहइ छह अपस्यांत
एक दिशसँ तोड़ि रहला राशसक तों दाँत
संमिलित स्वेच्छा प्रणोदित जयति जय जनशक्ति।
हृदयमेँ अछि एक केवल तोहरेटा भक्ति
आन देवी-देवता दिश नहि नवइ अछि माथ
आइ नहि तँ काल्हिं दानवदलक करबह अवस्से उच्छेद
कृषक श्रमिकक जीवनी केँ बनबिहह पुनिवेद''

नागार्जुन ने केवल कल्पना-कुसुम ही नहीं खिलाये हैं, उनका ध्यान हमेशा शोषित-पीड़ित वर्ग की ओर रहा है। 'पत्रहीन नग्न गाछ' की 'पसेनाक गुण धर्म' कविता में कवि का ध्यान पसीने से लथपथ रिक्शेवाले की तार-तार हो जानेवाली बनियान ने खींचा है। हिन्दी की तरह मैथिली में भी नागार्जुन ने जनता का दुख-दर्द ही लिखा है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्पष्ट है कि कवि वर्तमान सामाजिक व्यवस्था से अत्यन्त क्षुब्ध है जिसमें सामान्य मानव का भीषण शोषण हो रहा है। दूसरी ओर उच्च वर्ग ऐश-आराम में लिप्त है—यह देख कवि 'बाबा वैद्यनाथ' से भी विद्रोह कर उठता है। अँहं-अँहं' कविता में देवताओं की इसी कारण कवि ने चुटकी ली है। 'पिता पुत्र संवाद' में गणेशजी द्वारा शिवजी को 'हिमाद्रिक ई तुंग शृंग' छोड़कर 'नीचां तराइ दिश ताकिओ टा हैत ?' पंक्तियाँ कहलाकर श्रमिकों की सुध लेने के लिए प्रेरित किया है। इतना ही नहीं, नागार्जुन का 'ताड़क गाछ' भी सर्वहारा या संघर्षशील जनों का प्रतीक बन तर्जनी तानकर विधाता को ललकार रहा है। अटल अचल, सर्वहारा वर्ग के पौरुष का प्रतीक नंग-धड़ंग ताड़ का पेड़ नागार्जुन की मौलिक कल्पना का भी परिचायक है। कवि की दृष्टि में भरी दुपहरी का ताप सहती हुई गोबर बीननेवाली ग्रामबाला भी आती है। उसके जीविकोपार्जन का यही तो साधन है। जरा इन श्रमरत ग्रामबाला—गोठबिछनी का रूप तो देखिये :

मेल पुरान पचहथ्थी नूआ
सेहो फाटल चेफड़ी लागल
देलक रङ जमुनिआ, तइपर
मुँह माइक गोटीसँ दागल

कवि की मार्मिकता 'गोठ बिछनी' के साथ ही 'बूढ़ वर' कविता की बाला के प्रति भी व्यक्त हुई है। मिथिला में सौराठ की सभा के द्वारा बूढ़े वर से किशोरी का विवाह किया जाना हास्यास्पद स्तर पर चर्चित होता रहा है, किन्तु इसके साथ ही नागार्जुन ने 'चित्रा' में संकलित इस लम्बी कविता में किशोरी कन्या के दर्द के द्वारा मिथिला की गरीबी का चित्रण कर दिया है।

इस प्रकार जनता और धरती के कवि के रूप में नागार्जुन हमारे सामने उपस्थित हुए हैं। उनकी मैथिली कविताओं में जनता की आकांक्षाएँ करवट लेती हुई प्रतीत होती हैं।

नागार्जुन के मैथिली और हिन्दी काव्य का समग्र रूप से अध्ययन करने के बाद हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि नागार्जुन को हिन्दी और मैथिली पर समान अधिकार है। उनकी दोनों भाषाओं की कृति मौलिक हैं। मैथिली में भी व्यंग्य की छटा दिखाई देती है, पर इधर कवि का जोर मिथिला की सामाजिक और धार्मिक रूढ़ियों पर अधिक प्रहार करना रहा है। मैथिली में नागार्जुन की भूमिका इस मानी में महत्त्वपूर्ण है कि आधुनिक मैथिली को साहित्यिक रूप देनेवालों में यात्री का स्थान चोटी पर है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नागार्जुन ने मैथिली कविता को हमेशा भाषा-शिल्प की दृष्टि से आधुनिक बनाने का प्रयास किया है। 'चित्रा' की कविताओं की भाषा शिल्प, छंद, आदि की दृष्टि से 'पत्रहीन नग्न गाछ' की कविताओं से भिन्न है। अपनी मैथिली कविताओं में नागार्जुन ने मिथिला के सांस्कृतिक जीवन, प्राकृतिक वैभव और जनता की गरीबी का सही चित्रण किया है।

(ब) स्फुट साहित्य :

बाल-साहित्य : नागार्जुन ने बाल-साहित्य भी लिखा है। रामायण की कथा, कथामंजरी, वीर विक्रम, अयोध्या का राजा और प्रेमचन्द की जीवनी ('बाल साहित्य माला' के अंतर्गत) लिखी है। उनकी बाल कहानियाँ हैं—सैनिक की भिड़न्त यमराज से, दुख, नदी फिर जी उठी, पारितोषिक, ठहाका—दाढ़ियोंवाली फसल का, अद्भुत टापू, अभिनेता, ड्यूटी, पिताजी ...पैसे, वानरकुमारी, दया आती है, गजेन्द्र कुमार, तुकों का खेल, आसमान में चंदा तैरे, आदि। तुकों के खेल में बच्चों को कविता लिखने के लिए खेल ही खेल में मात्रा गिनना सिखाया गया है।

'वानर कुमारी' में 'बेबी' एक वानर कुमारी है, जिसे 'माधवी' बन्दरशाला में सम्हालने का काम करती है। 'माधवी' बन्दरों पर शोध-कार्य कर रही है। इस कहानी में बड़े रोचक ढग से बालकों का मनोरंजन किया गया है। 'छात्रसखा' (जनतन्त्र विशेषांक, जनवरी-फरवरी १९६६) में यह कहानी प्रकाशित हुई है। 'भुट्टों की फसल का ठहाका' के रूप में चित्रित कहानी में विमल मचान पर सोया हुआ यह ठहाका सुनता है। उसकी नींद खुल जाती है, और वह भी भारत में, कृषि वैज्ञानिक 'मिचूरिन' के समान ही सफलता प्राप्त करने के विषय में सोचता है। बालकों को इस कहानी में जहाँ यह प्रेरणा दी गयी है, वहीं यह भी बताया गया है कि असावधानीवश बीड़ी फेंक देने से तैयार फसल कैसे बरबाद हो गयी। 'दया आती है' कहानी में बालक विपिन के पिताजी उसके लिए जरा भी समय नहीं देते, इस बात पर राजू, जो प्राचार्य महोदय का लड़का है, पिता के अति व्यस्त रहने के बाद भी उनसे समय प्राप्त करता रहता है। 'दया आती है' कहानी में बड़ों को भी प्रेरणा दी गयी है कि वे बच्चों को केवल रुपया ही न दें, समय भी दें; उनके साथ उठें-बैठें, बातें करें, खेलें आदि।

इन कहानियों की भाषा सरस एवं सरल है। कहने का ढंग नागार्जुन का रोचक है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रेमचंद : नागार्जुन ने प्रेमचंद का जीवन-परिचय ('बाल जीवनी माला' के अन्तर्गत) बालकों के लिए लिखा है। इसमें प्रेमचंद के बचपन से लेकर साहित्यकार हो जाने की कहानी है। इस पुस्तिका के अन्त में नागार्जुन ने एक स्वप्न देखा है, जिसमें प्रेमचंदजी से बातचीत करते हुए कुछ प्रश्न पूछे हैं। प्रेमचंद के ठहाके, कहकहे एक बार फिर हमें इसमें सुनाये गये हैं। उनकी प्रकाशन-संस्था, जिसे उनके पुत्रों ने सम्हाल लिया है, पर भी लेखक ने मीठा व्यंग्य इसमें किया है। नागार्जुन ने प्रेमचंद की इच्छा बतलायी है कि 'हंस' निकलना चाहिए। प्रेमचंद ने अपने रक्त से सींच कर इस पौधे को बड़ा किया था, जिसे उनके सुपुत्रों ने साधन-सम्पन्न रहने के बाद भी मुरझा दिया और दूसरी इच्छा में बड़ा भारी व्यंग्य किया गया है कि "गोदान आदि पाकिट बुक्स में प्रकाशित होना चाहिए।" मुंशीजी के सुपुत्रों द्वारा प्रेमचंद साहित्य के प्रकाशन में शुद्ध व्यावसायिक दृष्टिकोण अपना लेने के कारण ही शायद यह व्यंग्य नागार्जुन ने उन पर किया है। प्रेमचंद की इच्छा ग्रामीण और शहरी मजदूरों की हालत सुधारने की व्यक्त हुई है, जो बड़ी स्वाभाविक और मुंशीजी के विचारों के अनुकूल है।

यद्यपि इसकी भाषा सरल है तथापि काफी आकर्षण लिये हुए है। टेकनीक के लिहाज से यह पुस्तक 'बाल जीवनी माला' की अन्य पुस्तकों से अलग हो जाती है। काफी बातें स्वप्न में हुई हैं। ऐसा लेखक ने रोचकता और नयी टेकनीक के लिए ही किया है।

संस्कृत काव्य :

नागार्जुन ने हिन्दी और मैथिली के साथ ही संस्कृत कविताएँ भी लिखी हैं। कवि को संस्कृत शास्त्रों का गम्भीर अध्ययन है। इन कविताओं में भी उसने अपने श्रमिकों और कृषकों को ही अपना विषय बनाया है। नागार्जुन की ये संस्कृत कविताएँ हैदराबाद (सिंध) से प्रकाशित 'कौमुदी पत्रिका' में सन् १९४२ ई० में प्रकाशित हुई थीं। 'देश दशकं', 'श्रमिक दशकं' और 'कृषक दशकं' शीर्षक इस दृष्टि से उल्लेखनीय हैं। कुछ संस्कृत कविताएँ 'चाणक्य' उपनाम से भी नागार्जुन की प्रकाशित हुई हैं। अपने लंका-निवास के समय सिंहली लिपि में 'धर्मालोक शतकं' शीर्षक से एक खण्ड-काव्य भी भिक्खु नागार्जुन ने लिखा था, जो वहाँ के 'विद्यालंकार विद्यालय' की मैगजीन में प्रकाशित हुआ था। 'महामानव लेनिन' पर भी बीस श्लोक नागार्जुन ने संस्कृत में लिखे हैं।

इस प्रकार संस्कृत काव्य की दृष्टि से भी नागार्जुन ने काफी लिखा है। पर लंका और सिंध में होने के कारण वह उपलब्ध नहीं हो सका है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक व्यक्ति : एक युग : नागार्जुन ने महामनिषी निराला पर एक लघु प्रबंध 'एक व्यक्ति : एक युग' लिखा है। निराला के प्रति बरती गयी हमारी उपेक्षा और उनकी मानवता तथा अभावग्रस्तता का जिक्र भी किया गया है। इसमें निराला के साहित्य का भी मूल्यांकन हुआ है। अर्थात् इस पुस्तक को लिखने में लेखक का उद्देश्य निराला के किसी एक पक्ष को प्रकाशित करना नहीं बल्कि समग्र निराला को रेखांकित करना रहा है।

प्रथम अध्याय में निराला के अभावग्रस्त जीवन का परिचय दिया गया है। इसके साथ ही उनकी दानशीलता एवं व्यक्तित्व के अन्य पक्षों पर प्रकाश डाला गया है। अन्त में नागार्जुन ने यह स्पष्ट किया है कि "निराला हमें अपने स्वरूप का ज्ञान करा गये। वे दिखा गये कि हिन्दुस्तान में शुद्ध साहित्यकार कितना उपेक्षित एवं असहाय है।...अगर साहित्यकार राजनीतिज्ञों का अनुगमन करने से हिचकता है तो भौतिक तौर पर उसका भविष्य अन्धकारपूर्ण है।" हमारे यहाँ आर्थिक लाभ के उच्च पदों पर पदासीन साहित्यकार ही सुखी हो सकते हैं। नागार्जुन ने अन्त में उन उच्च वेतनभोगी साहित्यकारों पर व्यंग्य किया है, जो साधारण साहित्यकारों की दयनीय स्थिति पर ड्राईंग रूम की अपनी सांध्य चर्चाओं में मानवतावादी वघार मारते हैं।

इसमें नागार्जुन निराला के प्रति राजनीतिज्ञों की उपेक्षा से अत्यन्त क्षुब्ध दिखाई देते हैं, और यह क्षुब्धता राजनीतिक अकड़ पर जगह-जगह व्यंग्य का रूप ले उभरी है। कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी उत्तर प्रदेश के राज्यपाल बनकर आये पर उन्होंने रुग्ण निराला की सुधि नहीं ली। शायद उनकी परम श्रेष्ठता को आँच आने का भय था। नेहरू और शास्त्री भी कई बार इलाहाबाद आये पर अपने प्रशंसकों से ही वे भी घिरे रहे, दो क्षण निराला से चर्चा करने का अवकाश उनके पास भी न रहा। स्थिति पर अत्यन्त आक्रोश से भर कर नागार्जुन ने पूछा है : "साहित्य क्या राजनीति के आगे फटी जूती भी नहीं ?"

नगार्जुन ने राजनीति ही नहीं, साहित्य में व्याप्त दूषित मनोवृत्ति पर भी आक्षेप लगाया है। 'कृष्णायन' के लेखक पं० द्वारका प्रसाद मिश्र को भी इस लपेट में उन्होंने लिया है। साहित्यकार भी आज मात्र भौतिक जीवन का आकांक्षी हो गया है। इससे उसका सृजन पक्ष शिथिल हो गया है और प्रतिनिधि मंडल या संसद में आ जाना, मास्को या न्यूयार्क के 'टूर' कर आना जैसे कार्य ही उसके ध्येय हो गये हैं।

निराला चाहते थे कि साहित्यिक मर्यादाओं के प्रति पूरी-पूरी आस्था रखने वाले लोग ही साहित्य में आयें। बड़े पिता का पुत्र होना ही साहित्यिक होने का मानदण्ड नहीं है। इस दृष्टि से नागार्जुन ने बताया है कि तुलसीदास

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निराला के आदर्श कवि थे। तुलसीदास को अपने समय में पुरातन पण्डितों से संघर्ष करना पड़ा था, निराला का भी सम्पूर्ण जीवन संघर्षरत रहा। इसपर नागार्जुन ने लिखा है : "देशकाल के शर से विंध कर निराला का भी अशेष छविधर कवि जागा था। स्पष्ट है कि निराला का अपना कवि और उनके आदर्श कवि तुलसीदास दो नहीं एक ही व्यक्ति थे।"

निराला के पिता महिषादल के राजघराने में कार्य करते थे। निराला का भी कुछ समय वहाँ व्यतीत हुआ था। "महिषादल के जीवन से निराला में तीन संस्कार आये थे—वंगला के साहित्यिक सांस्कृतिक परिवेशों से प्राप्त कवि संस्कार, संगीत का संस्कार और सामन्तवादी विरोधी लोक संस्कार।" अपने इन गुणों के कारण निराला कलकत्ता में विख्यात हो गये थे। कुकुरमुत्ते द्वारा गुलाव को दी गई फटकार के भाव महाकवि को यहीं प्राप्त हुए थे।

'श्रमनिष्ठा कलम के मजदूरों की' अध्याय में नागार्जुन ने महाकवि निराला को कलम का सच्चा मजदूर घोषित किया है। नागार्जुन ने इस वात पर भी क्षोभ व्यक्त किया है कि हमारे साहित्यिकजन लोकसभा में चले जाते हैं. या प्रकाशन आरम्भ कर व्यवसायी वन जाते हैं, पर निराला ने हमेशा अपनी दृष्टि अपने ध्येय पर रखी और वह था साहित्य देवता के चरणों में एक से एक सुगन्धित पुष्प अर्पण करना। उनका लेखन चलता रहा, पर वे किसी के सामने अपने अभावों के लिए गिड़गिड़ाये नहीं। यही सच्चे साहित्यकार की विशेषता है। उनके द्वारा लिखे उपन्यासों के चित्रित पात्र भी निराला के विचारों के ठीक-ठीक वाहक वने। 'सफलता' का नरेन्द्र इसी प्रकार का था। उसने भी प्रकाशकों द्वारा साहित्यकार के किये जा रहे शोषण का मुँहतोड़ उत्तर दिया।

निराला ने 'देशकाल के शर से विंधकर' सही-सही प्रतिक्रिया अपने साहित्य में व्यक्त की। जमींदारों-पूँजीपतियों के विरुद्ध आक्रोश, स्वदेशी शासकों की आडम्वर-प्रियता की पोल खोलना, पीड़ित और कृषक जनों का प्रतिनिधित्व करना, आदि ऐसे काम थे जिनको देख कहा जा सकता है कि निराला अपने स्वार्थ की पूर्त्ति के लिए चिंतित नहीं थे, वे सामान्य जन के लिए चिंतित थे।

इसमें नागार्जुन ने निराला के कुछ संस्मरण भी प्रस्तुत किये हैं। महाकवि द्वारा एक व्यक्ति को चादर भेंट दे देना और एक पगली की देखभाल करना उनकी पीड़ित मानवता के प्रति महान आत्मीयता का सूचक है।

नागार्जुन ने दिखाया है कि निराला के कुछ पात्र उनके अपने वास्तविक जीवन का प्रतिबिम्ब ही थे। 'अप्सरा' उपन्यास के नायक 'राजकुमार' की अनेक वातें निराला के जीवन से मिलती हैं। एक दुष्ट ने निराला को कर्वी (जिला बाँदा) के एक षड्यंत्र में फँसाकर अर्थ-सिद्धि करना चाहा था। भावुक हृदय, सरल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सौम्य निराला कुछ समय इस वेदना से बड़े विकल रहे। नागार्जुन ने दिखाया है कि निरालजी द्वारा लिखित 'काले कारनामे' उपन्यास की पृष्ठभूमि यही रही।

नागार्जुन के अनुसार निराला ने 'कुल्लीभाट', 'बिल्लेसुर बकरिहा' के रूप में हमें सामान्य युग-नायकों से परिचित कराया है। निराला ने पण्डितों के पाखण्ड की पोल खोली है। पीड़ित जनों की पीर को अपनी चुभन समझ कर यह महाकवि हमारे सामने आया।

अंत में 'सुर्ती फाँकोगे नागार्जुन' शीर्षक से लेखक ने निराला को अपने सामने उपस्थित पा बात-चीत की है। इसमें डॉ० रामविलास शर्मा, नेहरू, अमृतलाल नागर का उल्लेख कर मीठी चुटकी ली गयी है।

'एक व्यक्ति : एक युग' में नागार्जुन ने निराला की अपराजेयता और उनका समाज-संघर्ष तथा नेताओं की उनके प्रति बरती गयी उपेक्षा आदि तथ्यों को उपस्थित किया है। भारतीय साहित्यकार की दयनीय स्थिति, उसके द्वारा जीवन के व्यावहारिक पक्ष की ओर आकर्षित होने की विवशता और इससे साहित्य के होते हुए ह्रास की ओर भी संकेत किया है। सारी कृति में नागार्जुन की सधी, खरी, तीखी भाषा-शैली दिखाई देती है, जो गद्य लेखन पर उनका सबल अधिकार सिद्ध करती है। निराला के प्रति की गयी अवहेलना, साहित्य एवं राजनीति में व्याप्त प्रमाद और भ्रष्टाचार पर नागार्जुन ने कसकर व्यंग्य किये हैं। निराला द्वारा जीवन की जटिलताओं का आसव पीना और समाज की भ्रष्ट परम्पराओं को छिन्न-भिन्न कर स्वस्थ समाज-निर्माण तथा श्रेष्ठ साहित्य के सृजन पर जोर देना इस कृति का लक्षण है। नेताओं पर किये गये व्यंग्य प्रहारों और उच्च पदों पर चिपके साहित्यकारों पर लगाये गये आक्षेपों के मूल में नागार्जुन की कुछ वैयक्तिक कुण्ठाएँ भी हैं, इससे इन्कार नहीं कया जा सकता।

निराला के सम्बन्ध में ज्ञातव्यता की दृष्टि से यह पुस्तक बड़ी उपयोगी है, विशेषकर निराला साहित्य के शोध छात्रों के लिए। उन्हें इसमें निराला सम्बन्धी कई अप्रकाशित तथ्य मिलेंगे।

अनुवाद एवं विविध लेख :-नागार्जुन ने कालिदास के 'मेघदूत', शरत्चन्द्र की 'परिणीता' जयदेव के 'गीत गोविन्द' का अनुवाद भी किया है। इसके साथ ही पृथ्वीवल्लभ एवं चन्द्रनाथ भी उनके द्वारा अनुवादित कृतियाँ हैं। शरत की कहानियों और तीन अन्य उपन्यासों का भी उन्होंने अनुवाद किया है। कालिदास के 'मेघदूत' का अनुवाद करने में नागार्जुन ने मुक्तछन्द को अपनाया है। आरम्भ में ३९ पृष्ठ की भूमिका देखकर नागार्जुन ने कालिदास के काव्य का परिचय दिया है और मुक्त वृत्त के इतिहास पर प्रकाश डाला है। अनुवाद की विशेषता यह है कि नागार्जुन ने कालिदास की भावनाओं को पूरा-पूरा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उतारने का प्रयास किया है। इसमें उन्होंने अंचलीय शब्दों, उर्दू शब्दों, और कहीं-कहीं अँग्रेजी के शब्दों को भी स्थान दिया है। ऐसा उन्होंने अधिक-से-अधिक बोधगम्य बनाने के लिए किया है। संस्कृत के इस श्लोक :

नेत्रा नीताः सततगतिना युद्धिमानाग्रभूमी-
रालेख्यानां नव जलकणेर्दोषमुत्पाद्य सद्यः।
शङ्कास्पृष्टा इव जलमुचस्त्वादृशा जालमार्गे—
र्धूमोद्गारानुकृति निपुणा जर्जरा निघतन्ति ॥

का अनुवाद नागार्जुन ने इस प्रकार किया है :

सतमंजिला मकानों के
ऊपरी हॉल में होते हैं दाखिल
सदा गतिशील पवन से प्रेरित तुम्हारे हमजोली बादल
फुहियों से भिगो-भिगो मिटा देते हैं
भीत पर उरेहे हुए चित्र
और फिर धुएँ के छल्लों को नकल करने में उस्ताद
डर के मारे निकल भागते हैं दुष्ट
छितरा-छितरा कर जालीदार झरोखों से

इस अनुवाद में हॉल, दाखिल, फुहियों, उरेहे, उस्ताद आदि शब्दों का प्रयोग कवि ने किया है।

नागार्जुन ने विद्यापति के सौ गीतों का भी अनुवाद हिन्दी में किया है। इसका रूपान्तर इन्होंने परम्परागत ढंग से किये जाने वाले रूपान्तरों को छोड़कर नये ढंग से किया है। पदों को पढ़े बिना भी रसिक जन केवल अर्थ से रस प्राप्त कर सकते हैं :

सखि परबोधि सयन-तन आनि
पिय हिय हरषि धएल निज पानि

छुबइत बालि मलिन भए गेलि
बिधु-कर मलिन कमलिनी भेलि

नहि नहि कहए नयन झर नोर
सूति रहलि राहि सयनक ओर

आलिंगए नीबि-बंध बिनु खोरि
कुर कुच परस सेह भेल थोरि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आंचर लेइ बदन पर झाँप
थिर नहि होअए थर थर काँप
भनइ विद्यापति धरैज सार
दिन-दिन मदनक होए अधिकार

इसकी व्याख्या अत्यन्त सरल भाषा में नागार्जुन ने इस प्रकार की है : "सहेली समझा-बुझाकर उसे शयनगृह तक पहुँचा गयी। प्रीतम बहुत खुश हुआ। उसने सुन्दरी के हाथ पकड़ लिये।...पति के छूते ही वह लड़की मुरझा गयी। लगा कि चाँद की किरणों के स्पर्श से कमलिनी उदास हो उठी है।...वह लगातार नहीं-नहीं करती रही। आँखों में आँसू आते रहे। आखिर राधा ने अपने को बिस्तरे के किनारे से सटा लिया...। सो गयी। साड़ी की गाँठ नहीं खुली फिर भी आलिंगन तो मिला ही। कुचों पर थोड़ा बहुत हाथ फिरे इतना ही क्या कम है ? मुख को उसने आंचल से ढँक लिया। थर-थर काँपने लगी।" विद्यापति ने कहा : "धीरज सब गुणों का निचोड़ है। कामदेव धीरे-धीरे अपना अधिकार जमा लेगा।"

इस प्रकार कवि का पांडित्य एक सफल अनुवादक के रूप में भी स्पष्ट होता है। इसमें भी उसकी अपनी मौलिकता बनी हुई है।

नागार्जुन ने मृत्यु शैय्या पर पड़े राहुल सांकृत्यायन पर भी एक संस्मरणात्मक लेख लिखा है। इसमें भी नागार्जुन की खरी-तीखी शैली के दर्शन होते हैं। राहुलजी के प्रति साहित्यकारों की गुटबन्दी के कारण जो अन्याय हुआ, उस पर नागार्जुन ने भी अपने लेख में प्रकाश डाला है। उनके अनुसार राहुलजी को नागरी प्रचारिणी सभा में विश्वकोश के सम्पादन हेतु प्रधान संपादक बनाया जा रहा था, पर उन दिनों इस सभा की नकेल आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजबली पांडेय आदि के हाथों में थी। लेखक ने इन विधाता व्यक्तियों पर भीतरी गोल-माल का आरोप लगाया है जिसके कारण यह पद राहुल जैसे प्रकांड पंडित को नहीं मिल सका। नागार्जुन द्वारा एक साहित्य नेता से इसका कारण पूछने पर यह ज्ञात हुआ कि राहुल अगर कम्युनिस्ट न होते...आदि आदि थोथे कारणों और कमजोर अगर-मगरों की भीड़ ही उन महानुभाव ने लगा दी। इस प्रकार "अगर-मगर के इस भंवर में राहुलजी की आशाओं का नगर डूब गया।"[1]

नागार्जुन ने यह भी चित्रित किया है कि महादेवी द्वारा स्थापित और संचालित संस्था साहित्यकार संसद, इलाहाबाद, राहुलजी का सम्मान करनेवाली

१. सरिता (दीपावली विशेषांक), नवम्बर १९६२।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

थी। डेढ़-दो वर्ष पहले से ही इधर-उधर ऐसी हवा बँधी थी "मगर हवा हवा ही रह गई हुआ हवाया कुछ नहीं।"[१]

इस पर नागार्जुन ने व्यंग्य करते हुए लिखा है : "महादेवी जैसी विप्लवी और गंभीर महिला की निगाहों में राहुल का पत्नी-परित्याग वाला वह अपराध काफी था या फिर वहाँ भी कम्युनिज्म और नास्तिकता आड़े आ गये थे, कौन जाने।"[२]

इस प्रकार साहित्यिक संस्थाओं से उपेक्षित राहुलजी की रुग्णता, उनकी पत्नी कमला सांकृत्यायन द्वारा स्वाभिमानी पति की चिकित्सार्थ सहायता निधि हासिल करते रहने की स्वार्थयुक्त तत्परता, सबपर लेखक ने प्रकाश डाला है। नागार्जुन के व्यंग्य की बड़ी अच्छी झलक इस लेख में मिलती है। अंत में राहुलजी की साहित्य सेवाओं के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए उन्होंने लिखा है : "अकेले राहुल ने हिन्दी संसार को उतना अधिक दिया है—जितना दस साहित्यकार भी नहीं दे सके।" लेखक का राहुलजी से घनिष्ट सम्पर्क रहा था, इसका पता भी इस लेख से मिलता है।

इसके अतिरिक्त 'दो विभूतियाँ' लेख नागार्जुन ने "भारत के सर्वश्रेष्ठ कथाकार—प्रेमचंद और लोककाव्य के स्रष्टा— तुलसी पर लिखा है।[३] नागार्जुन ने 'मानस चतुःशताब्दी समारोह' के विरोध में भी एक लेख लिखा है। उनका विचार है कि ब्राह्मणशाही का महान प्रचारक ग्रन्थ (रामचरित मानस) हमारे देश के बहुजन समाज—शूद्र समाज—के लिए अब भला कौन-सा 'उद्धारक रोल' अदा कर रहा है, और फिर सारे दलित समाज को, जो बहुसंख्यक है, छोड़कर यह समारोह मनाया जाना, जिसमें धर्म के नाम पर पंडितजन काफी पैसा बना लेंगे, केन्द्रीय और प्रांतीय सरकारें जन-धन का मुक्तहस्त से अपव्यय करेंगी। यह अनावश्यक नहीं तो और क्या है। आगे नागार्जुन ने लिखा है : "कथावाचकों की बिरादरी हलवा, पूड़ी और खीर का भोग लगाकर फूलती रहेगी, भंडोच (भंगी, डोम, चमार) तो अभागे अलग ही खड़े रहेंगे।"[४]

रामचरित मानस के प्रेमी पाठकों को नागार्जुन की बात चुभनेवाली प्रतीत होगी, पर मानस के सम्बन्ध में लेखक का यह कथन कि शूद्र समाज के लिए कौन-सा उद्धारक रोल यह अदा कर सकता है, झुठलाया नहीं जा

१. सरिता, नवम्बर १९६२।
२. —वही—
३. जनशक्ति, पटना, ७ अगस्त १९६०।
४. मुक्तधारा, १६ मई, १९७०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सकता। फिर ग्रन्थ के पारायण और उसके साहित्य-सौंदर्य आदि का जहाँ तक प्रश्न है, वह अद्वितीय कृति है, इससे कोई इन्कार नहीं करता। पर लेखक का तो आक्रोश उन व्यक्तियों के प्रति व्यक्त हुआ है, जो ऐसे ग्रन्थ को मात्र पूजा का प्रतीक बनाकर उससे अपने हित साधने का प्रयास कर रहे हैं। दलित वर्ग के प्रति जहाँ लेखक की गहरी सहानुभूति प्रकट हो रही है, वहीं उच्च वर्ग से समर्थित इस शताब्दी-समारोह के विरोध का साहस भी कोई कम बात नहीं। लेखक का मौलिक चिन्तन प्रशंसनीय है।

साप्ताहिक हिन्दी 'जनयुग' में नागार्जुन 'यत्किंचित्' स्तम्भ भी लिखते रहे हैं, जिसमें देश की विभिन्न राजनीतिक, सामाजिक घटनाओं और सामयिक प्रश्नों पर लेखक की व्यंग्यात्मक टिप्पणी देखी जा सकती है। २८ दिसम्बर, १९६८ के 'जनयुग' में जयप्रकाशजी के 'चक्षुदान' के समाचार पर व्यंग्य किया गया है। १० नवम्बर, १९६८ के 'जनयुग' में देश की दूषित राजनीति पर उन्होंने लिखा : "पहली बार, दूसरी बार, तीसरी बार यानी बार-बार दल बदलनेवालों का अंत अब निकट है। फिर भी वर्ष-दो-वर्ष लग जायँगे। अन्ततः तीन साढ़े-तीन साल···।" काँग्रेस की तत्कालीन स्थिति पर उन्होंने लिखा है : "देश की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी खुद ही "इन्द्रजाल का अखाड़ा बनी हुई है। केन्द्र में काँग्रेस का सुहाग-सिन्दूर कब तक अमिट रहेगा? कब तक निजलिंगप्पा जैसे पंचानन (पाँच मुँह वाले) अपनी सुनहली पूँछ फटकारते रहेंगे।"[1] इसमें निजलिंगप्पा के पाँच साथियों पर व्यंग्य किया गया है। १५ सितम्बर '६८ के 'जनयुग' में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा केवल उच्च जाति वालों को ही लाठी परिचालन एवं अन्य कलाओं की ट्रेनिंग के सन्दर्भ में स्तम्भकार ने लिखा है : "छोटी जाति के युवक शायद सीटी नहीं बजा सकते।" ७ जून १९७० के 'जनयुग' में विजयलक्ष्मी पण्डित पर व्यंग्य करते हुए लिखा है : "बुआजी, कहाँ गयीं?···अर्से से बुआजी के बारे में हमें कुछ नहीं पता चला? फूलपुर वाला उनका काटेज···वो बगिया···वो लान···सब रो रहे होंगे माताजी के विछोह में फीके पड़ चुके होंगे।···" आगे की पंक्ति में व्यंग्य और गहरा हुआ है : "बाबू सत्यनारायणसिंह, आचार्य कृपलानी, प्रोफेसर रंगा—मिसेज पंडित की याद जब इन बुजुर्ग सांसदों को आती होगी, तब उसाँस नहीं छोड़ते होंगे बेचारे?"

नागार्जुन ने बाल-कहानियों के अतिरिक्त भी कुछ कहानियाँ लिखीं हैं। 'असमर्थ दाता' उनकी छपी हुई पहली कहनी है, जो सन् १९३५ में 'विशाल भारत' में प्रकाशित हुई थी। 'विशाखा मृगार माता' १९५० में 'पारिजात' में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकाशित हुई थी। इसी कहानी के कथानक को औपन्यासिक रूप देने का आग्रह नागार्जुन से किया जा रहा है। "आसमान में चन्दा तेरै" १९५४ में 'धारा' (हिन्दी मासिक, पटना) में प्रकाशित हुई थी।

इस प्रकार, कहानी, उपन्यास, कविता, लेख, अनुवाद, मैथिली साहित्य, आदि विभिन्न दिशाओं में कवि की लेखनी सफलतापूर्वक अग्रसर होते हुए हम पाते हैं।

यहाँ नागार्जुन के मैथिली साहित्य एवं अन्य स्फुट साहित्य का परिचय देने का प्रयास भर किया गया है। इससे ज्ञात होता है कि नागार्जुन प्रतिभा के धनी हैं। व्यंग्य उन्हें इतना प्रिय है कि प्रायः हर रचना में उसका रूप कम-अधिक अंशों में देखा जा सकता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नवम अध्याय

उपलब्धियाँ और देन

नागार्जुन हिन्दी और मैथिली के सुप्रसिद्ध साहित्यकार हैं। प्रगतिवादी कवि के रूप में उनका योगदान हिन्दी काव्य के लिए एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। वे हिन्दी कविता के प्रमुख व्यंग्यकार हैं। व्यंग्य की विभिन्न शैलियों को अपना कर उन्होंने सामाजिक एवं आर्थिक अव्यवस्थाओं, भ्रष्ट नेताओं आदि पर करारा व्यंग्य किया है।

नागार्जुन का जीवन अभावों से टकराते हुए व्यतीत हो रहा है। फलस्वरूप निम्नवर्गीय पात्रों का चित्रण करते हुए उनके प्रति व्यक्त कवि की सहानुभूति बड़ी सहज और स्वाभाविक प्रतीत होती है। इसी को देख यह कहा जा सकता है कि उन्होंने साहित्य में जीवन की व्याख्या करने का सफल प्रयास किया है। जनता के जीवन से अलग हटकर नागार्जुन का साहित्यकार कभी नहीं रहा। सभी स्थितियों में वह अपने देश की जनता के साथ रहा है। इस देश की जनता के स्वर में स्वर मिलाकर उसे प्रेरणा देते हुए वह चला है। इसके साथ ही यह विशेषता उल्लेखनीय है कि नागार्जुन के काव्य में निराशा, कुंठा, और पस्तहिम्मती नहीं वरन् इनके स्थान पर जीवन के प्रति आस्था, आशा और श्रमरत रहने का संकल्प व्यक्त हुआ है। आस्था और दृढ़ता के स्वर नागार्जुन के काव्य में यत्र-तत्र मिलते हैं। जीवन के प्रति इसी आशावादी दृष्टिकोण से नागार्जुन का सम्पूर्ण काव्य ओतप्रोत है। प्रकृति और प्रणयपरक कविताओं में कवि का लक्ष्य उनसे जीवन को सँवारना रहा है।

सतत ही अशिव शक्तियों का संहार कर मानव-कल्याण की कामना नागार्जुन काव्य में ध्वनित होती दीखती है। इन सबके साथ नागार्जुन का कवि देशप्रेम की भावनाओं से ओतप्रोत है। देश की सीमा पर बढ़ आये साम्राज्यवादी दैत्यों को कुचल कर रख देने के लिए वह कृतसंकल्प है। इस रूप में वह सबसे पहले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपने को भारतमाता का पुत्र मानकर मातृभूमि के कण-कण की रक्षा करने के लिए सन्नद्ध दिखाई देता है। सीमाओं की रक्षा के साथ ही कवि का ध्यान देश की आंतरिक शांति, जनहित और निर्माण-कार्यों की ओर भी गया है—और उसने इन्हें भी उतना ही महत्व दिया है जितना देश-रक्षा को।

विचारों से नागार्जुन साम्यवादी हैं। कुछ समय पूर्व तक भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी से उनका सम्बन्ध रहा था। मार्क्सवाद में उनकी पूरी आस्था है। नागार्जुन श्रमिक जनता के समर्थक रहे हैं ओर इस वर्ग से उनके सम्बन्ध-स्थापन का माध्यम पार्टी रही है। पर अब कवि ने इस माध्यम को तोड़कर इस वर्ग से सीधा सम्बन्ध स्थापित कर लिया है। किन्तु एक बात उल्लेखनीय है कि पार्टी के साथ रहते हुए भी उन्होंने अपने कवि की आवाज सबसे पहले सुनी है; पार्टीबाजी की दूषित राजनीति का सदैव बहिष्कार किया है, और इन्हीं कारणों से जब पार्टी से नागार्जुन की नहीं बनी तो पार्टी से उनका सम्बन्ध विच्छेद हो गया। कवि की स्पष्टवादिता ही यहाँ भी प्रमुख कारण बनी। अब नागार्जुन सब तरह से मुक्त हैं। पार्टी के समर्थक रहते हुए भी १९६२ में कम्युनिस्ट समर्थित देश चीन के विरुद्ध उन्होंने अपनी कविताओं द्वारा जमकर आग उगली। उन्होंने कविता लिखकर चेकास्लाविया में रूसी घुसपैठ पर चुटीला व्यंग्य किया। स्पष्ट ही है कि नागार्जुन ने अपनी आत्मा की आवाज को सबसे पहले सुना है। वस्तुतः पार्टी में रहते हुए पार्टी का सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व मात्र उन्होंने किया। वर्ग-विहीन समाज की स्थापना, सामाजिक एवं आर्थिक वैषम्य के विरुद्ध ललकार, और हँसिया-हथोड़ा वाली पार्टी का समर्थन तथा 'कमानेवाला खाएगा—इसके चलते जो कुछ हो' आदि नारे और विचार उनपर मार्क्सवादी प्रभाव सूचित करते हैं, पर वे इस पार्टी को अँधसमर्थन नहीं देते रहे। इसके कई उदाहरण हैं। अपने विवेक को उन्होंने सदा सक्रिय रखा है। वे पार्टी के भक्त उतने नहीं रहे हैं, जितने निम्नवर्ग को उनके अधिकार दिलाने की बात करने में सतर्क। 'बलचनमा' का कृषक-आन्दोलन भी उन्होंने सोशलिस्टों से लड़वाया है, हालांकि इसमें मार्क्सवादी सिद्धान्त ही प्रयुक्त हुए हैं। हम कह सकते हैं कि कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा श्रमिकों के उत्थान का लक्ष्य रखने के कारण ही नागार्जुन ने उसे समर्थन दिया है। यों पार्टी की सैद्धान्तिकता का तीव्र स्वर भी उनके साहित्य में कहीं-कहीं सुनाई देता है, पर पार्टी की अनुचित बातों से उन्होंने कभी समझौता नहीं किया, और न कभी व्यावहारिक राजनीति में ही भाग लिया। दूसरी बात भारत का कोई भी मार्क्सवादी समझा जाने वाला साहित्यकार अपनी धरती या देश से मुकर कर नहीं चला है।

नवयुवकों के प्रति कवि का दृष्टिकोण बड़ा उदार दिखाई देता है, देश में नवयुवकों पर होते आ रहे शासकीय दमन से कवि क्षुब्ध है। उसका विचार है

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कि हम अहिंसा का नारा सारे संसार में बुलन्द करते हैं, विएतनाम पर अमेरिकी बमबारी की निंदा करते हैं, पर देश के भीतर जो हिंसा हो रही है उसका क्या हो ? अफ्रेशियाई लेखक सम्मेलन (दिल्ली) में हिन्दी प्रतिनिधियों के नेतापद से बोलते हुए अपने इन्हीं विचारों को नागार्जुन ने व्यक्त किया। सम्मेलन-विवरण सम्बन्धी अपने लेख में श्री राजकुमार कुम्भज ने लिखा है : "दूसरे दिन जब भारतीय लेखकों की बैठक विज्ञान भवन के प्रमुख हॉल में हो रही थी, तब हिन्दी प्रतिनिधियों के नेता नागार्जुन ने कहा कि "मंगोलिया, अफ्रीका और विएतनाम में होनेवाली हिंसा के खिलाफ तो हम नारे लगा सकते हैं, उसके विरोध में तो हम प्रस्ताव स्वीकृत कर सकते हैं, लेकिन अपने देश की सरकार के द्वारा जो हिंसा की जा रही है, क्या वह हिंसा नहीं है ? सरकारी हिंसा के प्रति हम चुप क्यों हैं ? भारतीय शासन की गोली से आज सैकड़ों युवक मारे जा रहे हैं, उसके लिए भी तो हमें सोचना चाहिए।" श्री कुम्भज ने आगे लिखा है : "यह सबसे महत्त्वपूर्ण घटना थी। समूचे सम्मेलन में केवल नागार्जुन ने ही इतनी महत्त्वपूर्ण बात को जोरदार शब्दों में रखने की कोशिश की।"[१] इन पंक्तियों से साफ पता चलता है कि नागार्जुन विद्रोही हैं। अनीतियों-विडम्बनाओं के भंजन करने में वह चूकते नहीं हैं।

नागार्जुन ने अपने साहित्य द्वारा जीवन की समस्याओं को हल करने का प्रयास किया है। जीवन की पीड़ा और जन-चेतना की यह अभिव्यक्ति नागार्जुन में उसी प्रकार मुखरित हुई है जिस प्रकार निराला में। इसलिए यह कहा जा सकता है कि नागार्जुन निराला की परम्परा के समर्थ प्रतिनिधि कवि हैं। निराला-सा फक्कड़पन, समाज-संघर्ष और जटिल स्थितियों से उनका टक्कर लेना, कविता को साहित्यिक रूढ़ियों से मुक्त कराना, अपनी मस्ती में किसी को कुछ न समझ अनुचित बात के लिए प्रत्येक को फटकार देना, आदि सब गुण हमें नागार्जुन के व्यक्तित्व में दिखाई देते हैं। उनके साहित्यकार पर निराला का प्रभाव सहज ही देखा जा सकता है।

जन-जागरूकता और सम-सामयिकता के बोध का उद्घोष नागार्जुन की कविता में भरपूर है। देश-विदेश की ऐसी कोई भी महत्त्वपूर्ण घटना नहीं छूटी होगी, जिस पर नागार्जुन की लेखनी न चली हो, और इन सबके साथ उनका दृष्टिकोण आशावादी और स्वस्थ रहा है। कवि युवक शक्ति का रचनात्मक कार्यों में उपयोग करना चाहता है। विध्वंस की ओर नहीं अपनी क्रांति को

१. अफ्रेशियाई लेखक सम्मेलन; राजकुमार कुम्भज 'नई दुनिया (दैनिक, ४ जनवरी, १९७१)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सृजन की ओर उन्होंने उन्मुख किया है। भ्रष्टाचार, अव्यवस्थाओं, रूढ़ियों, शोषण और दूषित राजनीति का सफाया कर नागार्जुन का कवि सच्चे नेताओं के द्वारा सेवित प्रगतिशील और निर्माण कार्यों में व्यस्त भारत की तस्वीर बनाने में उत्सुक दिखाई देता है। वह आडम्बर का सख्त विरोधी है। जब तक नेता आडम्बरी रहेंगे, देश-सेवा का स्वप्न साकार न हो सकेगा।

इसके साथ ही नागार्जुन ने कविता को जन-सामान्य के बीच लाने का शुभ प्रयास किया है। उनका विचार है कि कविता जन-जन का कंठहार बने, और इसीलिए जन-गीतों की शैली एवं प्रचलित ग्रामीण शब्दों एवं लोकोक्तियों को उन्होंने अपनाया है। लोकगीतों की शैली में रची उनकी अनेक कविताएँ बड़ी लोकप्रिय हुई हैं। इस दृष्टि से नागार्जुन का प्रयत्न सचमुच ही स्तुत्य है। कवि को इस दृष्टि से सफलता मिलने का एक कारण यह भी रहा है कि उसने समाज के निम्नस्तरीय पात्रों पर दृष्टि रखी है; उनकी वेदनाएँ, समस्याएँ चित्रित करने का प्रयास किया है। इस प्रकार समाज की पीड़ा को समाज में प्रचलित बोलचाल की भाषा में व्यक्त करने के अद्वितीय प्रयास की दृष्टि से नागार्जुन का काव्य एक महान उपलब्धि है।

नागार्जुन-काव्य में संस्कृतनिष्ठ शब्दों से युक्त तथा कहीं समासगर्भित शैली के भी दर्शन हमें होते हैं। कहीं उन्होंने शास्त्रीय बिम्ब और प्रतीक-योजना का भी सफल निर्वाह किया है। इस प्रकार ठेठ बोलचाल के शब्द, अन्य भाषाओं के शब्द, संस्कृतनिष्ठ शब्द, अलंकार, प्रतीक एवं बिम्बात्मक सौंदर्य से भी उनकी कविता सजी हुई है।

नागार्जुन ने मैथिली साहित्य और बाल-साहित्य भी रचा है। मैथिली उपन्यासों—'पारो', 'नवतुरिया' और 'बलचनमा'—में आंचलिकता के प्रस्फुटन के साथ मिथिला की रूढ़ सामाजिक परम्पराओं का परिचय भी मिलता है। मिथिला के रूढ़िभंजक मोर्चे को नागार्जुन ने उस समय सम्हाला जब पंडित जनों का एक पूरा वर्ग इन गलित परम्पराओं का समर्थन कर रहा था और इस प्रकार नागार्जुन ने बड़े साहस का परिचय दिया है।

नागार्जुन ने प्रचुर मात्रा में बाल-साहित्य भी रचा है। इसके अन्तर्गत उनके द्वारा बालकों के लिए लिखी कहानियाँ उल्लेखनीय हैं। इन कहानियों में मनोरंजन के साथ ही बच्चों को कहीं कविता लिखने की, कहीं आदर्श बालक बनने की प्रेरणाएँ मिलती हैं।

उन्होंने कालिदास के 'मेघदूत' और शरत् के कुछ उपन्यासों का अनुवाद भी किया है।

'एक व्यक्ति : एक युग' के द्वारा नागार्जुन ने महाप्राण निराला के जीवन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और साहित्य पर संक्षिप्त रूप में कुछ लिखते हुए महान साहित्यकार के प्रति नेताओं की उपेक्षा की ओर ध्यान आकृष्ट किया है। लेखक ने साहित्यिक क्षेत्रों में व्याप्त किंचित बुराइयों की ओर संकेत करते हुए यह स्पष्ट किया है कि इससे साहित्य और साहित्यकार पनप नहीं सकेगा।

इनके उपन्यासों में हमने देखा है कि नागार्जुन प्रेमचन्द की ग्रामीण सांस्कृतिक परम्परा को अपना कर चले हैं। लगता है, मानो प्रेमचन्द ने ही अपना प्रतिनिधित्व इन्हें सौंप दिया है। प्रेमचन्द के होरी, गोबर आदि पात्र ही नागार्जुन के उपन्यासों में बलचनमा के रूप में विकसित हुए हैं। 'वरुण के बेटे' के मछुए, 'बाबा बटेसरनाथ' के पीड़ित-शोषित पात्र, दुखमोचन के ग्रामीण जन आदि प्रेमचन्द की ही विचारधारा के वाहक, किन्तु विकसित पात्र हैं। नागार्जुन की इन पात्रों के प्रति व्यक्त संवेदना हृदय की गहराई से निकली हुई प्रतीत होती है। यही कारण है कि इनका 'बलचनमा' एक महान उपन्यास के रूप में ख्याति पा गया है। समाजवादी यथार्थवाद की दृष्टि से इनके उपन्यास आदर्श रूप प्रस्तुत करते हैं। इस विचारधारा का प्रसारण अन्य उपन्यासकारों में, लेखक की ओर से वर्णित होने के कारण, अप्रभावी हो गया है, जबकि नागार्जुन के उपन्यासों में, पात्रों द्वारा अभावग्रस्त जीवन को भोग कर, इसका बोध होने में, स्वाभाविकता-वृद्धि में सहायक हुआ है। डॉ० शान्ति भारद्वाज के अनुसार, "सहज जीवन के चितेरे नागार्जुन जीवन की अभिव्यक्ति में जितने सहज हैं, कलाकार के सामाजिक दायित्व के प्रति भी उतने ही सजग, उतने ही प्रगतिशील। उनकी रचनाओं में मार्क्सवाद की मान्यताएँ खोजी जा सकती हैं, लेकिन यह प्रभाव चेतना पर है, शिल्प पर नहीं। इसीलिए नागार्जुन के उपन्यास सही अर्थों में भारतीय जीवन के चित्र हैं।"[1] भारत की इसी पीड़ित जनता के जीवन को सुधारने के लिए उन्होंने मजदूरों-किसानों को संगठित कर संघर्षरत रहने और अपने अधिकारों के लिए पीछे न हटने की प्रेरणा दी है। उनके अन्य उपन्यासों 'कुम्भीपाक' और 'उग्रतारा' में नारी जीवन की समस्यासों का चित्रण करते हुए उनका समाधान प्रस्तुत किया गया है। 'हीरक जयन्ती' में भ्रष्ट नेतृत्व पर व्यंग्य किया गया है और 'इमरतिया' में ढोंगी साधुओं की पोल खोली गयी है।

नागार्जुन हिन्दी के आंचलिक उपन्यासों के जनक हैं। उनका 'रतिनाथ की चाची' १९४८ में प्रकाशित हुआ था और दूसरा उपन्यास 'बलचनमा' १९५२ में प्रकाशित हुआ जो हिन्दी का प्रथम आंचलिक उपन्यास है। इन दोनों को आलोचकों ने सफल आंचलिक उपन्यासों की कोटि में रखा है। कुछ विद्वानों ने रेणुकृत 'मैला आंचल' को हिन्दी का प्रथम आंचलिक उपन्यास माना है।

१. डॉ० शांति भारद्वाज : हिंदी उपन्यास : प्रेम और जीवन, पृ० २३३।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किन्तु 'मैला आंचल' 'बलचनमा' के बाद की कृति है। 'मैला आंचल' को प्रथम आंचलिक उपन्यास मानने का एक ही तर्क इनके पास है, और वह है, इसके लेखक द्वारा उपन्यास की भूमिका में इसे 'आंचलिक उपन्यास' की संज्ञा से सम्बोधित करना। किन्तु केवल इससे 'मैला आंचल' को प्रथम आंचलिक उपन्यास और रेणु को प्रथम आंचलिक उपन्यासकार नहीं माना जा सकता।

नागार्जुन के आंचलिक उपन्यासों में मिथिला के क्षेत्रीय जन-जीवन, सामाजिक एवं धार्मिक परम्पराएँ, रम्य प्रकृति-अंचल, पक्षियों की चहचहाहट, परिवेश, खानपान आदि का जो चित्र प्रस्तुत किया गया है, उससे लेखक का अपने अंचल के प्रति सहज लगाव प्रतीत होता है। आंचलिक ब्यौरों के सफल चित्रण के साथ आंतरिक आत्मीयता को गुम्फित कर देना नागार्जुन की अपनी विशेषता है, जहाँ तक उनके अन्य समशील उपन्यासकार नहीं पहुँच पाये हैं। किन्तु अपने अगले उपन्यासों में नागार्जुन 'बलचनमा' सी ऊँचाई तक नहीं पहुँच सके हैं, यह भी निर्विवाद सत्य है। इसका कारण रहा है कहीं दुखमोचन को आदर्शवाद का भारी भरकम जामा पहना देना, विरोधी पात्रों को कमजोर चित्रित करना, 'कुम्भीपाक' में सहसा हृदय-परिवर्तन करा देना, 'हीरक जयन्ती' में मात्र व्यंग्यात्मक दृष्टि लेकर चलना, आदि। इन्हीं सब कारणों से हमारा ऐसा विचार है कि नागार्जुन उपन्यासों में उतने सफल नहीं हो सके हैं जितने काव्य में। उपन्यासों में कथानक की दृष्टि से शिथिलन पाया जाता है। पात्र कहीं लेखकीय विचारधारा से परिचालित भी लगते हैं। नागार्जुन ने अपने उपन्यासों को अपूर्ण भी छोड़ दिया है। उनके प्रायः सभी उपन्यासों में आगे कुछ और घटनाओं को बढ़ाने की सम्भावना स्पष्ट दिखाई देती है। उनके अधिकांश पात्र लेखकीय अन्याय की कसक मन में लिये हुए आभासित होते हैं। 'बलचनमा, वरुण के बेटे, हीरक जयन्ती, बाबा बटेसरनाथ' आदि में इसी प्रकार के पात्र हैं। यह अवश्य है कि नागार्जुन ने मजदूरों एवं खेतिहर जनता के वर्षों के दुःख-दर्दों को उपन्यास में समेट लिया है। किन्तु कथानकों की अपूर्णता के कारण पाठकों को निश्चित लक्ष्य पर पहुँचाने में लेखक असफल रहा है। हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि नागार्जुन के उपन्यासकार से नागार्जुन का कवि तगड़ा है। व्यंग्य रचनाओं में नागार्जुन का सानी मिलना दुर्लभ है। निःसंदेह आधुनिक हिन्दी कविता के वे बेजोड़ व्यंग्यकार हैं। व्यंग्य कविता को उन्होंने 'चनाजोर गरम' से 'मंत्र' कविता तक विभिन्न शैलियों द्वारा पुष्ट बनाया है। व्यंग्य की विविध शैलियाँ हम नागार्जुन की कविताओं में पाते हैं। छंद-वैविध्य की दृष्टि से भी नागार्जुन की कविताएँ महत्त्व रखती हैं। इन्हीं कारण से हिन्दी कविता में नागार्जुन का विशिष्ट स्थान है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नागार्जुन प्रगतिवादी हिन्दी कविता की गंगा हैं जिसकी धारा कभी क्षीण नहीं हुई। इसीलिए इनके काव्य में प्रगतिवादी विचारों का अजस्र प्रसारण हुआ है। साम्राज्यवाद और सम्प्रदायवाद का तीव्र विरोध नागार्जुन की कविताओं का भी एक प्रबल स्वर रहा है। मजदूरों-किसानों, दलितों-पीड़ितों के अपने कवि के रूप में नागार्जुन आगे रहे हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सहायक ग्रन्थों की सूची

१. अयोध्या का राजा—नागार्जुन
२. आज का हिन्दी साहित्य—प्रो० प्रकाशचन्द्र गुप्त
३. आधु. हि. कविता : सिद्धान्त और समीक्षा—विश्वम्भरनाथ उपाध्याय
४. आधुनिक हिन्दी कविता का मूल्यांकन—डा० इन्द्रनाथ मदान
५. आधु. हि. कविता में अप्रस्तुत योजना—डा० जगदीशचन्द्र त्रिपाठी
६. आइने के सामने—संपादक : मोहन राकेश
७. आधुनिक साहित्य—डा० प्रताप नारायण टण्डन
८. आज का हिन्दी उपन्यास—डा० इन्द्रनाथ मदान
९. इमरतिया (उपन्यास)—नागार्जुन
१०. उग्रतारा (उपन्यास)—नागार्जुन
११. एक व्यक्ति : एक युग—नागार्जुन
१२. कथा-मंजरी—नागार्जुन
१३. कब तक पुकारूँ (उपन्यास)—राँगेय राघव
१४. कविताएँ १९६५—संपादक : अजितकुमार एवं विश्वनाथ त्रिपाठी
१५. कविता के नये प्रतिमान—डा० नामवर सिंह
१६. काव्य बिम्ब—डा० नागेन्द्र
१७. कुम्भीपाक (उपन्यास)—नागार्जुन
१८. खून और शोले (काव्य)—नागार्जुन
१९. खड़ी बोली काव्य में अभिव्यंजना—डा० आशा गुप्ता
२०. गोदान (उपन्यास)—प्रेमचन्द
२१. चनाजोर गरम—नागार्जुन
२२. चित्रा (मैथिली काव्य)—नागार्जुन
२३. छायावादोत्तर काव्य—सिद्धेश्वर प्रसाद
२४. दादा कामरेड (उपन्यास)—यशपाल
२५. दुखमोचन (उपन्यास)—नागार्जुन
२६. दिगन्त (काव्य)—त्रिलोचन
२७. धरती (काव्य)—त्रिलोचन
२८. नई पौध (उपन्यास)—नागार्जुन
२९. नवतुरिया (मैथिली उपन्यास)—नागार्जुन
३०. नया हिन्दी काव्य—डा० शिवकुमार मिश्र

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

३१. नेहरू की आत्म-कथा—जवाहरलाल नेहरू
३२. नयी कविता : नये कवि—विश्वम्भर 'मानव'
३३. नई कविता—संपादक : वासुदेवनन्दन प्रसाद सिंह
३४. नया हिन्दी काव्य—डा० शम्भूनाथ सिंह
३५. नींद के बादल (काव्य)—केदारनाथ अग्रवाल
३६. पारो (मैथिली उपन्यास)—नागार्जुन
३७. पत्रहीन नग्न गाछ (मैथिली काव्य)—नागार्जुन
३८. पर आँखें नहीं भरीं (काव्य)—डा० शिवमंगल सिंह 'सुमन'
३९. पानी के प्राचीर (उपन्यास)—रामदरश मिश्र
४०. प्यासी पथराई आँखें (काव्य)—नागार्जुन
४१. प्रेत का बयान (काव्य)—नागार्जुन
४२. प्रेमचन्द—नागार्जुन
४३. प्रेमचन्द और गाँधीवाद—रामदीन गुप्त
४४. प्रगतिवाद और हिन्दी उपन्यास—डा० प्रभासचन्द्र शर्मा 'मेहता'
४५. प्रगतिवादी काव्य—उमेश मिश्र
४६. प्रेमचन्दोत्तर उपन्यासों की शिल्पविधि—डा० सत्यपाल चुघ
४७. प्रकीर्णिका—आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी
४८. प्रेमचन्द के साहित्य सिद्धान्त—नरेन्द्र कोहली
४९. बहती गंगा (उपन्यास)—शिव प्रसाद 'रुद्र'
५०. बलचनमा (उपन्यास)—नागार्जुन
५१. बया का घोंसला और साँप (उपन्यास)—लक्ष्मीनारायण लाल
५२. बाबा बटेसरनाथ (उपन्यास)—नागार्जुन
५३. बलचनमा (मैथिली उपन्यास)—नागार्जुन
५४. बूँद और समुद्र (उपन्यास)—अमृतलाल नागर
५५. बीसवीं शताब्दी : हि. सा. : नये सन्दर्भ—डा० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय
५६. भस्मांकुर (खण्ड काव्य)—नागार्जुन
५७. मैला आंचल (उपन्यास)—फणीश्वरनाथ 'रेणु'
५८. मूल्य और उपलब्धि—डा० शम्भूनाथ सिंह
५९. मेघदूत (अनुवाद)—नागार्जुन
६०. युगधारा (काव्य)—नागार्जुन
६१. रतिनाथ की चाची (उपन्यास)—नागार्जुन
६२. रामायण की कथा—नागार्जुन
६३. राष्ट्रीय स्वाधीनता और प्रगतिशील साहित्य—रामेश्वर शर्मा
६४. रूप तरंग (काव्य)—डा० रामविलास शर्मा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

६५. रूपाम्बरा (संकलन) – सम्पादक : सच्चिदानन्द वात्स्यायन
६६. वरुण के बेटे (उपन्यास)—नागार्जुन
६७. विद्यापति के गीत (अनुवाद)—नागार्जुन
६८. विश्वास बढ़ता ही गया (काव्य)—शिवमंगल सिंह 'सुमन'
६९. वीर विक्रम—नागार्जुन
७०. शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धात—डा० गोविन्द त्रिगुणायत
७१. स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी साहित्य और चरित्र विकास—डा० रेचन
७२. सतरंगे पंखोंवाली (काव्य)—नागार्जुन
७३. समीक्षा शास्त्र—डा० दशरथ ओझा
७४. साहित्य का उद्देश्य—प्रेमचन्द
७५. साहित्य की शैली—डा० गणपतिचन्द्र गुप्त
७६. साहित्यालोचन—डा० श्यामसुन्दर दास
७७. सीदा सादा रास्ता (उपन्यास)—रांगेय राघव
७८. सत्ती भैय्या का चौरा (उपन्यास)—भैरवप्रसाद गुप्त
७९. सागर, लहरें और मनुष्य (उपन्यास)—उदयशंकर भट्ट
८०. हीरक जयन्ती (उपन्यास)—नागार्जुन
८१. हिन्दी उपन्यासों में वर्ग-भावना—प्रताप नाराण टण्डन
८२. हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद—डा० त्रिभुवनसिंह
८३. हिन्दी उपन्यास : शोध-प्रवन्ध— डा० सुषमा धवन
८४. हिन्दी साहित्य : एक परिवृत—शिवनन्दन सहाय
८५. हिन्दी साहित्य का नया इतिहास : एक संरचनात्मक पुनर्विचार —डा. रामखेलावन पाण्डेय
८६. हिन्दी की नई कविता—वी० नारायणन कुट्टी
८७. हिन्दी साहित्य : कुछ विचार—डा० त्रिलोकीनाथ दीक्षित
८८. हिन्दी उपन्यास : सिद्धान्त और समीक्षा—डा० मख्खनलाल शर्मा
८९. हिन्दी उपन्यास : उद्भव और विकास—डा० सुरेश सिन्हा
९०. हिन्दी उपन्यास : समाजशास्त्रीय विवेचन—डा० चण्डीप्रसाद जोशी
९१. हिन्दी उपन्यास में नारी चित्रण—डा० विन्दु अग्रवाल
९२. हिन्दी उपन्यास शिल्प : बदलते परिप्रेक्ष्य—डा० प्रेम भटनागर
९३. हिन्दी उपन्यास : एक सर्वेक्षण—महेन्द्र चतुर्वेदी
९४. हिन्दी उपन्यास—डा० शिवनारायण श्रीवास्तव
९५. हिन्दी के आंचलिक उपन्यास—राधेश्याम कौशिक
९६. हिं. उपन्यास साहित्य का उद्भव और विकास–डा० लक्ष्मीकांत सिन्हा
९७. हिन्दी के आंचलिक उपन्यास—डा० वंशीधर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

९८. हिन्दी साहित्य का इतिहास—डा० राममूर्ति त्रिपाठी
९९. हिन्दी गद्य साहित्य : एक सर्वेक्षण—डा० जगदीशचन्द्र जोशी
१००. हिन्दी उपन्यास : प्रेम और जीवन—डा० शांति भारद्वाज
१०१. हिं. उपन्यास : युगचेतना और पाठकीय संवेदना--डा० मुकुन्द द्विवेदी
१०२. हिन्दी लघु उपन्यास—डा० घनश्याम 'मधुप'

सहायक पत्र-पत्रिकाएँ

१. हंस—अप्रैल, '४१, फरवरी-अप्रैल-जून '४८, मई '४९, जनवरी '५२
२. सरस्वती—१९४२ तथा हीरक जयन्ती अंक
३. छात्र सखा—जुलाई १९६६, अप्रैल-मई-जून-जुलाई-अगस्त, १९६७
४. ज्ञानोदय—फरवरी १९६१, जनवरी १९६५, नवम्बर १९६९
५. अवन्तिका—सितम्बर-अक्टूबर-संयुक्तांक १९५६
६. जनशक्ति--जनवरी-जुलाई-अगस्त '६०, जन. '६१, '६४, फरवरी '६५
७. जनयुग—जनवरी १९६७, दिसम्बर १९६७, फरवरी-अप्रैल-जून-जुलाई-सितम्बर १९६८, जनवरी-जन-सितम्बर १९७०
८. नई कहानियाँ—नवम्बर, १९६९
९. धर्मयुग—जून १९६३, जनवरी-जुलाई १९६९, जून १९७१
१०. नया संसार—दैनिक
११. मुक्तधारा—अगस्त १९६८, मई १९७०
१२. साहित्य संदेश—जुलाई-अगस्त १९५६, जनवरी-फरवरी १९५८, सितम्बर १९६३, जुलाई-अगस्त १९६७, नवम्बर-दिसम्बर १९६८
१३. मेल-जोल—केदारनाथ अग्रवाल षष्ठिपूर्ति विशेषांक, ६ जुलाई '७०
१४. आजकल—मार्च १९५३
१५. आलोचना—अक्टूबर-अप्रैल १९५७
१६. समालोचक—फरवरी १९५९
१७. सरिता— जनवरी १९६१, नवम्बर १९६२, जनवरी '६४, '६९
१८. नवभारत—२८ अक्टूबर १९६०
१९. नई दुनिया—४ जनवरी १९७१
२०. नया जीवन—दिसम्बर १९६३
२१. प्रवाह पत्रिका (अकोला) १९४९

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.